MYSTERY OF THE AGES

युगों का रहस्य

HERBERT W. ARMSTRONG

युगों का रहस्य

क्या आपने कभी अपने–आपसे पूछा है: ''मैं कौन हूं? मैं क्या हूं? मैं क्यों हूं?'' आप एक रहस्य हैं। आपके आस–पास की दुनिया एक रहस्य है। अब आप समझ सकते हैं!

हर्बर्ट डब्ल्यू. आर्मस्ट्रांग

युगों का रहस्य

समय मिस्टेरि आफ एजेज युगों के रहस्य को 1900 वर्षों में लिखी गई सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक साबित कर सकता है। हर्बर्ट डब्ल्यू आर्म्सट्रांग की यह हालिया पुस्तक बोध के सर्वोच्च स्रोत से उद्‌घाटित सबसे महत्वपूर्ण ज्ञान को स्पष्ट करती है, उस ज्ञान को जिसने धरती पर प्रकट हुए पहले मानव के समय से सभी मानवों को रहस्य बना रखा है।

मनुष्य आज अपनी समस्याएं सुलझाने की या अपने और जिस दुनिया में रहता है, उस दुनिया की उलझनकारी समस्याओं के हल तलाशने की अपनी अक्षमता के कारण रहस्य बन गया है।

हमारे आस–पास की दुनिया रहस्य है। हम खुद ही एक रहस्य हैं। मनुष्य कौन और क्या है? मानव जीवन का लक्ष्य क्या है? क्या कोई लक्ष्य है भी!

लगभग साठ साल पहले हर्बर्ट डब्ल्यू आर्म्सट्रांग बाइबिल और मानव की उत्पत्ति पर शोध करने पर विवश हुए थे। उन्होंने ईश्वर के अस्तित्व और बाइबिल के अधिकार के प्रमाण तलाशने या दोनों को अस्वीकार करने का निश्चय कर रखा था।

(पिछले पैप पर जारी)

(अगले पैप से जारी)

कई महीनों के रातो–दिन के गहन अध्ययन के बाद सकारात्मक और पक्के प्रमाण के साथ उन पर उत्तर प्रकट हुए।

उन्होंने पाया कि जिन रहस्यों ने मानव–जाति को उलझन में डाल रखा है, समस्त ज्ञान के एक सर्वोच्च अधिकारी ने काफी पहले ही उनको प्रकट कर दिया था, लेकिन वह कूट भाषा में प्रकट किया गया था और उसे अभी तक में प्रकट नहीं करना था या उसके संकेतों को प्रकट नहीं किया जाना था! ये मूलभूत उद्घटित सत्य एक ऐसी पुस्तक में रहस्य रखे गए थे जो दुनिया की एक नंबर की सबसे अधिक बिकने वाली लेकिन सबसे कम समझी गई पुस्तक है।

हर्बर्ट डब्ल्यू. आर्म्सट्रांग ने पाया कि बाइबिल सांकेतिक भाषा में लिखी गई पुस्तक है, जिसमें उन प्रमुख रहस्यों के जवाब हैं जिनसे सारी मानवता दो–चार है। उन्होंने पाया कि यह कोड हमारे समय तक, संकट के इन दिनों, बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध तक, स्पष्ट रूप से समझे जाने के लिए नहीं था। उन्होंने जाना कि बाइबिल चित्र पहेली जैसी है जिसके हजारों टुकड़ों को एक साथ रखने की जरूरत होती है– और वे टुकड़े केवल एक तरह से फिट होंगे। यह पुस्तक उस महान पहेली के उन बहुत सारे टुकड़ों को एक साथ रखती है जिससे वे स्पष्ट रूप से समझे जा सकते हैं। आपकी अपनी बाइबिल अब से एक बार पढ़ लेने के बाद आपके लिए रहस्य नहीं रहेगी।

डोड्ड, मीड ऐंड कंपनी
79 मेडिशन एवफ्यू, न्यूयार्क, एनवाई 10016

युगों
का
रहस्य

युगों का रहस्य

*क्या आपने कभी अपने—आपसे पूछा है: ''मैं कौन हूं?
मैं क्या हूं? मैं क्यों हूं?'' आप एक रहस्य हैं।
आपके आस—पास की दुनिया एक रहस्य है।
अब आप समझ सकते हैं!*

हर्बर्ट डब्ल्यू. आर्म्सट्रांग

डोड्ड, मीड ऐंड कंपनी

न्यू यार्क

मैं आरोन डीन के प्रति आभार व्यक्त करना चाहता हूं जिन्होंने इस पुस्तक को लिखने और तैयार करने में मेरा सहयोग किया। चूंकि मेरी दृष्टि लगभग जा चुकी है, इसलिए उनके बिना यह पुस्तक तैयार नहीं हो सकती थी।

कॉपी राइट 1985 वर्ल्डवाइड चर्च ऑफ गॉड, पेसाडेना, सीए 91123 यूएसए
सर्वाधिकार सुरक्षित
वर्ल्ड वाइड चर्च ऑफ गॉड की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक के किर्सी भाग की प्रतिलिपि नहीं तैयार की जा सकती।
डोड्ड, मीड ऐंड कंपनी, इंक.
79 मेडिशन एवेन्यू, न्यूयार्क, एनवाई 10016
मैक क्लेलैंड ऐंड स्टीवर्ट लिमिटेड, टोरंटों द्वारा
कनाडा में वितरित।
संयुक्त राज्य अमरीका में निर्मित
पहला संस्करण

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस केटालॉगिग इन पब्लिकेशन डाटा
आर्म्सट्रांग हर्बर्ट डब्ल्यू.
युगों का रहस्य
1. बाइबिल की आलोचना, व्याख्या इत्यादि
2. जीवन I. शीर्षक
बीएस 511.2. ए 63 1985 230′.99 85–12953
आईएसबीएन 0–396–08773–6

मैं यह पुस्तक 50 सुखी वर्षों की अपनी पत्नी लोमा आर्म्सट्रांग की स्मृति में समर्पित करना चाहता हूं।

लेखकीय वक्तव्य

मैंने यह किताब क्यों लिखी? मैंने उन्नीसवीं सदी के अंतिम साढ़े आठ साल, आज तक की पूरी बीसवीं सदी का लंबा, सक्रिय और अभिरुचिपूर्ण जीवन जीया है।

मैं घोड़ा—बग्घी वाले युग से लेकर, स्वचालित वाहन और उद्योग युग, हवाई युग, नाभिकीय युग और अब अंतरिक्ष युग में जी रहा हूं। मैंने अमरीका को कृषि युग में जीते देखा है जब किसान घोड़े से खींचे जाने वाले अपने हल के पीछे चलता था और खुशी से गाता था और उस शहरी युग को भी जब मध्य पश्चिम के अमरीकी किसान आर्तनाद कर रहे हैं और किसानी के जीवन को विलुप्त होने से बचाने के लिए सरकारी सहायता के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

मैंने इस बीसवीं सदी को औद्योगिक और प्रोद्योगिकी विकास और उपलब्धियों की दृष्टि से विस्मयकारी सदी के रूप में विकसित होते देखा है। इसके विपरीत मैंने बुराइयों, अपराध, और हिंसा को भयावह रूप से बढ़ते और नाभिकीय युद्ध की कुठाली को बढ़ कर वर्तमान जीवित पीढ़ी के सामने ही मानवजाति के अस्तित्व के लिए खतरा बनते देखा है। ये स्थितियां और तथ्य दरअसल अनसुलझे रहस्य हैं और उनको स्पष्ट करने की आवश्यकता है।

मैंने इस ग्लोब के, जिसे पृथ्वी कहा जाता है चारों भागों की यात्राएं की हैं। मैं धनवानों, गरीबों और जो दोनों के बीच के हैं, सबके संपर्क में रहा हूं। मैं उद्योग जगत के कप्तानों, सम्राटों, राजाओं, राष्ट्रपतियों, प्रधान मंत्रियों के यहां गया हूं। मैं पूरी तरह अशिक्षित और गरीबी की मार से जर्जर गरीबों के संपर्क में रहा हूं और उन्हें जानता हूं। मैंने इस दुनिया को प्रत्यक्ष और करीब से देखा है, जितने करीब से बहुत कम ही लोगों ने देखा होगा।

और इस लंबे और स्पंदन युक्त जीवन में मैंने अपने–आपसे बहुत से सवाल किए हैं जो मेरे लिए महान रहस्य थे, और सारी दुनिया के लिए अनुत्तरित, अव्याख्यायित रहस्य बने हुए हैं।

मैं जब पांच साल का था मेरे पिताजी ने कहा कि मैं बड़ा होकर फिलाडेल्फिया का वकील बनूंगा क्योंकि मैं बहुत सारी चीजों के बारे में बहुत सारे सवाल पूछता रहता हूं। मैं समझना चाहता था, मैं समझ की कामना करता था। दुनिया का कभी रहा सबसे बुद्धिमान व्यक्ति सम्राट सोलोमन बुद्धिमत्ता की कामना करता था और ईश्वर ने उसे दूसरों से अधिक बुद्धि दी।

इतने वर्षों बाद मैंने अनुभव किया कि उसी ईश्वर ने मुझे जीवन के सबसे गहरे रहस्यों की समझ दी है जो बहुत से दिमागों के लिए पहेली बने हुए हैं।

यह सब कैसे हुआ? 18 साल की उम्र तक मेरा पालन पोषण पोटेस्टैंट चर्च में हुआ था। लेकिन मैंने चर्च में इन उत्पीड़क सवालों के जवाब देते नहीं सुना। यदि बाइबिल सवालों के जवाब देती है, तो फिर ईसाइयत के इतने संप्रदाय क्यों हैं और बाइबिल क्या कहती है, इसे लेकर इतनी असहमति क्यों है?

लेकिन बाइबिल को कौन समझ सकता है? मैंने तो निश्चित रूप से इसे कभी नहीं समझा था। और अगर आदमी समझ भी जाए तो क्या वह बाइबिल पर विश्वास कर सकता है? क्या यह किसी अधिकार से बोलती है यह सवाल मुझे परेशान करता था और ऐसा रहस्य है, इस ग्रंथ

में जिसका खुलासा किया जाना है। मैंने समझना कैसे शुरु किया, 34 साल की उम्र में 1926 में इसकी शुरुआत हुई। लेकिन तब यह केवल शुरू ही हुआ था। लेकिन अंतिम स्फटिक की तरह स्पष्ट तर्क जिसने मुझे यह किताब लिखने की प्रेरणा दी 1984 के दिसंबर तक पूरी तरह प्रकट नहीं हुआ था। यह दिमाग भन्ना देने वाली अनुभूति थी– एक महत्वपूर्ण सत्य जिसका खुलासा इस पुस्तक में किया जाएगा।

इस पुस्तक में वर्णित सच्चाइयों के प्रति मेरे मन के खुलने की शुरुआत 1926 की गर्मी में हुआ।

मैंने अपने–आपसे पूछाः ''मैं कौन हूं? मैं क्या हूं? मैं क्यों हूं?'' मैंने उत्तर तलाशने की कोशिश की लेकिन तलाश न सका। यह एक रहस्य था। उसके बाद उसी साल के शरद में मेरा सामना बाइबिल के एक सवाल और विकास के सिद्धांत को लेकर एक दिमाग को उलझन में डाल देने वाली चुनौती से हुआ। इसके फलस्वरूप मेरे मन में ज्ञान और बोध की नयी विस्मयकारी नीतियां और गहराइयां प्रकट हुईं।

इस सबकी शुरुआत विकास के सिद्धांत और रविवार को अवकास मनाने के धार्मिक सवाल से हुई।

मैं जानता था कि बाइबिल एक नंबर की दुनिया की सबसे ज्यादा बिकने वाली किताब है। इसके बावजूद मेरे लिए यह एक पहेली थी। मैं इसे कभी समझ नहीं सका था।

मैंने कहा, ''बाइबिल कहती है, तुम रविवार मनाओगे।'' मुझसे पूछा गया, ''तुमने कैसे जाना? क्या मैंने इसे बाइबिल में पढ़ा है?''

मैंने कहा कि मैं इसलिए जानता हूं कि सारे चर्च रविवार मनाते हैं और मैं समझता हूं कि उनकी शिक्षा का स्रोत बाइबिल है।

लेकिन इस सवाल को लेकर मेरी शादी दांव पर थी। मैं बाइबिल और विकास के सिद्धांत का गहन और विस्तृत अध्ययन करने के लिए विवश कर दिया गया था। जो उन दिनों उच्च शिक्षा के क्षेत्र में बड़ी तेजी से स्वीकृति प्राप्त कर रहा था।

डारविन, हक्सले, हीकेल, इत्यादि के लेखन के गहन अध्ययन ने मेरे मन में बाइबिल के अधिकार और ईश्वर के अस्तित्व के समक्ष सवाल खड़े कर दिए।

ये बुद्धिजीवी विचारक ब्रह्मांड के बारे में बढ़ते ज्ञान से परिचित थे। वे अपने समय की धार्मिक शिक्षा के सहारे उस बढ़ते ज्ञान को समेट न सके। विकास के सिद्धांत के स्थापकों के सोच में मेरे शोध से मुझे साम् के आठवें अध्याय में पढ़ी बात याद आ गई– प्राचीन कौम का एक राजा डेविड किस तरह आसमान के तारों को देखता है और विशाल ब्रह्मांड के विस्तार पर गौर करता और सोचता है। वह अपने मन में विचार करता है कि वह क्या है? ब्रह्मांड के अनंत विस्तार में मनुष्य क्या है? मैंने पाया कि इस प्राचीन राजा के मन में जो सवाल कुलबुला रहे थे उसे कभी भी उनके पूरे जवाब नहीं मिले। लेकिन आगे चल कर मुझे उसी शोध में पता चला कि कैसे अंतिम उत्तर देवदूत पाल पर प्रकट हुआ था और हिब्रू की पुस्तक के दूसरे अध्याय में उसे स्पष्ट किया गया था। मैं ईश्वर के अस्तित्व का चरम प्रमाण और बाइबिल के अधिकार का पता लगाने या दोनों को अस्वीकार करने का दृढ़ निश्चय कर चुका था। मैंने अनुभव किया कि अधिकतर लोग जो सुनते हैं या उन्हें जो पढ़ाया गया होता है या वे बिना प्रमाण के जिसे मान लेते हैं उन्हीं की वजह से असावधान धारणाओं के आधार पर किसी आस्था को स्वीकारते या खारिज कर देते हैं। मैं समझना चाहता था। और मैं सकारात्मक प्रमाण के मामले में आश्वस्त होना चाहता था, असावधान कल्पना या सकाम सोच पर आश्रित नहीं होना चाहता था।

कई महीनो के रातोदिन के गहन अध्ययन के बाद मुझ पर ऐसे प्रमाण के साथ उत्तर प्रकट हुए जो सकारात्मक भी थे और खरे भी।

अब ईश्वर का अस्तित्व इसलिए असावधानी पूर्वक बिना प्रमाण के मानी हुई चीज नहीं था कि मैंने उसके बारे में हमेशा सुना था या मुझे पढ़ाया गया था। मुझे सर्वोच्च स्रष्टा ईश्वर के अस्तित्व का शुद्ध और सकारात्मक प्रमाण मिल गया था और ईश्वर के शब्द के रूप में बाइबिल के शुद्ध अधिकार का भी – मानव जाति के लिए ईश्वर का संदेश और ज्ञान। मैंने पाया कि बाइबिल सांकेतिक भाषा में लिखी गई पुस्तक है – सारी मानवता के सामने खड़े अत्यंत महत्वपूर्ण रहस्यों के उत्तर के साथ।

मैंने पाया कि बाइबिल सांकेतिक भाषा में लिखी गई पुस्तक है जिसमें उन प्रमुख रहस्यों के उत्तर हैं जिनसे मानवता दो–चार है।

इन रहस्यों का उद्घाटन लुप्त हो गया था, ईश्वर के चर्च के लिए भी, हालांकि उनके उद्घाटन बाइबिल के लेखन में परिरक्षित थे। तो फिर दुनिया ने उन्हें स्पष्ट रूप से समझा क्यों नहीं? क्योंकि बाइबिल सांकेतिक भाषा में लिखी

पुस्तक थी, हमारे समय तक न समझी जाने के लिए अभिप्रेत – बीसवीं सदी के इन अंतिम दिनों में। मैंने इस रातो–दिन के अध्ययन में जाना कि यह सबसे अधिक अनसमझी पुस्तक क्यों है। बावजूद इसके कि यह दुनिया की सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक है। किसी भी विषय की पूरी व्याख्या या सच्चाई कभी–कभार ही किसी एक परिच्छेद में स्पष्ट की जाती है। विषय के अन्य हिस्से, कारक या अवस्थाएं आमतौर पर बाइबिल के एक या कई दूसरे परिच्छेदों में, दूसरे भागों में चाहे नवविधान में या फिर प्राचीन विधान में निहित हैं। इस विषय की सच्ची और पूरी समझ संभवतः तभी लाभदायक है जब बाइबिल भर में बिखरे इन सभी परिच्छेदों को एक साथ रखा जाए।

ज्ञान की वह वीथियां और बोध जो दूसरों के लिए मुख्य रहस्य बनी हुई हैं मेरी चमत्कृत आंखों और मन के आगे खुल गए। लेकिन उस पुस्तक में अभिलिखित है कि इन्हीं दिनों में जिसमें वर्तमान पीढ़ी जी रही है यह महान रहस्य स्पष्ट हो जाएगा। और सचमुच यह मेरे चमत्कृत दिमाग में स्पष्ट हो गया था।

मैंने पाया कि बाइबिल चित्र खंड पहेली की तरह है– हजारों टुकड़े जिन्हें एक साथ रखना होता है। और ये टुकड़े केवल एक तरह से ही फिट बैठते हैं। उसके बाद उस आदमी के सामने तस्वीर बिलकुल स्फटिक की तरह स्पष्ट हो जाती है जो यह हमारे सृष्टा ईश्वर के कथन पर विश्वास करने के लिए राजी होता है।

यह पुस्तक महज उस महान पहेली के विभिन्न हिस्सों को एकजुट करती है ताकि वे अच्छी तरह समझे जा सकें।

आप यह किताब पढ़ते और दुबारा पढ़ते समय, अपनी बाइबिल से लगातार तुलना करें। अपनी आंखों से इन सच्चाइयों को अपनी बाइबिल में देखें। और अपने दिमाग को ईश्वर के अपने सत्य की ओर ले जाने के लिए खुला रखें जैसा कि आप करते हैं। इससे बहुत कुछ समझ में आ जाता है जो पहले कभी समझ में नहीं आया था।

समय इसे 1900 वर्षों में लिखी गई सबसे महत्वपूर्ण किताब साबित कर सकता है। उस साहित्यिक उत्कृष्टता या पांडित्य पूर्ण अलंकृत भाषा के लिए जिससे जान–बूझ कर बचा गया है। बल्कि सवोच्च स्रोत से उद्घाटित सबसे महत्वपूर्ण ज्ञान को उस समझ को जिसे मानवजाति ने पहले मानव के धरती पर आने के समय से ही रहस्य बना रखा है, स्पष्ट करने की कथन की सादगी के लिए।

इस दुनिया की मानवता को इस ओर से अंधेरे में रखा गया है कि मानव कौन, और क्या और क्यों है– मानव धरती पर कैसे आया। मानव को अपनी समस्याओं के समाधान या मानव जाति और वह जिस दुनिया में रहता है उस दुनिया के उलझनकारी सवालों के जवाब तलाशने की उसकी अक्षमता के कारण रहस्यमय बना दिया गया है।

इन सारे रहस्यों को सारे ज्ञान के एक सर्वोच्च अधिकारी ने बहुत पहले प्रकट कर दिया था, लेकिन सांकेतिक संदेशों के रूप में जिसे हमारे युग तक प्रकट करने या उसके गुप्त संकेतों को स्पष्ट करने की अनुमति नहीं थी।

पहली सदी के दौरान ही चर्च में दूसरा सुसमाचार घुस आया। परंपरागत ईसाइयत के नाम पर बहुत से मिथ्या उपदेश और मिथ्या चर्च उग आए। जैसा कि ईश्वर प्रकाशन ग्रंथ 12:9 में प्रकट करता है, सारी दुनिया छली गई है। इन मौलिक सत्यों को एक रहस्य बना कर रखा गया है। यहां तक कि पुरोहित वर्ग के सबसे निष्ठावान और सदाशयी लोगों को भी उनके उपदेश और शिक्षाएं दूसरे लोगों से मिली है क्योंकि इन चर्चों में परंपरागत रूप से उन्हें प्रदान किया जाता है। उन्होंने इन मिथ्या उपदेशों को बाइबिल का सच्चा उपदेश मान लिया है। चित्र पहेली के विभिन्न टुकड़ों को सही और समझदारी से सजाने की बजाय उसके संदर्भ से निकाल कर बाहर रखे गए प्रत्येक लेख में पहले से मानी गई मिथ्या शिक्षा को पढ़ते जाने का चलन चल गया है, परंपरा बन गई है। दूसरे शब्दों में लेखों की उसी तरह व्याख्या करना जिस तरह उन्हें पहले ही पढ़ाया गया है और उसी पर विश्वास करना। बाइबिल की व्याख्या की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह अपनी व्याख्या स्वयं करती है। यह

उस समय स्पष्ट हो जाता है जब प्रत्येक विषय के विभिन्न लेखों को एक साथ रखा जाता है, जैसा कि बाइबिल खुद कहती है, ''कुछ यहां, और कुछ वहां'' (इसैया 28:10)। यहां तक तथा कथित परंपरागत ईसाइयत भी छली गई है।

मैंने प्रायः कहा है कि किसी गलत कल्पित सत्य को भुला देना किसी नए सत्य को जानने से कठिन होता है। पिछले 58 वर्षों में मैं जेनेसिस 3:22-24 में उद्‌घाटित तथ्य के महत्व को पूरी तरह और स्पष्ट रूप से नहीं अनुभव कर सका हूं, इस तथ्य को कि ईश्वर ने आमतौर ईसा मसीह के पुनरागमन के समय शैतान को हटाए जाने तक के लिए मानवजाति से पवित्र आत्मा और शास्वत जीवन को छिपा रहा है। परंपरागत ईसाई शिक्षा हमेशा से यह मान कर चलती आई है कि ईश्वर और शैतान के बीच एक लड़ाई चल रही है, कि ईश्वर क्रोधोन्मत्त होकर इसके प्रयास करता है कि ''दुनिया बचा ली जाए लेकिन इस महान संघर्ष में शैतान जीतता रहा है। दूसरे शब्दों में ईश्वर ने ईसा मसीह के पहले आगमन के समय उन्हें शैतान के खिलाफ चल रहे इस युद्ध को जीतने का प्रयास करने के लिए भेजा था। परंपरागत ईसाइयत मानती आई है कि जो भी आएगा ईसा मसीह के माध्यम से उसका उद्धार हो जाएगा।

कुछ वर्षों तक मैं आंशिक रूप से यह अनुभव करता रहा कि यह मान्यता गलत है लेकिन हाल–फिलहाल तक इस विंदु पर पूर्ण सत्य स्फटिक की तरह स्पष्ट नहीं हुआ था। यह सच, दरअसल दिमाग भन्ना देने वाला है। यह स्पष्ट करता है कि रहस्य की पर्तों में क्या ढका था।

उम्मीद की जाती है कि ईश्वर के समय से लिखी गई यह पुस्तक, क्योंकि वह समय आ गया है, लंबे समय से छिपे इन रहस्यों को बहुत–सी आंखों के सामने स्पष्ट कर देगी।

अब मेरे तिरानबेवें वर्ष में, घटना पूर्ण जीवन के समाप्त होने से पहले, यह पुस्तक लिखने के लिए मेरा मार्ग दर्शन इसलिए किया गया है कि उन ज्यादा से ज्यादा लोगों के साथ जो जानना चाहते हैं, उन उत्तरों को बांट सकू जिन्हें ईश्वर की सर्वोच्च प्रतिभा ने अपने शब्द में प्रकट किया है बशर्तें कि व्यक्ति उस शब्द को समझने का इच्छुक हो।

विषय सूची

लेखकीय.. Vii

आमुख.. 1

भूमिका

कैसे हुआ सातों रहस्यों का उद्‌घाटन.. 2

अध्याय 1

ईश्वर कौन और क्या है?... 31

अध्याय 2

देवदूत और बुरी आत्माएं... 58

अध्याय 3

मानव का रहस्य... 96

अध्याय 4

सभ्यता का रहस्य.. 136

अध्याय 5

इस्राईल का रहस्य.. 159

अध्याय 6

चर्च का रहस्य... 198

अध्याय 7
ईश्वर के राज्य का रहस्य 293

बाइबिल की विषय सूची 364

विषय सूची 372

प्रस्तावित पाठ्य सामग्री 383

आमुख

क्या आपने कभी अपने–आपसे पूछाः ''मैं कौन हूं ? मैं क्या हूं ? मैं क्यों हूं ?'' आपके आस–पास की दुनिया एक रहस्य है। आप स्वयं एक रहस्य हैं। आपने अपना मस्तिष्क कभी नहीं देखा, आपकी मेधा और आप जो कुछ भी हैं, उसका आधार।

आपका जीवन रहस्यों से घिरा है। विचार करने पर स्वयं आपका अस्तित्व ही एक रहस्य है। क्या आप बिना किसी आशय या अभिप्राय के अबुद्धिमान अंतर्निहित सांसारिक शक्तियों से हो गए या आप किसी परम प्रतिभा के सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा किसी उद्देश्य से, जो रहस्य में छिपा हुआ है, बुद्धिमानी से अभिकल्पित थे? दरअसल, स्रष्टा ईश्वर के बारे में समूचे मानव इतिहास में स्थायी परंपरा इस तरह का रहस्य रही है कि पश्चिमी दुनिया की उच्चशिक्षा ने आभासी तौर पर विकास के सिद्धांत को सर्वसम्मत स्वीकृति देकर इस रहस्य को खत्म करने का प्रयास किया है।

पंद्रहवीं सदी में छपाई का आविष्कार होने तक मानव जाति में शिक्षा का प्रसार नहीं हुआ था। जैसे–जैसे शिक्षा का व्यापक प्रसार होता गया, जैसे–जैसे बुद्धिजीविता विकसित हुई, जैसे–जैसे खगोल

विज्ञान का प्रसार होता गया, हमारे आस–पास के ब्रह्मांड के बारे में हमारे ज्ञान का प्रसार होता गया – चिंतनशील प्रतिभाएं सवाल करने लगीं। समूचा विशाल ब्रह्मांड क्या है? इस सबकी उत्पत्ति कैसे हुई? तार्किक, वैज्ञानिक रुझान वाली प्रतिभा ने धर्म की शिक्षा की मदद से एक विस्तारित ब्रह्मांड के बारे में विकासमान ज्ञान की व्याख्या करने में स्वयं को अक्षम पाया, क्योंकि वे इसे रोमन कैथलिक चर्च और प्रोटेस्टैंटवाद के माध्यम से जानते थे जो पश्चिमी दुनिया की सोच पर हावी थे। लंबे बालों और अर्द्ध स्त्रयोचित काया वाले यीशु के उपदेश और अदृश्य आत्मा से निर्मित परमेश्वर की धारणा बौद्धिक दृष्टि से उनके लिए संतोषजनक नहीं थी। यह सब बहुत बड़ा रहस्य था। अपनी आत्मघोषित विद्वान प्रतिभाओं की असारता में उन्होंने भौतिकतावाद के आधार पर पूरी तरह रहस्य की उपेक्षा करने के प्रयास किए। उन्होंने आत्मसंतुष्टिदायक, भौतिकवादी तर्कों के आधार पर उत्पत्ति, अस्तित्व और जीवन के रहस्यों का समाधान तलाशने की कोशिश करके अपनी जिज्ञासा को संतुष्ट किया।

धीरे–धीरे विकास का सिद्धांत सोच में उभर कर सामने आया, फिर भी अज्ञानी प्रतिभाएं बौद्धिक दंभ से भर गईं। यह सोच लैमार्क की ''उपयोगिकता–अनुपयोगिता'' के सिद्धांत के रूप में विकसित हुई। डी लैमार्क के सिद्धांत के पीछे–पीछे चार्ल्स डारविन ''सर्वोत्तम की उत्तरजीविता'' का अपना सिद्धांत ले आए। दरअसल, डारविन स्वयं अपने सिद्धांत को लेकर आश्वस्त हुए बिना ही मर गए। बहरहाल, दो सहकर्मी हीकेल और हक्सने ने डारविन के सिद्धांत को प्रचारित करके उसे सार्वजनिक स्वीकृति दिलाने के लिए सक्रिय संघर्ष किया।

लेकिन किसी सिद्धांत का सृजन करने वाली बौद्धिकता का दम भरने वाली सर्जित मानव प्रतिभाएं, उस परम प्रतिभा से अधिक ज्ञानी थीं जिसने उनका सृजन किया था। विकास के सिद्धांत का आविष्कार मानव चेतना द्वारा किसी दैवी सृष्टा की पूर्व उपस्थिति के बिना सृजन की उपस्थिति की व्याख्या के लिए किया गया था।

और यदि सर्वशक्तिमान ईश्वर आपका निर्माता था और जो कुछ भी है उस सबके एक दैवी सृष्टा के रूप में उसका अस्तित्व है तो ईश्वर संबंधित रहस्य कालक्रम में पहले और सबसे बड़े रहस्य के रूप में उभर कर सामने आता है।

ईश्वर कौन और क्या है? वह ऐसा रहस्य है जिसे कोई भी धर्म नहीं समझ सका, न कोई विज्ञान उसकी व्याख्या कर सका है और उच्च शिक्षा ने उसके बारे में पढ़ाया भी नहीं है। विकास के सिद्धांत के बौद्धिक रूप से असार प्रतिपादकों को धर्म द्वारा प्रस्तुत ईश्वर का अस्तित्व एक रहस्य लगा जिसे वे न समझ सके और न स्वीकार ही कर सके। लेकिन उन्होंने जिन धर्मवादियों को खारिज किया था वे भी ईश्वर के रहस्य को नहीं समझते थे। फिर भी ईश्वर ने अपने कथन, पवित्र बाइबिल के जरिए स्वयं को प्रकट किया, बशर्ते कि ये धर्मवादी ईश्वर के अपने उद्‌घाटन में विश्वास करते। जैसा कि लेखक ब्रूस बार्टन ने कहा है, बाइबिल "वह पुस्तक है जिसे कोई नहीं जानता।" बाइबिल स्वयं मूल रहस्य है जो सब कुछ का उद्घाटन करती है।

यदि ईश्वर संबंधी सत्य पहला रहस्य है बाइबिल जिसका उद्‌घाटन करती है तो देवदूतों और बुरी आत्माओं संबंधी सत्य क्रम में दूसरा है। आत्माओं का अस्तित्व सच्चाई है या मिथक? क्या आखिरकार कोई शैतान है? क्या ईश्वर ने शैतान को सिरजा है? यदि पवित्र देवदूत हैं तो उनके होने का उद्देश्य क्या है? बाइबिल स्पष्ट रूप से कहती है कि वस्तुतः इस दुनिया पर बुरी आत्माओं के अदृश्य राज्य राज करते हैं। क्या बुरी आत्माएं आज इनसानों और सरकारों तक को प्रभावित करती हैं? क्या बुरी आत्माएं आपके जीवन तक को भी प्रभावित करती हैं? यह प्रश्न पूरी तरह रहस्य से घिरा जान पड़ता है।

निश्चित रूप से तीसरे क्रम का रहस्य आपका अपना जीवन है – समूची मानवता का जीवन। मानवता क्या और क्यों है? क्या मनुष्य अमर आत्मा है? क्या मृतक जानते हैं कि जो जीवित हैं वे क्या कर रहे हैं? क्या मानव रक्त और मांस के शरीर के भीतर अमर आत्मा है। क्या मानव जीवन का कोई अर्थ और उद्देश्य है? क्या हम अबुद्धिमान भौतिक शक्तियों से बिना किसी अर्थ या उद्देश्य के विकसित हुए हैं? मनुष्य प्रकटतः असमाधेय समस्याओं से घिरा क्यों है?

अन समझे रहस्यों में चौथा रहस्य इनसान की दुनिया में विकसित हुई सभ्यता है। यह किस तरह विकसित हुई? हमें एक विस्मयकारी प्रगति और विकास की दुनिया क्यों दिखाई देती है जिसमें हमें विरोधाभाषी रूप से भयावह और आश्चर्यजनक विकास और प्रगति के साथ–साथ विरोधाभाषी रूप से भयावह और बढ़ती बुराइयों वाली दुनिया देखने को क्यों मिलती है? अंतरिक्षयान, कंप्यूटर और विज्ञान, प्रोद्योगिकी और उद्योग की चमत्कारिक चीजें बनाने वाली प्रतिभाएं उन समस्याओं को क्यों हल नहीं कर पातीं जो मानव की असहायता प्रदर्शित करती हैं?

धरती पर मानव सभ्यता के विकास में अगला रहस्य यहूदी और प्राचीन इस्राईल कौम का रहस्य है। क्या यहूदी इस्राईल की प्राचीन कौम है? ईश्वर ने एक विशेष कौम क्यों उत्पन्न की? वे ईश्वर के ''चुने हुए लोग'' क्यों हैं? क्या वे ईश्वर के चहेते हैं? क्या ईश्वर दूसरी कौमों के खिलाफ भेदभाव करता है? क्या ईश्वर व्यक्तियों का सम्मानकर्ता है? चीजों के दैवी क्रम में इस्राईल का उद्देश्य क्या है?

अब चर्च के रहस्य पर आइए। दुनिया में चर्च का संस्थान क्यों होना चाहिए? क्या इसका कोई उद्देश्य है, जिसे परंपरागत ईसाइयत का धर्म भी नहीं समझ सका? क्या चर्च ईसा का उत्पन्न किया एक चर्च है या उसमें बहुत–से अलग–अलग मत और संप्रदाय हैं? क्या चर्च ईसा द्वारा संगठित एक निश्चित प्रतिमान पर सुसंगठित है? क्या चर्च में सरकार और अधिकार है? क्या यह लाखों सदस्यों का एक विशाल सार्वत्रिक चर्च है या एक छोटा सा और उत्पीड़ित चर्च है? व्यक्ति आज सच्चे चर्च को कैसे पहचान सकता है?

अंतिम, ईश्वर के राज्य का रहस्य क्यों? यीशु के सुसमाचार का रहस्य ''ईश्वर का राज्य'' था। क्या ईश्वर का राज्य प्रत्येक व्यक्ति के भीतर की कोई चीज है? क्या यह कोई ऐसी चीज है जिसे इनसानों के दिलों में स्थापित किया जा सकता है? क्या यह चर्च का संस्थान है? या यह सिरे से कोई अलग चीज है: ईसा मसीह के असली सुसमाचार का यह रहस्य क्यों?

सात महान रहस्य हैं जो धरती पर हर इनसान के अस्तित्व से संबधित हैं। इन सभी रहस्यों की स्पष्ट सच्चाई बाइबिल में प्रकट की गई है। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि किसी भी चर्च या ब्रह्मविज्ञानी ने उसे समझा ही नहीं।

क्यों? बाइबिल सभी रहस्यों में से मूल रहस्य है।

व्यक्ति जब शुरू से बाइबिल पढ़ना शुरू करता है और अंत तक पढ़ता चला जाता है तो वह चकित रह जाता है। बाइबिल को किसी दूसरी पुस्तक की तरह नहीं पढ़ा जा सकता। यह एक रहस्य है क्योंकि यह कूट भाषा में लिखी गई पुस्तक है। यह चित्रखंड पहेली जैसी है, जिसमें संभवतः विभिन्न आकार–प्रकार के हजारों टुकड़े हैं जिन्हें केवल एक सुनिश्चित क्रम में ही लगाया जा सकता है। बाइबिल में उद्घाटित सत्य थोड़ा यहां तो थोड़ा कहीं और शुरू से अंत तक बिखरे हुए हैं, और केवल उन्हीं पवित्र आत्माओं के माध्यम से उद्घाटित हैं जिन्होंने ईश्वर के समक्ष आत्मसमर्पित और आत्मविसर्जित कर दिया था, जो अपनी गलतियों को कुकृत्यों को स्वीकारने की इच्छुक, और परमेश्वर के कथन, ईसा मसीह में विश्वास करने के लिए आत्मसमर्पणशील थीं। ईसा मसीह व्यक्ति में (साकार) शब्द थे। बाइबिल छापे में वही कथन है।

किसी व्यक्ति के पास उतनी पवित्र आत्मा नहीं हो सकती कि वह बिना पश्चाताप और ईसा मसीह में और वह जो कहते हैं उसमें निर्विवाद आस्था के बिना अकेले ईश्वर के इस कथन की समझ के प्रति मानव मन को खोल सके। केवल पश्चाताप करने के बाद ही गलत होने गलत करने और गलत आस्था

रखने की स्वीकृति आ सकती है। गलत होने की स्वीकृति किसी व्यक्ति के लिए सबसे कठिन चीज होती है। – आस्था और दोषानुभूति की चूक की स्वीकृति मिथ्या ज्ञान को भुला देने के साथ–साथ सच्चा ज्ञान प्राप्त करना।

तो क्या इसमें कोई आश्चर्य है कि बाइबिल ऐसी पुस्तक है जिसे कोई व्यक्ति जानता या समझता नहीं? या निश्चित रूप से तकरीबन कोई व्यक्ति जानता या समझता नहीं।

ईश्वर ने जान बूझ कर इस पुस्तक को कूट संकेतित किया है। ताकि हमारे आधुनिक युग तक कोई व्यक्ति इसे न समझ पाता – साभिप्राय ऐसा क्यों किया गया है? यह भी एक रहस्य है। आगे के पृष्ठ इसका खुलासा करेंगे।

डेनियल के बारहवें अध्याय में हम पढ़ते हैं कि ईश्वर का एकनिष्ठ भक्त भी इसे नहीं समझ सका कि उसे बाइबिल का कौन–सा भाग लिखने के लिए दिया गया है। उसने कहा, उसने सुना लेकिन समझा नहीं। उद्घाटक देवदूत ने कहा, ''अपने रास्ते जाओ, डेनियलः क्योंकि ये ''शब्द'' बंद हैं और अंत के समय तक के लिए मुहरबंद है'' (अधिकृत संस्करण)।

आज हम उस समय पर पहुंच गए हैं। ईश्वर ने उन लोगों की समझने के लिए उन ''शब्दों'' को खोल दिया है जिन्हें उसने चुना है, जिन्होंने उसके और उसके धन्य शब्दों के प्रति आत्मविसर्जन और आत्मसर्पण कर दिया है। डेनियल के बारहवें अध्याय में यह कहती है, अंत के इस समय पर ''बुद्धिमान'' समझेंगे लेकिन ''दुष्टों में से कोई भी नहीं समझेगा।'' तो फिर ''बुद्धिमान'' कौन हैं और बाइबिल को कौन समझेंगे?

''परमेश्वर का भय बुद्धिमत्ता का प्रारंभ है।'' (साम 111:10) और इन सब के पास अच्छी समझ होगी जो उसके आदेशों को अमल करते हैं; (वही श्लोक), फिर भी परंपरागत ईसाइय ने आमतौर ईश्वर के आदेशों को नकार दिया है। – कहती है वे समाप्त हो चुकें हैं, सूली पर कील से जड़े जा चुके हैं। इसलिए संगठित ईसाइत के पुरोहित वर्ग और ब्रह्मविज्ञानी पवित्र बाइबिल को नहीं समझ सकते और न समझते ही हैं।

तो फिर हम पुस्तक के असमंजस पैदा करने वाले इन रहस्यों को कैसे समझ और पाठक के समक्ष उनका उद्घाटन कर सकते हैं? इस प्रश्न का उत्तर इसके बाद आने वाली भूमिका में दिया गया है।

भूमिका

सात रहस्यों का उद्घाटनक कैसे किया गया था?

आज मानव के अस्तित्व का सवाल है! विज्ञान और प्रोद्योगिकी ने व्यापक संहार के हथियार बना दिए हैं जो इस धरती से *सारे मानव जीवन* को धमाके के साथ उड़ा सकते हैं!

अब इतने सारे राष्ट्रों के पास नाभिकीय हथियार हैं कि कोई भी पागल व्यक्ति नाभिकीय त्रितीय विश्वयुद्ध की आग लगा सकता है जो इस ग्रह से सारे मानव जीवन को समाप्त कर सकती है।

फिर भी ईश्वर की सच्चाई, अगर वह ज्ञात होती और उस पर काम किया जाता तो इस चुनौती और इसके अनिष्ट से मानवता को बचाया जा सकता था!

एक पल रुकें

इस पर सोचें

आप ऐसी दुनिया में रहते हैं जो विज्ञान, प्रोद्योगिकी, उच्च शिक्षा और ज्ञान के प्रसार के मामले में अत्यंत विकसित जान पड़ती है। लोग सोचते हैं कि यह महान प्रगति की दुनिया है। हमने कूंद–फांद करने के लिए चांद पर आदमी भेजे और उन्हें सुरक्षित धरती पर वापस ले आए। मानव विहीन अंतरिक्षयान मंगल की जमीन पर उतरा और मंगल की सतह के करीब से लिए चित्र धरती पर भेजे।

एक दूसरा मानव रहित अंतरिक्षयान बृहस्पति के पास से होकर गुजरा और बृहस्पति और शनि के वलयों की हैरतअंगेज तस्वीरें भेजीं। शल्यचिकित्सक इनसान के दिलों और दूसरे अंगों के प्रत्यारोपण कर रहे हैं।

यह जादूई, मनोरंजक बटन दबाओ दुनिया है जहां बड़े पैमाने पर मशीनो से काम किए जाते हैं। यह तीन अवकाश, सुरुचिसंपन्नता और स्वच्छंदता की चमक–दमक पूर्ण सपनों की दुनिया है।

लेकिन विरोधाभाषी रूप से यह अज्ञान की भी दुनिया है! यहां तक शिक्षित लोग भी नहीं जानते कि अपनी समस्याएं कैसे सुलझाएं और दुनिया की बुराइयां कैसे खत्म करें। वे शांति के रास्ते या जीवन के मूल्यों को नहीं जानते!

आज भी दुनिया की लगभग आधी आबादी अशिक्षित है, घोर गरीबी के शिकंजे में जकड़ी हुई गंदगी और दरिद्रता में जीती है। भूख और रोग के विकराल रीपर लाखों में इनसानी जानें लेते हैं।

यह दुःखी, बेचैन, कुंठित दुनिया है जिसके समक्ष एक असहाय भविष्य खड़ा है। यह बढ़ते अपराध, और हिंसा, अनैतिकता, अन्याय (इसकी कानून की अदालतों तक में), बेईमानी, सरकार और व्यापार में भ्रष्टाचार और तीसरे नाभिकीय विश्वयुद्ध का संकेत करते सतत युद्धों की मार से जर्जर दुनिया।

अधःपतन के बीच ''प्रगति'' का यह विधाभास क्यों।

ईश्वर की सच्चाई बचा सकती थी!

सच्चा धर्म – पवित्र आत्मा द्वारा बताए गए ईश्वर प्रेम से समर्पित ईश्वर का सत्य मार्ग दर्शन कर सकता था, और प्रसन्नता, प्रचुरता और शास्वत मोक्ष की ओर ले जा सकता था।

यदि आप देखें कि दुनिया के धर्मों में गलत क्या है तो आप दुनिया भर की सारी बुराइयों को परिभाषित कर सकते हैं!

धर्म क्या है? इसे ईश्वर या अलौकिक की आराधना और उसकी उपासना के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह अपने सृष्टा के साथ मनुष्य का नाता है। कुछ धर्मों ने इस परिभाषा को विकृत कर

दिया है। *वे* उस ईश्वर की उपासना नहीं करते जिसने उनको उत्पन्न किया है बल्कि वे उन देवताओं को पूजते हैं जिन्हें उन्होंने उत्पन्न किया है। धर्म में व्यक्ति का आचरण, उसके सिद्धांत, उसकी जीवनशैली, और इस जीवन के बाद के जीवन की उसकी धारणा समाहित है।

इस दुनिया की सारी धार्मिक उलझनों और इसकी सारी बुराइयों का वास्तविक कारण सात मूल रहस्यों में प्रकट किए गए हैं जो धार्मिक उलझन के इस बेबीलोन की और विश्व की परिणामी अव्यवस्था की निंदा करते है।

लेकिन अब ईश्वर का समय आ गया है। अब वह प्रवर्धित दुनिया के साथ हांक लगाने के लिए एक आवाज भेजेगा – जिसमें इस निरर्थक पागलपन से निकल कर शांति, और ईमानदारी की दुनिया में जाने का रास्ता प्रकट करने की आच्छादी शक्ति होगी जो जल्द ही धरती को अपनी *पकड़* में *ले लेगी*!

इसैया की पुस्तक में एक 'अब' की भविष्यवाणी हैः बीहड़ों में हांक लगाने वाली उसकी आवाज तुम्हें परमेश्वर के रास्ते के लिए तैयार करती है. . . . इस आवाज को जोर लगा कर उठाओ, इसे ऊपर उठाओ, डरो नहीं; कहो.. . देखो, परमेश्वर मजबूत हाथों के साथ आएगा और उसकी बाहु उसके लिए राज करेगीः देखो, उसके साथ उसका पुरस्कार है, और उसका काम उसके आगे है'' (इसैया 40:3, 9–10)।

वह आवाज अब हांक लगा रही है!

पैगंबर मलाची इसकी पुष्टि करते हैंः ''देखो, मैं अपना दूत भेजूंगा और वह मेरे सामने मार्ग प्रशस्थ करेगाः और परमेश्वर जिसे तुम तलाशते हो, अचानक अपने मंदिर में आएगा, यहां तक कि प्रसंविदा का दूत भी, जिसमें तुम खुश होते होः देखो वह आएगा, कहता है मेजबानों का मालिक'' (मलाची 3:1)

एलिजाह आने वाला है

इन दोनों भविष्यवाणियों के दुहरे निहितार्थ हैं। पहला, वे बपतिस्मादाता जॉन का उल्लेख करती हैं जिसने 1900 से भी अधिक साल पहले यीशु के मानव मंत्रिमंडल का मार्ग प्रशस्थ किया था। लेकिन आदि प्ररूप या पूर्णभागी की तरह ये भविष्यवाणियां व्यक्ति को सभी राष्ट्रों पर शासन करने के लिए राजाधिराज, मालिकों के मालिक के रूप में ईसामसीह के पुनरागमन का मार्ग प्रशस्थ करने की पूर्व सूचना देती हैं।

इसैया की भविष्यवाणी की तरह मलाची की भविष्यवाणी भी, यदि आप पहले श्लोक से लगातार पढ़ते जाएं तो ईसा मसीह के दुबारा आगमन से पहले मानव दूत के आने का उल्लेख करती है जो इस बार सभी राष्ट्रों के शासक के रूप में परम सत्ता और गरिमा के साथ आ रहे हैं!

यहां द्वैत के सिद्धांत को समझिए। ये भविष्यवाणियां एक प्ररूप और उसकी पूर्णता का उल्लेख करती हैं।

बपतिस्मादाता जॉन ने भौतिक जुदाह के येरूशलम में स्थित भौतिक चर्च में भौतिक मानव यीशु के पहले आगमन के समय जोर्डन नदी के भौतिक बीहड़ों में हांक लगाई थी। लेकिन वह उठाई गई एक आदि प्ररूपी या अग्रगामी आवाज थी, (आधुनिक छपाई, रेडियो और टीवी द्वारा बहुत बढ़ाई गई) धार्मिक अस्तव्यस्तता के आज के आध्यात्मिक वीरानों में आध्यात्मिक रूप से गौरवान्वित ईसा मसीह के अपने आध्यात्मिक मंदिर (आत्मा की अनश्वरता प्रदत्त पुनर्जीवित चर्च) में दुबारा आगमन की आसन्नता की घोषणा करते हुए। इफीसियाइयों 2:21—22)।

यीशु 1900 साल से भी पहले परमेश्वर के भावी राज्य की घोषणा करने आए थे। इस बार वह उस राज्य की स्थापना करने के लिए आ रहे हैं। अंतिम समय की अंतिम चेतावनी का वह संदेश अब प्रवर्धित शक्ति से दुनिया भर में जाने वाला है।

यह राष्ट्रों के राजाओं,, सम्राटों, राष्ट्रपतियों प्रधानमंत्रियों और धरती के सभी महाद्वीपों और राष्ट्रों की उनकी जनता तक जाने वाला है!

धार्मिक अस्तव्यस्तता के इस युग में व्यक्ति युगों के सात मूल रहस्यों को कैसे जानेगा जो आस्थाओं के संगुटीकरण में फंसी इस दुनिया की निंदा करते हैं?

थाईलैंड में आमतौर पर लोग बौद्ध, इटली, फ्रांस और स्पेन में कैथलिक; अरब जगत में इस्लामी क्यों हैं? वस्तुतः मुख्य रूप से इसलिए कि वे और उनके पास के लोग इसे सीखते हुए और उन आस्थाओं को स्वतः स्वीकारते हुए बड़े

हुए। उनमें से किसी एक से सच्चाई (उनसे छिपी हुई और उनके बचपन और वयस्कावस्था की शिक्षा की विरोधाभाषी, जिसने उन्हें घेर रखा है) का पता लगाने की उम्मीद करना असंभव होगा।

अधिकांश लोग जिन चीजों में विश्वास करते हैं, क्यों करते हैं? दरअसल, बिरले ही होंगे जो अपने अंदर झांक कर देखने के लिए पलभर रुक कर अपने–आपसे सवाल करते होंगे कि उन्होंने उन आस्थाओं को कैसे स्वीकार किया जिन्होंने उनके मन में घर कर रखा है।

सत्य का स्रोत

आपने शायद विचारक की प्रतिमा देखी होगी। आगे की ओर झुका हुआ, कुहनियां घुटनों पर टिकाए, हाथों से अपने सिर को सहारा दिए अकेला बैठा एक आदमी। समझा जाता है कि वह उसी तरह बैठा घंटों–घंटे, दिनों–दिन बस सोचता रहता है!

संभवतः वह तस्वीर दशार्ती है कि दुनिया के बहुत से धर्म इसी तरह अस्तित्व में आए।

लेकिन *विचारक* के पास *विचार करने* का *कोई स्रोत* नहीं होता! उसकी सोच का कोई आधार नहीं होता। कोई तथ्य नहीं जिसे अपनी सोच का आधार बना सके।

मानव मस्तिष्क निराधार सत्यों के उत्पादन के लिए सज्जित नहीं है!

बहरहाल, ऐसा लगता है कि कुछ लोग सचमुच सोचते हैं!

बहुत से लोग असावधानीवश स्वीकार कर लेते हैं कि उन्हें बचपन से पढ़ाया गया है। और वयस्क होकर वे उसी चीज को स्वीकार कर लेते हैं जो वे बार–बार सुने, पढ़े या पढ़ाए गए होते हैं। वे आमतौर पर बिना सवाल किए अपने समकक्षों के साथ चलते हैं। अधिकतर लोग इसे अनुभव नहीं करते लेकिन वे जिस चीज में विश्वास करते हैं उसे बिना सवाल किए या बिना प्रमाण के असावधानी पूर्वक मान लेते हैं। इसके बावजूद वे अपनी धारणाओं का जोरदार ढंग से भावनात्मक ढंग से बचाव करते हैं। धार के साथ बहना लोगों का मानवीय स्वभाव बन गया है।– भीड़ के साथ चलना– अपने आस–पास के अपने समकक्षों जैसा विश्वास और आचरण करना।

इसी तरह अधिकतर लोग जिस चीज में विश्वास नहीं करना चाहते उसे मानने से दुराग्रह से इनकार कर देते हैं। एक पुरानी कहावत हैः ''जो व्यक्ति अपनी इच्छा के विपरीत किसी चीज को मान लेता है वह हमेशा वही मानता रहेगा।''

मैं भी कोई अलग नहीं था। अपने–आपसे या अपनी इच्छा शक्ति से मैं इन महान सत्यों को कभी न तलाश पाता।

लेकिन इस तरह तो पैगंबर मूसा भी उन सच्चाइयों का पता कभी न लगा पाते जिन्हें उन्होंने बाइबिल के पहले पांच ग्रंथों में लिखा। उनके मन के द्वार खोलने और उन्हें ईश्वरीय चीजें उद्घाटित करने के लिए झोंपड़ी के जलने की घटना जैसे चमत्कारिक ईश्वरीय काम की आवश्यकता थी। मूसा ने ईश्वर को नहीं तलाशा। ईश्वर ने मूसा को बुलाया और उन्हें नियुक्त किया। स्वयं ईश्वर की आवाज सुनकर भी मूसा ने प्रतिरोध किया। वह बड़बड़ाए! उन्होंने ने महसूस किया कि वह इन काम के योग्य नहीं हो सकते। ईश्वर ने कहा कि वह मूसा के भाई आरोन को उनका प्रवक्ता बनाएगा और इस तरह को मूसा सहमत कराया। ईश्वर का समादेश अप्रतिरोध्य था। मूसा राजी हो गए।

सदियों बाद देवदूत पाल अपनी मर्जी से ईश्वर के सत्यों को जान या प्रकट न कर पाते। वह ''ईश्वर के शिष्यों के संहार और उनकी जान के खतरे को अभिव्यक्ति दे रहे थे'' (ऐक्ट्स 9:1)। लेकिन जीवंत यीशु ने उन्हें प्रहार करके गिरा दिया। वह बेहोश हो गए। उन्हें होश में लाकर उन्हें ज्ञान की और यीशु ने उनसे जो करने का निश्चय किया था, उसकी शिक्षा दी। ईसा मसीह ने व्यक्तिगत रूप से उन पर बहुत से *सत्यों* का उद्घाटन किया जिन्हें आप यहां पढेंगे।

तब फिर मैं सत्य के मूल्यवान ज्ञान को कैसे समझ सका? निश्चित रूप से आपने–आपसे से नहीं या इसलिए भी नहीं कि मैंने उनका संधान किया या अपनी किसी खूबी की वजन से भी नहीं। लेकिन ईसा मसीह ने उससे कुछ बिलकुल विपरीत तरीके से मुझ पर प्रहार किया जैसे उन्होंने देवदूत पाल पर किया था, इसके बावजूद वह प्रहार कष्ट कर भी था और प्रभावशाली भी।

इस तरह के मौलिक सत्य उद्घाटित होते हैं, किसी मानव मन में विचारे नहीं जाते। वे ईश्वर के यहां से आते हैं इनसान के यहां से नहीं! और बाइबिल में अभिलिखित सारे मामलों में पहल ईश्वर की ओर से ही की गई थी!

जेरेमिया ने प्रतिरोध किया कि उनकी उम्र कम है। लेकिन ईश्वर ने कहाः ''मत कहो कि मैं अभी छोटा हूं क्योंकि मैं जिनके यहां भेजूंगा तुम उन सबों तक पहुंचोगे और मैं जो समादेश दूंगा उसे कहोगे'' (जेरेमिया 1:7; संशोधित मानक संस्करण)। इसैया ने यह कह कर प्रतिरोध किया कि उनकी जुबान साफ नहीं है लेकिन ईश्वर ने उनसे नियत अभियान स्वीकार कराया। जोना ने एक जहाज पर भाग जाने की कोशिश की लेकिन ईश्वर ने उन्हें अपना समादेशित संदेश पहुंचाने पर विवश कर दिया। पीटर और ऐंड्रिव मछुआरे बनना चाहते थे लेकिन ईश्वर ने सब कुछ छोड़ कर अपना अनुसरण करने के लिए उनका आह्वान किया।

इसी तरह मैं विज्ञापनकर्मी बनना चाहता था, लेकिन ईश्वर ने ऐसी परिस्थितियां पैदा कीं, जो मेरी पसंद की नहीं थीं कि मैं उस अभियान से जुड़ गया वह मुझे जिससे जोड़ना चाहता था।

इस विंदु पर मैं एक बार फिर दुहराता हूं कि सारा लब्बोलुबाब यह है कि निमित्त हमेशा ईश्वर ही होता है। उसका प्रयोजन ही टिकता है। दुनिया ऐसे धर्मों से भरी पड़ी है जो कुछ खास इनसानों की कल्पना, तर्कशक्ति और अनुमान से पैदा हुए हैं। लेकिन उनके पास तर्क के कोई ठोस आधार नहीं थे। सत्य ईश्वर के यहां से उद्घाटित होता है!

लेकिन क्या बाइबिलीय सत्य सबके लिए सुगम नहीं हैं? हां, वे मानते हैं कि चर्च वही सिखाते हैं जो बाइबिल में है।

इसलिए अब मैं आपको अनुभव का संक्षिप्त ब्योरा दूंगा, जिससे ईसा मसीह ने मुझ पर प्रहार किया था, और प्रकारांतर से विस्मयकारी सत्यों का उद्घाटन किया था! बाइबिलीय सत्य– माने हुए या चर्चों द्वारा उपदेशित नहीं।

जागृतिः प्रज्वलित आकांक्षा की कौंध

मैं सामान्य लेकिन स्थिर चित्त ईमानदार माता–पिता के यहां जन्मा था, और मेरे पूर्वज क्वेकर पंथी थे। मेरी वंश परंपरा इंग्लैंड के एडवर्ड प्रथम तक और उससे भी पीछे इस्राईल के सम्राट डेविड तक जाती है। यह वंशावली और यह तथ्य जानकर मैं दंग रह गया था कि अपने परिवार के एक पक्ष से मैं वस्तुतः ''डेविक के राज परिवार'' से हूं। मेरे पूर्वज संयुक्त राज्य अमरीका के एक राष्ट्र बनने से लगभग 100 साल पहले विलियम पेन के साथ इंग्लैंड से चल कर पेंसिल वेनिया गए थे।

बिलकुल बचपन से मेरा पालन–पोषण क्वेकर (सोसायटी ऑफ फ्रेंड्स) संप्रदाय की आस्था में हुआ था। लेकिन पलने–बढ़ने के उन दिनों में धर्म में मेरी रुचि उदासीन थी।

18 की उम्र में धर्म में रुचि लेना एकदम से बंद कर दिया और चर्च भी छोड़ दिया। 18 साल की उम्र में मैं यह जानने के लिए कि मैं कहां का हूं और किस योग्य हूं और बेमेल होने से बचने के लिए गहन आत्म विश्लेषण के साथ–साथ व्यवसायों और पेशों के बारे में सर्वेक्षण करने में जुट गया था।

उस उम्र में भी मैंने पाया कि अधिकतर लोग हालात के शिकार हैं। कुछ लोगों ने बड़ी चतुराई से अपने भावी जीवन को आवश्यकता से अधिक नियोजित कर रखा था। बहुत से या अधिकांश लोग जो भी काम पा गए थे उसी में लड़खड़ा रहे थे। उन्होंने इसका चुनाव नहीं किया था कि वे कहां, देश या दुनिया के किस हिस्से में रहेंगे। वे परिस्थितियों वश जूझ रहे थे। जो कॉलेज जाते थे वे उस समय जो भी कोर्स या व्यवसाय उन्हें अच्छा लगता उसी को चुन लेते थे।

मैं अभी सिर्फ 16 का था जब गर्मियों के एक नियोक्ता ने अच्छी तरह काम पूरा करने और सामान्य तौर पर प्रोत्साहन देने के लिए मेरे मन में महत्वाकांक्षा की आग लगा दी। महत्वाकांक्षा केवल उपलब्धि की कामना नहीं बल्कि उसमें कीमत चुकाने की प्रेरणा भी शामिल होती है!

यह आत्मविश्लेषण मुझे विज्ञान के पेशे और व्यावसायिक जीवन की ओर ले गया। मैंने जवानी के आनंद लेने की जगह लगन से ''आधी–आधीरात तक जाग कर'' पढ़ाई की।

मैं असाधरण रूप से कामयाब हो गया। मैंने कठोर परिश्रम किया और ''फुर्तीले व्यक्ति'' के रूप में मेरी ख्याति फैल गई। दरअसल, इस सबसे मेरा आत्मविश्वास बढ़ गया जो आगे चलकर एक दूसरी तरह के आत्मविश्वास– ईसा मसीह में आस्था के रूप में विकसित हो गया।

मैं ऐसी जगह काम तलाशता जहां सीख सकता था और ऐसे क्षेत्र चुनता जिसमे मुझे सफल व्यक्तियों के संपर्क में आने का मौका मिलता और खुद को अपने ''नियोक्ता के हाथों बेच देता था।''

1915 में मैंने शिकागो, इलिनोइस में प्रकाशक के प्रतिनिधि की हैसियत से अपना रोजगार खड़ा किया। मैं दौड़ धूप करके संयुक्त राज्य अमरीका के बैंकों की नौ अग्रणी पत्रिकाओं का प्रतिनिधि करने लगा– इन पत्रिकाओं को बैंकों के मुख्य अधिकारी पढ़ा करते थे। मैंने पश्चिम मध्य के बहुत से राष्ट्रों के सबसे बड़े औद्योगिक निगमों के अध्यक्षों के साथ व्यापार किए। मैंने प्रांतीय और राष्ट्रीय बैंकरों के सम्मेलनों में भाग लिया, साउथ लासेले स्ट्रीट, शिकागो और वाल स्ट्रीट, न्यूयार्क के बहुत से अग्रणी बैंकरों को जानने लगा। 28 साल की उम्र में डालर की आज की कीमत के लिहाज से मेरी सालाना आमदनी लगभग 375,000 डालर थी।

मेरी व्यापारिक सफलता की इस बुलंदियों पर ईश्वर मेरे साथ मेल–जोल करने लगा। उन्हीं दिनों मेरी शादी हुई थी।

अपरिचित बुलावा

हमारी शादी के कुछ ही दिनों बाद, जब मैं शिकागो में रहता था, मेरी पत्नी ने एक सपना देखा वह सपना इतना स्पष्ट और प्रभावशाली था कि वह अभिभूत हो गईं और बुरी तरह हिल गईं। वह इतना वास्तविक था कि आंखों देखा दृश्य जान पड़ता था। उसके दो–तीन बाद सब कुछ असार सा नजर आने लगा– मानों स्तब्धता छाई हो– केवल वहीं असाधारण स्वप्न ही वास्तविक जान पड़ता था।

अपने सपने में उन्होंने देखा कि वह और मैं इस चौड़ा चौराहा पार कर रहे हैं– हमारे अपार्टमेंट से केवल एक या दो ब्लॉक आगे जहां चौड़ी सड़क शेरिडन रोड़ को आड़े काटती है। अचानक वहां असमान में एक आश्चर्य जनक दृश्य दिखाई पड़ा। वह चकाचौंध कर देने वाला दृश्य था – आसमान बैनर के आकार के एक चमकदार तारों के एक विशाल ठोस पिंड से भरा था। तारे कांपने और छितराने लगे और अंततः ओझल हो गए। सपने में उसने मेरा ध्यान छिपते तारों की ओर आकर्षित कराया इतने में चमकदार तारों का एक और विशाल चमकदार तारों का एक और विशाल चमकदार समूह दिखाई पड़ा और उसके बाद वह भी पहले की तरह लरजने, छितराने लगा और छिप गया।

सपने में उन्होंने और मैंने आंखें उठा कर छिपते तारों की ओर देखा, अचानक हमारे और छिपते तारों के बीच आसमान में तीन बड़ी–बड़ी सफेद पक्षियां प्रकट हुईं। ये विशाल पक्षियां उड़ कर सीधा हमारी ओर आईं। जब वे करीब आईं तो मेरी पत्नी को लगा कि वे फरिश्ते हैं।

''तब,'' मेरी पत्नी ने वह स्वप्न देखने के एक या दो दिन बाद मेरी मां को एक पत्र लिखा कि मैं अभी–अभी पुराने पारिवारिक चित्रों से होकर अभी–अभी पुराने पारिवारिक चित्रों से होकर गुजरी हूं, ''मुझे लगा कि ईसा मसीह आ रहे हैं, और मैं इतना खुश हुई कि मैं खुशी से रो पड़ी। उसके बाद मैंने हर्बर्ट के बारे में सोचा और चिंतित हो उठी।''

वह जानती थीं कि मुझमें धार्मिक रुचि बहुत कम है, हालांकि हम नुक्कड़ पर बड़े चर्च में दो या तीन बार गए थे।

उसके बाद उनके सपने में ऐसा प्रतीत हुआ कि उनके बीच से ईसा मसीह उतरे और हमारे सामने आ खड़े हुए। पहले मुझे हल्का सा संदेह हुआ और हम डरे भी कि वह हमें कैसे लेंगे क्योंकि हमने बाइबिल के अपने अध्ययन की उपेक्षा की थी और अपना दिमाग बहुत अधिक लगा रखा था जिसमें उनकी कोई खास रुचि नहीं थी! लेकिन जब हम उनके पास गए उन्होंने हम दोनों को अपनी बांहों में भर लिया और हम बहुत खुश हुए! हम जहां तक देख सके इस विस्तृत चौराहे पर लोगों का हुजूम उमड़ रहा था। कुछ लोग प्रसन्न थे तो कुछ दुःखी थे।

''उसके बाद लगा कि फरिश्ते का रूप धारण कर लिया है। पहले तो मैं बहुत निराश हुआ, जब तक कि उन्होंने मुझसे यह नहीं कहा कि ईसा मसीह सचमुच बहुत जल्द आ रहे हैं।''

उस समय तक हम नियमित रूप से सिनेमा घरों में जाते थे। उन्होंने फरिश्ते से पूछा कि क्या यह गलत है? वह मुस्कराए, ईसा मसीह के पास हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण काम है।– उनके आगमन की तैयारी का काम। फिल्मों के लिए समय ही नहीं होगा। (वे मूक फिल्मों के दिन थे।)।

उसके बाद फरिश्ते और वह सारा दृश्य तिरोहित होता जान पड़ा और वह विचलित और अचंभित सी होश में आईं!

सुबह उन्होंने मुझे अपने सपने के बारे में बताया। मैं आकुल हो उठा। मैं उसके बारे में नहीं सोचना चाहता था लेकिन उसे पूरी तरह खारिज करते हुए भी मुझे डर लग रहा था। मैंने इससे बचने और साथ ही साथ इसका हल निकालने का एक तर्कसंगत रास्ता सोचा।

''तुम इसके बारे में नुक्कड़ वाले चर्च के पादरी को क्यों नहीं बताती,'' मैंने सुझाव दिया। ''और उससे पूछती कि क्या इसका कोई अर्थ भी है।''

इसी के साथ मैंने इसे अपने मन से निकालने की व्यवस्था कर ली।

मुझे कहने दीजिए कि आज के जमाने में जब लोग सपने में ईश्वर को देखने या उससे बातें करने की बात करते हैं तो 100,000 में से 99,999 मामलों में वह कोरी कल्पना या किसी न किसी तरह का आत्म सम्मोहन या आत्म प्रवंचना होती है। लेकिन याद जोना की तरह ईश्वर का दर्शन रहा हो तो, मैंने भाग जाने की कोशिश की। लेकिन इसके बाद, ईश्वर के नियत समय में, ईश्वर में मुझसे संपर्क किया और उसका संपर्क मूसा, इसैया, जेरेमिया, जोना, ऐंड्रिव, पीटर और देवदूत पाल की तरह अनिश्चित तरीके का नहीं था।

व्यापार छिन्न–भिन्न हो गया

उसके बाद 1920 की तबाह कुन अल्पकालिक मंदी आ गई। वह ज्यादा देर नहीं रही लेकिन उस साल के लिए ध्वंसक थी। महानगरी बैंकों के बजाय मेरे बड़े विज्ञापन खाते खेती के ट्रैक्टरों और औजारों और दूसरे उत्पादक क्षेत्रों में थे। मेरे सभी बड़े कमीशन ग्राहक, जिनमें गुडईयर टायर ऐंड रबर, जेआई केस, मोलाइन प्लाऊ, जॉन डीरे ऐंड कंपनी, इमर्शन ब्रैटिंधम और डाल्टन एडिंग मशीन जैसे बड़े निगम शामिल थे, रिसीवरों के हाथ में चले गए। राष्ट्रीय स्तर पर जाने वाले एक निगम मेरे परिचय के अध्यक्ष ने आत्म हत्या कर ली। मेरे कारोबार को ऐसा शक्तियों ने, जिन पर मेरा कोई जोर नहीं था मेरे पैरों के नीचे से खींच लिया, जबकि उसमें मेरा कोई दोष नहीं था।

पोर्टलैंड, ओरेगांव से, जहां मैं अपने परिवार के साथ चला गया था, मैंने लॉन्ड्री मालिकों के लिए विज्ञापन सेवा प्रारंभ की। लॉन्ड्री व्यवसाय सबसे पिछड़ा होने के बावजूद डॉलर के अर्थों में देश का ग्यारहवां सबसे बड़ा उद्योग था। मैंने एक कारगरता विशेषज्ञ के साथ टीम बनाई जो मेरी जानकारी में देश का अपने क्षेत्र का चोटी का आदमी था। मैंने सिर्फ वही ग्राहक लिए जो मुझे अपने व्यवसाय को नयी कारगरता के आधार पर चलाने की अनुमति देते थे। धुलाई सेवा की गुणवत्ता और व्यापार के तरीके, दोनों मामलों में मैं जिसकी निगरानी करता था। मुझे विज्ञापन में ऐसे वादे करने होते थे हमारे ग्राहक जिन्हें पूरा कर सकें।

लेकिन 1926 में पूरब की एक राष्ट्रीय विज्ञापन एजेंसी ने राष्ट्रीय महिला पत्रिकाओं में बड़े विज्ञापन देने के लिए लॉन्ड्री ओनर्स नेशनल असोसिएशन को माल का एक बिल बेचा। अशोसिएशन को प्रत्येक सदस्य को अपनी पत्रिका के विज्ञापन के लिए प्रत्येक स्थानीय लॉन्ड्री के तर्क संगत विज्ञापन खर्च के लगभग 85 प्रतिशत तक के विज्ञापन के लिए बचनबद्ध करने का अधिकार था। इस सौदे के पक्का हो जाने तक मुझे इसके बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं था। मैं अपने प्रत्येक ग्राहक का कारोबार दूना–तीन गुना कर रहा था। मेरा व्यापार बढ़ रहा था। एक बार फिर मेरा एक अत्यंत सफल कारोबार मेरे पैरों के नीचे से खींच लिया गया और उसमें मेरा कोई दोष नहीं था।

लेकिन एक कारण था– ईश्वर मेरा विज्ञापन का कारोबार खींच रहा था।

उलझनकारी दुहरी चुनौतियां

उसके बाद 1926 के अंत में 34 वर्ष की उम्र में लगा कि छत धस गई है और मैं उसके नीचे दब गया हूं! मैं बहुत ही उलझनकारी दुहरी चुनौतियों का सामना कर रहा था।

खुशी विवाहित जीवन के नौ साल बाद मेरी पत्नी ने रविवार की जगह सात दिन का सैबथ रखना शुरू कर दिया! मैं स्तब्ध था!

मैं गुस्सा था। मेरी नजर में वह धार्मिक धर्मांधता थी! व्यापारिक संपर्कों के लोग क्या सोचेंगे? लेकिन उन्होंने दावा किया कि उन्हें बाइबिल से उपदेश मिले हैं।

मेरे दिमाग में उस समय जो भी तर्क आए सब व्यर्थ थे।

''लेकिन बाइबिल कहती है'' मैंने आपत्ति की, ''तुम रविवार मनाओगे!''

''क्या तुम मुझे बाइबिल में इसे दिखा सकते हो?''

''अच्छा, नहीं,'' मैंने जवाब दिया, ''मैं बाइबिल के बारे में ज्यादा नहीं जानता। मेरी रुचि और मेरा कारोबार विज्ञापन से संबंधित था। लेकिन ये चर्च ते गलत नहीं हो सकते – वे बाइबिल से अपनी आस्थाएं लेते हैं और वे सभी रविवार मनाते हैं।''

''यदि,'' वह निश्छल मुस्कान मुस्कराई – लेकिन मेरे लिए आश्चर्यजनक लहजे में कहा, ''क्या तुम मुझे दिखा सकते हो कि बाइबिल कहां रविवार की छुट्टी मनाने का समादेश देती है, मैं इस पर वापस लौट आऊंगी।''

चुनौती से बचने का कोई रास्ता नहीं था। मेरी शादी इस पर निर्भर थी!

संयोग से मेरी एक साली ने, जिसने नई–नई शादी की थी और अभी कॉलेज की पढ़ाई पूरी की थी, मुझे एक दूसरी अपमानजनक चुनौती दे दी।

''हर्बर्ट आर्म्सट्रांग,'' उसने अवज्ञा से आरोप लगाया, ''तुम बस सहज अज्ञानी हो! हर व्यक्ति जिसने थोड़ी–सी भी शिक्षा पाई है जानता है कि मानव जीवन विकास का परिणाम है।''

मैं स्वाभिमानी था। मैंने अपनी पढ़ाई या शिक्षा की उपेक्षा नहीं की थी। मैंने सोचा कि मैं विकास संबंधी तथ्यों के बारे में जानता हूं, और मैं उनमें विश्वास नहीं करता था। लेकिन अब मुझे लगा कि मैंने इस प्रश्न का कभी विस्तृत और गहन अध्ययन नहीं किया था।

मेरी पत्नी की ''धर्मांधता'' के बाद यह चुनौती अपमान जनक थी। मेरे व्यापार के दूसरी बार बर्बाद हो जाने के बाद इस दुहरे आघात ने मेरे अभिमान को तत्काल चोट पहुंचाई। इसका प्रभाव घातक था। यह अत्यंत कुंठाजनक था इसके बावजूद मुझे अपनी पत्नी और साली, दोनों को गलत साबित करना था।

उस दुहरी चुनौती ने मुझे लगभग रातो–दिन के शोध का निश्चय करने की प्रेरणा दी। मेरे प्रमाणित उत्तर पा लेने तक वह गहन अध्ययन छह महीने तक जारी रहा। इसके बावजूद वह अध्ययन आज भी बंद नहीं हुआ है।

दोनों चुनौतियों ने एक साझा प्रस्थान विंदु पर ध्यानकेंद्रित कराया – बाइबिल में जेनेसिस की पुस्तक और उत्पत्ति का विषय – हालांकि वह बस शुरुआत थी।

यह चुनौतियां मेरे जीवन में तब आईं जब मेरे पास भरपूर समय था। मैं गहन एकाग्रता से अध्ययन में डूब गया।

बाइबिल और डारविन पर शोध

मैंने जेनेसिस में शोध नहीं शुरू की। पहले मैंने डारविन, लायेल, हीकेल, हक्सले, स्पेंसर, वोग्ट, चैंबरलिन और मोर के, और लैमार्क के भी प्रारंभिक कार्यों और उनके ''उपयोगिता अनुपयोगिता'' सिद्धांत का गहन अध्ययन किया। जो डारविन के ''श्रेष्ठतम की उत्तरजीविता की परिकल्पना से पहले आया था।

तात्कालिक रूप से ये लेखन प्रत्यायक लगे (निश्चित रूप से या सार्वभौम रूप से उच्च शिक्षा में स्वीकृति पा चुके हैं।) मुझे तुरंत लग गया की शिक्षा जगत किस तरह विकास की धारणा से जकड़ा हुआ है।

विकास प्रज्ञावान स्रष्टा के बिना सृष्टि की उपस्थिति की अज्ञेयवादी या अनीश्वरवादी व्याख्या का प्रयास है। मेरे शोध के इस शुरुआती चरण ने ईश्वर के अस्तित्व में मेरी आस्था को बुरी तरह हिला दिया। मुझे एहसास हुआ कि मैंने ईश्वर की सच्चाई को इसलिए मान लिया था कि मैंने बचपन से ही इसके बारे में सुना था और इस लिए इसे मान लिया था। क्योंकि कुछ देर के लिए मेरा सर तैरने लगा था। क्या मैं जिन चीजों में विश्वास करता था वह सारी चीजें आखिरकार महज मिथक थी, गलती थीं! अब मैंने सच्चाई जानने का निश्चय कर लिया! मेरा मन पूरी तरह साफ हो गया और उसमें से वे सारे विचार और आस्थाएं जो पहले से स्वीकृत थीं साफ हो गईं।

विकास संबंधी सारे लेखनों में डॉ. पीई मोर ने इस सिद्धांत में बहुत–सी खामियां निकालीं थीं। फिर भी वह इस सिद्धांत से पूरी तरह सहमत हैं।

लेकिन अब मुझे सबसे पहले ईश्वर के अस्तित्व को साबित करना या गलत साबित करना था। यह कोई अनौपचारिक या सतही अध्ययन नहीं था। मैंने यह अध्ययन जारी रखा जैसे इस पर मेरा जीवन निर्भर था– सच बात यह है कि वह सचमुच निर्भर था और मेरी शादी भी। मैंने इस प्रश्न के दूसरे पहलू से संबंधित किताबें भी पढ़ीं।

यहां यह कहना पर्याप्त होगा कि मैंने स्रष्टा ईश्वर के अस्तित्व के अकाट्य प्रमाण पा लिए। हालांकि कॉलेजों की असंख्य श्रृंखला ने इसके विपरीत बलपूर्वक लोगों का मत प्रवर्तित कर रखा है। मुझे एक पीएचडी की स्वीकृति का संतोष है जो विकास के सिद्धांत पर गहराई तक डूबा हुआ था–जिसने शिकागों विश्वविद्यालय और कोलंबिया में स्नातक काम में वर्षों लगाए थे उसके अध्ययन ने निश्चित रूप से विकासवाद के वृक्ष का तना काट दिया था। डॉ. मोर की तरह हालांकि विकासवाद को मानने के लिए बलपूर्वक इस कदर उसका मन बदल गया था कि उसे उसमें अपना अध्ययन जारी रखना था जिसे उसने स्वीकार किया कि उसकी नजर में इसके झूठे होने के सबूत हैं।

इसके अलावा मुझे इसकी अपनी साली को अपने कहे वे शब्द ''वापस लेने'' पर विवश करने का सुख भी मिला जिन शब्दों में उसने मुझे ''अज्ञानी'' कहा था। यह सब मेरी तरफ से मिथ्याभिमान का मामला था जिसे मैं अभी तक खत्म नहीं कर सका था।

मैंने महान ऐश्वर्यशाली ईश्वर की असलियत को साबित कर दिया था! लेकिन मेरी पत्नी की चुनौती अब भी मेरे मन को कचोट रही थी। विकास पर शोध के क्रम में मैं जेनेसिस पढ़ चुका था।

मैं जानता था कि दुनिया के प्रत्येक धर्म का अपना पवित्र लेखन होता है। ईश्वर की वास्तविकता के साबित हो जाने के बाद मैं यह देखने के लिए धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन जारी रखने की अपेक्षा करता था कि क्या इस तरह के पवित्र लेखन अधिकारिक साबित होते हैं। इनमें से किसके माध्यम से ईश्वर यदि किसी के माध्यम से करता है– मनुष्य से बात करता है?

चूंकि मुझे सैबथ के सवाल पर शोध करना था और मैं पहले ही जेनेसिस का अध्ययन कर चुका था इसलिए मैंने बाइबिल का अपना अध्ययन जारी रखने का फैसला किया।

एक समय पर एक सिद्धांत

मैंने प्रारंभ में रोमनों 6:23 में यह परिच्छेद देखाः ''पाप की मजदूरी मृत्यु है।'' मैं विस्मित होकर रुक गया। मजदूरी तो वह होती है जो व्यक्ति को उसके किए काम के बदले दिया जाता है। मैं यहां एक ऐसे वाक्य पर घूर रहा था जो मेरे रविवारी स्कूल की शिक्षा से बिलकुल विपरीत था (18 साल की उम्र से पहले)।

''क्यों?'' मैने सोचा, ''ऐसा कैसे हो सकता है? मुझे चर्च में पढ़ाया गया था कि ''पाप की मजदूरी शास्वत जलते नर्क में चिरंतन जीवन है।''

उसी श्लोक के अंतिम भाग को पढ़ते हुए मुझे दूसरा सदमा लगाः ''लेकिन हमारे मालिक ईसा मसीह के माध्यम से शास्वत जीवन ईश्वर का उपहार है।''

''लेकिन'', मैंने मोह भंग की अवस्था में प्रश्न किया, ''मैं तो सोचता था कि मुझे पहले से शास्वत जीवन प्राप्त है– मैं हूं या मेरे पास अमर आत्मा है। मुझे इसे उपहार में इसे पाने की क्या जरूरत है?''

मैं बाइबिल की एक शब्दानुक्रमणिका के जरिए आत्मा शब्द पर शोध किया। मुझे यह कथन दो बार मिलाः ''जो आत्मा पाप करती है वह मरेगी।'' (एजाकिएल 18:4 1820)।

उसके बाद मुझे याद आया कि मैंने जेनेसिस 2 में पढ़ा है कि ईश्वर में पहले मानवों से जो आत्माएं थे किस तरह कहा, ''लेकिन तुम अच्छे–बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल तुम नहीं खाओगेः क्योंकि जिस दिन तुम उसका फल खा लोगे तुम निश्चित रूप से मरोगे।''

जेनेसिस 2:7 में मैंने पढ़ा कि ईश्वर ने किस तरह धरती की धूल से मनुष्य को बनाया और उसके नथनों में जीवन की श्वास फूंकी और मनुष्य (मिट्टी का पदार्थ) ''एक जीवित प्राणी बन गया।'' यह स्पष्ट रूप से कहता है कि आत्मा पदार्थ की बनी भौतिक रचना है। मैंने पाया कि अंग्रेजी का शब्द 'सोल' हिब्रू के *नेफेस* का अनुवाद है। और जेनेसिस 1 में पक्षी मछली और जानवर तीनों–नेफेस थे, जैसा लिखने के लिए मूसा प्रेरित किए गए थे।

उसके बाद मैंने वहां पढ़ा जहां यीशु कहते हैं, ''कोई भी व्यक्ति स्वर्ग नहीं गया है, सिवा उसके जो स्वर्ग से नीचे आया है, यहां तक कि मानव का बेटा भी'' (जॉन 3:13)। मैंने स्वर्ग और नर्क के उपदेशों को फिर से पढ़ा। मैंने वहां देखा जहां प्रेरित पीटर, उस दिन जिस दिन उन्हें पवित्र आत्मा मिली, कहा है, ''क्योंकि डेविड स्वर्ग नहीं गए हैं'' (ऐक्ट्स 2:34)।

बाइबिल के इस महान गहन अध्ययन में मैंने सभी बाइबिली सहायताएं ली थीं– शब्दानु क्रमणिकाएं, मिस्री– अंग्रेजी और हिब्रू– अंग्रेजी शब्दकोश और धार्मिक विश्वज्ञान कोष। इनमें से बाद की तीनों चीजें विद्वतापूर्ण लेकिन ऐहिक दिमागों का काम हैं। ऐतिहासिक तथ्यों और भौतिक और सांसारिक प्रकृति के पदार्थों के मामले में उन्होंने शोध में मदद की। लेकिन ईश्वर के आध्यात्मिक ज्ञान के प्रकटन में मुझे वे बहुत कम उपयोगी लगीं।

संदिग्ध परिच्छेदों में मैंने शब्दों के साथ हिब्रू के प्राचीन विधान और यूनानी के नवविधान का भी उपयोग किया। और मैंने उस समय प्रकाशित सभी अनुवादों और संस्करणों का उपयोग किया – विशेष रूप से मोफत, फेटार फेंटॉन, स्मिथ गुडस्पीज, अमरीकी संशोधित और विलियम का नव विधान।

मेरा अनूठा अनुभव

मेरा शोध सेमिनरी में छात्रों के शोध से पूरी तरह अलग था। वे उस चीज को आत्मसात करते हैं जो उन्हें अपने वर्ग के सिद्धांत में पढ़ाया जाता है। शिक्षा स्मृति के प्रशिक्षण का मामला बन गई है। बच्चों और वयस्क दोनों तरह के छात्रों से यही अपेक्षा की जाती है कि उन्हें जो भी पढ़ाया जाता है वे उसे स्वीकार और याद करें।

उदाहरण के लिए एक प्रारंभिक कक्षा में अध्यापिका ने मेरे पोतों में से एक से पूछा, ''अमरीका की खोज किसने की?''

''इंडियनों ने,'' मेरे पोते ने तत्परता से उत्तर दिया। अध्यापिका हतप्रभ थी।

''नहीं, लैरी, क्या तुम नहीं जानते कि अमरीका को खोज कोलंबस ने की!"

''नहीं मैम; कोलंबस जब अंततः यहां पहुंचा तो उसकी अगवानी करने के लिए इंडियन यहां पहले से मौजूद थे।''

लड़के को शून्य दिया गया और उसे सख्त निर्देश दिए गए कि वह हमेशा वही याद करे जो किताब कहती है, कोलंबस ने अमरीका की खोज की थी!

हाईस्कूल या विश्वविद्यालय के शिष्य या छात्र को वही चीज याद करने और मानने के लिए अंक दिए जाते हैं जो उसे पाठ्यपुस्तक, अध्यापक, प्रशिक्षण, प्राध्यापक द्वारा पढ़ाया जाता है।

मैंने 1927 में *द प्लेनट्रुथ नामक* पत्रिका की जो पहली डमी प्रति तैयार की– पत्रिका के प्रकाशित होने से सात साल पहले– मैंने एक कलाकार से एक स्कूली कक्षा का एक चित्र बनवाया था जिसमें छात्र डेस्कों पर बैठे थे और उनके सिरों पर एक कुप्पी लगी हुई थी। एक अध्यापिका प्रत्येक छात्र के सिर में एक घड़े से तैयार शुदा प्रचार गिरा रही थी।

मेथडिस्ट सेमिनरी में नामांकित छात्र के सिर में मेथडिस्ट सिद्धांत और उपदेश भरे जाते हैं। कैथोलिक सेमिनरी में पढ़ने वाले कैथोलिक छात्र को रोमन कैथोलिक के उपदेशों की शिक्षा की जाती है। प्रेस्बीटेरियाई सेमिनरी के छात्र प्रेस्बीटेरियाई सिद्धांत के पाठ पढ़ाए जाते हैं जर्मनी में इतिहास के अध्ययेता को प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध का एक अलग इतिहास पढ़ाया जाता है लेकिन संयुक्त राज्य अमरीका में उसका अलग रूपांतरण पढ़ाया जाता है।

लेकिन मुझे जीवंत ईश्वर ने विशेष रूप से बुलाया था। लेकिन मैं उससे बिलकुल उल्टा साबित करने की कोशिश कर रहा था जिसे मैंने पाया कि स्पष्ट रूप से और बिना किसी चूक के वह है जो बाइबिल कहती है! ईसा मसीह ने मुझे उस चीज की शिक्षा दी जिसमें मैं विश्वास नहीं करना चाहता था, लेकिन उन्होंने मुझे जो दिखाया वह सच था!

ईसा मसीह *दूसरे व्यक्ति, ईश्वर* के शब्द हैं। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से 12 मूल अग्रदूतों और अग्रदूत पॉल को शिक्षा दी। आज बाइबिल ईश्वर के वही छपे शब्द है। इस तरह वही ईसा मसीह थे जिन्होंने 27 ईस्वी के प्रारंभ में मूल अग्रदूतों को और 1,900 साल बाद 1927 के प्रारंभ में मुझे शिक्षा दी।

और यहां मुझे यह कहने की अनुमति दें कि ईश्वर के सत्य के उद्‌घाटन का मेरा अध्ययन कभी बंद नहीं हुआ। आगे चल कर ईसा मसीह ने तीन उदारवादी आर्ट कॉलेजों की स्थापना में मेरा उपयोग किया जिनमें से एक इंग्लैंड में है। निरंतर अध्ययन, अध्यापन और धार्मिक कोर्सों के मनस्वी संकाय सदस्यों के साथ काम करते हुए मेरा मन हमेशा खुला रहा। और ईश्वर के उद्‌घाटित सत्य का ज्ञान बढ़ा है।

लेकिन अपने गहन अध्ययन के शुरुआती छह महीने में मैं यह सीखने, खोजने की एक प्रक्रिया से गुजर रहा था कि चर्च के उपदेश बाइबिल के सत्य के व्यासीय रूप से विपरीत हैं।

अपने–आपको झुकाना

यह बाइबिल के मेरे अध्ययन और धर्मांतरण के लंबे, व्यापक और गहन विवरण देने की जगह नहीं है। मैं अपने संतोष के लिए यह साबित करने में जी–जान से लगा था कि इन चर्चों की शिक्षा गलत नहीं हो सकती क्योंकि उनकी शिक्षा का स्रोत बाइबिल है!'' यहां यह सहज तथ्य महत्वपूर्ण है कि मुझे पवित्र बाइबिल के ईश्वर के उद्‌घाटित शब्द के रूप में दैवी प्रेरणा और परम अधिकार के अकाट्य प्रमाण मिले। निष्पक्ष अध्ययन से सारे तथाकथित विरोधाभास काफूर हो गए।

मानव मन के लिए कठिन चीज होता है यह स्वीकार करना कि वह गलत है। दूसरों के मुकाबले मेरे लिए यह कोई अधिक आसान नहीं था। लेकिन परिस्थितियों के माध्यम से ईश्वर मुझे वहां ले आया जहां के लिए उसने मुझे इच्छुक बनाया था।

मेरे लिए अत्यंत निराशा और खीज की बात थी कि अपनी पत्नी की ''धर्मांधता'' के मामले में मुझे ''नीचा देखना'' पड़ा। उस समय मैं इस पर विश्वास नहीं करना चाहता था। लेकिन तब तक में मैं काफी दिमागी कसरत कर चुका था। मुझे उस सिद्ध सत्य को स्वीकार करना ही था जिसे मैं मानना नहीं चाहता था!

यह स्वीकार करना अपमानजनक था कि मेरी पत्नी सही थीं और हमारे बीच हुए सबसे गंभीर तर्क में मैं गलत था।

मोहभंग

मेरे लिए अत्यंत निराशापूर्ण विस्मय की बात थी कि मैंने पाया कि चर्च की बहुत सी लोकप्रिय शिक्षाएं और आचरण बाइबिल पर आधारित नहीं थे। जैसा कि इतिहास के शोध से पचा चला है, उनकी उत्पत्ति पैगनवाद से है। बाइबिल की असंख्य व्याख्याएं इसकी भविष्यवाणी करती हैं। विस्मयकारी, अविश्वसनीय सत्य यह है कि तथाकथित ईसाइयत की इन लोकप्रिय आस्थाओं, आचरणों का स्रोत बड़े पैमाने पर पैगनवाद, और मानवीय तर्क और परंपराएं हैं, *बाइबिल नहीं*!

पहले मुझे संदेह था, उसके बाद मैंने प्रमाण के लिए शोध किया और इसके प्रमाण कि ईश्वर है, कि पवित्र बाइबिल वस्तुतः मानव जाति के लिए दैव प्रेरित उद्‌घाटन और निर्देश है। मैंने पढ़ा था कि आदमी का ईश्वर वह होता है व्यक्ति जिसका आज्ञापालन करता है। 'लॉर्ड' शब्द का अर्थ है मालिक– वह आप जिसका कहा मानते हैं! मैंने पाया है कि अधिकतर लोग सच्चे स्रष्टा के खिलाफ विद्रोह करते हुए मिथ्या ईश्वर का आज्ञापालन करते हैं जो ब्रह्मांड का परम शासक है।

तर्क ईश्वर के आज्ञापालन के एक विंदु पर खत्म हो गया था।

सत्य के प्रति मेरी आंखों के खुलने से मैं अपने जीवन में चौरस्ते पर आ खड़ा हुआ। इसे स्वीकार करने का आशय अपने लोगों को विनम्र और निरभिमानी लोगों के वर्ग के हवाले करना था जिन्हें मैं निकृष्ट मानता था। इसका आशय इस दुनिया के ऊंचे, शक्तिशाली और धनवान लोगों से नाता तोड़ना था जिसकी मैं कामना करता था। इसका आशय था जीवन में संपूर्ण बदलाव!

जीवन मृत्यु का संघर्ष

इसका अर्थ था असली प्रायश्चित क्योंकि अब मुझे लगा कि मैं ईश्वर के नियम तोड़ रहा था। मैं सैबथ संबंधी समादेश के अलावा और भी कई तरह से ईश्वर के खिलाफ विद्रोह कर रहा था। इसका आशय था समाज के रास्ते चलने या रक्त मांस के मनुष्य और मिथ्याभिमान के रास्ते चलने के बजाय बाइबिल के रास्ते– बाइबिल के प्रत्येक शब्द के अनुरूप जीना था।

जिंदगी बची हुई जिंदगी भर यात्रा करते रहने का मामला था। मैं निश्चित रूप से चौराहे पर खड़ा था!

लेकिन मैं हार गया था। ईश्वर ने मुझे हरा दिया था— लेकिन मैंने इसे अनुभव नहीं किया। बार—बार की व्यापारिक पराजय, असफलता के बाद असफलता ने मेरा आत्मविश्वास खत्म कर दिया था। मैं अंदर से टूट गया था। मेरे अंदर का स्व मरना नहीं चाहता था। मैं इस अपयशी हार से ऊपर उठना और अभिमान और इस दुनिया के लोकप्रिय तरीके से चलने के प्रयास करना चाहता था।

मैं इसी दुनिया का हिस्सा था। उस समय मैंने यह अनुभव नहीं किया था कि यह ईश्वर की नहीं शैतान की दुनिया है। मुझे अनुभव हुआ कि ईश्वर के सत्य को स्वीकारने का आशय है इस दुनिया से बाहर बुलाया जाना— इस दुनिया और इसके तौर—तरीकों को छोड़ना और काफी कुछ हद तक इस दुनिया के अपने मित्रों और सहयोगियों को छोड़ना। इस दुनिया, इसके तौर—तरीकों, हितों, सुखों को छोड़ना मरने जैसा था। और मैं मरना नहीं चाहता था। मैंने सोचा कि ईश्वर ने जिस किसी को भी बुलाया है, उसे जो सबसे बड़ी परीक्षा देनी पड़ी है वह इस दुनिया को छोड़ने और इसका हिस्सा होने की परीक्षा रही है। लेकिन अब मैं जान गया हूं कि इस दुनिया के रास्ते गलत थे! मैं जानता था कि इसकी अंतिम सजा मृत्यु है। लेकिन मैं अभी नहीं मरना चाहता था! यह सचमुच जीवन की लड़ाई थी— जिंदगी और मौत की लड़ाई थी। अंत में मैं लड़ाई हार गया। क्योंकि हाल के वर्षों में मैं सारी सांसारिक लड़ाइयां हारता चला आ रहा था।

अंतिम हताशा में मैंने खुद को उसकी दया पर छोड़ दिया। यदि वह मेरे जीवन का उपयोग कर सकता है तो मैं इसे उसके हवाले कर दूंगा। — दैहिक आत्महत्या करके नहीं बल्कि जीवित त्याग के रूप में, उसकी मर्जी के अनुसार उपयुक्त होकर। मेरे लिए अब यह किसी काम का नहीं था।

मैंने सोचा कि मैं सिर्फ एक बेकार मानव कचरा हूं। कचरे की टोकरी में फेंके जाने योग्य।

ईसा मसीह ने अपनी मृत्यु से मेरे जीवन का मोल चुका कर मुझे खरीद लिया था। यह वस्तुतः उन्हीं का था और अब मैंने उनसे कहा कि वह इसे ले सकते हैं। लेकिन यह उनका काम था कि इसे अपने औजार के रूप में इस्तेमाल करते और यदि उन्हें लगता था कि वह इसका उपयोग कर सकते हैं।

हार में खुशी

ईश्वर के आगे यह आत्मसमर्पण– यह प्रायश्चित दुनिया का यह त्याग मित्रों–सहयोगियों और प्रत्येक चीज का त्याग ऐसी कड़वी गोली था जिसे मैंने पहली बार निगला था। लेकिन यह इकलौती दवा थी जिसने सारी जिंदगी में पहली बार लाभ पहुंचाया!

क्योंकि मैं सचमुच अनुभव करने लगा था कि मैं इस समूची हार में ऐसी खुशी अनुभव कर रहा हूं जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। मुझे सचमुच बाइबिल के अध्ययन में खुशी मिली– नये सत्य की खोज में जो अभी तक मेरे अवचेतन से छिपा था। पूर्ण प्रायश्चित में ईश्वर में आत्मसमर्पण करने में, ईसा मसीह को अपना उद्धारक और अपना वर्तमान उच्च धर्माध्यक्ष स्वीकार करने में अकथनीय खुशी प्राप्त की।

मैंने हर चीज को एक नई और अलग रोशनी में देखना शुरू किया। अपने स्रष्टा, अपने ईश्वर के आगे आत्मसमर्पण को कठिन और कष्टकर अनुभव क्यों होना चाहिए? ईश्वर के सही रास्तों को मानने के लिए आत्मसमर्पण को कष्टकर क्यों है? अब जीवन के प्रति मैंने एक नया दृष्टिकोण पा लिया।

न जाने कैसे मैं एक नया साहचर्य अनुभव करने लगा और मेरे जीवन में एक नई मैत्री आ गई। मैं ईसा मसीह और पिता ईश्वर के साथ संपर्क और साहचर्य के प्रति सचेत रहने लगा।

जब मैंने बाइबिल पढ़ी और उसका अध्ययन किया ईश्वर मुझसे बातें करता था और अब मुझे उसे सुनना अच्छा लगता है! मैं प्रार्थना करने लगा और जानने लगा कि मैं प्रार्थना करते समय ईश्वर से बातें करता हूं। मैं अभी तक ईश्वर से अच्छी तरह परिचित नहीं था। लेकिन आदमी लगातार संपर्क में रह कर और लगातार बात–चीत करके ही दूसरों से अच्छी तरह परिचित होता है।

इस तरह मैंने बाइबिल का अध्ययन जारी रखा। मैं जो चीजें सीख रहा था उन्हें लेखों के रूप में लिखना शुरू किया। तब मैंने सोचा भी नहीं था कि ये लेख कभी प्रकाशित होंगे। मैं उन्हें अपनी संतुष्टि के लिए लिखता था। यह अध्ययन के जरिए अधिक जानने का एक तरीका था।

और अब मैं देवदूत पॉल के साथ कह सकता हूं, ''कि मैंने जिस सुसमाचार का उपदेश दिया (है) वह मनुष्य का लिखा नहीं है। क्योंकि मुझे यह न तो मनुष्य से मिला और न मनुष्य ने मुझे इसकी शिक्षा दी, बल्कि यह मुझे ईसा मसीह ने मुझ पर प्रकट किया लेकिन जब अपने बेटे के बारे में मुझे बताने का ईश्वर का मन हुआ, मैंने तुरंत किसी मनुष्य से संपर्क नहीं किया; न मैं किसी धर्मशास्त्रीय सेमिनरी में ही गया, बल्कि मुझे ईसा मसीह, ईश्वर के शब्द (लिखित) द्वारा सिखाया गया'' (गलातियों 1:11—12, 15—17)।

यही कारण है कि मुझे इस गहन भौतिक अध्ययन के लिए जिन अनुभवों द्वारा प्रवृत्त किया गया वह हमारे समय में मानव जीवन और आचरण में अनूठे थे। मैं दुनिया के किसी भी धार्मिक नेता को नहीं जानता जिसने इस तरह यह शिक्षा प्राप्त की हो। इस दुनिया के धार्मिक उपदेश ईश्वर के यहां नहीं आए हैं! केवल ईश्वर की अकाट्य रूप से सही है!

1927 के वसंत तक में मेरा मन पूरी तरह बदल चुका था! मनः पटल से पुरानी मान्यताएं और आस्थाएं मिट चुकी थीं और मैं एक कष्टकर अनुभव से गुजरा था।

दो बार लाभदायक व्यापार ढह चुका था, जिससे मैं कुंठित था।

उसके बाद मुझे इसका एहसास हुआ कि मेरी जो धार्मिक आस्थाएं थीं वह ईश्वरीय सत्य की विरोधी थीं। न सिर्फ वही जिन पर मैं विश्वास करता था बल्कि वह भी जिन पर चर्च विश्वास करता था!

मैंने हार मान ली थी! मुझे मेरी निस्सारता और अपर्याप्तता की अनुमति करा दी गई थी। मुझे महान प्रतापी ईश्वर ने परास्त कर दिया था। सच्चा प्रायश्चित करा दिया था और ईसा मसीह और ईश्वर के शब्द में एक नए चट्टान जैसी ठोस आस्था पैदा कर दी गई थी। मुझसे ईश्वर और उसकी दुनिया के समक्ष संपूर्ण समर्पण करा दिया गया था।

मुझे बपतिस्मा दे दिया गया था और मेरे मन में ईश्वर की पवित्र आत्मा के प्रवेश ने मेरे मन को ईश्वर और ईसा मसीह को जानने के अकथनीय ज्ञान की ओर खोल दिया था। – सत्य के ज्ञान और ईश्वर के दैवी प्रेम की गरमाई के ज्ञान की ओर!

कभी मैं जिस चीज से नफरत करता था अब उसी से प्यार करने लगा। मुझे ईश्वर के शब्द में से सोने की उन डलियों को खोद निकालना जारी रखने सबसे अधिक मुग्धकारी आनंद आने लगा। अब बाइबिल के अध्ययन में एक नया उत्साह पैदा हो गया।

और धर्मांतरण के बाद के इन वर्षों के दौरान बाइबिल के इन सात रहस्यों के ईश्वरीय उद्‌घाटन को, जिन्होंने मानवता का दिमाग चकरा कर रख दिया था, समझने और यह जानने के लिए मुझे तैयार किया गया कि ईश्वर के इकलौते चर्च की स्थापना ईसा मसीह ने 31 ईस्वी में पेंटिकॉस्ट के दिन की थी।

विकासवादियों, शिक्षकों, वैज्ञानिकों, धर्मवेत्ताओं ने युगों के रहस्यों को सुलझाने के लिए जी जान से प्रयास किए लेकिन नाकाम रहे, पदार्थ ब्रह्मांड और मनुष्य की उत्पत्ति के रहस्य, मानवता के रहस्य, मानवीय बुराइयों के समांतर और उनकी विरोधाभासी विस्मयकारी मानवीय उपलब्धियों के रहस्य, और महान प्रतिमाओं के अविश्वसनीय उपलब्धि हासिल करने के साथ–साथ मानवीय समस्याओं के समाधान में उनकी नाकामी के रहस्य।

अब मैं पाठक के समक्ष उन सात महान रहस्यों का विस्मयकारी, तर्कसंगत और व्यावहारिक खुलासा कर रहा हूं जिन्होंने सारी दुनिया को किंकर्त्तव्य विमूढ़ कर रखा था।

1

परमेश्वर कौन और क्या है ?

कुछ साल पहले मैं भारत की पूर्व प्रधान मंत्री स्व. इंदिरा गांधी के एक सम्मेलन से नई दिल्ली स्थित अपने होटल वापस लौट रहा था। भारत पहुंचने के समय से ही मैंने ध्यान दिया था कि गाय–बैल सड़कों पर धूम रहे हैं। मैंने किसी दूसरे देश में इस तरह के जानवरों को शहरों की सड़कों पर लावारिश भटकते नहीं देखा था।

"क्या ये जानवर भटकते हुए अपने घर से काफी दूर नहीं निकल जाते?" मैंने कार चालक से पूछा।

"ओह, हां," उसने जवाब दिया।

"लेकिन जब," मैंने पूछा, "वे पूरी सड़क पर भटकते हुए घर से इतनी दूर चले आते हैं तो उनके मालिकान रात में घर ले जाने के लिए उन्हें कैसे तलाशते होंगे?"

कार चालक मुस्कराया। "मालिक नहीं तलाशते बल्कि मवेशी और बैल अपने मालिकान और वे जहां रहते हैं, उस जगह को जानते हैं। शाम को वे घर लौटने का रास्ता खुद तलाश लेते हैं।"

मैंने तत्काल इसैया के पहले अध्याय के पाठ के बारे में सोचा, जिसे मैं इस जीवंत व्याख्या से पहले इतनी अच्छी तरह कभी नहीं समझ सका था।

“हे स्वर्गो सुनो, और ओ धरती कान दो क्योंकि प्रभु बोले हैं, मैंने बच्चों को पोसा और बड़ा किया है, उन्होंने मेरे खिलाफ विद्रोह किया है। बैल अपने मालिक को जानता है और गधा अपने मालिक की नांद जानता है लेकिन इस्राईल नहीं जानता, मेरे लोग गौर नहीं करते। आह, गुनाहगार कौम, अन्याय से लदे लोग, कुकर्मियों की संतान, बच्चे जो भ्रष्टाचारी हैंः उन्होंने प्रभु को त्याग दिया है.... वे पीछे की दिशा में काफी दूर जा चुके हैं” (इसैया 1 : 2 – 4)।

और यह प्राचीन इस्राईल के बारे में कहा गया था, ऐसी कौम जिसे ईश्वर ने बहुत–से साक्ष्यों और चमत्कारों द्वारा स्वयं को उद्‌घाटित किया था। दूसरी कौमें ईश्वर के बारे में कितना कम जानती हैं– ईश्वर कौन और क्या है, इसके बारे में!

फिर भी दूसरी कौमें इस्राइली कौम की ही तरह इनसान हैं। यह महत्वपूर्ण है कि इस अध्याय के बिलकुल प्रारंभ में ईश्वर इनसानों को अपना बच्चा कहता है। बहुत–से लोग कहते हैं, “ईश्वर मुझे वस्तुतः मुझे वास्तविक नहीं जान पड़ता।” उनके लिए परमेश्वर बहुत बड़ा रहस्य है। उनके अपने इनसानी पिता रहस्य नहीं जान पड़ते। वे असली जान पड़ते हैं।

ईश्वर अवास्तविक क्यों जान पड़ता है?

मैं उम्मीद करता हूं कि इस अध्याय में हम ईश्वर को आपके अपने इनसानी पिता जितना वास्तविक बनाने में मदद करेंगे। ईश्वर बाइबिल में खुद को हमारे समक्ष प्रकट करता है, यदि हम महज इसे समझेंगे, तो वह हमें वास्तविक जान पड़ेगा।

रोमन साम्राज्य के लोगों के लिए ईश्वर देवदूत पॉल को यह लिखने के लिए प्रेरित करता है:

“अपनी दुष्टता से सच्चाई को दबाने वाले इनसानों की समस्त अनास्तिकताओं और दुष्टाताओं के लिए, स्वर्ग से ईश्वर का कोप प्रकट होता है। क्योंकि ईश्वर के बारे में क्या जाना जा सकता है, उनके समक्ष स्पष्ट है, क्योंकि ईश्वर ने इसे उन्हें दिखाया है। दुनिया के सृजन के समय से ही उसकी अदृश्य प्रकृति, जैसे उसकी शास्वत शक्ति और दैवत्व (अध्यात्मिक) बनाई गई (भौतिक) चीजों में स्पष्ट रूप से समझ में आता रहा है। इसलिए उनके पास कोई बहाना नहीं है; हालांकि वे ईश्वर (के बारे) में जानते थे, वे ईश्वर के रूप में उसका सम्मान नहीं करते थे या उसे धन्यवाद नहीं देते थे, लेकिन वे अपनी सोच में व्यर्थ हो गए और उनकी संवेदनहीन चेतना काली हो गई थी। बुद्धिमान होने का दावा करते हुए वे मूर्ख हो गए” (रोमनों 1: 18–22, संशोधित मानक संस्करण)।

आज धरती पर रहने वाले अरबों लोग न केवल सबसे महत्वपूर्ण ज्ञान से – ईश्वर कौन और क्या है – अनजान हैं – बल्कि लगता है कि वे *जानना भी नहीं चाहते*! वे जानबूझ कर इस महत्वपूर्ण ज्ञान और मानव जीवन में इसके संभावित रिश्ते के बारे में अनजान हैं!

आश्चर्य जनक– लेकिन सत्य!

और मानव जानबूझ कर इनसान के सबसे महत्वपूर्ण रिश्ते से अनजान बना हुआ है!

सारी कौमें छली गई हैं (प्रकाशन ग्रंथ 12:9)। और इस सार्वत्रिक छल का तथ्य किसी महा प्रवंचक की सच्चाई को निश्चित कर देता है। आगे चल कर इसके बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे।

प्राचीनों के लिए ईश्वर वास्तविक था

पहले सर्जित मनुष्य, आदम अपने लिए वर्जित वृक्ष से अच्छे और बुरे का ज्ञान लेते हुए स्रष्टा के रूप में ईश्वर को नकार रहे थे। यह निश्चित है कि ईश्वर ने आदम को अपने बारे में कुछ बताया था, एक निश्चित ज्ञान दिया था।

फिर भी आदम ने खुद को अपने सृष्टा से अलग–थलग कर लिया था। इसमें संदेह नहीं कि ईश्वर ने आदम को जो ज्ञान दिया था उसमें से कुछ ज्ञान सफलता पूर्वक पीढ़ियों तक पिता से पुत्र को मिलता रहा। यीशु ने आदम के दूसरे बेटे अबेल को "सदाचारी अबेल" कहा था। उसने एक मेमने की बलि देकर सही काम किया था। आगे चल कर एनोच "ईश्वर के साथ चला।" ईश्वर ने नोआ से बात की और उन्हें तिजोरी बनाने का निर्देश दिया।

नोआ के समय के जल प्रलय के बाद के कुछ ऐतिहासिक विवरण संकेत देते हैं कि नोआ के तीन बेटों में से एक, शेम को सच्चे ईश्वर का कुछ ज्ञान था। लेकिन निस्संदेह, जैसे–जैसे इनसानों की पीढ़ियों के बाद पीढ़ियां आती गईं ईश्वर का ज्ञान बड़े पैमाने पर विकृत होता गया।

नमरूद ने, जैसा कि अध्याय 4 में दर्ज किया गया है, खुद को प्रतीयमान ईश्वर बना दिया। आने वाली पीढ़ियों और सदियों के दौरान सच्चे ईश्वर का ज्ञान लगभग पूरी तरह लुप्त हो गया। मूर्तिपूजक प्राचीन कौमों ने मिट्टी, लकड़ी, पत्थर और दूसरे पदार्थों से तरह–तरह की अनेक मूर्तियां बनाईं। मूर्ति पूजकों के देवताओं की मूर्तियों के उदाहरण बहुत–से पुरातत्ववेत्ताओं ने खोद निकाले हैं और आज संग्रहालयों में देखे जो सकते हैं। जैसा कि देवदूत पॉल ने कहा था, वे स्रष्टा की बजाय सर्जित की पूजा करते थे (रोमनों 1:25)।

ईसा की पहली सदी की अवधारणा

नव विधान पर आते हुए हमें ईश्वर के बारे में किसी ज्ञान के अज्ञान की एक झलक मिल जाती है। पहली शताब्दी में दुनिया के विद्वान अथेनियाई बुद्धिजीवी थे। उनमें से कुछ देवदूत पॉल से एथेंस में टकरा गए थे।

"उसके बाद उनसे कुछ भोगवादी और विषय विरागी टकरा गए। और कुछ ने कहा, यह बकवादी क्या कहेगा? कुछ दूसरों ने, वह विचित्र देवता का प्रशंसक जान पड़ता हैः क्योंकि उन्होंने उन्हें यीशु और पुनरुत्थान के उपदेश दिए थे। और यह कहते हुए वे उन्हें पकड़ कर एरियोपेगस (मार्स हिल के ऊपर) ले आए कि क्या हम जान सकते हैं कि तुम जिस सिद्धांत की बात करते हो वह क्या है?. . .

"उसके बाद पॉल मार्स पहाड़ियों के बीच खड़े हो गए और कहा, "तुम एथेंस के लोग, मैं समझता हूं कि तुम सभी चीजों में बहुत अंधविश्वासी हो। क्योंकि राह चलते हुए मैंने तुम्हारी उपासना (पूजा सामग्रियां– संशोधित मानक संस्करण) देखी, मुझे इस लेख युक्त एक पूजावेदी मिली, अज्ञात ईश्वर के प्रति। तुम अज्ञान अवसात जिसकी उपासना करते हो मैं तुम्हें उसके बारे में बताता हूं। ईश्वर जिसने दुनिया और उसकी सारी चीजें बनाईं, उसे देखते हुए वह स्वर्ग और धरती का स्वामी है, वह सबको जीवन, और सांस और सारी चीजें देता है; और एक खून से धरती पर रहने के लिए इनसानों की सारी कौमें बनाईं हैं। क्योंकि हम उसी में रहते, और चलते और उसी में हमारा अस्तित्व है......" (ऐक्ट्स 17:18–19, 22–26, 28)।

और आज की हमारी पश्चिमी दुनिया के विद्वानों का क्या हाल है? व्यक्ति सोच सकता है कि सबसे ऊंची शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों को मालूम होना चाहिए कि ईश्वर कौन और क्या है! मान लीजिए आप 100 विश्वविद्यालयों के संकायाध्यक्षों से पूछते हैं, ''क्या आप ईश्वर में विश्वास करते हैं?'' संभवतः तीन—या चार उत्तर देंगे, ''ओह, मैं 'प्रथम कारण' के रूप में ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करता हूं।'' लेकिन वे आपको यह नहीं बता सकते कि ईश्वर कौन और क्या है। उनके लिए ईश्वर सत्य नहीं है। दूसरे शब्दों में रहस्य है। संभवतः दूसरे छह या आठ स्वीकार करेंगे कि वे अज्ञेयवादी हैं— वे ''निश्चित रूप से'' नहीं जानते कि ईश्वर क्या है।

मैंने कहा है कि शिक्षा मन में स्मृति बैठाने का मामला हो गई है। प्रारंभिक कक्षाओं से लेकर अध्ययन के उच्च स्नातक स्तर तक हमारी शिक्षा प्रणाली बच्चों, युवाओं और तरुण वयस्कों के असंदेही मन में तैयारशुदा धारणाओं, विचारधाराओं और तथ्यों और कल्पनाओं का मिश्रण भरती है। हमारी स्कूल प्रणाली में इस आधार पर छात्रों का वर्गीकरण किया जाता है कि वे जो कुछ पढ़ाया गया है, चाहे वह सही हो या गलत, उसे कितनी अच्छी तरह ग्रहण, याद, पढ़ या लिख सकते हैं।

आधुनिक शिक्षा ने विकास की कल्पना को सार्वभौम स्वीकृति प्रदान की है। विकास स्रष्टा के पूर्व अस्तित्व के बिना सृजन के अस्तित्व की व्याख्या का अज्ञेयवादी या अनीश्वरवादी प्रयास है। वह तस्वीर से ईश्वर को निकाल देता है। यह ईश्वर को सिर से निकाल कर रहस्य की ओर से अपनी आंखें मूंद लेता है।

भौतिक सृजन वास्तिविक जान पड़ता है

सृजन भौतिक, दृश्य होता है और इसीलिए वास्तविक जान पड़ता है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली पूरी तरह भौतिकतावादी हो गई है। आधुनिक वैज्ञानिक धारणा अदृश्य और आध्यात्मिक के अस्तित्व को नकार देती है। इसके बावजूद असमाधेय प्रतीत होने वाली हमारी सारी समस्याएं और इस दुनिया की बुराइयां अपनी प्रकृति में आध्यात्मिक हैं।

मैंने उपर्युक्त उद्धरण रोमनों की किताब के पहले अध्याय से दिया है। अट्ठाइसवां श्लोक कहता है, ''.........वे अपने ज्ञान में ईश्वर को सुरक्षित नहीं रखना चाहते।'' ईश्वर के बारे में बहुत कम या कुछ भी नहीं पढ़ाया जाता। लेकिन प्रारंभिक कक्षाओं में भी मूल धारणा– ज्ञान तक अभिगम– विकास है।

ऐसे में क्या, इसमें कोई आश्चर्य की बात है कि बुद्धिजीवी नहीं जानते कि ईश्वर कौन और क्या है? वे उसी में विश्वास करते हैं जो उन्हें पढ़ाया गया है।

जैसा कि मैं हाल ही में चीन की राजधानी में बड़े स्रोता समूहों के समक्ष बोलेने के लिए सरकार द्वारा आम्रंत्रित ईसाइयत की दुनिया के पहले धार्मिक नेता की हैसियत से अपनी दूसरी चार दिवसी बीजिंग (पेकिंग) यात्रा से लौटा हूं। मैं निजी सम्मेलन में नेशनल पीपुल्स कांग्रेस की स्थायी समिति के उपाध्यक्ष तान–जेन–लिन से और अब दूसरी यात्रा पर चीन के निर्विवाद नेता डेंग जिआओपिंग से मिला हूं।

चीनी नेता से बातचीत करते हुए एक शीर्षस्थ अधिकारी से बातचीत कर रहा था जो एक अरब से अधिक लोगों – धरती के कुल लगभग एक चौथाई लोगों के मन और आस्थाओं को आकार दे रहा है। आबादी की दृष्टि से चीन दुनिया का सबसे बड़ा राष्ट्र है। बहुत प्राचीन काल में पूर्वज पूजन चीन का धर्म था। उसके बाद कन्फ्यूसीवाद आया जिसे ताओवाद ने टक्कर दी। आगे चल कर भारत से बौद्धधर्म आया, फिर ईसाइयत। आज राष्ट्र साम्यवादी–अनीश्वरवादी है।

मैंने पाया कि चीनी नेता बहुत ही मिलनसार और शालीन हैं लेकिन ईश्वर कौन और क्या है निश्चित रूप से अब यह उनकी चिंता का विषय नहीं है। मैंने उन्हें यह नहीं बताया कि ईश्वर कौन और क्या है लेकिन मैंने दो विशाल और महत्वपूर्ण श्रोता समूहों को बताया कि ईश्वर बहुत जल्द क्या करने वाला है और मैंने इस आगामी पुस्तक की घोषणा की जिसे मैं इस समय लिख रहा हूं।

भारत दूसरा बड़ा राष्ट्र है। ईश्वर कौन और क्या है, इसके बारे में वे क्या जानते हैं? कुछ भी नहीं!

रूस आबादी में तीसरा सबसे बड़ा है। उनके यहां रूसी रूढ़िवादी ईसाइयत थी और अब निरीश्वरवाद है। मैं इन कौमों की निंदा या मूल्यांकन नहीं कर रहा हूं – और मैं मान कर चलता हूं कि वे किसी भी दूसरी कौम जितने ही साभिप्राय लोग हैं। ईश्वर अभी उनका गुण विवेचन नहीं कर रहा है – जैसा कि मैं बाद में स्पष्ट करूंगा। न वह उनकी भर्त्सना ही कर रहा है। वह उनसे प्यार करता है और अपने समय में शास्वत मोक्ष के लिए उनका आह्वान करेगा। लेकिन वे नहीं जानते कि ईश्वर कौन या क्या है।

प्राचीन मिस्र के लोग आइरिस और ओसिरिस देवताओं की पूजा करते थे। मिस्रियों और रोमनों के पास प्राचीन काल में जुपिटर (बृहस्पति), हर्मीज, डायोनिसस, अपोलो, डायना और दूसरे बहुत–से देवता थे। लेकिन वे नहीं जानते थे और उनके लोग आज भी नहीं जानते कि ईश्वर कौन और क्या है। लेकिन *क्यों*?

जानबूझ कर अज्ञानी क्यों?

रोमनों के पहले अध्याय वाले उद्धरण में मैंने आपको इसका कारण बताया है – वे जानबूझकर सच्चे ईश्वर से संबंधित चीजों के प्रति अज्ञानी थे। लेकिन *क्यों* ? *जानबूझ* कर अज्ञान क्यों? रोमनों 8:7 में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि इनसानों का मन स्वाभाविक रूप से ईश्वर का विरोधी है। इसका अनिवार्य आशय यह नहीं कि सारे अधर्मांतरित इनसानों के मन सक्रिय रूप से, साभिप्राय, दुर्भावनावश विरोधी हैं। अधिकांश इनसान उदासीन रूप से ईश्वर के विरोधी हैं। यदि ईश्वर का जिक्र किया जाता है तो वे आकुल हो उठते हैं और प्रायः विषय बदलने के प्रयास करते हैं। संभवतः वे अपने मन में अनुभव नहीं करते कि ईश्वर के प्रति उनका रवैया शत्रुवत है। इसके बावजूद मनोवैज्ञानिक रूप से यही कारण होता है कि वे इस विषय से बचना चाहते हैं। दूसरे शब्दों में औसत व्यक्ति के मन में ईश्वर के प्रति अननुभूत शत्रुता का भाव होता है। इसे अनुभव किए बिना वे चाहते हैं कि ईश्वर उनके काम से अपनी नाक दूर ही रखे–सिवा उस समय के जब वे गहन संकट में होते हैं और मदद के लिए ईश्वर से गुहार लगाते हैं।

अध्यात्मिक चीजें – अदृश्य चीजें उनके लिए रहस्य होती हैं। वे उन चीजों को नहीं समझते, हालांकि वे सच्ची होती हैं, क्योंकि वे उन्हें देख नहीं सकते। वे गहरा रहस्य बनी रहती हैं इसलिए वे उनके अस्तित्व को नकार देते हैं।

इस इच्छित अज्ञान के कारण थे। बाइबिल स्पष्ट रूप से हमें वह कारण बताती है, जो दुहरे हैं:1) प्रागैतिहासिक रूप से क्या हुआ और 2) आदम के मूल पाप के बाद ईस्वर ने किस चीज की स्थापना की। यह सब (अगले दो अध्यायों में जिनका वर्णन किया जाएगा), और आज की दुनिया की बढ़ती बुराइयों के कारण, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अपने कथन, पवित्र बाइबिल में स्पष्ट रूप से व्यक्त किए हैं। हम जैसे–जैसे आगे बढ़ते जाएंगे, यह स्पष्ट किया जाएगा।

लेकिन पहले, बाइबिल इसके बारे में क्या बताती है कि ईश्वर कौन और क्या है? सिर्फ इसी अंतः स्फूर्त पुस्तक में ईश्वर स्वयं को प्रकट करता है। लेकिन आमतौर पर मानव जाति ने ईश्वर में कभी विश्वास नहीं किया – ईश्वर यही कहता है! ईश्वर ने पहले सर्जित मानवों, आदम और हौवा से व्यक्तिगत रूप से आमने–सामने बात की थी। उसके बाद उसने शैतान को उनसे संपर्क करने की अनुमति दी। शैतान उनकी पत्नी के माध्यम से आदम तक पहुंचा। हमारे मूल पूर्वजों ने उस समय शैतान पर विश्वास कर लिया जब उसने कहा, ''तुम निश्चित रूप से नहीं मरोगे'' जबकि उनके वर्जित फल चुराने के बाद ईश्वर ने उनसे कहा था कि ''तुम अवश्य मरोगे''।

जब 400 साल बाद ईसा मसीह धरती पर बोले तो उन्होंने जो कुछ कहा उस पर केवल 120 लोगों (ऐक्ट्स 1:15), ने विश्वास किया, हालांकि उन्होंने ईश्वर के यहां से आए अपने संदेशों का उपदेश हजारों लोगों को दिया था।

तब कोई आश्चर्य नहीं कि उन 120 लोगों के साथ प्रारंभ करके ईसा मसीह (ईस्वी सन् 31 में) द्वारा स्थापित एक छोटे–से उत्पीड़ित चर्च को छोड़ कर इनमें से एक भी धर्म, मत या संप्रदाय ईश्वर में विश्वास नहीं करता जिसका अर्थ यह है कि ईश्वर अपने कथन में जो कुछ भी कहता है, ये दूसरे उस पर विश्वास नहीं करते। ईश्वर का कथन स्पष्ट रूप से प्रकट करता है कि ईश्वर कौन और क्या है! लेकिन उनके अज्ञान का एक कारण है। हम जैसे–जैसे आगे बढ़ेंग, इसे स्पष्ट किया जाएगा।

तो तथ्यतः ईश्वर कौन और क्या है? मैं एथेनियाई बुद्धिजावियों से पॉल के इस कथन का उद्धरण पहले ही दे चुका हूं कि ईश्वर स्रष्टा है जिसने मंसूबा बांधा, रचा, आकार दिया और सिरजा है।

पैंगबर इसैया यह कहते हुए स्वयं ईश्वर का उद्धरण देते हैं: ''तुम मुझे इन लोगों के समान मानोगे या मैं किसके बराबर होऊंगा?.....अपनी आंखें ऊपर उठाओ, देखो ये चीजें किसने सिरजी हैं जो उनके जमघट को क्रमवार व्यवस्थित करता है, वह उन्हें नाम से पुकारता है, उसकी शक्ति की महानता से पुकारता है, इसलिए कि वह शक्ति में बलिष्ठ है; कोई भी विफल नहीं होता'' (इसैया 40:25–26)।

इसे जेम्स मोफत के आधुनिक अंग्रेजी अनुवाद में पढ़ें:

''तो तुम किससे मेरी तुलना करोगे, और किससे मेरा जोड़ लगाओगे?'' पूछता है वह एक मात्र प्रतापी। अपनी आंखें ऊपर उठाओ, ऊपर देखो, इन तारों को किसने बनाया? वह जो उन्हें क्रम से व्यवस्थित करता है, प्रत्येक को उसके नाम से पुकारता है। उससे डरो, जो इतना शक्तिशाली, इतना बलशाली है, एक भी दिखने से पीछे नहीं रहता।''

इसके आलावा ईश्वर स्वयं संदेहवादियों से कहता है: ''अब शास्वत पुकार रहा है, अपना मामला आगे ले आओ, अब जैकब का राजा पुकारता है, अपने प्रमाण दो। आओ सुनें अतीत में क्या हुआ था, जिस पर हम विचार कर सकते हैं, या मुझे दिखाओ जो अभी होने वाला है, जिस पर हम नजर रख सकें कि वह कैसे होता है; हां, हमें यह सुनने दो कि क्या आने वाला है, ताकि हम आश्वस्त हो सकें कि तुम देवता हो; आओ, कुछ ऐसा करो जिसे देख कर हम आश्चर्य चकित हो जाएं। क्यों,'' ईश्वर संदेह करने वालों पर फब्ती कसता है, ''तुम किसी काम की चीज नहीं हो, तुम सिरे से कुछ नहीं कर सकते!'' (इसैया 41:21–24, मोफत)। ये लेख ईश्वर को नहीं, ईश्वर की शक्ति को इस तरह से प्रकट करते हैं कि वह पाठक को वास्तविक लगे। दूसरे धर्म लेखों को यह काम अवश्य करना चाहिए।

ईश्वर, ब्रह्मांड का स्रष्टा

ईश्वर विशाल ब्रह्मांड में सबका – प्रत्येक चीज का स्रष्टा है – तारों, अनंत आकाश की आकाश गंगाओं, इस धरती, इनसान और धरती की प्रत्येक चीज का।

ईश्वर यही है – वह क्या करता है। वह सृजन करता है, वह डिजाइन करता है, रचता, और रूप देता है। वह जीवन देता है! वह महान दाता है। और उसके कानून–उसके रास्ते देने के हैं, पाने के नहीं, जो उसकी दुनिया का रास्ता है।

लेकिन ईश्वर कैसा है? ईश्वर कौन है? बहुत–सी धारणाएं रही हैं। कुछ मानते हैं कि ईश्वर नेक है या प्रत्येक मानव के भीतर का नेक अभिप्राय है – प्रत्येक मानव का कोई अंग। कुछ लोगों ने कल्पना की कि ईश्वर सोने या चांदी की, या लकड़ी, पत्थर या दूसरे पदार्थों को तराश कर बनाई गई मूर्ति है।

मूसा जब सिनाई पर्वत पर ईश्वर से बातचीत कर रहे थे, तब इस्राईल वासियों ने सोचा कि ईश्वर स्वर्णिम गोवत्स है या उसके जैसा दिखता है।

बहुत से लोग सोचते हैं कि ईश्वर एक व्यक्तिगत परम चरित्र है। कुछ सोचते थे वह एक आत्मा है। लेकिन परंपरागत ईस्राइयत की सामान्य स्वीकृत शिक्षा यह है कि ईश्वर त्रिमूर्ति है – तीन व्यक्तियों में ईश्वरः पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, जिसे लोग ''आत्मा'' कहते हैं। त्रिमूर्ति शब्द बाइबिल में नहीं है, और न बाइबिल इस सिद्धांत का उपदेश ही देती है। लेकिन उसके बारे में विस्तार से चर्चा बाद में।

ईश्वर प्रागैतिहासिक काल में

अब आइए बिलकुल प्रारंभ में वापस चला जाए, प्रागैतिहासिक काल में। यदि आपसे पूछा जाए कि बाइबिल में उसके अस्तित्व के समय की दृष्टि से ईश्वर का बिलकुल प्रारंभिक विवरण कहां मिल सकता है, संभवतः आप कहेंगे, ''क्यों, बाइबिल के बिलकुल पहले श्लोक में जेनेसिस 1:1 में, निस्संदेह।'' ठीक?

गलत!

काल–क्रम में 'ईश्वर कौन है और क्या है?' वाला पूर्व रहस्योद्घाटन नव विधानः जॉन 1:1 में मिलता है।

''पहले आया पवित्र शब्द, और पवित्र शब्द ईश्वर के पास था और पवित्र शब्द तो ईश्वर ही था। यही शुरुआत में ईश्वर के पास था। सभी वस्तुएं ईश्वर से बनी थीं; और आज जो भी वस्तु बनी है उसके बिना नहीं बनी है। उसी में जीवन था; और जीवन तो मानव का प्रकाश था।'' (जॉन 1:1–4)

''पवित्रशब्द'' शब्द का प्रयोग इस अंश में जो हुआ है, वह यूनानी 'शब्द' का अनुवाद है। इसका अर्थ है ''प्रवक्ता,'' ''संदेश'' या ''प्रकटन के विचार''। यहां एक वैयक्तिक पात्र के लिए इस शब्द का प्रयोग हो रहा था। पर ''पवित्र शब्द'' क्या है या कौन है, श्लोक 14 में इसकी व्याख्या देख सकते हैंः

''और वह ''पवित्र शब्द'' मांस से बना था, और हमारे साथ निवास करता था (और हमने उसकी महिमा देखी, और वह महिमा केवल पिता से उत्पन्न) कृपा और सत्य से भरा था।

जब वह ईसा मसीह के रूप में पैदा हुआ, वह मांस और खून का था, भौतिक था और दिखता था, छुआ जाता था और अनुभव किया जाता था। लेकिन वह कौन था? ईश्वर के रूप में – 'पवित्र शब्द के रूप में'? इसका उत्तर जॉन 4:24 में मिलता है, ''ईश्वर आत्मा है।'' और आत्मा अदृश है। मानव ईसा के रूप में उसका क्या रूप था और क्या आकार था, यह हम जानते हैं। लेकिन ''पवित्र शब्द'' के रूप में उसका क्या आकार और रूप था? हम बाद में इसको स्पष्ट करेंगे।

तो फिर, पवित्र शब्द एक व्यक्ति है, मांस का बना – ईश्वर द्वारा उत्पन्न, जो बाद में प्रजनन द्वारा उसका पिता बना। फिर भी, जॉन 1 के पहले श्लोक के प्रागैतिहासिक समय में, पवित्र शब्द (अभी) ईश्वर का पुत्र नहीं था। उसने अपने को विवस्त्र करके, पवित्र आत्मा की महिमा उतार कर मानव के रूप में उत्पन्न कर लिया था। वही ईश्वर का पुत्र माना गया। वही ईश्वर से उत्पन्न था और कन्या मेरी द्वारा पैदा हुआ।

अतः हम यहां मूल रूप में दो श्रेष्ठ व्यक्तियों को प्रकट हुए देखते हैं। एक ईश्वर है। और इस ईश्वर के साथ, प्रागैतिहासिक समय में एक और श्रेष्ठ व्यक्ति था, वह भी ईश्वर था – वह आगे चल कर उत्पन्न किया गया था और ईसा मसीह के रूप में पैदा हुआ। लेकिन ये दोनों श्रेष्ठ व्यक्ति आत्माएं थे। जो अलौकिक रूप से दिखाई न जाएं तो मानव आखों के लिए अतृश्य होती हैं। फिर भी, श्लोक 1 में वर्णित समय में ईसा ईश्वर के पुत्र नहीं थे और ईश्वर उनका पिता नहीं था।

मेल्चीसेडेक कौन था?

उसके अस्तित्व की शुरुआत के बारे में, हम हिब्रू के सातवें अध्याय में आगे कुछ व्याख्यायित हुए देखते हैं। मेल्चीसेडेक अब्रहाम के समय में येरूसलेम का राजा था। उसके बारे में बोलते हुए यह भी कहा गया है कि वह स्वर्ग के ईश्वर का पुजारी था। यह मेल्चिसेडेक अमर था– ''पिता के बिना, माता के बिना, वंश के बिना, शुरुआत के दिन नहीं, जीवन का अंत नहीं; पर ईश्वर के पुत्र के रूप में बना था; लगातार पुजारी के रूप में बना था।' (हिब्रू 7:3)।

चूंकि मेल्चीसेडेक ''ईश्वर के पुत्र के रूप में'' था, और हमेशा के लिए उच्च्व पुजारी के रूप में बना हुआ था और अब ईसा मसीह उच्च्व पुजारी हैं। अतः मेल्चीसेडेक और ईसा मसीह, दोनों एक ही हैं और एक ही व्यक्ति हैं।

अतः ईसा मसीह ''पिता के बिना, माता के बिना, वंश के बिना (अब्रहाम के समय में), शुरुआत के दिन नहीं, जीवन का अंत नहीं।'' ईश्वर भी पवित्र शब्द के रूप में अमर था। ईसा, जब वह ''पवित्र शब्द'' थे, तब वह अमर थे, हमेशा के लिए रहता थे– ऐसा नहीं कि वह नहीं रहते थे– उनके शुरुआत के दिन नहीं थे। तब, वह ईश्वर के पुत्र ''जैसे'' थे– पर तब भी वह ईश्वर के पुत्र नहीं बने थे। वही ईश्वर थे, ईश्वर के साथ थे।

ये अंश यही दिखाते हैं कि शुरू में– किसी भी वस्तु की सृष्टि के पहले– पवित्र शब्द ईश्वर के साथ था, और वह ईश्वर भी था। अब, ऐसा कैसे हो सकता है?

मानिए, जॉन नामक कोई एक व्यक्ति है। और जॉन के साथ स्मित नाम का एक दूसरा व्यक्ति भी है। जॉन ही स्मित भी हो सकता है क्योंकि जॉन स्मित का पुत्र है। और स्मित कुल का नाम है। फिर भी वे दोनों अलग–अलग व्यक्ति हैं।

इस अनुरूपता में एक अगल बात यह है कि जॉन 1:1 के समय में पवित्र शब्द ईश्वर का पुत्र नहीं बना था। लेकिन वह ईश्वर के साथ था, और वही ईश्वर भी था।

तब भी वे पिता और पुत्र नहीं बने थे– लेकिन वे ईश्वर के राज्य थे।

अब वह परिवार बन गया है, ईश्वर पिता है और ईसा मसीह उसका पुत्र; और कई मानव पहले ही बनाए गए थे, अब, वे ईश्वर के पुत्र माने जाने लगे। (रोम 8:14, 16; जॉन 3:2)। उनसे ईश्वर का चर्च स्थापित हुआ।

उस परिवार का रूप– ईश्वर का परिवार– अनिवार्य रूप से मुख्य है। इसका पूरा का वर्णन बाद में करेंगे।

पर अब, हम कहां हैं?

बहुत पहले, जब कुछ भी नहीं बना था, तब दो परम जीव शाश्वत रूप से जीवित रहे, हमेशा अमर रहे। आपका मन ''हमेशा'' शब्द को साफ–साफ समझ नहीं पाएगा। पर इसका भी अर्थ समझ नहीं सकते कि बिजली क्या है। फिर भी बिजली है और वास्तविक है।

मसीह कैसे सृष्टिकर्ता बने

तो फिर, हम अपने प्रश्न की ओर जाएंगे ''ईश्वर कौन है और क्या है?'' किसी भी वस्तु के बनने से पहले, ईश्वर और पवित्र शब्द का अस्तित्व था। वे दोनों आत्माएं थीं, जड़–वस्तु के रूप में नहीं। लेकिन फिर भी, वे वास्तविक थे। दो व्यक्ति– तीन नहीं। और, जॉन 1 के श्लोक 3 में बताया गया है कि सारी वस्तुएं (विश्व) पवित्र शब्द द्वारा बनाई गईं।

अब यह समझिए। इफिसियाई 3:9 से मिला लीजिए'' ....ईश्वर ने मसीह द्वारा सारी वस्तुओं को बनाया।''

मैं समझाता हूं। 1914 की जनवरी के पहले सप्ताह में मुझे एक राष्ट्रीय पत्रिका द्वारा डेट्राइट, मिशिगन भेजा गया था। मुझे हेनरी फोर्ड से साक्षात्कार लेना था। उनकी सनसनीखेज ''प्रतिदिन पांच डालर की मजदूरी'' की नई नीति पर एक लेख के लिए सामग्रियां एकत्रित करनी थीं। मैं हेनरी फोर्ड से उनके प्रशासनिक भवन में मिला। वह व्यापारिक वेशभूषा में सफेद कालर और गले में नेकटाई पहने थे। बाद में, मैंने झरोखे से उनकी बृहदाकार फैक्टरी पर नजर दौड़ाई। (उस समय उसका नाम था हाईलैंड पार्क फैक्टरी)। और मैंने शायद कुछ हजार कर्मचारियों को बिजली चालित मशीनों पर काम करते देखा। श्री फोर्ड ''फोर्ड'' कार के निर्माता माने जाते थे। पर उसने तो इन कर्मचारियों द्वारा कारें बनाईं। कर्मचारियों ने बिजली की शक्ति और मशीनों से काम लिया था।

इसी प्रकार, पिता ईश्वर भी सृष्टिकर्ता है। पर उसने ''ईसा मसीह के द्वारा सारी वस्तुओं को बनाया।'' ईसा ही पवित्र शब्द है। ऐसा लिखा देख सकते हैं, ''उसने कहा, काम बन गया।'' (साम 33:9) ईश्वर मसीह को कहता है कि क्या करना है (जॉन 8:28–29)। ईसा, बाद में, कारीगर के रूप में बोलते हैं, और पवित्र आत्मा ही शक्ति है, वही ईसा की आज्ञाएं सुनती और कर दिखती है।

इस प्रकार, कोलोसियाईयों 1 में, शुरू के श्लोक 12 में हम आगे पढ़ते हैं, ''पिता को धन्यवाद देते हैं, जो.... हमें अपने प्रिय पुत्र के राज्य में ले गया। ...जो अदृश ईश्वर की छाया है (वही दिखावा, रूप, आकार और चरित्र) ....क्योंकि उसी के द्वारा सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई है, जो भी वस्तुएं स्वर्ग में हैं, जो भी वस्तुएं धरती पर हैं, दृश और अदृश, वे सिंहासन हों, या प्रभुत्व या राज्य या शक्तियां होंः सारी वस्तुएं उसके द्वारा बनी हैं और उसके लिए बनी हैंः और वह सभी वस्तुओं के पहले है और उसके द्वारा सारी वस्तुएं बनी हैं (श्लोक 12–13, 15–17)।

इस प्रकार ईश्वर का पवित्र शब्द यही प्रकट करता है कि ईश्वर और पवित्र शब्द– दो परम व्यक्तित्व– हमेशा साथ में रहे– और यह धरती और यह सारा ब्रह्मांड कोई भी वस्तु बनने से पहले से।

ऊपर दिए गए इस उद्धरण में ईसा मसीह ईश्वर की छाया हैं, मूर्त रूप हैं – रूप में और आकार में। शायद आप ईश्वर को अति वास्तविक मानेंगे। क्योंकि आप महसूस करेंगे के वह भी मानव की तरह, उसी रूप और आकार में है। इस पर और अधिक प्रमाण बाद में दिए जाएंगे।

अतः उस समय, ये दोनों व्यक्तित्व साथ में अस्तित्व में रहे और आगे कुछ भी नहीं किया।

तीसरे व्यक्तित्व का कोई उल्लेख नहीं है– ''आत्मा'' नहीं है। तो फिर, क्या ईश्वर दो ही व्यक्तित्व तक सीमित है? गलत, त्रिमूर्ति की शिक्षा ईश्वर को तीन व्यक्तियों में सीमित करती है। लेकिन ईश्वर तो सीमित नहीं है। जैसे ईश्वर बार–बार यही प्रकट करता है कि उसका लक्ष्य है अपने को पुनर्निर्मित करना, करोड़ों में – ईश्वर के करोड़ों व्यक्तियों के रूप में – कितना अच्छा होगा! गलत, त्रिमूर्ति की शिक्षा ईश्वर को सीमित करती है, ईश्वर का लक्ष्य नहीं मानती, और स्पष्ट रूप से कहें कि इस शिक्षा ने समूचे ईसाई धर्म की दुनिया को धोखा दिया। ईश्वर और पवित्र शब्द दोनों आत्माएं थीं और अपनी आत्माओं को स्पष्ट करते हैं। मैं उदाहरण देकर समझाऊंगा। आप अपनी आंखों से, कमरे में पड़ी।

वस्तुओं को देख सकते हैं, सूर्य को देख सकते हैं, या तारों का भी देख सकते हैं। वैसे सबको मालूम है कि ये तारे हमारे सूर्य से कई गुना बड़े हैं, पर हमसे काफी दूरी पर हैं। लेकिन अपनी आंखों से आप उन वस्तुओं को अपना नहीं सकते। इसी प्रकार, जितनी भी दूरी पर हो, ईश्वर अपनी आत्मा को प्रकट कर सकता है, पर ईश्वर अपनी आत्मा द्वारा ऐसी वस्तुओं को अपना सकता है, उनको काम में ला सकता है या अपनी इच्छानुसार उन्हें बदल सकता है। और इस तरह ईश्वर सार्वभौम है।

कोई भी वस्तु बनाने से पहले, उसने कितने लंबे समय तक सोचा होगा, योजना बनाई होगी, और अभिकल्पना की होगी।

लेकिन, यह धरती, ये तारे ये नीहारिकाएं, विशिष्ट मंडलियां, ये भौतिक पदार्थ इनको उसने सबसे पहले नहीं बनाया। भौतिक पदार्थों को बनाने से पहले उसने परियों को बनाया।

जॉब के 38वें अध्याय में धरती की सृष्टि के बारे में बोलता है। वह कहता है कि धरती की सृष्टि के समय सभी परियां खुशी से चिल्लाने लगीं (श्लोक 7)। इसलिए जब पहली बार धरती की सृष्टि हुई, उस समय के पहले से ही परियां थीं।

जेनेसिस 1:1 में धरती और स्वर्गों की सृष्टि करने वाले ईश्वर के बारे में बताया गया है। प्राधिकृत रूप से उस शब्द 'स्वर्ग'– एकवचन में– का प्रयोग हुआ है। पर, मूसा के लिखे मूल हिब्रू और उनके अन्य अनूदित रूप यही प्रस्तुत करते हैं कि ये 'स्वर्ग'– बहुवचन– में हैं। इनसे हमें यही संकेत मिलता है कि धरती के साथ–साथ इस समूचे भौतिक ब्रह्मांड की भी सृष्टि हुई है। इसका साफ–साफ उल्लेख 2:4 में हुआ है: ''ये स्वर्गों के वंश (शुरुआत) हैं और धरती के भी वंश हैं। जिस समय इनकी सृष्टि हुई, उस समय प्रभु ईश्वर ने धरती और स्वर्गों की एक साथ सृष्टि की।''

इतना होते हुई भी, इस संदर्भ में 'दिन' शब्द का जो प्रयोग हुआ है, जरूरी नहीं है कि वह चौबीस घंटे का दिन हो। यह केवल सामान्य कालावधि है। यह 'दिन' कई हजार वर्षों का या करोड़ों वर्षों का हो सकता है। मानव की सृष्टि से पहले देवदूतों को धरती पर रखा गया। चूंकि देवदूत अमर आत्माएं हैं, इसलिए, मानव की सृष्टि से पहले ही, ये देवदूत यहां हजारों और करोड़ों वर्षों के पहले से निवास करते रहे होंगे। ईश्वर ने यह प्रकट नहीं किया कि वे कितने थे। सब से पहले, यह धरती देवदूतों का निवास स्थान थी। पर, जूड 6 के अनुसार, ''और देवदूत इस प्रथम भूसंपत्ति को न अपनाकर, अपना ही निवास स्थान (धरती) छोड़कर चले गए....।''

ईश्वर का रूप–रंग कैसा है?

और ''ईश्वर कौन है और क्या है?'' पर और अधिक विवरण देता हूं।

ईश्वर एक आत्मा है (जॉन 4:24, संशोधित मानक रूप)। इतने सारे लोगों को ईश्वर वास्तविक क्यों लगता? क्योंकि ईश्वर और पवित्र शब्द, दोनों ही आत्मा से बने हैं, भौतिक पदार्थों से नहीं। मानव जैसे मांस और रक्तवाले नहीं थे। मानव आंखों को ईश्वर दिखाई नहीं देता (कोलोसियाइयों 1 : 15)। वह वास्तविक नहीं दिखता। वास्तविक दिखाई देने के लिए, यह स्वाभाविक है कि मन निश्चित रूप और आकार चाहता है। लेकिन, ईश्वर के आत्मा से बने होने के कारण तथा दृश्य पदार्थों से न बने होने के कारण, उसका कोई निश्चित रूप और आकार नहीं है।

ईश्वर का रूप और आकार क्या है?

जेनेसिस 1:26 में, ''ईश्वर ने कहा, चलो हम मानव को अपनी छाया में बनाएं, अपनी प्रतिकृति के रूप में।'' मानव का रूप–रंग हम जानते हैं। वही ईश्वर की छाया है, प्रतिकृति है, ईश्वर का रूप–रंग है।

बाइबिल के कई भागों में, यह स्पष्ट प्रकट किया गया है कि ईश्वर का मुख है, आंखें हैं, नाक हैं, मुंह है और कान भी। उसके सिर पर बाल भी हैं। यह भी बताया गया है कि ईश्वर की भुजाएं और पैर भी हैं। और ईश्वर के हाथ और उंगलियां हैं। मानव हाथों के समान, हमारी जानकारी में, किसी भी जानवर, मुर्गा, पक्षी, मछली, जंतु या किसी भी जीव के हाथ नहीं होते। हमारी जानकारी में, किसी भी अन्य जीव में हाथ और उंगलियों के सिवा केवल सोचने के लिए मन नहीं था। ईश्वर मानव को छोड़ कर उसके जैसे किसी दूसरे जीव की अभिकल्पना नहीं कर सका।

ईश्वर के पैर हैं, पादांगुलियां हैं और शरीर है। ईश्वर का मन भी है। जानवरों के मस्तिष्क हैं, लेकिन मानव की तरह मनःशक्ति नहीं है।

क्या आपको मालूम है कि मनुष्य कैसे दिखता है, तब आप समझेंगे कि ईश्वर का रूप और आकार क्या है। क्योंकि उसने मनुष्य को अपनी छाया में, अपने ही प्रतिकृति के रूप में बनाया।

ईसा के शिष्यों में से एक ने पूछा कि पिता ईश्वर कैसा दिखाई देता है। तब ईसा ने उत्तर दियाः ''मैं तुम्हारे साथ इतने लंबे समय से हूं, लेकिन फिर भी तुम मुझे नहीं जानते, फिलिप? जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को देखा है....।'' (जॉन 14:9)। ईसा पिता जैसे दिखते थे। दरअसल, ईसा ''हमारे साथ ईश्वर'' थे (मत्ती 1:23)। यीशु ईश्वरोत्पन्न और ईश्वर के जनमें पुत्र थे।

और ईसा का क्या रंग—रूप था? मानव जैसे थे, क्योंकि वह भी मानव के पुत्र ही तो थे। वह अपने जमाने के अन्य यहूदियों के समान ही दिखते थे। इसलिए उनके विरोधियों ने जुदास को रिश्वत देकर, ईसा को पहचान कर दिखाने को कहा। ईसा उस रात भीड़ में थे।

अतः अब हम जान पाते हैं कि ईश्वर का भी मानव का ही रूप—रंग है। हम यह भी जानते हैं कि वह आत्मा के बने हैं, मानव की तरह भौतिक पदार्थों से नहीं बने हैं। कुछ विशेष तरीके से व्यक्त न होने पर आत्मा मानव आंखों में दिखाई नहीं देती।

अगर ऐसा व्यक्त हो तो हम दोनों पिता ईश्वर और ईसा मसीह को देखते। अब स्वर्ग में मुख के साथ उनकी स्तुति की जाती है। वे दोनों मानव मुख जैसे रूप—रंगवाले हैं और पूर्ण शक्तिवाले सूर्य के समान प्रकाशमान हैं। उनकी आंखें अग्नि की ज्वालाएं हैं, पैर तो चमकाए गए पीतल के समान हैं और बाल भी सफेद बर्फ जैसे हैं (प्रकाशना 1:14—16)।

ईश्वर का स्वभाव और चरित्र

बहरहाल, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ईश्वर की प्रकृति क्या है — उसका चरित्र कैसा है। यह जाने बिना कि ईश्वर का चरित्र क्या है, हम ईश्वर को नहीं जान सकते।

पिता ईश्वर और पुत्र मसीह, दोनों का चरित्र पवित्र आत्मा का है, धर्मात्मा का और बिल्कुल पूर्णता का है।

वह 'चरित्र' एक शब्द 'प्रेम' में समाहित किया जा सकता है। प्रवाहित होने वाले प्रेम से संबंधित कहा जा सकता है। देने का, सेवा करने का, सहायता करने का, बांट लेने का है, ''लेने'' का नहीं।

उसका स्वभाव लोभरहित, वासनारहित और लालचहीन, दंभ और स्वार्थतारहित, प्रतियोगितारहित, कलहहीन, हिंसा और विनाशहीन, शत्रुता और ईर्ष्यारहित, क्रोध और कड़वाहट रहित है।

ईश्वर की स्वाभावित प्रकृति तो शांति की है। अपने सिरजे लोगों पर बाहर से न्याय, दया, कृपा, सुख और उल्लास बरसाना है।

पवित्र शब्द और ईश्वर जीवित रहे। उन्होंने क्या किया? उन्होंने सृष्टि की। वे कैसे जीवित रहे– उनकी ''जीवन शैली'' कैसी थी? वे अपने ही पूर्ण चरित्र पर जीवित रहे – बहते प्रेम से जीवित रहे। जब ईसा का बपस्तिमा हुआ, पिता ईश्वर ने कहा था, ''तुम मेरे प्रिय पुत्र हो।'' ईश्वर ने उस पवित्र शब्द से प्रेम किया। और पवित्र शब्द ने भी ईश्वर से प्रेम किया, बिल्कुल उसका आज्ञाकारी रहा।

दो व्यक्ति एक साथ चल नहीं सकते, जब तक वे दोनों सहमत नहीं होते। वे दोनों पूर्ण करार और सहयोग में एक साथ रहे। और भी, दो व्यक्ति लगातार प्रेम बहाते हुए एक साथ तब तक चल नहीं सकते जब तक उनमें से एक नियंत्रण में रहकर प्रधान या नेता नहीं बनता। ईश्वर प्रधान था।

उसकी जीवन शैली ने पूर्ण शांति दी, सहयोग दिया, खुशी दी और कौशल दिया। यह जीवन शैली कानून बनी। कानून का मतलब आचार–संहिता है, अथवा दो या उनसे अधिक लोगों के बीच का रिश्ता है। किसी खेल प्रतियोगिता के नियमों को खेल का ''कानून'' कहा जा सकता है। कानून हो तो, उल्लंघन करने पर जुर्माना लगाना आवश्यक होता है। ऐसा कोई कानून नहीं, जिसके अतिक्रमण पर दंड न दिया जाता हो।

ईश्वर– शासन का रचयिता

कानून का लक्ष्य शासन चलाना है। शासन का मतलब है कि एक प्राधिकारी द्वारा प्रशासन और बाध्यता चलाना। इसके लिए एक प्राधिकृत नेतृत्व, एक नियंत्रक की अपेक्षा है।

जब चेतन जीव मात्र रहते थे, तब ईश्वर ही प्राधिकृत नियंत्रक के रूप में था। इस प्रकार, जब ईश्वर और पवित्र शब्द ही चेतन जीव थे, तब भी शासन था। ईश्वर सर्वोच्च नियंत्रण रखता था। ऊपर और नीचे दोनों ओर, ईश्वर का शासन ही अनिवार्य शासन बना था। यह ''शासितों की सहमति द्वारा शासन'' नहीं था। उसके कानून बनाए गए और ईश्वर द्वारा लोगों को दिए गए। जनता द्वारा कानून नहीं बने, शासितों द्वारा लिखवाए नहीं गए कि उनका शासन कैसा रहेगा और उन पर कैसे शासन करेगा। चूंकि उन्होंने अन्य सचेतन, सोचने वाले जीवों की सृष्टि की थी, अतः यह अति आवश्यक बन गया है कि सारी सृष्टियों पर ईश्वर का शासन चले, जिसमें ईश्वर सर्वोच्च शासक रहेगा।

हमारी मानव सभ्यता ने विशेषाधिकार का विधान मान लिया। मानव शासन शहरी, जिला, प्रांतीय या राष्ट्रीय की विधानसभाएं हैं – नगर परिषद, प्रांतीय विधानसभाएं, राष्ट्रीय कांग्रेस, संसद, रेइचस्टाग, डायट, नेसेट। पर 6,000 वर्षों के मानव अनुभव ने यही कर दिखाया है– सही और गलत का निर्णय करने या मानव आचरण और संबंधों में कानून बनाने आदि कार्यों में मानव बिल्कुल असमर्थ रहा।

मानव की विधानसभाओं ने कई विधियां बनाईं। पर शहर का एक सामान्य पुलिस शायद अपने दिमाग में नियम का एक छोटा–सा अंश भी याद नहीं रख पाता कि किन नियमों के उल्लंघन पर उसे क्या कदम उठाना है। कुछ लोगों का याद होगा कि अमरीका के समाचार पत्रों में 'हास्यकर कशाघात' आता था, ''कानून जरूर होना है।'' वह हास्यकर कशाघात यह हंसी उड़ाता था कि मानव विधायकों ने इतने सारे कानून बनाए, किंतु फिर भी ये विधायक हर संभव उल्लंघन को सम्मिलित करने में असमर्थ रहे।

ईश्वर का कानून आत्मापरक है और एक शब्द प्रेम द्वारा सारे कानूनों का मूल्यांकन किया जा सकता है। मानक आचरण के मार्गदर्शन के लिए उसका बनाया कानून दो महान धर्मादेशों के रूप में विभाजित किया गया है – ईश्वर के प्रति प्रेम और पड़ोसी के प्रति प्रेम। इसी प्रकार इनका उपविभाजन दस धर्मादेशों में हुआ है। यीशु ने यह दिखा कर इस कानून को आवर्धित किया कि इसके सिद्धांत वस्तुतः मानव के सभी संभावित उल्लंघनों को समाहित कर सकते हैं। कोरिंथियाई II का तीसरा अध्याय यही दिखाता है कि ईश्वर के कानून को सैद्धांतिक रूप में व्यवहार में लाना है। इसे एक अकेले शब्द प्रेम में व्यक्त किया जा सकता है। फिर भी, यह इताना श्रेष्ठ है कि इसके सिद्धांतों को लागू करने पर, यह पूर्ण कानून बन जाता है। केवल एक उत्कृष्ट कानून र्निमाता है और वह है ईश्वर।

यह याद रखें कि ईश्वर का शासन ईश्वर के कानून पर आधारित है। यह बहते प्रेम, सहयोग, शासितों की भलाई से संबंधित जीवन शैली है। और ईश्वर का यह कानून आज्ञा पालन द्वारा शांति, आनंद, सहकारिता उत्पन्न करता है।

ईश्वर एक परिवार है:

अब फिर एक बार जेनेसिस 1:1 पर जाएं: ''शुरू में ईश्वर ने....।'' ईश्वर की प्रेरणा से मूसा ने इसे मूल रूप में लिखा था। मूसा ने हिब्रू में लिखा था। हिब्रू शब्द 'एलोहिम' का अनूदित रूप है ''ईश्वर''। एलोहिम एक संज्ञा शब्द हो या नाम हो, बहुवचन में है, पर व्याकरणिक प्रयोग में, साधारणतया, एकवचन है। परिवार. चर्च, समूह के रूप में व्यवहृत शब्द है। मतलब है कि दो या अधिक सदस्यों से बना एक परिवार। जैसे कई सदस्यों से बना एक चर्च– कई लोगों से बना एक समूह।

ठीक–ठीक कहें तो यह बात उन दो व्यक्तियों से संबंधित है जो एक ईश्वर से बने हैं। जैसे जॉन 1:1 में हमने देखा पवित्र शब्द और ईश्वर– इनमें दोनों ही व्यक्ति, ईश्वर हैं।

दूसरे शब्दों में कहें तो, अब ईश्वर दो व्यक्तियों का एक परिवार है– अब दो व्यक्ति हैं– पिता ईश्वर है और बेटा मसीह है। पर, ईश्वर की पवित्र आत्मा किसी में निवास करती है और ईश्वर की आत्मा से चालित है, तब (रोम 8:14) वह ईश्वर से प्रजनित बेटा है. पर, सर्वोच्च शक्ति और महिमा लेकर जब मसीह धरती पर दुबारा लौटा और उसने ईश्वर का राज्य स्थापित किया, ईश्वर का शासन लूसिफर द्वारा समाप्त कर दिया गया था, तब ईश्वर की आत्मा से प्रेरित और चालित सभी जीव ईश्वर से प्रजनित बेटा बनेंगे। तब ईश्वर का परिवार पुनर्स्थापित ईश्वर के शासन द्वारा सभी देशों पर शासन करेगा!

तीन व्यक्तियों से माना गया त्रिमूर्ति मत ईश्वर को सीमित करता है। ईसा मसीह के महान सुसमाचारों को नष्ट कर देता है! उसके सुसमाचार अभी शीघ्र आनेवाले ईश्वर के राज्य के शुभ संदेश हैं। यह ईश्वर का राज्य ही इस दुनिया की और मिश्रित मानव–जाति की एकमात्र आशा है!

इसके विपरीत, त्रियेक सिद्धांत प्रकाशन ग्रंथ 17:5 में दिए गए महा गलत धर्म का मत हैः ''रहस्य महान बाबिलोन, दुश्चरित्रों की माता और धरती के घृणित व्यक्ति।''

उस सिद्धांत से अन्य मतों के साथ, शैतान ने सारे परंपरागत ईसाई धर्म को धोखा दिया।

त्रियेक सिद्धांत

परंपरागत ईसाइयत की आमतौर पर स्वीकृत शिक्षा यह है कि ईश्वर त्रियेक है– तीन व्यक्तियों में ईश्वर– पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा (आमतौर पर प्रेतात्मा कहा जाता है।)

यह ''त्रियेक'' सिद्धांत परंपरागत ईसाइयत कैसे में आया?

सुनिश्चित है कि यह सिद्धांत बाइबिल से नहीं आया। मैने प्रकाशन ग्रंथ 12:9 का उद्धरण देकर कहा है कि सभी देश राक्षस शैतान द्वारा ठगे गए हैं। तो फिर कैसे धूर्त शैतान ने ''ईसाइयत'' में यह सिद्धांत घुसेड़ दिया?

इस प्रश्न का इतिहास ही बड़ा रुचिकर है। यह अविश्वसनीय लगता है कि शैतान जैसा एक जीव इस पूरे विश्व मात्र को धोखा नहीं दे सकता, बल्कि मसीह के नाम वाले महा धर्म– ''ईसाई धर्म– को भो धोखा दे सकता है। यही ''ईसाई धर्म'' सच्चा धर्म माना भी जाता है। फिर भी, विरोधाभास प्रेमी, शैतान ने कर दिखाया!''

उसने अपने महा गलत चर्च द्वारा यह कर दिखाया। यह चर्च सन् 33 में जादूगर सैमन द्वारा स्थापित हुआ था जिसका विवरण चरितों की पुस्तक के आठवें अध्याय में मिलता है। यह सैमन समारिया के 'बेबिलोन के रहस्य–धर्म' का नेता था। II किंग्स 17:23–24 में दिया गया है कि असैरिया का राजा, शल्मानेसर ने उत्तरी साम्राज्य पर हमले करके जीता। उत्तरी साम्राज्य ही इस्राईल है। राजा ने यहां के लोगों को समारिया की उनकी भूमि से हटा दिया। समारिया येरूसलेम के उत्तर में है। और उस स्थान पर बेबिलोन प्रांत के बेबिलोनिस रहस्य धर्म के लोगों को रखा, निस्संदेह, वे ही गैर–ईसाई थे। वे मसीह के समय में उत्तरी पालस्तीन के इस इलाके में निवास करने लगे। मसीह के समय में जूडिया के यहूदियों का उनसे कोई लेना–देना नहीं था। वे उनको तिरस्कारपूर्ण रूप में ''कुत्ते'' कहते थे। तब भी, पहली शताब्दी में, वे इस गैर यहूदी बेबिलोनिश रहस्य धर्म से जुड़े थे।

सन् 33 में, पेंटिकोस्ट के दिन, ईसा मसीह स्वर्ग से लौटे दो वर्ष बाद, ईश्वर के चर्च की स्थापना की। पेंटिकोस्ट के उपयादक फिलिप थे जो बाद में सुसमाचारक बने। वह समारिया गए और मसीह का ''सुसमाचार'' सुनाया। जादूगर सैमन भी अपने झुण्ड के साथ फिलिप को सुनने के लिए आए।

सैमन ने उस देश के निवासियों को सम्मोहित कर लिया था और बेबिलोन के रहस्य धर्म के नेता के रूप मे सैमन को स्वीकार करके वहां के निवासियों ने उसका अनुपालन किया। छोटे व्यक्ति से श्रेष्ठ लोगों तक, सब ने कहा, यह व्यक्ति ईश्वर की महाशक्ति है (एक्ट्स 8:10)।

जब लोगों ने फिलिप को ''ईश्वर के राज्य'' पर उपदेश देते हुए सुना तो लोगों ने उसपर भरोसा किया। उनका बपस्तिमा हुआ। और यह सैमन उनके साथ बपस्तिमा पाने में सफल हुआ।

इसके बाद सैमन धर्म प्रचारक पीटर और जॉन के पास आए। कुछ पैसे रिश्वत के रूप में दिए, लोगों पर हाथ रखकर आशीर्वाद देने की शक्ति और उनसे पवित्र आत्मा प्राप्त करने की अनुमति मांगी। पीटर ने उसे खूब फटकारा। पर सैमन ने अपने को ईसाई धर्म प्रचारक के रूप में घोषित कर लिया। साथ ही, गैर यहूदी बेबिलोन के रहस्य धर्म को ''ईसाइयत'' कहा। उसने पाप को माफ करने के लिए ''कृपा'' का सिद्धांत स्वीकार किया। (इसे गैर यहूदी धर्मों ने कभी नहीं माना।) पर कृपा को ईश्वर की आज्ञा पालन न करने की अनुज्ञा में बदल दिया। (जूड 4)। उसने ''ईसाई धर्म'' के नाम से गैर यहूदी धर्म को एक विश्व धर्म के रूप में बदले की अभिलाषा की। ताकि उसको विश्व का राजनीतिक शासन प्राप्त हो।

अपने जाली धर्म के ''पेटर'' (पीटर) सैमन ने इसे अपने जीवन पर्यंत निष्पादित नहीं किया। पर, परवर्ती नेताओं ने मुख्यालय को रोम में बदल लिया और रोमन साम्राज्य पर राजनीतिक नियंत्रण प्राप्त किया। इसके बीच के नेता ने ''पवित्र रोम साम्राज्य'' कहा। अब फिर से साम्राज्य की प्रक्रिया यूरोप में पुनर्जीवित हुई है!

जाली ईसाई धर्म

सन् 60 के आस–पास कई पूर्वीमध्य देश सच्चे ईसाई धर्म से जाली धर्म में बदल गए (गलातियों 1 : 6–7)। सन् 90 के अंत में धर्म प्रचारक जॉन जीवित था। उसी ने ''पटमास के उपद्वीप पर प्रकाशन'' नामक पुस्तक लिखी।

कुछ समय के बाद सन् 33 में सैमन द्वारा स्थापित चर्च ने सच्ची ईसाई उपेक्षा (मसीह ने उसका रूप बदलकर बलि के मेमने के स्थान पर बेखमीर रोटी और द्राक्षासव में बदल दिया था।) को बेबिलोन के उत्सव में बदल देने का प्रयत्न किया। अब वह, अंग्रेजी में, ''ईस्टर'' कहा जााता है। यह नाम एसटार्ट या इशतर देवी से संबंधित है। (कुछ शामी बोलियों में ''ईस्टर'' उच्चरित किया जाता है)।

धर्म प्रचारक जॉन की मृत्यु के बाद, उसके एक शिष्य, पालिकार्प, ने उपेक्षा ईस्टर के प्रश्न पर रोम के विशप से विवाद करना शुरू कर दिया। यह बिशप सैमन द्वारा स्थापित चर्च के परवर्ती नेता थे।

और आगे, मसीह के सच्चे ईसाई धर्म के एक और शिष्य, पालिक्राट्स, ने उसी उपेक्षा ईस्टर के प्रश्न पर एक दूसरे बिशप के साथ और गरम विवाद शुरू कर दिया। यह धर्म विज्ञान युद्ध चौपेजी दशमांश विवाद कहलाया।

पालिक्राट्स का तर्क था कि जैसे ईसा और असली धर्म प्रचारकों ने सिखाया, 'उपेक्षा' को, ईसा और धर्म प्रचारक पॉल के (I कार. 11) कहे अनुसार, नए ईसाई रूप में ही अपनाना है। इसमें बलि के मेमने के स्थान पर बेखमीर रोटी और द्राक्षासव होना है। यह उत्सव 14वें निसन के दिन मनाना है। पवित्र कैलेंडर का पहला महीना होता है निसन, जो वसंत ऋतु में पड़ता है। पर रोमन चर्च ने जोर दिया कि यह उत्सव रविवार को अपनाया जाए।

उसी समय, एक और विवाद शुरू हो गया। यह विवाद सिकंदरिया के डॉ. एरियस (एक ईसाई नेता जिसकी मृत्यु सन् 336 में हुई) और अन्य विषयों के बीच ईश्वर को त्रियेक कहने के मामले पर हुआ। डॉ. एरियस ने त्रियेक सिद्धांत पर कड़ाई से विरोध किया, पर अपनी ही गलतियों को प्रस्तुत किया।

सन् 325 में सम्राट कांसटैंटाइन ने निसेन परिषद से इन विवादों को सुलझाने की प्रार्थना की। कांसटैंटाइन तब ईसाई नहीं बने थे। पर राजनीतिक शासक होने के नाते यह नियंत्रण लगाया। परिषद ने ईस्टर–रविवार सिद्धांत और त्रियेक सिद्धांत–दोनों पर स्वीकृति दी। वैधानिक शासक कांसटैंटाइन ने इसे कानून बनाया, पर वह इसे सच्चाई में बदलने में असफल रहे।

''ईश्वर कौन है और क्या है'' के मुख्य स्वरूप के संबंध में शैतान ने पूरे विश्व को धोखा दिया। मसीह और पवित्र आत्मा के संबंध में भी शैतान ने धोखा दिया। ईश्वर के पवित्र कानून पर आधारित ईश्वर के शासन के मामले में भी शैतान ने धोखा दिया। और आगे भी धोखा देता गया निम्नलिखित प्रश्नों पर कि मानव क्या है और किसलिए है, मुक्ति क्या है, वह कैसे मिलती है, सच्चा ईसाई धर्म कौन–सा है, चर्च क्या है और क्यों है और भविष्य कैसा होगा आदि!

ईश्वर कैसे दिखता है?

बाइबिल में कहीं भी त्रियेक शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है। जैसे हम आगे बढ़ेंगे, मैं इस विषय को पूर्ण रूप से समझाता हूं कि ईश्वर ने 'त्रियेक' के रूप में अपने को कभी सीमित नहीं कर लिया था। एक बात समझ लें तो आपको आश्चर्य होगा कि मानव मन अति अद्भुत प्रकाशना उद्घाटन को प्राप्त अवश्य करेगा या अंतर्विष्ट कर लेगा।

ईश्वर के बारे में पहली युक्ति या शिक्षा यही है कि उत्तरकालीन दूसरी शताब्दी में त्रियेक शुरू हुआ। यह कार्य नव विधान का अधिकांश भाग लिखे जाने के एक सौ वर्ष बाद हुआ। जादूगर सैमन प्रणीत जाली ईसाई–धर्म, गैर यहूदी ईस्टर के साथ, तीव्रता से इसका बढ़ावा दे रहा था। पर ईश्वर के सच्चे चर्च ने इसका जोरदार विरोध किया। यह विवाद अब इतना हिंसक हो गया कि यह विरोध विश्व–शांति को धमकी देने लगा। उस समय के गैर यहूदी सम्राट कांसटैंटाइन ने इस निसेन परिषद से अनुरोध किया कि यह परिषद इस मामले को सुलझा दे। रोम के सम्राट के समर्थक काफी अधिक संख्या में थे और उन्होंने ईश्वर के सच्चे चर्च को सताना शुरू किया।

प्रकाशना की पुस्तक में इस दोनों चर्चों की भविष्यवाणी आप देख सकते हैं। बारहवां अध्याय ईश्वर के सच्चे चर्च की भविष्यवाणी करता है, जिसपर काफी अत्याचार हुआ था। ईसा ने इसे 'छोटा विश्वासीगण'' कहा। सत्रहवें अध्याय में आप जाली चर्च की भविष्यवाणी देख सकते हैं। वह एक बड़ा महान चर्चा था, ईश्वर ने नाम दिया था, ''रहस्य, महान बेबिलोन, दुश्चरित्रों की माता'' (पद 5)। वह उसी धारा में थी और राजनीतिक शासनों के आर–पार बैठ गई। सारा विश्व आश्चर्य में हांफेगा यह देखकर कि यह धार्मिक राजनितिक मध्यम ''पवित्र रोम साम्राज्य'' को फिर से जीवन मिला। अब यह देशी बाजार में रूपांतरित होने, आरंभ होने की प्रारंभिक अवस्था में है।

जाली धर्म ग्रंथ जोड़ा गयाः

बाइबिल के प्राधिकृत रूपांतर में एक ही छोटा–सा अंश है, जिसका त्रियेक सिद्धांत का समर्थन करने वाले त्रियेक के अनुयायी आमतौर पर प्रयोग करते हैं। यह अंश जॉन I 5 : 7–8 में दिखाई देता है। और निम्नलिखित उद्धरण में देख सकते हैंः ''इतिहास कहता है कि तीन हैं (स्वर्ग में, पिता, शब्द और पवित्र आत्माः और ये तीनों एक हैं। और धरती पर तीन का साक्षी है), आत्मा, जल और रक्तः ये तीनों एक को मानते हैं।'' कोष्ठक में दिए गए ये शब्द लातीनी बाइबिल के अनुवाद के समय संपादकों द्वारा जोड़े गए थे। शायद चौथी शताब्दी की शुरुआत में यह अंश जोड़ा गया। पुरानी यूनानी हस्तलिपियों में यह अंश नहीं मिलता, और अन्य आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों में भी नहीं मिलता। जब रोम में, डॉ. इरियस और ईश्वर के लोगों के बीच गरम विवाद चल रहा था, उस समय लातीनी बाइबिल में जोड़ा गया था।

बाइबिल की टीकाएं व्याख्या करती हैं कि ये सारे शब्द धर्मप्रचारक जॉन की हस्तलिपि में लिखे ही नहीं गए या अब मिलनेवाली पूर्व प्रतियों में भी ये शब्द नहीं मिलते। धर्मप्रचारक जॉन अपने तीन धर्मपत्रों और प्रकाशना में बोला है, ''पिता और... पुत्र'' (1 जॉन 1 : 3)। पर कहीं भी, ''पिता और धर्मग्रंथ'' नहीं लिखा। केवल इस प्रेरणाहीन भाग 1 जॉन 5 : 7–8 में मिलता है।

महाधोखेबाज शैतान ने क्यों चाहा कि लातीनी बाइबिल में यह नकली अंश जोड़ लिया जाए, इसका भी एक असली कारण है। यह तो बिल्कुल अलग बात है कि यह नकली अंश बाद में प्राधिकृत रूपांतर में सरककर घुस आया। त्रियेक सिद्धांत ने ईसा मसीह के सुसमाचार को बिल्कुल छोड़ दिया। ईसा अपना सुसमाचार पिता ईश्वर से मानव जाति के लिए संदेश के रूप में लाए थे। ईश्वर का राज्य वापस आने का शुभ समाचार था। अन्य सारी बातों से अधिक शैतान इस बात को हरा देना चाहता था। हम आगे चलें तो यह बात स्पष्ट हो जाएगी।

एक विश्व विख्यात सुसमाचारक ने कहा थाः ''वर्षों पहले, जब मैंने बाइबिल पढ़ना शुरू किया, तब मुझे एक विषय का सामना करना पड़ा– वह था त्रियेक सिद्धांत की बड़ी जटिल समस्याएं। मैं उसका पूर्ण रूप से निराकरण नहीं कर पाया, क्योंकि उसमें रहस्यात्मक तत्व भरे थे। आज तक मैं उसे पूरा का पूरा समझ नहीं पाता, फिर भी मैं मानता हूं कि वह ईश्वर की ही प्रकाशना है... किसी भी ईसाई के लिए त्रियेक की व्याख्या करना और उदाहरण द्वारा समझाना बहुत ही मुश्किल काम होगा।''

इस अवस्था में, और भी कुछ जोड़ा गया कि आधुनिक अनुवादों में कई स्थलों पर पवित्र आत्मा के लिए 'वह' शब्द का पुल्लिग एक वचन में असावधानी से प्रयोग हुआ है। पर कभी–कभी हर कहीं नहीं– इन्हीं अनुवादों में पवित्र आत्मा के लिए 'वह' का प्रयोग निर्जीव या 'अनादर' सूचक हो गया है। उदाहरणार्थ, पेंटिकोस्ट के स्मरणीय दिन पर 'ईश्वर के चर्च' के स्थापना के लिए पवित्र आत्मा के प्रथम आगमन का जिस अंश में वर्णन हुआ है।

पवित्र आत्मा उंडेली गई

श्रवणीय जोर की शक्तिशाली हवा के रूप में पवित्र आत्मा स्वर्ग से आई। ''और उसने (पवित्र आत्मा) सारे घरों को भर दिया, जहां वे लोग बैठे थे।'' फिर, पवित्र आत्मा दिखाई दी– आंखों में आई– यह प्रमाण देते हुए आई– ''उनमें ज्वाला के समान विदीर्ण जीभें दिखाई दीं और वह (विभाजित जीभों के

रूप में पवित्र आत्मा) सभी लोगों पर बैठ गई'' (एक्ट्स 2: 2–3)। पद 18 में पीटर पैगंबर जोएल के उद्धरण देते हैं: ''मैं अपनी आत्मा में से...उड़ेलूंगा....'' पानी या किसी तरल की तरह ''आत्मा उड़ेली जा सकती है''। क्या आप किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति में उड़ेल सकते हैं – जैसे वहां जमा हुए इन लोगों में ईश्वर के यहां से उड़ेला गया? जॉन 7:37–39 ''अंतिम दिन, उस दावत के महान दिन, यीशु खड़े हुए और यह कहते हुए चीखे, यदि कोई व्यक्ति प्यासा है तो उसे मुझमें आने और पीने दो। वह जो मुझ पर विश्वास करता है, जैसा कि बाइबिल कहती है, उसके पेट से जीवित पानी की नदियां बहेंगी (लेकिन उन्होंने यह बात उस आत्मा के बारे में कही थी जिसे उनको प्राप्त करना चाहिए जो उसमें विश्वास करते हैं: क्योंकि पवित्र (आत्मा) अभी नहीं दी गई थी क्योंकि वह यीशु अभी गर्वान्वित नहीं हुए थे।)''।

फिर, एक्ट्स 10:45 में देखिए, ''...पवित्र (आत्मा) का उपहार गैर यहूदियों पर भी उंडेल दिया गया।''

सारांश:

अंत में, अति संक्षेय में सारांश देता हूं: जॉन 1:1–4 के अनुसार, ईश्वर एक परिवार है, अब तक के लिए, उसमें दो ही सदस्य हैं। धरती पर ईसा मसीह के वापस आने पर, ईश्वर के सच्चे चर्च में, पहले ही जो ईश्वर की आत्मा के प्रजनित कई हजार लोग हैं, जल्द ही इस पवित्र परिवार में जन्म लेंगे। ईसा मसीह, अपने पुनर्जीवन द्वारा, ईश्वर के पवित्र पुत्र के रूप में जनमें (रोमनों 1:4) ईश्वर के परिवार में ऐसा पहला बेटा पैदा हुआ (रोमनों 8:29)।

ईश्वर और ईसा मसीह दोनों ही आत्मा के बने हैं। मानव जैसे रूप और आकार में बने हैं। पर अग्नि की ज्वाला जैसी उनकी आंखें हैं और पूर्ण शक्तिवाले सूर्य के समान चेहरे हैं।

इस धरती पर बनी सारी वस्तुओं का सृष्टिकर्ता ईश्वर है। ईश्वर और पवित्र शब्द (जो बाद में ईसा मसीह बना) दोनों अन्य लोगों के पहले से अमर रहे। उनमें से ईश्वर की आत्मा प्रकट हुई। इससे मालूम होता है कि ईश्वर सर्वव्यापी है और सर्वज्ञ भी. पिता ईश्वर, इस ईश्वरीय परिवार का पवित्र पिता। इस परिवार में ही सच्चे परिवर्तित ईसाई जन्म लेंगे।

2

देवदूतों और अपदूतों का रहस्य

क्या कोई चीज **अदृश** आत्मा की दुनिया के प्रश्न से अधिक रहस्यमय हो सकती है? देवदूत हमेशा धरती के लोगों के लिए रहस्यात्मक ही रहे। क्या देवदूत सचमुच विद्यमान हैं? असल में, अपदूत शैतान हैं? क्या शैतान यथार्थ और अमरजीवी है? क्या ईश्वर ने शैतान की सृष्टि की?

कुछ धर्म ऐसे देवताओं की पूजा करते हैं– जिन्हें वे देवता अपदूत मानते हैं। ईसाई धर्म के कुछ महान कैथीड्रलों के बाहरी भाग कुछ परनालों, भद्दे और विकृत मुखों से सजाए गए हैं। समझा जाता है कि अपदूतों को डराकर दूर भागते हैं।

इस दुनिया में सारी बराइयों और मुसीबतों का मूल कारण है– हमारे मनों के बीच लड़ाई। पर, असल में, मनों के बीच झगड़े होने के मूल कारण क्या हैं? क्या कहलप्रिय मनोवृत्ति और अदृश आत्माओं के बीच कोई संबंध है? हरेक के लिए यह रहस्य बनकर ही रहा, पर बाइबिल असली लेकिन अदृश दुनिया को व्यक्त करता है– कुछ लोग ऐसा कहना पसंद करते हैं कि वह भिन्न परिमाण है– हमारी अपनी दुनिया के साथ है, जो हमारी पंचेंद्रियों के लिए बिल्कुल अगोचर है। यही आत्माओं की दुनिया है।

हिब्रू के प्रथम अध्याय में, हम पढ़ेंगे कि देवदूत ईश्वर के गुप्त संदेशवाहक का काम करते हैं। और जिनको ईश्वर ने मुक्ति देने और अमर जीवन देने के लिए बुलाया है, उनका उपचार करने के लिए ये देवदूत भेजे जाते हैं।

इफीसियाई 6 में यह बताया गया है कि असल में, हमारे कलह और संघर्ष अन्य मानवों के साथ नहीं, बल्कि ''राज्य के विरुद्ध, शक्तियों के विरुद्ध, इस विश्व के अंधकार के शासकों के विरुद्ध, उच्च स्थानों की आत्मिक क्रूरता (दुष्ट आत्माओं) के विरुद्ध हैं।''

यह कैसे हो सकता है? क्यों इस धरती पर मानव–मनों के बीच संघर्ष और कलह भरे पड़े हैं?

इफीसियाई 2:2 में ''मनुष्य इस दुनिया की गति के अनुसार, वायु की शक्ति के राजकुमार (शैतान), के अनुसार , अवज्ञा के बच्चों में सक्रिय रहने वाली आत्मा के अनुसार'' चलता रहा है। लोग बिल्कुल नहीं समझते कि एक अदृश आत्मिक शक्ति उनके मनों में ऐसे विरोधी व्यवहार भर देती है।

विश्वास प्रकट करने वाले ईसाइयों में भी, ये धर्मग्रंथ रहस्यमय हैं। क्यों?

यह अदृश आत्मिक दुनिया (कोलोसियाइयों. 1:15–16) सचमुच वास्तविक है, पर यह अदृश होने के कारण 'रहस्य' हो गई है। यह सच है कि पवित्र देवदूत और दुष्ट आत्माएं अदृश आत्मिक दुनिया, भौतिक और दृश दुनिया से अधिक वास्तविक हैं देखिए, बहुत सारे लोग नहीं जानते कि बिजली क्या है, पर उसकी वास्तविकता जरूर जानते हैं। बाइबिल व्याख्या करती है, ''अगर हमारा सुसमाचार छिपा है तो उनसे छिपा है जो खो गए हैं; इस दुनिया के (शैतान) ने जिनके मनों को ढंक लिया है ताकि वे विश्वास न करें।'' (II कारिंथियाई. 4:3–4)। शैतान इस दुनिया का ईश्वर है।

यह ज्ञान प्राप्त करने का समय आ गया है।

सर्वोच्च अदृश शक्तिः

प्रथम अध्याय में यह स्पष्ट कर दिया गया है कि शाश्वतत्व के ईश्वर का एक परिवार है, मूल रूप में इसके दो सदस्य थे– ईश्वर और पवित्र शब्द–करीब 2,000 वर्ष पहले पवित्र शब्द ईसा मसीह बन गया। ईश्वर अदृश है– सर्वोच्च सर्वशक्तिमान आत्मिक जीव। हमने देखा कि ईश्वर जीवित है। वह काम करता है! वह क्या करता है? वह परिवार का सृष्टिकर्ता है। शायद कुछ लोग लोग समझें कि ईश्वर

ने सबसे पहले जो बनाया वह धरती नहीं था, सूर्य या अन्य ग्रह नहीं थे, ब्रह्मांड नहीं था। इन सब की सृष्टि के पहले, ईश्वर ने देवदूतों को बनाया—करोड़ों देवदूतों की आत्मिक दुनिया बनाई।

महान ईश्वर ने अपने पवित्र शब्द द्वारा, सब से पहले, इन आत्माओं— हरेक देवदूत की अलग—अलग से सृष्टि की— करोड़ों में— परिकल्पना करके सृष्टि की! देवदूत असली आत्माएं हैं और हरेक देवदूत में महाशक्तिशाली मन है और मानव मनों से अधिक क्षमता है; मनोवृत्ति, प्रयोजन और अभिप्राय का सामर्थ्य है। यह भी उल्लेख हुआ है कि ईसा भी ''देवदूतों से थोड़े कम'' मानव बनाए गए थे। (हिब्रू 2 : 7)। वे पूर्ण रूप से आत्मा के बने हैं। उनको स्वतःपूर्ण जीवन मिला था— जीवन अन्तर्भूत— अमर्त्यता। उनकी शिराओं में रक्त नहीं बहता और जीवित रहने के लिए हवा की सांस जरूरी नहीं है। पर, स्वतःपूर्ण अंतर्भूत जीवन उनमें अवश्य था।

चूंकि ईश्वर ने देवदूतों को बनाया है, ईश्वर के बेटे कहलाते हैं (जॉब 1:6) पर, वे ईश्वर के पैदा किए, पैदा नहीं और जन्मे बेटे नहीं थे।

देवदूतों की सृष्टि क्यों?

अन्य जीवों की सृष्टि से पहले क्यों अदृश आत्मा के देवदूतों की सृष्टि हुई? वह भी, भौतिक पदार्थों और भौतिक विश्व की सृष्टि से पहले उनकी सृष्टि हुई? आखिर उनकी सृष्टि क्यों हुई?

ईसा मसीह ने कहा, ''मैं काम करता हूं और मेरे पिता काम करते हैं।'' (जॉन. 5:17)। जॉन 1:1—5 में ऐसा व्यक्त किया गया है कि ईश्वर और पवित्र शब्द (ईश्वर का परिवार) जीवित हैं। पूर्व अध्याय में हमने देखा कि वे कैसे जीवित थे— परस्पर प्रेम में बंधकर, पूर्ण सहमति और पूरी समरसता के साथ वे जीवित थे। अगर वे जिये तो, उन्होंने क्या किया? उन्होंने सृष्टि की। कोई कह सकता है कि व्यावसायिक दृष्टि से वे सृष्टि की वृत्ति में लगे थे। सृष्टि—कार्य में

जिनकी सृष्टि होने वाली है, उनकी सहायता करने, नियंत्रण करने तथा प्रबंधन वगैरह करने के लिए ईश्वर के परिवार से निम्न स्तर पर सबसे पहले उन्होंने अन्य आत्माओं की सृष्टि की। ये देवदूत ईश्वर की सृष्टि में अभिकर्ताओं, राजदूतों और सहायकों के रूप में बने थे। जीवित ईश्वर के सेवकों के रूप में उनकी सृष्टि हुई।

शाश्वतत्व से ईश्वर का सर्वोच्च है, जो हमारे मानव– मन के लिए जो ईश्वर है, उस सबके सिंहासन पर विराजमान था जो या जो होने वाला था एक्सोडस के 25 वें अध्याय के राजसिंहासन का पार्थिव वर्णन हुआ है। यह अंश ईश्वर के अनुदेश से मूसा द्वारा निर्मित पोत के वर्णन में देखा जा सकता है। ईश्वर के राजसिंहासन के दोनों ओर ईश्वर के सिंहासन को आवृत्त करने हुए एक महादूत, एक सुंदर शिशु को अपने पंख फैलाए हुए देख सकते है। यह यही दिखाता है कि ये उच्च देवदूत ईश्वर की सारी सृष्टियों पर ईश्वर के राज्य के अतिमुख्य प्रशासन के कार्य में खूब लगे हुए थे। ये केवल ईश्वर के सहायक, अभिकर्ता, सेवक थे।

हिब्रू के प्रथम अध्याय में हम देवदूतों के बारे में पढ़ सकते हैं। इस अध्याय में पहले ईसा के बारे में गया है, ''वह ....ईश्वर के अपने चरित्र की छाप लेकर, अपनी शक्ति भरे शब्दों से विश्व को संभाले रखा है.... और इस प्रकार वह देवदूतों से श्रेष्ठ है, उनसे 'श्रेष्ठ' का पवित्र नाम विरासत में पाया है। ईश्वर यही कहता है कि देवदूतों ने क्या किया, ''तुम मेरे बेटे हो, क्या आज मैं तुम्हारा पिता बन गया?'' या फिर कहता है, ''मैं उसका पिता बनूंगा और वह मेरा बेटा बनेगा?'' और भी आगे, जब सबसे पहला मानव पैदा हुआ, तब उसका परिचय देते हुए कहता है, ''ईश्वर के सारे देवदूत उसकी वंदना करें।'' जब वह देवदूतों के बारे में कहता है, ''अपने देवदूतों को कौन वायु (आत्मा) के रूप में बदलता है, अपने सेवकों को अग्नि की ज्वालाओं के रूप में कौन बदलता है।' तब वह अपने बेटे का उल्लेख करता है, ''ईश्वर हमेशा के लिए तेरा सिंहासन है, तेरा राजदंड समानता का राजदंड है; तुमने न्याय से प्रेम और आराजकता से घृणा की है। अतः ईश्वर, तेरे ईश्वर ने, तुझे हर्ष का तेल लगाकर तेरे साथियों से बढ़ कर तुझे पवित्र किया – और, शुरू में ही तूने धरती को देखा.... ।''

''देवदूतों से उसने कभी कहा, 'तू तब तक मेरी दाईं ओर बैठ, जब तक मैं तेरे विरोधियों को तेरे पांव का पायदान बनाऊं? क्या सारे देवदूत दैवी सेवा की आत्मांए–मात्र नहीं हैं? जिन लोगों को वंशानुगत मुक्ति प्राप्त करनी है, उनके हित का कार्य इन देवदूतों को सौंपे नहीं गए हैं?'' (श्लोक 3–10, 13–14, मोफत अनुवाद)।

देवदूतों से थोड़े निम्न स्तर पर मानव की सृष्टि हुई। फिर भी मावन में देवदूतों से कहीं महाशक्ति बनने की विस्मयकारी अंतःशक्ति भरी पड़ी है। यह सच्चाई हिब्रू के दूसरे अध्याय में व्यक्त हुई है और इस पुस्तक के सातवें अध्याय में इस पर विचार होगा।

तृतीय अध्याय में हम दिखायेंगे कि सारे मानव, असल में, ईश्वर के पुत्रों् के रूप में प्रजनित हैं, जैसे अभी तक पैदा नहीं हुए हों।

अधिक पाठकों के लिए एक नई खबर लगेगी कि धरती और भौतिक विश्व के अस्तित्व से पहले ही देवदूतों की सृष्टि हो गई। जॉब 38:1–7 यह दिखाता है कि जब ईश्वर ने पहले पहल धरती की सृंष्टि की, तब देवदूत खुशी ्में चिल्लाने लगे। जेनेसिस और 2 में भी बताया गया है कि धरती के बनाते समय ही पूरे भौतिक विश्व की भी सृष्टि हुई।

देवदूत अदृश हैं, अमर आत्मिक जीव है, जिनमें मानव से अधिक श्रेष्ठ शक्ति और ज्ञान भरे पड़े हैं (II पीटर 2:11)। उन्होंने धरती पर मानवजाति के सारे कार्यकलाप देखे हैं और इसलिए, उनको मानव मन, मनोविज्ञान, समाज शास्त्र, विज्ञान और सारी कवाएं जीवित मानव से अधिक मालूम हैं।

मानवता के लिए ईश्वर के प्रयोजन कार्यान्वित करने में देवदूतों का बड़ा हाथ है। वे ईश्वर के अदृश अभिकर्ता हैं। हम जैसे बेचारे लोग मुक्ति के पात्र हैं, उनके कुछ कार्यकलाप समझ में आते हैं।

निजी अनुभव

मैं और मेरी पत्नी दोनों ने अपनी निजी घटनाओं में इसका अनुभव किया है।

जब मेरी बड़ी बेटी, बच्ची थी, तब श्रीमती आम्स्ट्रांग अपने बगल में बच्ची को लेकर सो रही थीं। वह शयन कक्ष में दीवार के निकट सो रही थी। उन्होंने पुकारने की एक आवाज सुनी, ''बिवर्ली को हटाओ''। उन्होंने समझा कि यह तो सपना है और जागे बिना सोने लगीं। उन्होंने वही आवाज फिर से सुनी, इस बार थोड़ा जोर से सुनी। वह अर्द्ध–निद्रा में थीं। उन्होंने कुछ नहीं देखा। फिर सपना समझकर वह करवट बदलकर सोनेवाली थीं। तीसरी बार वह आवाज फिर से सुनाई दी। इस बार वह आवाज जोर की और सुस्पष्ट भी थी; ''बिवर्ली को हटाओ''। हक्का–बक्का होकर, उन्होंने बच्ची को अपनी दूसरी ओर ले लिया। और एक–दो क्षण के बाद, चित्र का एक भारी फ्रेम जो दीवार पर लटक रहा था, तुरंत बिस्तर पर गिर पड़ा जहां बच्ची सो रही थी। बच्ची का सिर फट जाता या काफी चोट आई होती। इसकी एक ही व्याख्या दे सकता हूं कि बिवर्ली की जान बचाने के लिए ईश्वर ने देवदूत भेजा।

मेरे सेवाकार्य पद की शुरुआत में, 1934 के करीब, मैं तूफानी रात में कार चला रहा था। मैं ओरेगान के यजीन के दक्षिणी हाई–वे पर गाड़ी चला रहा था। जोर की वर्षा हो रही थी। तेज हवा चल रही थी और मैं प्रति घंटे 40 मील की गति पर चल रहा था। जब मैं सड़क के कैंची–मोड़ पर था, तब अचानक मेरी गाडी का स्टियरिंग व्हील बाईं ओर घूम गया। मुझे लगा कि किसी अदृश शक्ति ने स्टियरिंग व्हील को मेरे हाथों से मरोड़ दिया हो। एकदम सीधे मलबे का एक ट्रक आ रहा था। मैं बाल–बाल बचा। मैं उसके बाई ओर मुड़ गया था। अंधेरी रात थी और एक भग्नावशेष मोटर गाड़ी मेरे आगे खड़ी थी। अब मेरे हाथों से अचानक स्टियरिंग व्हील मरोड़ा गया। मेरी गाड़ी मुश्किल से दाईं ओर मुड़ गई। मेरी गाड़ी उत्तर की ओर जाने वाली गाड़ी और दक्षिण की ओर जाने–वाले ट्रक के बीच में से होकर गई। अब मैं अपने सही लेन पर आ गया। मलबे के ट्रक और मोटर गाड़ी के बीच में एक इंच ही बाकी रह गया। मैंने अपनी जिंदगी में कभी निकली कोई ऐसी चीज अनुभव नहीं की थी। किसी एक शक्ति ने मेरी गाड़ी का स्टियरिंग व्हील मेरे वश से छीन लिया और मोड़ दिया और मेरे हाथों से खींचकर उसे एकदम सीधे पकड़ लिया।

एक बार और, 1927 के अंत में, मेरे धर्म–परिवर्तन के एक वर्ष के अंदर ही, मुझे ऐसे ही एक अनुभव का सामना करना पड़ा।

टेढ़ी रीढ़ का अनुभव

मैंने और मेरी पत्नी ने चंगा करने के विषय पर थोड़ा बाइबिलीय ज्ञान प्राप्त किया था। थोड़ी प्रगति करने पर, ऐमी सेम्पिल मैकफेर्शन पोर्टलैंड आईं। उन्होंने पोर्टलैंड के ऑडिटोरियम में एक सुसमाचारी अभियान चलाया। एक बार मैं और मेरी श्रीमती ने उस अभियान में भाग लिया। और एक बार, मैं अकेले गया। हम कई धार्मिक शिक्षणों और ग्रुपों के संबंध में ''परीक्षण'' कर रहे थे। ऑडिटोरियम खचाखच भरा था और मैं अंदर नहीं जा पा रहा था। एक प्रवेशक ने मुझसे कहा कि अगर मुझे जल्दी अंदर जाना हो तो मैं स्टेज के पिछवाड़े से जाऊं। थोड़ा चलकर, थोड़ा भागकर मैं उस ब्लाक से बाहर आया और स्टेज के पीछे की ओर चला गया। मैंने एक दु:खद दृश्य देखा।

स्टेज–द्वार के निकट एक औरत और एक बच्चा बुरी तरह बिकलांग एक बूढ़े आदमी को मोटर गाडी से उतारने में लगे थे। मैं उनकी सहायता करने गया। उस बूढ़े की रीढ़ काफी ऐंठी हुई थी। अब मुझे मालूम नहीं हो रहा कि वह गठियारोग के कारण या जन्म से विकृति के कारण या किसी अन्य बीमारी के कारण, उस बूढ़े की रीढ़ ऐंठी हुई है। वह बिल्कुल असहाय थे और देखने में भी एकदम दयनीय लग रहे थे।

हम मुश्किल से उन्हें स्टेज द्वार तक ले गए। अगर इस विकलांग को अंदर न ले जाता तो मैं अंदर प्रवेश नहीं कर पाता। वह बुजुर्गवार सुसमाचारी महिला के हाथों स्वास्थ लाभ पाने के लिए आए थे। हम– धर्म सेवा के पहले हम श्रीमती मैकफेर्शन से संपर्क नहीं कर पाए। सेवा के बाद भी, उनसे मुलाकात नहीं हो पाई। मैंने उस निराश विकलांग बूढ़े को उनकी गाड़ी में बिठाने में सहायता की।

उनके रवाना होने से पहले मैंने कहा, ''अगर आप सचमुच स्वस्थ होना चाहते हों तो मैं आपके घर आना पसंद करूंगा और आपके लिए प्रार्थना करूंगा। श्रीमती मेकफेर्शन स्वस्थ करने की शक्ति अपने अंदर नहीं रखतीं। मैं भी नहीं रखता। केवल ईश्वर ही स्वस्थ कर सकता है। पर मैं जानता हूं कि उसने क्या वादा किया था। जैसे ईश्वर श्रीमती मेकफर्शन को खुशी से सुनता है, उसी तरह मेरी प्रार्थना भी खुशी से सुनेगा। यह तभी संभव है जब आप ईश्वर के वादे पर विश्वास करते हों। और उस पर पूरा विश्वास करें, न कि उस व्यक्ति पर कि जो आपके लिए प्रार्थना करता है या करती है।''

उन्होंने मुझे अपना पता दिया। उनका घर फास्टर रोड के दक्षिण मे था। दूसरे दिन मैंने अपने भाई रस्सेल की गाड़ी ली और खुद चलाई।

स्वस्थ करने के विषय पर बाइबिल पढ़ते समय मैंने सीखा कि ईश्वर दो शर्तें लगाता है; (1) हमें उसके धर्मादेश अपनाने हैं और उसके विचार में खुश करने वाले काम ही करने हैं (I जॉन 3 : 22); और (2) हमें उसपर पूरा विश्वास रखना है (मत्ती. 9 : 29)।

निस्संदेह मैंने अनुभव किया कि अधिकांश लोग ईश्वर के धर्मादेशों का पालन करने की समझदारी नहीं रखते। पर, ईश्वर उनके हृदय को देख रहा है और समझ रहा है। आज्ञा–पालन करने की उनकी भावना और इच्छा पर निर्भर करता है। और इसलिए, ''धर्मादेश का पालन करना अनिवार्य है, आज्ञा का पालन करना अनिवार्य है। इस मामले में, मुझे पूर्ण रूप से लगा कि ईश्वर चाहता है कि मैं इस समादेश में इन लोगों के मन के दरवाजे खोलूं। और उन्हें बताई कि ईश्वर की विधि का उल्लंघन करना पाप है।

अतः मैंने पहले ऊपर उद्धृत दो धर्म ग्रंथ पढ़े और उसके बाद ईश्वर की विधि के बारे में– विशेषकर ईश्वर के विश्राम–दिवस के बारे में पिछले छः महीनों में जो कुछ भी सीखा था उसकी व्याख्या की। मैं जानना चाहता था कि यह विकलांग बूढ़ा और उसकी पत्नी ईश्वर की आज्ञा का पालन करने की इच्छा रखती है या नहीं।

उनमें इच्छा नहीं थी। मैंने पहचाना कि वे 'पेंटिकोस्ट' के थे। वे चर्च में 'अच्छा समय' बिताने के लिए जाया करते थे। उन्होंने चर्च में जो 'अच्छा समय' बिताया था उसके बारे में बताने लगे खुशी–खुशी। वे ईश्वर की आज्ञा का पालन करते थे, और ईश्वर के स्वस्थ होने की लिखित शर्तों का पालन नहीं करना चाहते थे, अतः मैंने उन्हें बताया कि मैं उनके लिए प्रार्थना नहीं कर सकूंगा।

क्या यह देवदूत था?

यह मामला मेरे मन में भारी लग रहा था। मैं उस दयनीय बूढ़े के प्रति गहरी सहीनुभूति महसूस की। फिर भी उसका मन विकृत नहीं था। और मैं जानता था कि ईश्वर पाप के साथ कभी समझौता नहीं करता।

कुछ हफ्ते बाद, फिर से मैंने अपने भाई की गाड़ी ली। और मुझे फास्टर रोड से होकर जाना पड़ा। असल में, उस समय मेरे मन में एक दूसरा मिशन मंडरा रहा था। और् वह विकलांग बूढ़ा मेरे मन में बिल्कुल नहीं था। मैं दूसरे विषय के बारे में गहरा इसे सोचता हुआ जा रहा था।

मैं उस गली के चौराहे पर आया, जहां वह बूढ़ा रहता था। अतः मुझे उनका ख्याल आ गया। तुरंत मेरे मन में दुविधा पैदा हो गई कि अब दुबारा उनसे मिलना है या नहीं। पर उसी समय तर्क बुद्धि ने उससे मिलने के विरोध में फैसला किया। उन्होंने ईश्वर की आज्ञा का पालन करने के विचार और समर्पण का उपहास किया था। अतः तुरंत मैंने उनके बारे में सोचना छोड़ दिया और जिस मिशन पर मैं जा रहा था, उस पर पूरा ध्यान दिया।

तब एक विचित्र घटना घटी।

अगले चौराहे पर, मेरी गाड़ी का स्टियरिंग व्हील अपने आप दाईं ओर मुड़ा। मैने अनुभव किया कि व्हील मुड़ रहा है। मैंने रोका।

मैंने उसे बाईं ओर मोड़ना जारी रखा। अचानक मैंने स्टीयरिंग को सीधा रखने में अपनी पूरी ताकत लगा दी। मेरी शक्ति वश में नहीं थी। मेरी पूरी शक्ति के विरुद्ध कोई अदृश शक्ति स्टियरिंग व्हील को मोड़ रही थी। मेरी मोटर गाड़ी दाईं ओर मुड़ी और उस गली की पूर्वी दिशा में एक ब्लॉक पर जा रुकी जहां वह विकलांग बूढ़ा रहता था।

मैं भयभीत हो गया। जिंदगी में कभी मैंने ऐसा अनुभव नहीं किया था। मैंने अपनी मोटर गाड़ी नियंत्रित की। मुझे मालूम नहीं हुआ कि यह सब क्या हो रहा है।

फिर से यातायात भरी तेज सड़क पर आने में देरी हो गई।

मैंने सोचा, ''ठीक है, मैं इस ब्लाक के अंक तक जाऊंगा और बाईं ओर मुड़ूंगा और फिर फास्टर रोड पर आ जाऊंगा।''

पर, इस गली के दक्षिण में वह ब्लाक, केवल दाईं ओर मुड़ रहा था, न कि बाईं ओर। वहां कोई भी गली पूर्वी दिशा में मुड़ नहीं रही थी। फास्टर रोड पर फिर से आने के लिए मुझे उस बूढे विकलांग का घर पार करना पड़ा।

मुझे आश्चर्य हुआ। ''शायद किसी देवदूत ने स्टियरिंग व्हील मोड़कर मुझे यहां ला दिया?'' मैं इस अनुभव से घबरा गया। मैंने निश्चय किया कि उस विकलांग बूढ़े के घर पर एक क्षण रुकूं तो अच्छा होगा।

मैंने उस बूढ़े को देखा कि खून जहरीला हो गया है। लाल रेखा उसके हृदय के निकट पहुंच रही है।

मैंने उनसे कहा कि क्या हुआ है। ''अब मैं समझ गया'', मैंने कहा, ''ईश्वर ने एक दूवदूत को भेजकर मुझे यहां ला दिया है। मुझे विश्वास हो रहा है कि मैं आपके लिए प्रार्थना करूं। ईश्वर आपको ब्लड पायजरिंग से स्वस्थ करेगा और आपको अपनी करामात दिखाएगा। और आपको, फिर से, एक मौका देगा ताकि आप पश्चाताप प्रकट करें और ईश्वर की आज्ञा का पालन करने की इच्छा प्रकट करें। अगर आप ऐसा करेंगे तो वह आपकी ऐंठी हुई रीढ़ ठीक कर देगा और आपको पूर्ण रूप से स्वस्थ कर देगा।

''इसलिए अब आप चाहें तो मैं आप के लिए प्रार्थना करूंगा और ईश्वर से आपको जहरीले खून से स्वस्थ करने को कहूंगा। पर, मैं ईश्वर से प्रार्थना नहीं करूंगा कि आपकी अपनी ऐंठी हुई रीढ़ ठीक करे, जब तक आप पश्चाताप न करें और ईश्वर जो भी आज्ञा देता है, आप उनका पालन करने की इच्छा प्रकट नहीं करते।''

अब वे काफी निराश हुए। वह बूढ़ा मुश्किल से बारह घंटे और जिंदा रह सकता था। अब वे 'पेंटिकोस्ट' की मीटिंगों में 'अच्छे समय' के बारे में हल्के मन से हंसी–मजाक और दिल्लगी नहीं कर रहे थे। उन्होंने चाहा कि मैं प्रार्थना करूं।

मैं तो अभिषिक्त पादरी नहीं था। इसलिए मैंने तेल लगाकर अभिषेक नहीं किया। अब तक मैंने अपने जीवन में कभी भी दूसरों के सामने जोर से प्रार्थना नहीं की थी। मैंने उनसे इसके बारे में बताया और कहा कि मैं सिर्फ उस बूढ़े पर हाथ रखकर निःशब्द प्रार्थना करूंगा। मैंने नहीं चाहा कि पहली बार स्वचेतना से जोर से प्रार्थना करूं और असली उत्सुकता और विश्वास में बाधा डालूं। मुझे पूरा विश्वास था कि वह बूढ़ा जहरीले खून से अवश्य स्वस्थ हो जाएगा।

वह स्वस्थ हो गया।

मैं दूसरे दिन लौटा। जैसे ही मैंने प्रार्थना की, तुरंत वह बूढ़ा जहरीले खून से स्वस्थ हो गया। पर, मुझे निराशा हुई और दुःख भी हुआ कि वे फिर से, वे 'पेंटिकोस्ट की मीटिंग' में 'अच्छा समय' बिताने के बारे में मजाक करने लगे।

अब मैं कुछ भी नहीं कर सकता था। यह मेरे जीवन में बड़ी निराशा बन गई। मैं उससे दुबारा फिर कभी नहीं मिला, और न उसके बारे में मुझे कोई खबर ही मिली।

ईश्वर के अदृश देवदूत

ईश्वर ने अपने चर्च की, शुरू से लेकर पूरे इतिहास में, देख–रेख करने और हिफाजत करने का काम विशेष रूप से देवदूतों को दिया है (प्रकाशन 1:4, 16, 20; 2:1, 8, 12, 18; 3:1, 7, 14)। ईश्वर के पास देवदूत हैं, जो लगभग धरती पर विचरण करते हैं, धरती का निरीक्षण करते हैं और वापस ईश्वर के पास जाकर धरती की पूरी परिस्थिति की रिपोर्ट देते हैं (प्रकाशन 5:6; जेचारिया, 4:10; II क्रॉनिकिल 16:9)।

और ईश्वर ने विशेष रूप से अपने देवदूतों को अपने प्रजनित मानव बच्चों की देखभाल करने का काम सौंपा है (एक्ट्स 12:15; मत्ती 18:10)। ईश्वर वादा करता हैः "वह तुम्हारे सभी तौर–तरीकों पर नजर नखने के लिए तुम्हारे ऊपर अपने देवदूत रखने का वादा करता है।" (स्तोत्र 91 : 11)

येरूसलेम के नव नगर में द्वारपालकों के रूप में ईश्वर के बारह देवदूत होंगे (प्रकाशना, 21:12)। एक–एक देवदूत इस्राईल की एक–एक जन–जाति के लिए होगा। ये बारह देवदूत, अब महादूत माइकेल की सहायता करेंगे।

देवदूत संदेशवाहक होते हैं। वे अब्रहाम, लॉट, हगर, मोसेस, मनोओ, गिडियन, एलिजा और कई भविष्यवक्ताओं तथा धर्म प्रचारकों के सामने आए थे।

जब ये देवदूत मानव के सामने प्रत्यक्ष होते हैं, तब वे साधारणतया मानव के रूप में ही आते हैं।

बाइबिल तीन उच्च स्तर के देवदूतों का उल्लेख करती हैः लूसिफर (इसैया 14:12), अब अपदूत शैतान; ग्रैब्रियल, जो डेनियल के सामने दो बार (डेनियल 8:16; 9:21), जेचारिया, बपतिस्मा जॉन के पिता के सामने प्रकट हुआ था (लूक. 1:19), और बाद में ईसा की मां मेरी (लूक. 1:26), के सामने प्रकट हुआ था और तीसरा, जो मुख्य माइकेल, जो राजकुमारियों में से एक प्रमुख राजकुमारी से मिला था (डेनियल. 10 : 13), जिसे जूद महादूत के रूप में पहचानता है (जूद. 9)। माइकेल ही वह महादूत है जिसको इस्राईल की बारह जनजातियों की हिफाजत करने और उपचार करने तथा अनुष्ठान करने का काम विशेष रूप से दिया गया था (डैनियल. 12 : 1; 10 : 2–13, 21)। और ईश्वर के आज के असली चर्च की देखभाल करने का काम भी उसी को सौंपा गया था (प्रकाशना. 12 : 7)।

सर्वोच्च सृजनात्मक उपलब्धि

ईश्वर देवदूतों को जिम्मेदारियां देता है, साथ ही, ईश्वर ने उनके अंदर मन भी दे दिया है– सोचने की शक्ति, समझदारी, चयन करने और निर्णय लेने की शक्ति!

पर एक अति मुख्य गुण भी दिया है जिसे ईश्वर की सृजनात्मक शक्तियां भी आज्ञा द्वारा तुरंत सृजित नहीं कर पाईं– वह है– वही पक्का, पवित्र, सदाचारी चरित्र जो ईश्वर और पवित्र शब्द दोनों में अंतर्निहित है।

जिनमें ये गुण आना बदा है, उनको चयन द्वारा, दत्तचित्त होकर इस प्रकार के चरित्र का विकास अवश्य करना चाहिए।

अतः यह अति महत्वपूर्ण स्वयंसिद्धि को ध्यान में रखिए– वही पक्का, पवित्र और सदाचारी चरित्र–यह उसके अंतिम सर्वोच्च प्रयोजन का माध्यम भी है। उसका चरम उद्देश्य!

लकिन कैसे?

मैं फिर से बताता हूं। ऐसे पक्के चरित्र का विकास अवश्य कर लेना है। जिनमें यह चरित्र विकसित होना है, उनमें अलग अस्तित्व के खुले चयन और निर्णय करने का गुण आवश्यक है। फिर भी, पवित्र ईश्वर के यहां से और उसके द्वारा ही यह भाव भरा जाना है, क्योंकि ईश्वर में ही ऐसा सदाचारी चरित्र भरा है और वही दूसरों को प्रदान कर सकता है।

पर सदाचारी चरित्र का अर्थ क्या है?

पूर्ण, पक्का, पवित्र और सदाचारी चरित्र का मतलब है– ऐसे भिन्न अस्तित्व में एक प्रकार की क्षमता प्राप्त करना जो सही और सच्चे मार्ग से गलत मार्ग को भेद करके नकारना, ईश्वर के प्रति और उसके पक्के तरीकों के प्रति शर्तहीन स्वेच्छा से और पूर्ण रूप से समर्पण की भावना रखना– ईश्वर द्वारा जीतने को समर्पित करना– प्रलोभन या स्वेच्छा के विरुद्ध निश्चय करना, सही ढंग से जीना और सही काम करना। इतना होते हुए भी ऐसा पवित्र चरित्र ईश्वर का उपहार ही है। ईश्वर के प्रति समर्पित करने पर ही यह चरित्र प्राप्त होता है। तब वह अपनी विधि भर देता है (ईश्वर का जीने का सही तरीका)। ईश्वर उसी अस्तित्व के अंदर भरने की इच्छा करता है और निर्णय भी लेता है।

असल में, यह पूर्ण और पक्का चरित्र ईश्वर प्रदत्त है। वह अपनी सृष्टि के अस्तित्व के भीतर ही इसे वह प्रदान करता है। वह हमसे मौन–सम्मत्ति प्राप्त करता है। फिर भी कड़ी परीक्षाएं और परीक्षण करने के बाद ही प्रदान करता है।

इस बिंदु पर मैंने कुछ अनुच्छेद खर्च किए क्योंकि यही ईश्वर के संपूर्ण प्रयोजन में एक सर्वोच्च परमोत्कर्ष का साधन है।

अब प्रागैतिहासिक देवदूतों के बारे में: ईश्वर ने (1) सोचने, भेद करने, चयन करने और स्वेच्छा से निर्णय लेने की क्षमता रखनेवाले मन सहित उनकी सृष्टि की है; और (2) उन्हें अपने सही और सदाचारी तौर–तरीके साफ–साफ बता दिएं है। पर ईश्वर ने आवश्यकता पड़ने पर ईश्वर का उचित तरीका स्वीकार करने का स्वतंत्र नैतिक साधन अपनाने या इसके विपरीत अपने बनाए अपने सही तरीके अपनाने की अनुमति भी दी है।

देवदूतों के लिए ईश्वर का मूलभूत उद्देश्य क्या था? यह निर्विवाद तथ्य है जो अब देवदूतों के विद्रोह के कारण मानवों की अतींद्रिय शक्ति बन गई है।

परीक्षण–क्षेत्र के रूप में, सकारात्मक और सक्रिय सृजनात्कम उपलब्धि के मौके के लिए, ईश्वर ने समूचे विस्तृत भौतिक विश्व का सृजन किया और अस्तित्व में लाया।

सब से पहले, ईश्वर ने देवदूतों का सृष्टि की। उनके बाद, देवदूत और मानव जाति जो बाद में बनाए जाएंगे, उनके लिए ईश्वर ने धरती और पूरा विश्व बनाया और अस्तित्व में लाया।

अब ईश्वर ने जड़ सामग्रियां मात्र नहीं बनाई, बल्कि उनमें शक्ति भी भरी। और जैसे मानव ने भौतिकी और रसायन के क्षेत्रों में नियमों की खोज की, उसी प्रकार ईश्वर ने मनुष्य के लिए विधियां बनाईं। ईश्वर ने जैव और अजैव दोनों अवस्थाओं में विद्यमान रखने के लिए भौतिक तत्व बनाए।

इस प्रकार, हम जेनेसिस 1:1 में जो व्यक्त है, उसे देखेंगेः ''शुरू में (भौतिक विश्व के) ईश्वर ने स्वर्गों और धरती की सृष्टि की।'' ये भौतिक और द्रव्यात्मक हैं।

जैसाकि पहले बताया गया है, प्राधिकृत रूप में 'स्वर्ग' शब्द एकवचन में मिलेगा। पर, यह तो मूल रूप में मूसा ने हिब्रू में लिखा था। हिब्रू में वह शब्द बहुवचन–स्वर्गों में है। इस प्रकार बहुवचन में यह धरती मात्र नहीं, बल्कि समूचे भौतिक विश्व को मिलाकर बताया गया है।

अतः यह निर्दिष्ट किया गया है कि उस समय–देवदूतों की सृष्टि के बाद–समूचा विश्व अस्तित्व में लाया गया। उसी समय हमारी धरती का भी सृजन हुआ। इसका पक्का उल्लेख अन्य बाइबिल संबंधी आंतरिक प्रमाणों में मैंने देखा है। निश्चित रूप से इसका उल्लेख जेनेसिस 2:4 में भी मिलता है।

पक्की सृष्टि

मूल रूप में हिब्रू के शब्द (मुसा द्वारा लिखे गए शब्द) पक्की सृष्टि का संकेत करते हैं। ईश्वर अपने आप पूर्णता, प्रकाश और सौंदर्य के सृष्टिकर्ता के रूप में व्यक्त कर लेता है। बाइबिल का हर संदर्भ ईश्वर की सृष्टि के हर पूर्ण पहलू की स्थिति को ''बहुत अच्छा''– पक्का निरूपित करता है।

बाइबिल का यह पहला श्लोक, असल में, असली भौतिक सृष्टि को संपूर्ण रूप में हुआ बताता है– यह विश्व– धरती को भी मिलाकर, शायद करोड़ों वर्ष पूर्व हुआ– पक्का सृजन था, सुंदर और पक्के रूप में था। उसका सृजन पूर्ण और परिसज्जित कार्य था। ईश्वर पूर्णतावादी था।

जॉन 38:4, 7 में, ईश्वर, विशेष रूप से, इस धरती की सृष्टि के बारे में बताता है। उसका कथन है कि सारे देवदूत (''ईश्वर के सर्जित'') धरती की सृष्टि पर खुशी से चिल्लाए। यह घटना यही सच्चाई प्रकट करती है कि देवदूतों की सृष्टि धरती के सृजन के पहले ही हो गई थी।

संभव है कि उनकी सृष्टि भौतिक ब्रह्मांड के पहले हुई थी। सारे सूर्य, सारे ग्रह और अंतरिक्ष के पिंड भौतिक पदार्थ है। देवदूतों की सृष्टि अलग–अलग से हुई थी। वे आत्म जीव हैं। केवल आत्मा के बने हैं।

धरती के देवदूतों ने पाप किया

दूसरे परिच्छेद बताते हैं कि धरती पर देवदूतों की सृष्टि मानव की सृष्टि के पहले हुई हैं।

II पीटर 2 : 4–6 देखिएः कालक्रम में सब से पहले ''देवदूतों ने पाप किया'' आता है। कालक्रम में इसके बाद प्रलय से पहले की दुनिया का वर्णन है, जो आदाम से आरंभ होती है। फिर प्रलय तक जाता है। उसके बाद, सोडोम और गोमोरा।

इस पुस्तकों की पुस्तक से सृष्टिकर्ता ईश्वर का जो ज्ञान व्यक्त हुआ है, उसीका प्रत्यक्ष प्रस्तुतकरण है। यह पुस्तक बताती है कि ईश्वर ने देवदूतों को आत्मा को लेकर सृष्टित किया। पर, क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि देवदूत भी पाप कर सकते हैं? देवदूतों की सृष्टि करते समय उनको विचार–शक्ति और निर्णय–शक्ति मिली। बस इतना था कि उनमें अलग–अलग चरित्र की वैयक्तिकता नहीं थी चूंकि ईश्वर की विधि में पाप करना अपराध है, ये देवदूत ईश्वर की विधि के विरुद्ध विद्रोह करने लगे। पर ईश्वर की विधि राज्य का आधार थी।

लेकिन देवदूतों ने कब और कैसे पाप किया? II पीटर 2 : 4–5 में जो उन्हें बात व्यक्त हुई है, उस गौर कीजिए। ''क्योंकि ईश्वर ने पाप करने वाले देवदूतों को भी नहीं छोड़ा। उन्हें नरक में ढकेल दिया। और अंधकार के बंधन में बांध दिया। अंतिम न्याय सुनाने तक उन्हें हिरासत में रखा। और इसी प्रकार, पुरानी दुनिया भी नहीं छोड़ी बस आठवें मनुष्य नोआ को जिंदा छोड़ा। क्योंकि वह धर्मपरायणता का प्रचारक था। अधर्मी दुनिया में प्रलय लाकर उसे खत्म कर दिया।'' उपर्युक्त परिच्छेद में जो ''ढकेला... नरक में'' शब्द आए हैं ''टार्टारोस'' ग्रीक शब्द 'टार्टरू' का अंग्रेजी रूपांतरण है। यह शब्द बाइबिल के किसी और परिच्छेद में नहीं मिलता। टार्टारोस का अर्थ है कैद की जगह या अवस्था।

ये पद यही बताते हैं कि सार्वभौम पाप इस भौतिक धरती को सार्वभौम विनाश ही देता है। प्रलय के पहले का पाप, प्रलय के साथ पराकाष्ठा तक पहुंचा गया। वह विश्वभर में था। यह विश्वव्यापक पाप था। देखिएः ''....यह धरती हिंसा से भर गई. .. क्योंकि मांसधारियों ने धरती पर उसके तरीके को बिगाड़ दिया था.... क्योंकि यह धरती हिंसा से भर गई.....'' (जेनेसिस 6:11–13)। ''पर नोआ ने प्रभु की आंखों में करुणा देखी.... नोआ एक मामूली मनुष्य था। न्यायशील इंसान था और अपने वंशों में एकदम पूर्ण और पक्का था। और नोआ ईश्वर के साथ चला'' (पद 8–9)। सारे मांसधारियों ने पाप किया था– पूरी धरती पर पाप किया। पर केवल नोआ ''ईश्वर के साथ चला'' इस प्रकार प्रलय ने पूरी धरती को नष्ट कर दिया, केवल नोआ और उसके परिवार को छोड़ कर।

सोडोम और गोमोरा की समलिंग कामुकता और उनके अन्य पाप उन दोनों नगरों में भर गए। और उनके समूचे इलाके में शीरीरिक या भौतिक विनाश शुरू हो गया। देवदूतों का पाप विश्वव्यापी था। भौतिक विनाश भी विश्वव्यापी था। और इस पर विश्वास करने का कारण था। इसकी विस्तृत व्याख्या विस्तृत अध्याय, में की जाएगी।

ऊपर निर्दिष्ट पदों में देवदूतों के पाप करने के बारे में बताते हैं। यह पहले आदम से शुरू हुआ कहा गया है और यह भी स्पष्ट है कि यह पाप प्रलय से पहले हुआ था। यह भी स्पष्ट है कि मानव की सृष्टि से पहले यह पाप हुआ था। और इस प्रकार की व्याख्या रहस्य के एक पक्ष का आश्चर्यजनक प्रकटीकरण ही होनी चाहिए। मानव की सृष्टि पहले से ही देवदूत इस धरती पर निवास करते थे।

इसैया 14 और इजाकियल 28 में यह भी स्पष्ट रूप से कहा गया है कि ईश्वर ने सुंदर शिशु, महादूत लूसिफर को धरती के सिंहासन पर बिठाया। उसको पूरी धरती का शासक बनाकर बिठाया गया था। ईश्वर का लक्ष्य था कि वह धरती पर ईश्वर की सरकार चलाकर शासन करे । और पाप करने वाले देवदूतों के विद्रोह करने तक धरती पर ईश्वर की सरकार चली।

यह कहीं भी व्यक्त नहीं हुआ है कि ये देवदूत धरती पर कितने वर्षों तक, कब तक, निवास करते थे। शायद लाखों, करोड़ों वर्ष हो सकता है। बाद में, उससे अधिक वर्ष तक रहे। पर इन देवदूतों ने पाप किया। ईश्वर की विधि में पाप एक अपराध है (I जॉन 3:4)। और ईश्वर की विधि ईश्वर के राज्य का मूलभूत आधार है। इसलिए हम इन देवदूतों को जानते हैं। स्पष्टतया एक–तिहाई

देवदूतों (प्रकाशन ग्रंथ 12:4) ने पाप किया और ईश्वर के राज्य से विद्रोह किया। और पाप का दंड अवश्य है। देवदूतों के पाप का दंड मृत्यु नहीं है। क्योंकि मृत्यु केवल मनुष्य के लिए है। देवदूत तो अनश्वर आत्माएं हैं, जो मर नहीं सकते। इन आत्म जीवों को स्वामित्व के रूप में और निवास–स्थान के रूप में इस भौतिक धरती पर प्रभुत्व दिया गया था।

देवदूतों के र्सावभौम पाप के परिणाम स्वरूप धरती के रूप का भौतिक विनाश हुआ।

ईश्वर अपनी सृष्टि का शासन करता है।

ईश्वर सृष्टिकर्ता है। ईश्वर अपनी सृष्टि का शासक भी है। वह अपने द्वारा सर्जित मानव और पदार्थों का शासन करके उनकी रक्षा करता है। ईश्वर जो भी सृजन करता है, उस सृष्टि में कोई न कोई प्रयोजन है– उसका उपयोग, सुधार, विकास, अनुरक्षण और परिरक्षण करना है। और यह उपयोग ईश्वर के राज्य द्वारा व्यवस्थित किया जाता है। जब देवदूतों ने ईश्वर के राज्य के विरुद्ध विद्रोह किया, तब धरती का विकास और प्रगति– ''केक और चाश्नी'' लगाना– बंद हो गया। भौतिक धरती का परिरक्षण और विकास तथा उसका मसूचा मूल सौंदर्य और महिमा– बंद हो गए। – और उन सब का नतीजा हुआ धरती की सतह का भौतिक विनाश!

इस देवदूती पाप द्वारा, लूसिफर अपदूत शैतान बन गया और उसके देवदूत अपदूत या पिशाच बन गए।

ईश्वर स्रष्टा, परिरक्षक और शासक है।

शैतान विनाशक है!

अतः, अब हम जूद 6 : 7 में पढ़ेंगेः ''और देवदूतों ने अपने पहले संपदा का अनुरक्षण नहीं किया, पर अपना ही निवास स्थान छोड़ दिया। उस महा दिन के न्याय तक, अंधेरे में, चिरस्थाई बंधन में, ईश्वर ने उन्हें रखा। सोडोम और गोमोरा जैसे और उसी तरह अन्य शहरों के समान, अपने को व्यभिचार में लगा लिया। वे विचित्र शरीर की खोज में चलने लगे। वे उस व्यभिचार के उदाहरण बन गए और अनंत अग्नि की प्रतिहिंसा में झुलसने लगे।''

अब फिर से जेनेसिस 1 : 1–2 श्लोक 1, देखें। जैसे ऊपर कहा गया है, एक पूर्ण सृष्टि का संकेत करता है। जीवन का, सौंदर्य का, पूर्णता का मूलकर्ता ईश्वर है। शैतान केवल अंधेरा, भद्दापन, अपूर्णता, हिंसा आदि ही दे पाया। श्लोक 1 अधूरी ही सही आदर्श, गरिमामयी और सुंदर धरती का सृजन दर्शाता है।

श्लोक 2 में देवदूतों के पाप का परिणाम दर्शाया गया है।

''और धरती उचित आकार में नहीं (बनी) थी, रिक्त थी''। ''आकार के बिना और रिक्त'' शब्द हिब्रू के **तोहू** और **बोहू** शब्दों का अनुवाद है। ''बेकार और खाली'' कहें तो बेहतर अनुवाद होगा। या ''अव्यवस्थित, अस्तव्यस्त में और सड़ने की अवस्था में'' कह सकते हैं। 'था' शब्द का कहीं–कहीं जेनेसिस में प्रयुक्त हुआ है, उसका अनुवाद 'हो गया' लिखा गया। जेनेसिस 19 : 26 में ऐसा देख सकते हैं। अन्य शब्दों में कहें, तो मूल रूप में यह धरती पक्की और सुंदर बनी थी, जो अब अव्यविस्थत, बेकार और रिक्त बन गई है, जैसे चांद। बस, धरती की सतह पानी से आच्छादित है।

डेविड को ऐसा व्यक्त करने की प्रेरणा मिली कि ईश्वर ने धरती का रूप कैसे पुनर्निमित कियाः ''तुमने अपनी आत्मा भेजी, उनकी सृष्टि हुई। और तुमने धरती का रूप पुनर्निमित किया'' (साम 104 : 30)।

विस्मयकारी सत्य

अब, अधिकांश पाठकों को एक और आश्चर्य की बात बताता हूं। यहां का एक और लुप्त आयाम प्रस्तुत है, जिसे बाइबिल में प्रकट किया गया है, लेकिन जिसे धर्म विज्ञान द्वारा उच्च शिक्षा बिल्कुल भी पहचान न सकी।

जेनेसिस 1 के श्लोक 2 से आगे बाइबिल के इस अध्याय के शेष भाग में पृथ्वी के मूल सृजन का वर्णन नहीं किया गया है। बल्कि यह देवदूतों के पापों के कारण विरान और व्यर्थ हो चुकी धरती की सतह के पुनर्नवीनीकरण का वर्णन करता है।

श्लोक 2 से आगे बाइबिल के सृजन का अध्याय समझे जाने वाले भाग में जिस चीज का वर्णन किया गया है, वह बाइबिल के अनुसार लगभग 6,000 साल पहले की बात है।

धरती के सारे देवदूतों के विद्रोही बनने के पहले क्या कालावधि रही होगी, उस पर मैं बाद में अपने विचार प्रकट करूंगा।

धरती बेकार और रिक्त बन चुकी थी। ईश्वर ने इसे बेकार और रिक्त या सड़न अवस्था में नहीं बनाया था। ईश्वर अस्तव्यस्तता का कारण नहीं है। (I कोरिंथियाइयों हीब्रू शब्द– तोहू– जिसका अर्थ है बेकार और खाली– मूलतः इसैया 45:18 में प्रेरित हुआ था, उसमें कहा गया है: ''ईश्वर ने इस प्रकार कहा, जिसने स्वर्गों का सृजन किया। ईश्वर ने ही स्वयं धरती को आकार दिया था और बनाया था। उसीने स्थापना की थी, उसने बेकार में (तोहू) इसका सृजन नहीं किया, उसने यहां निवास करने के लिए इसे बनाया''।

अब जेनेसिस 1 के श्लोक 2 के बाकी अंश को पढ़िए (धरती अव्यवस्थित, बेकार और खाली हो गई थी चुका): ''और गहरे (सागर या धरती की तरल से ढंकी सतह) के ऊपर अंधकार फैल गया था। और ईश्वर की आत्मा द्रव की सतह पर विचरण करने लगी। और तब ईश्वर ने कहा, अब उजाला हो; और तुरंत प्रकाश आ गया। और ईश्वर ने प्रकाश को देखा कि वह अच्छा है; और ईश्वर ने अंधकार से प्रकाश को अलग किया'' (श्लोक 2–4)।

शैतान अंधकार का मालिक है। देवदूतों का विद्रोही अंधकार कारण का था। ईश्वर प्रकाश और सत्य का स्वामी है। प्रकाश सौंदर्य को दिखाता है और बढ़ाता है। और पाप का पोल खोलता है। अंधकार दोनों को छिपाता है।

बाइबिल के इस प्रथम अध्याय में जो श्लोक आने वाले हैं, उनमें धरती की सतह के पुनर्निर्माण, सुंदर लॉन, पेड़, फूल, वनस्पतियां देने–बाद में मछली और मुर्गी, प्राणी जीवन और अंत में मनुष्य का वर्णन मिलता है।

महान लूसिफर

मनुष्य पर आने से पहले, हमें प्रागितिहास के बारे में जान लेना चाहिए।

देवदूतों का यह पाप ? कैसे शुरू हुआ?

याद रखिए, सृष्टिकर्ता ईश्वर जो बनाता है, अपने शासन द्वारा उसका अच्छा परिरक्षण करता, विकास करतौ और बढ़ाता है। उसने जितनी सृष्टि की, उनका उपयोग होना है। मूल रूप में ईश्वर का यही विचार था कि इस धरती पर देवदूत निवास करें और इस धरती का पूर्ण रूप से उपयोग करें।

जब ईश्वर ने देवदूतों को सारे देवदूतों में से एक तिहाई को (प्रकाशन 12:4)– नवनिर्मित, सुंदर और महिमामय धरती पर, निवास करने के लिए भेजा तो उसने ईश्वर के राज्य का प्रशासन करने के लिए राज सिंहासन पर एक महादूत– चेरब, लूसिफर को बिठाया। चेरब जैसे ऊंचे पद की केवल दो ही सत्ताएं थीं माइकेल और गैब्रियल माइकेल और गैब्रियल।

जैसा कि प्रकट किया गया है, ये ईश्वर की सृजनशक्ति के भीतर चरमोत्कर्ष पर पहुंची आत्मा से बनी सत्ताएं थे। यह लूसिफर विस्मयकारी, कांतिमय सुंदरता, चकाचौंध कर देने वाली दीप्ति, चरम ध्यान, बुद्धिमत्ता और शक्ति से संपन्न–उतनी ही उत्कृष्ट सत्ता था जितना कि ईश्वर से उसे रचा था! (एजाकियल 28:15)। पर याद रखिए, ईश्वर कभी अपने आप और तुरंत आज्ञा द्वारा एक चीज नहीं बना सकता और वह है विशुद्ध सदाचारी, धर्मपरायण, चरित्र। अतः ईश्वर ने, आवश्यकता पड़ने पर, अपने आप चयन करने और निर्णय लेने की शक्ति उसमे भर दी। नहीं तो, वह अलग व्यक्तित्व और चरित्र का जीव कभी बन ही नहीं सकता था।

इस अवस्था में कभी समझ में न आने वाले एक सत्य की व्याख्या कर देना अनिवार्य है। ईश्वर द्वैत सिद्धांत में सृष्टि करता है। मैंने इसकी तुलना केक पकाने वाली एक मलिा से की है। जब वह अवन से केक बाहर निकालती है, उससे पहले उसका उत्पादन कार्य पूरा नहीं हुआ होता। तब वह उस केक पर चाशनी लगाती है। अब केक का उत्पादन–कार्य पूरा हुआ होता। इसी प्रकार ईश्वर ने जब धरती और अन्य ग्रहों का सृजन किया, यही द्वैत सिद्धांत अपनाया गया था।

इस बिंदु तक जिनका अस्तित्व है, उनकी सृष्टि एकदम पक्की थी। फिर भी, अब तक वह सृष्टि पूर्ण या परिपूर्ण नहीं हुई है। ईश्वर का विचार था कि देवदूत धरती की सतह पर अपनी ही कारीगरी दिखाएंगे। ईश्वर का इरादा था कि वे देवदूत धरती की सतह पर अपनी कारीगरी दिखाएंगे, उसे सुधारेंगे, सुंदर बनाएंगे, अलंकृत करेंगे– अन्य शब्दों में– ''केक पर चाशनी लगाएंगे''।

वह द्वैत सिद्धांत देवदूतों की सृष्टि में भी लागू हुआ है। पर आज्ञा द्वारा पक्का धर्मपरायण चरित्र अपने आप भरा नहीं जा सकता। सारे देवदूत आवश्यकता पड़ने पर, अपने ढंग से चरित्र का विकास कर सकते हैं। और, जब तक यह चरित्र– निर्माण पूरा नहीं होता, तब तक उनका सृजन पूरा नहीं होता।

लूसीफर, बाद में शैतान

मैं चाहता हूं कि आप ईश्वर द्वारा सर्जित जीवों की इस शिरोविंदु की सर्वोच्च महिमा को पूर्ण रूप से समझ लें। बाइबिल के दो भिन्न अंश उसकी मूल सर्जित अवस्था के बारे में हमें बताते हैं।

पहले, इसैया 14 में जो व्यक्त किया गया है, उसे पहचानें। (यह प्रसिद्ध अध्याय अब से थोड़े ही समय पूर्व हमारे काल में से शुरू होता है। तब शास्वत ईश्वर ने इस विश्व के मामलों में दखल दिया होगा। इस्राईलवासी, आवश्यक नहीं कि इस्राईलवासी ही हों या केवल इस्राईलवासी या यहूदी हों– बंधुआ गुलाम के रूप में पकड़े गए होंगे और ईश्वर ने उनके मामले में हस्तक्षेप किया होगा और उन्हें उनके निवास स्थान पर, लाया होगा ''और एक दिन में ऐसा होगा ईश्वर तुम लोगों को तुम्हारे दुःखों से, डर से, और उस कड़े बंधन से आराम देगा। जिसमें तुम लोगों से सेवा ली जाती थी, और तुम। बेबिलोन के राजा के विरुद्ध यह आग बढ़ाओगे और कहोगे कि कैसे अत्याचारी का अंत हुआ! वह स्वर्णिम नगर कैसे समाप्त हुआ। प्रभु ने दुष्ट के कर्मचारियों को तोड़ा, और कैसे शासकों का राजदंड तोड़ा। वह जिसने क्रोध में आकार लोगों पर प्रहार किया .....वह जिसने क्रोध में शासन किया, वह उत्पीड़ित किया गया और किसी ने भी नहीं रोका (श्लोक 3–6)।'

यह अंश प्राचीन बेबिलोन के राजा नेबुचेड्नेजर के बारे में नहीं है। समय और बाकी है हमारे आगे – पर ज्यादा नहीं, थोड़ा ही आगे है। यह अंश प्राचीन नेबुचेड्नेजर के आधुनिक उत्तराधिकारी के बारे में है। यह अंश उस एक के बारे में है जो शीघ्र ही आने वाले पुनर्जीवित ''पवित्र रोमन साम्राज्य'' का शासक होगा – शीघ्र आने वाले एक तरह के योरप के संयुक्त राज्य'' के जिसमें आज के कामन मार्केट से उठ कर सामने आने वाले या उसे बाद के दस राष्ट्र शामिल होंगे (प्रकाशना 17)। शीघ्र आने वाले साम्राज्य में ब्रिटेन शामिल नहीं होगा।

यह संयुक्त यूरोप इस्राइली संसद को जीतेगा। आज इस्राइल कौन है, क्या आप जानते हैं? यहां इसमें कई अन्य भविष्यवाणियां संबंधित हैं, जिनकी व्याख्या करना असंगत होगा। (इसकी व्याख्या हमारी मुफ्त पुस्तक ''दि यूनाइटेड स्टेट्स ऐंड ब्रिटेन इन प्रोफेसी'' में की गई है।)

पर यह ''बेबिलोन का राजा'' इस भविष्यवाणी के समय, जीवित ईसा की शक्ति और महिमा के कारण और ईसा के हस्तक्षेप से बुरी तरह हराया गया। आगे पढ़िएः

''पूरी धरती आराम कर रही है और शांत हैः वे उछल कर गाने लगे हैं। हां, पेड़ आनंदित हो रहे हैं।...... और लेबनान के देवदारु बोल रहे हैं, चूंकि आप गिराए गए हैं, हमारे विरुद्ध कोई भी गिरानेवाला आनेवाला नहीं है'' (श्लोक 7–8)।

(मैं यहां एक रुचिकर विषय जोड़ना पसंद करूंगा। लेबनान के देवदारू, बाइबिल में भी प्रसिद्ध हैं। वे सारे के सारे पेड काट दिए गए हैं। इन पेड़ों का केवल एक छोटा–सा पुंज पहाड़ी चोटियों पर बचा रह गया है। मैंने उन्हें देखा है और उनके फोटो भी खींचे हैं। फिर भी, शायद लेबनान के देवदारू के अत्यंत सुंदर जीवित नमूने धरती पर कहीं हैं तो वह इंग्लैंड के हमारे एंबासडर कॉलेज के पुराने परिसर में है। हमने उसका सम्मान किया है। इस पर गौर करना रुचिकर होगा कि यह भविष्यवाणी जो ईसा से लगभग 500 वर्ष पहले की गई थी, इतनी बड़ी संख्या में देवदारू के पेड़ों के काटे जाने की बात करती है।)

इसैया 14 का का यह परिच्छेद बताता है कि आने वाले मानव राजा का पतन महिमामय और सर्वशक्तिमान ईसा के हाथों होगा। उसके बारे में यह कहा जाता है कि वह शैतान का मुख्य राजनीतिक शासक और फौजी विनाशक है। हमारे आगे के कुछ ही वर्षों में शैतान द्वारा पूर्ण रूप से धोखा दिया जाएगा।

धरती पर शैतान का सिंहासन

तो फिर, श्लोक 12 देखें, इस अपदूत, धरती का मानवी शैतान ने अचानक स्वयं शैतान, पुराने महा देवदूत लूसिफर की जगह ले ली।

''ओ लूसिफर, सुबह के पुत्र, तू कैसे स्वर्ग से धरती पर टपक पड़ा! कैसे तू धरती पर काट गिराया गया? इससे कई राष्ट्र कमजोर पड़ गए।'' इसका बेहतर अनुवाद ऐसा हो सकता हैः ''राष्ट्रों को कमजोर करने वाले तुम कैसे जमीन पर काट गिराए गए।" संशोधित मानक संस्करण इसका अनुवाद इस तरह करता हैः "तुम जमीन पर कैसे काट गिराए गए तुम्हीं तो हो जिसने राष्ट्रों को नीचे गिराया!'' यह काम भूतपूर्व लूसिफर ने मानव राजनितिक–सैन्य अधिकारियों द्वारा अपनी शक्ति का प्रयोग करके किया था। पहले ग्यारह पदों में ऐसा कहा गया है।

लूसिफर का अर्थ है ''लड़के का प्रकाशमान तारा'' या ''प्रकाश लाने वाला'''। ईश्वर ने उसकी ऐसी ही सृष्टि की थी। अब आगे बढ़िएः ''चूंकि तूने अपने मन में कहा, मैं स्वर्ग पर चढूंगा, मैं अपना सिंहासन ईश्वर के तारों (देवदूतों) के ऊपर प्रतिष्ठित करूंगा।''

ध्यान रखिए, लूसिफर का अपना एक राज सिंहासन था। वह एक शासक था। उसका सिंहासन धरती पर था। अतः वह स्वर्ग पर चढ़ने वाला था। आगे बढ़िएः ''मैं धर्म–संघ के शिखर (ईश्वर का स्वर्ग का सिंहासन) पर भी बैठूंगा। यह

उत्तर की दिशा में है। मैं तो बादलों के ऊपर चढूंगा। मैं सबसे उच्च जैसा बनूंगा'' (श्लोक 13–14)। असल में, यह बात साफ है कि लूसिफर, के मन में सृष्टिकर्ता ईश्वर को सिंहासन से उतारकर खुद परमेश्वर बनना चाहता था।

स्पष्टतः वह विश्व पर, ईश्वर के स्थान पर अपने को बिठा लेने की योजना बना रहा था।

पर अंततः मामला फिर मानव प्रकार की ओर लौटता हैः ''फिर भी तू नरक में ढकेल दिया जायेगा (हिब्रू. शेओल) गर्त की ओर'' (श्लोक 15)।

उस बिंदु से, विचार मानव राजा की ओर लौटती है। लूसिफर ही ईश्वर की सृजनात्मक शक्ति की सर्वोत्कृष्ट कृति है, व्यक्तिगत रूप से सर्जित किसी फ्रैंकेस्टिन राक्षस जैसा– अपने ही सृष्टा को नष्ट करने की धमकी देने और उसकी सारी शक्तियां लेकर संपूर्ण ब्रह्मांड पर शासन करने का मंसूबा बांधने वाला।

सही अर्थ में, यह भविष्यवाणी हमारे ही समय में स्वर्ग में होने वाले युद्ध वर्णन करती है जिसका उल्लेख प्रकाशना 12:7–9: '' और स्वर्ग में युद्ध हुआ। माइकेल और उसके देवदूत नागदैत्य के खिलाफ लड़े और नागदैत्य और उसके दूत भी लड़े और पराजित नहीं कर सके; अब स्वर्ग में उनके लिए कोई जगह नहीं थीं। और वह महा नागदैत्य, वह पुराना सांप, जो पिशाच कहलाता था, शैतान कहलाता था, जिसने पूरे संसार को धोखा दिया था, निकाल कर धरती पर फेंक दिया गया और उसके देवदूतों को भी उसके साथ निकाल बाहर किया गया।'' ''और डेनियल 12:1–2 कहता हैः ''और उस समय माइकेल खड़ा होगा। तुम्हारी कौम की संतानों के लिए वह महा राजकुमार खड़ा होगा। उस समय मुसीबत होगी। ऐसा कभी नहीं हुआ होगा। उस समय से भी जब से कोई कौम रही होगी, और उस समय तुम्हारे लोगों को बचा लिया जाएगा। हर उस व्यक्ति को जिसका नाम बाइबिल में लिखा होगा। उनमें से कई लोग जो धरती की मिट्टी में सो रहे थे, जागेंगे। कुछ लोग अनंत जीवन पाएंगे। कुछ लोगों को शर्मिंदा होना पड़ेगा और अनंत अवज्ञा का पात्र बनना होगा।''

शैतान का विद्रोही शासन प्रेम अन्य लोगों की भलाई की चिंता, के सिद्धांतों पर आधारित सरकार का शासन नहीं था, बल्कि वे आत्मकेंद्रीयता मिथ्याभिमान, वासना और लोभ, ईर्ष्या, दुश्मनी, होड, घृणा, हिंसा और विनाश, प्रकाश और सत्य के स्थान पर अंधकार और दोष, सुंदरता के स्थान पर भद्देपन पर आधारित थी।

फिर से, यहां ध्यान दीजिए कि यहां भी द्वैत का सिद्धांत देखने को मिलता है। इसैया 14:12–14 पहले मानव, आदम की सृष्टि से पूर्व के समय का संकेत करता है। पर, प्रकाशना 12:7 और डेनियल 12:1 के अनुसार शैतान धरती के सिंहासन पर बैठकर शासन करने के लिए अपने नियत 6000 वर्ष के अंत में, फिर से, स्वर्ग में ईश्वर का सिंहासन छीन लेने का प्रयत्न करता है।

सर्जित जीव लूसिफर

अन्य बाइबिल संबंधी अंश में इजाकियल 28 में ईश्वर के इस सर्वोच्च देवदूत की सृष्टि को देखिए।

असल में, इंजाकियल 26 में दी गई पूरी संकल्पना टायर के प्राचीन महा व्यावसायिक नगर को ही बताती है। वह प्राचीन विश्व का व्यावसायिक महानगर था। जैसे बेबिलोन राजनीतिक राजधानी था।

न्यूयार्क लंदन, टोकियो, या पारिस के समान प्राचीन विश्व का नगर था टायर। प्राचीन टायर विश्व के जहाजों और व्यापारियों के लिए एक महा बंदरगाह था। जैसे आजकल पेरिस सुंदर शहर माना जाता है, उस प्रकार प्राचीन विश्व में टायर सुंदरता के लिए प्रसिद्ध था।

अध्याय 27 में प्रकाशना के 18वें अध्याय के अंशों की तुलना की गई है और उसमें राजनीतिक–धार्मिक नेता के आगमन का उल्लेख किया गया है (श्लोक 9–19)।

पर अध्याय 28 देखें तो हमारे थोड़ा आगे के समय का विषय बहुत स्पष्ट मालूम होता है। यही समय इसैया 14 में भी उल्लिखित है। इजेकियल 28 टायर के राजकुमार, उस समय के शासक, का चित्रण करता है। टायर का प्राचीन राजा उसी प्रकार का था। ईश्वर पैगंबर इजेकियल से कहता हैः ''मानव पुत्र, टायरस के राजकुमार से कहो। (असल में, यह हमारे समय में, शीघ्र उभर कर सामने आने वाले धार्मिक नेता का जिक्र है) प्रभु ने इस प्रकार कहाः क्योंकि तुम्हारा हृदय खुशी से ऊपर उठ रहा है। और तुमने कहा था कि मैं ईश्वर हूं। सागरों के बीच में मैं ईश्वर के पद पर विराजमान होता हूं। फिर भी, तुम मानव हो, देखो, तुम डेनियल से बुद्धिमान हो। ऐसा कोई रहस्य नहीं है, जो तुमसे छिपाया जा सके। तुम्हारे विवेक और तुम्हारे ज्ञान के कारण, तुम्हें अपनी धन–संपत्ति मिली है, तुम्हारे कोष में सोना और चांदी जुड़े हैं (या धन वैभव – आरएसवी).... तुम्हारा हृदय अपनी धन–संपत्ति के कारण ऊपर उठा है। इसलिए प्रभु ईश्वर ने एस प्रकार कहा, चूंकि तुमने अपना हृदय ईश्वर के हृदय के समान बना लिया है। देखो, इसलिए मैं तुम्हारे पास अजनबियों और भयानक कौमें भेजूंगा... और वे तुम्हें गर्त में गिरा देंगे और तुम उनकी मौत मरोगे जो सागर के बीच में मौत के घाट उतार दिए जाते हैं'' (इजेकियल 28:2–8)। (II थेसलोनियाइयों 2:3–4 से तुलना कीजिए; जो कहता है, ''वह पापी मनुष्य... जो उसका विरोध करता है और खुद को उससे बड़ा बताता है जिसे ईश्वर कहा जाता है, और खुद को ईश्वर कहता है।

क्या श्रेष्ठ जीव है!

लेकिन इसी विंदु पर, जैसाकि इसैया 14 में दिया गया है, निम्नतर मानव प्रतिरूप अपेक्षाकृत उच्चतर आत्मिक–जीव के रूप में उभरता है। टायर के राजकुमार – एक मानव जीव के बदले अब वह –टायर के राजा की बोली बोलता है। यह वही लूसिफर है।

पैगंबर इजेकियल आगे कहते हैः ''इतना ही नहीं, प्रभु का शब्द मुझ तक आया। और यह बोला, मानव–पुत्र, टायरस के राजा पर विलाप प्रकट करो और उससे बोलो, प्रभु ईश्वर ने ऐसा कहा है; तुम पूर्ण हो, विवेक से भरे हो और सौंदर्य से भरे हो'' (पद 11–12)।

जरा इसे फिर से पढ़िए। ईश्वर कभी भी मानव जीव के बारे में ऐसा नहीं बोलेगा। इस श्रेष्ठ आत्मजीव ने विवेक, पूर्णता और सौंदर्य को पूरा कर भर लिया। वह ईश्वर की सृष्टि का सर्वोच्च शिखर है और उत्कृष्ट कृति है। वह अकेले बनाया गया जीव है। सर्व शक्तिमान ईश्वर की सृष्टि में एक महानतम कृति है। पर, दुख की बात है कि वह अपने ही सृष्टिकर्ता के विरुद्ध विद्रोही बन गया।

''तुम ईडन में ईश्वर के बगीचे में रहे'' (पद 13)। वह इस धरती पर निवास करता था। उसका सिंहासन यहां था। ''हर बहुमूल्य रत्न तुम पर आवृत्त था... जिस दिन तुम्हारी सृष्टि हुई, उसी दिन तुम्हारे धारीदार मोटे रेशम और तुम्हारे पाइप की कारीगरी हुई थी'' (पद 13)। वह सर्जित जीव था– मानव के रूप में जनमा नहीं था। वह आत्मिक–जीव था – मानव मांस का नहीं था। उसमें संगीत की महा प्रतिभा और कुशलता भरी थी। अब तो वह सारे विचारों में, कार्य करने में और जीने में विकृत हो गया था। वह आधुनिक विकृत संगीत का और

रॉक संगीत का असली कर्ता है। इसमें बेमेल कराह है, चीख है, चिल्लाहट है, विलाप है। शारीरिक और भावात्मक ताल है. असंतोष और हतोत्साह का मनोभाव है। इस तरह की क्षमताओं के साथ बनाए गए सत्व के बारे में सोचिए जिसमें इतनी उत्कृष्ठ प्रतिभा, सामर्थ्य और क्षमता थी। ईश्वर ने इतनी योग्यता के साथ उसकी सृष्टि की थी। और सारे के सारे विकृत। सारे के सारे कटु हो गए – सारे के सारे छितराए हुए, घृणा में बदले, विनाश, निराशा।

फिर, हिम्मत रखिए। विस्मयाकुल मानव प्रतिभा पर ध्यान दें। शैतान की चालबाजियां और अनिष्टताएं और हतोत्साह को रोकने पर ध्यान दें तथा ईश्वर के पथ पर दृढ़ रहें तो लूसिफर से भी असीम सर्वोच्च और उन्नत बनेंगे या बनाए जाएंगे। लूसिफर विद्रोही और दुष्ट बनने से पहले जैसा था, उससे भी श्रेष्ठ।

लेकिन ज्ञान के इस अत्यंत महत्वपूर्ण लुप्त आयाम के इस विशेष उद्‌घाटन को जारी रखते हैंः ''तुम अभिषिक्त सुंदर शिशु हो जो व्यवस्थापक है, व्यवस्था करता है। मैंने तुम्हें इस प्रकार बनाया है '' लूसिफर के बारे में ईश्वर ऐसा कहता है। इस पर हमारा ध्यान एक्सोडस के 25वें अध्याय की ओर जाता है। ईश्वर ने मूसा को प्रतिज्ञा–पत्र के संदूक का नमूना दिया था। यह वर्णन श्लोक 10 से आरंभ होता है। और श्लोक 18–20 दिखाते हैं कि भौतिक ढंग से, स्वर्ग में ईश्वर के सिंहासन के दोनों ओर दो सुंदर शिशु लगाए गए हैं – यह सिंहासन समूचे विश्व पर ईश्वर के राज्य का सिंहासन है. दोनों सुंदर शिशुओं के पंख ईश्वर के राज सिंहासन पर आच्छादित हैं।

विश्व के मुख्यालय में प्रशिक्षित

बाद में, यह लूसिफर ईश्वर के राजसिंहासन पर नियुक्त किया गया। ईश्वर के राज्य के प्रशासन में उसको प्रसिक्षण और अनुभव दिया गया। ईश्वर ने ऐसे एक जीव को चुना जिसको अच्छा प्रशिक्षण और काफी अनुभव था ताकि वह पूरी धरती पर निवास करने वाले देवदूतों पर ईश्वर का राज्य चलान योग्य शसक्त राजा हो।

आगे बढ़िएः ''....तुम ईश्वर के पर्वत पर थे; तुम आग के पत्थरो के बीच ऊपर–नीचे चलते थे।'' यह अंश किसी मानव के बारे में बोल नहीं रहा। पर, आगे चलिएः ''तुम अपने रास्तों पर खरे थे, जिस दिन से तुम्हारी सृष्टि हुई, और

तब तक कि तुम में अधर्म (विधिहीनता) पाया गया'' (इजेकियल 28:15)। उसमें पूर्ण ज्ञान था, समझदारी थी और विवेक था। पर उसको भी तर्क करने की शक्ति, सोचने की शक्ति, निर्णय करने की शक्ति, चयन करने की शक्ति, आदि सारी शक्तियां दी गई थीं। और, इतने सारे पूर्वज्ञान के साथ – परिणामों और निष्कर्षो के भी – यह उच्चतम सत्व ईश्वर अपनी आज्ञा से अपने ही सृष्टिकर्ता के विरुद्ध विद्रोही बन गया – हर प्रकार की भलाई देने वाले तरीके के विरुद्ध विद्रोही बन गया। वह विधिहीनता का शिकार हो गया। असल में उसे विधि और व्यवस्था के खरे प्रशासन का प्रशिक्षण दिया गया था। जब तक लूसिफर इस रास्ते पर चल रहा था, तब तक इस धरती पर अकथनीय और संतोष था। महा शांति, सुंदर समरसता, शुद्ध प्रेम, सहकारिता आदि फैले थे। जब तक ईश्वर के राज्य के प्रशासन में लुसिफर निष्ठावान था, तब तक ईश्वर के राज्य में विस्मयकारी खुशहाली फैली थी।

देवदूतों के पाप का क्या कारण था?

धरती पर देवदूतों का पाप करने का क्या कारण था? वे क्यों विधिहीनता की ओर झुके? अवश्य ही, सामान्य देवदूतों ने इस महाश्रेष्ठ जीव को धोखेबाज बनने को विवश नहीं किया। नहीं, वह अधर्म उसी में था। लेकिन कितने समय बाद? हमें मालूम नहीं। ईश्वर ने उसे प्रकट नहीं किया! उसमें कितने ही साल लगे हो सकते हैं, एक साल से लेकर लाखों–लाख साल तक हो सकता है।

और बाद में, लूसिफर ने अपने आप विद्रोही बनने और ईश्वर के स्वर्ग को जीत कर पूरे विश्व को हड़प लेने का निर्णय लिया। पर कहीं भी यह व्यक्त नहीं किया गया है कि उसे अपने अधीनस्थ सारे देवदूतों को मनाने में, उनसे अपना कराने और ईश्वर के प्रति धोखेबाज बनाने में कितना समय लगा।

उसने जो तरीका अपनाया, उसे मैं खूब जानता हूं। वह आज भी ठगे मानवों को ईश्वर के राज्य के विरुद्ध विश्वासघात, विद्रोह और आत्मकेंद्रित विरोध करने के लिए उसी तरीके का उपयोग करता है। विरोधी बनने की ओर ले जा रहा है। पहले वह एक या दो

को कल्पित अन्याय पर विरोध, ईर्ष्या और अप्रसन्नता की ओर ले जाता है। फिर उनमें निष्ठाहीनता भर देता है, फिर, सेब की पेटी में एक–दो सड़े सेब के समान, उन एक–दो निष्ठाहीन लोगों को अन्य भोले लोगों में मिलने–घुलने देता है और फिर सब को अप्रसन्नता, दया का भाव निष्ठाहीनता और विद्रोह करने को भटका देता है। और, जैसे सड़े सेब निकट के अच्छे सेबों को भी सड़ा देते हैं, और इस प्रकार पेटी के सारे सेब सड़ जाते हैं। इसी प्रकार का व्यवहार शैतान करता है।

अगर, आज धरती पर ईश्वर के राज्य से यथाशीघ्र ''सड़े सेब'' बाहर फेंके नहीं जाते, तो वे पूरे राज्य को नष्ट कर देंगे। पर, एक बार वे पेटी से बाहर फेंक दिए गए, तो पेटी के अदंर के सेबों को और बिगाड़ नहीं सकते।

पर सोचिए, कड़ुए और खट्टे लूसिफर को करोड़ों पवित्र देवदूतों को अप्रसन्नता, कटुता, निष्ठाहीनता में बदलने में कितना लंबा समय लगा होगा? और अंत में उन्हें खुले दुष्ट विद्रोही बनाने में कितना समय लगा होगा? सैकड़ों, हजारों; लाखों, करोड़ों वर्ष लगे होंगे। यह सब प्रथम मानव की सृष्टि के पहले हुआ था।

जेनेसिस 1 के पहले पद में व्याख्या की गई है कि ये सब धरती की मूल सृष्टि के बाद हुआ। श्लोक 2 में, 'यह सृष्टि' अध्याय में देवदूतों के पाप से हुई अवस्था का वर्णन करता है। श्लोक 2 में जिन घटनाओं का वर्णन हुआ है, उनसे पता चलता है कि धरती की मूल सृष्टि के करोड़ों वर्षों बाद ही ये सब घटनाएं घटी होंगी।

इसलिए, यह धरती करोड़ों वर्ष पूर्व सृजित हुई होगी। लेकिन इजेकियल 28 में यह अंश पढ़िएः ''तुम्हारे सौदे की बहुलता के कारण, उन लोगों ने तुममें हिंसा भर दी और तुमने पाप किया; इसलिए मैं तुम्हें विधर्मी मानकर ईश्वर के पर्वत से निकाल दूंगाः और मैं तुम्हें नष्ट (निकाल) कर दूंगा। तुम्हारे सौंदर्य के कारण, तुम्हारा हृदय ऊपर उठा था। पर तुमने अपने प्रकाश के कारण अपने विवेक को भ्रष्ट कर लिया। मैं तुम्हें धरती पर फेंक दूंगा...'' (श्लोक 16–17)। इस बिंदु पर संदर्भ दुबारा शीघ्र प्रकट होने वाले मानवीय राजनीतिक – धार्मिक शासक पर लौट आता है। टायर का प्राचीन राजकुमार जिनका अग्रदूत था।

इस अध्याय के आरंभ में, मैंने आपको दिखाया था कि लूसिफर (जो अब शैतान है) के पाप के परिणामस्वरूप और इन ''पापी देवदूतों'' (अब नरकदूतों) के परिणामस्वरूप धरती की सतह पर भौतिक विनाश, पन और अंधकार छा गया। और मैंने यह भी दिखाया कि कैसे ईश्वर ने छः ही दिनों में धरती का पुनर्निमाण किया (जेनेसिस 1:2–25)।

मनुष्य की सृष्टि क्यों?

पर ईश्वर ने क्यों धरती पर मनुष्यों की सृष्टि की (जेने. 1:26)?

यह परिस्थिति देखिए जैसे ईश्वर करता है। ईश्वर ने हमें मानव–मन दिया है, जैसे ईश्वर का मन है। लेकिन मानव–मन सीमित और निम्न स्तर का है। ईश्वर ने हमें अपनी छाया में बनाया पर मानव भौतिक है, आत्मा का नहीं है। पर ईश्वर कहता है, ''यह मन तुममें रहे, क्योंकि ऐसा मन ईसा मसीह में भी था'' (फिलिप्पियों. 2:5)। कुछ अंश तक, हम भी ईश्वर के समान सोच सकते हैं। देवदूतों के विशाल विध्वंस के बाद, ईश्वर ने जैसे धरती के रूप का पुनर्निर्माण का कार्य शुरू किया तब ईश्वर ने उस परिस्थिति पर कितना गौर करके देखा होगा!

उसने धरती पर सुंदर और उत्कृष्ट सृष्टि की। उसने पवित्र देवदूतों से धरती को भर दिया। कई करोड़ों में रहें होंगे। उन देवदूतों के, राजा के रूप में, धरती के सिंहासन पर महादूत – सुंदर शिशु लूसिफर को नियुक्त किया। लूसिफर ईश्वर की सृष्टि – शक्ति की सर्वोउत्कृष्ट कृति था, जो एक अलग आत्मा–जीव के रूप में सर्जित था। वह सौंदर्य, शक्ति, मन, ज्ञान, बुद्धिमत्ता, विवेक आदि में बहुत ही असाधारण था, जो सर्वशक्तिमान ईश्वर की सृजन–शक्ति के अधीन सर्जित था। ईश्वर अपनी तात्कालिक आज्ञा द्वारा इससे उच्चतर या अधिक परिष्कृत कुछ भी बना नहीं सकता।

इतना होते हुए भी, ज्ञानी प्रशिक्षित और अनुभवी लूसिफर ने विश्व भर के लिए स्वर्ग में ईश्वर का राज सिंहासन तथा ईश्वर के राज्य का जो प्रशासन था, उन्हें ठुकरा दिया। अपने ही ढंग से दूषित होकर, प्रशासन के विरुद्ध किया, यहां तक कि उसकी आज्ञा का पालन भी नहीं किया। उसने अपने सारे देवदूतों को पथभ्रष्ट कर दिया और विद्रोह में पाप कराया।

अब आगे देखिए। स्पष्टतया, धरती की सृष्टि के ही समूचे ब्रह्मांड का सृजन हुआ सृष्टित था। ईश्वर द्वारा व्यक्त पवित्र शब्द में सही या विज्ञान में ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता कि असीम वाह्य अंतरिक्ष के किसी भी ग्रह में किसी भी प्रकार के जीव के वास करने की संभावना थी। पर ईश्वर कुछ भी निरर्थक नहीं बनाता। वह कोई न कोई प्रयोजन अवश्य रखता था।

जेनेसिस 1:2 में जैसी व्याख्या की गई है, स्पष्ट रूप से पूरे विश्व के सारे ऐसे ग्रह, अब, बेकार और् खाली हैं – सड़े हुए हैं (तोहू और बोहू) – धरती भी इसकी प्रकार सड़ी हुई थी। लेकिन ईश्वर ने सड़ी हुई अवस्था में उनका सृजन नहीं किया था – जैसे हमारा चांद है। 'सड़न' मूल सर्जित अवस्था नहीं है। वह तो ह्रास की प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप होने वाली स्थिति है। अब निरूपित हो गया अब अगर गिरे हुए देवदूत धरती की उसकी मूल सुंदर अवस्था का अनुरक्षण करते, उन्नति करते, विकास करते, ईश्वर के अनुदेशों का पालन करते, और उसके राज्य की आज्ञा का पालन करते तो पूरे विश्व भर में विशाल रूप से सृष्टि – कार्य चलते। ईश्वर भी उन्हें जनसंख्या बढ़ाने की विस्मयकारी शक्ति देता। जब वे धरती पर धोखेबाज निकले, उनके पापों के परिणामस्वरूप विश्व भर के अन्य ग्रहों में भी, एक ही समय, भौतिक विनाश शुरू हुआ होना चाहिए। इसलिए शक्ति की दृष्टि से और परिस्थिति के कारण उन्हें पराधीनता दी गई।

धरती विश्व का मुख्यालय होगा

इस पुस्तक के सातवें अध्याय में, ईश्वर के इस धरती की सृष्टि के प्रयोजन, अंत में, इसी धरती को समूचे विश्व का मुख्यालय बनाने के उद्देश्य की व्याख्या की जाएगी।

याद रखिए, यह धरती, मूल रूप में, सारे देवदूतों के लिए तीसरा निवास स्थान बनाने के उद्देश्य से रची गयी थी। धरती की सृष्टि को देख कर, उसकी सुंदरता को देख कर, उसकी परिशुद्ध अवस्था को देख कर, सारे देवदूत तुरंत खुशी के मारे उछल पड़े (जाब. 38:4–7)। उन्हें एक सुनहरा मौका दिया जाने वाला था। उन्हें काम करना था, उससे उत्पाद निकालना था और उसकी सुंदरता बनाए रखते हुए उस सुंदरता की वृद्धि भी करनी थी।

और इस बिंदु पर, यह समझना आसान होगा कि ईश्वर की मूल सृष्टि की क्या प्रकृति और क्या उद्देश्य है। जैसे कुछ दूकानों में अधूरे काम किए हुए कुछ फर्नीचर मिलते हैं। यह फर्नीचर ''कच्ची अवस्था में'' मिलता है – पर, इस पर वार्निश, पेइंट या पॉलिश लगाना बाकी है। कुछ लोग पैसा बचाने के विचार से ऐसे कच्चे फर्नीचर खरीदेंगे ताकि बाद में वे ही वार्निश वगैरह लगा लेंगे। पर इतना जरूरी है कि वार्निश लगाने की क्षमता उनमें हो। यह कच्चा फर्नीचर बढ़िया और अच्छे स्तर का हो सकता है – तो फिर भी, अंतिम सुंदर बनाने की पूर्णता की कमी रहती गई।

इसलिए यह ईश्वर की सृष्टि पर निर्भर करता है। यह तो पूर्ण है। पर ईश्वर की मंशा शर्त यह थी कि इसको सुंदर बनाने का काम देवदूत करेंगे। ईश्वर ने ही, अकेले, मूल ''कच्ची'' सृष्टि की थी। लेकिन उसका विचार था कि प्रागैतिहासिक समय में सारे देवदूत, और अब मनुष्य अपनी सृजन – शक्ति का उपयोग करके, ईश्वर की सृष्टि के कच्चे अंश को पूरा करेंगे। वे अंतिम सौंदर्य बढ़ाने और उपयोगिता बढ़ाने का काम करेंगे। तब होगी अंतिम पूर्ण सृष्टि।

और, हो या न हो, सारे देवदूतों को सूचित किया गया कि यह काम सर्वोच्चच परीक्षण और परीक्षा का काम है। ईश्वर के राज्य के प्रति आज्ञाकारिता की निरूपण – भूमिका है। अतः देवदूतों को यह काम अवश्य करना है। विशाल ब्रह्मांड के करोड़ों अन्य ग्रहों को अंतिम पूर्ण सृष्टि–रूप देने का उन देवदूतों का क्षमता–प्रमाण–पत्र होता है। ईश्वर का पवित्र शब्द यही संकेत करता है कि ईश्वर ने पूर्ण भौतिक ब्रह्मांड की सृष्टि करते समय, धरती की भी सृष्टि की। जेनेसिस 1:1 में सातवें शब्द का अनुवाद ''स्वर्ग'' (बहुवचन) में होना है। यह शब्द विशाल ब्रह्मांड को सूचित करता है, न कि इस धरती के परिमंडल मात्र को।

रेडियोधर्मिता के नियम और रेडियोधर्मी तत्व यही निरूपित करते हैं कि कभी कोई भौतिक तत्व अस्तित्व में नहीं था। ईश्वर केवल आत्मा है। ईश्वर आत्मा से बना है। सारे के सारे तत्वों के पहले से ईश्वर है। वही सबका स्रष्टा है। धरती के सृजन से पहले देवदूतों की सृष्टि हुई। ईश्वर जो प्रकट करता है वह दृढ़ता से इसी का संकेत करता है

कि धरती की मूल सृष्टि के पहले भौतिक पदार्थों का अस्तित्व नहीं था। धरती की सृष्टि के साथ ही समूचे भौतिक ब्रह्मांड को अस्तित्व में गया।

देवदूतों से ईश्वर का प्रयोजन

इस प्रकार देवदूतों की शक्ति और क्षमता को, पूरे ब्रह्मांड को विकसित करने और असंख्य तारों से घिरे करोड़ों भौतिक ग्रहों (जिनमें कई सूर्य भी हैं), को पूर्ण रूप देने का काम करना था। हमारे सौरपरिवार का सूर्य केवल औसत का सूर्य है। कुछ तारों को हम छोटे आकार में देखते हैं, वे असल में हमारे सूर्य से कई–कई आकाशगंगाएं बड़े होते हैं। हमारा सौर–परिवार, जो हमारे, मानव–मन की कल्पना के बाहर है, हमारी आकाशगंगा हमारे छाया–पथ का केवल एक अंश है। इस प्रकार की कई हैं! दूसरे शब्दों में कहें, यह भौतिक ब्रह्मांड, जिसकी सृष्टि शक्तिशाली ईश्वर ने की थी, उसका विस्तार हमारी कल्पना से परे है। यह महान ईश्वर कितना श्रेष्ठ है!

ईश्वर चाहता था कि इस अनंत ब्रह्मांड को अंतिम रूप देने का अति मुख्य भाग देवदूत अपने हाथ

में लें और निभाएं!

(लेकिन हो सकता है कि ईश्वर ने, उस समय, देवदूतों पर यह विस्मकारी शक्ति प्रकट प्रकट न की हो क्योंकि उनमें से एक तिहाई अपनी योग्यता साबित किए बिना ही बलपूर्वक इसे उससे छीनने में जुट गए।

और इस प्रकार ईश्वर ने व्यापक प्रयोजन से उनके ऊपर सरकार की स्थापना की। इस विश्व पर ईश्वर के राज्य का प्रशासन कार्य श्रेष्ठ महादूत, महान चेरब, लूसिफर को सौंपा गया।

याद रखिए, पवित्र देवदूतों और महादूतों को – इस महान चेरब, लूसिफर को भी मिला कर – आवश्यकता पड़े तो अपनी क्षमता के आधार पर सोचने, भेद करने, विभिन्न मनोवृत्तियां बनाने, और चयन करने तथा निर्णय लेने की प्रतिभा दी गई थी।

जसाकि पहले ही स्पष्ट किया गया है, ईश्वर ने इस लूसिफर के माध्यम से सब कुछ प्रदान करना शुरू किया। उसे विवेक, सौंदर्य और पूर्णता से भर दिया। जब लूसिफर की सृष्टि हुई, उसी समय से वह हर प्रकार से परिपूर्ण हो गया। जब उसमें

अधर्म–विद्रोह, विधिहीनता – पाई गया, वह तब तक पूर्ण था (इजेकियल. 28:15)।

अनंत ब्रह्मांड के राजसिंहासन पर बैठ कर ईश्वर के राज्य के प्रशासन का प्रशिक्षण और पूर्ण अनुभव प्राप्त किया! वह उन दो सुंदर शिशुओं में एक है, जिसके पंख अति उच्च ईश्वर के सिंहासन पर आच्छादित हैं (इजेकियल. 28:14: एक्सोडस, 25:20)।

कैसे पाप घुसा?

वह मनोहर सौंदर्य के साथ रचा गया था – सुंदरता में उत्कृष्ट लेकिन उसने दंभ को अपने ऊपर हावी होने दिया। उसके बाद वह गलत युक्ति की ओर झुक गया। ईश्वर की विधि है– ईश्वर के राज्य का आधार– प्रेम का, – दूसरे लोगों के प्रति भलाई और अच्छाई की चिंता का मार्ग। आज्ञाकारिता में ईश्वर के प्रति प्रेम और विनय और भक्ति। दूसरों को देने, उनके साथ बांटने, उनकी सहायता करने और सहकारिता के साथ जीने का रास्ता है। उसने तर्क किया कि सहकारिता के बदले होड़ चलाना बेहतर होगा। श्रेष्ठ होने, कड़ाई से प्रयत्न करने और निष्पादित करने में यह गुण प्रेरक सिद्ध होगा। अपनी सेवा करने में अधिक खुशी होगी, अधिक आनंद आएगा।

वह ईश्वर के प्रेम के कानून के विरुद्ध चलने लगा। वह ईश्वर के प्रति ईर्ष्यालु, विरोधी और ईश्वर से विद्वेष करने लगा। उसने अपने में वासना और लोभ भर लिया। और वह अपने हर व्यवहार में कडुवा हो गया।

इस प्रकार हिंसा की भावना रखने की प्रेरणा मिली! वह जानबूझकर अपने ही सृष्टिकर्ता का विरोधी और दुश्मन बना। यह तरीका उसका चुना हुआ तरीका था, ईश्वर का नहीं था। फिर भी ईश्वर ने उसे मान लिया!

ईश्वर ने उस विरोधी का नाम बदल दिया, जैसे वह बना, उसी के अनुसार उसे शैतान, अपदूत, राक्षस कहा गया– शैतान का अर्थ है विरोधी, प्रतियोगी, दुश्मन।

इस प्रकार, शैतान ने अपनी अलौकिक शक्ति, बुराई की ओर चलाई। वह मात्र ईश्वर के प्रति नहीं, ईश्वर की विधि के प्रति भी कडुवा रहा। उसने अपना सूक्ष्म छल–कपट का गुण अपने अधीनस्थ देवदूतों पर प्रयोग किया। उनमें निष्ठाहीनता, विद्रोह और सृष्टिकर्ता के विरुद्ध बगावत भरी। और अंत में आक्रमण और हिंसा द्वारा उन्हें युद्ध करने पर विवश किया। फिर ईश्वर को पदच्युत करने, ब्रह्मांड का राजसिंहासन छीन लेने का प्रयत्न किया।

जब तक लूसिफर निष्ठावान रहा और ईश्वर का राज्य विश्वास के साथ शासित किया, तब तक इस धरती पर विस्मयकारी और पूर्ण शांति थी। सारे देवदूत सक्रिय रूप से खुश थे और उल्लास में डूबे हुए थे! ईश्वर के राज्य की विधि है, जीवन का सही तरीका। वह तरीका शांति, खुशी, समृद्धि और भलाई उत्पन्न करता है या उत्पन्न होने का कारण बनता है। पाप भी जीवन का एक तरीका है जो सारी बुराइयां लाता है।

देवदूतों के पाप का दंड मृत्यु नहीं था– क्योंकि ईश्वर ने उन्हें अमर आत्मिकजीव के रूप में बनाया था। वे मर नहीं सकते। आखिर ईश्वर ने उन्हें क्या दिया? जीने के लिए यह धरती दी और समूचे ब्रह्मांड को सुंदर बनाने और उसको अपने पास रखने के योग्य बनने का मौका दिया।

उनका दंड है अनर्हता– अपने सुनहरे मौके की जब्ती, मन की विकृति और विराट विश्व भर का महाप्रलय उत्पन्न करना ताकि पूरी धरती का विनाश हो जाए। असल में, जो देवदूत विद्रोही निकले, वे अब भी अंतिम ईश्वरीय दंड की प्रतीक्षा में हैं।

इसके परिणामस्वरूप, जैसे जेनेसिस 1:2 में संक्षेप में व्याख्या की गई है, धरती की हालत बदल गयी. लूसिफर की प्रकाश लानेवाले खरे जीवन के रूप में सृष्टि की गई थी। अब, वह तो अंधकार का, पापों का, अस्तव्यस्तता का और गलतियों का अधिष्ठाता बन गया।

इस प्रकार देवदूतों न विद्रोह करके जो पाप किया (II पीटर. 2:4–6; जुड. 6–7; इसैया. 14:12–15; इजेकियल. 28:12–17), उसके कारण धरती को यह महाप्रलय भुगतना पड़ा।

लूसिफर के विराट विध्वंस के बाद और देवदूतों के पाप करने के बाद ईश्वर ने उस अवस्था पर कितना ध्यान दिया होगा?

लूसिफर की सृष्टि, सुंदरता, मनोवृत्ति, ज्ञान, शक्ति, बुद्धिमत्ता और विवेक में एकदम खरी और पूर्ण थी। ईश्वर की सर्वशक्ति के अधीन उसे एक महत्वपूर्ण जीव के रूप में ईश्वर ने रचा था। लूसिफर को सोचने, तर्क करने, अपने आप चयन करने और निर्णय लेने की पूरी शक्ति दी। ईश्वर को मालूम था कि उससे उच्चतर, अधिक उत्कृष्ट और पूर्ण जीव आरंभिक सृष्टि के रूप में बनाया नहीं जा सकता।

नरकदूतों का उद्गम

इतना होने पर भी, यह श्रेष्ठ जीव (लूसिफर) ब्रह्मांड पर ईश्वर के राज्य के सिंहासन द्वारा काफी प्रशिक्षित और अनुभवी हुआ। पर उसने गलत तर्क और शैतानी विकृत निर्णय लिया। वह अपने अधीन के देवदूतों का मन दूषित करता रहा। फिर उसने उन्हें विद्रोह करने को विवश किया। संभवतः लूसिफर को यह काम करने में लाखों– करोड़ों वर्ष लगे होंगे। संभवतः, शुरू में, उसने अपने देवदूतों का मन विकृत करने के लिए एक–एक को चुना होगा। पहले उन्हें असंतुष्ट होने का विवश किया होगा, ईश्वर द्वारा गलत बोला गया होगा, और फिर धीरे–धीरे करके उनमें अप्रसन्नता और कड़ुवाहट भरी होगी।

जब लूसिफर में दंभ, ईर्ष्या, दुश्मनी, वासना और लोभ, फिर अप्रसन्नता और विद्रोह घुस गए और उसने मन में छा गए तब उसके मन में कुछ भिन्न विचार आ गया। उसका मन विकृत, मिथ्या से भरा और मरोड़ा गया। उसके विचार विकारों से भर गया। ईश्वर ने उसको अच्छा मन दिया और देवदूत अपने मनों को नियंत्रित कर रहे थे। पर वे उन गुणों को सीधा नहीं कर पाए– फिर कभी विवेकशील होकर, ईमानदार होकर सही रूप में सोच न पाए।

मुझे कुछ अपदूत–ग्रस्त लोगों द्वारा पिशाचों के साथ कुछ व्यक्तिगत अनुभव मिले हैं। मैंने ईसा और पवित्र की शक्ति के नाम पर पिशाचों को भगाया है। कुछ पिशाच बिगडे हुए बच्चों के समान मूर्ख थे। कुछ पिशाच धुर्त, तेज, समझदार और कुशाग्र थे। कुछ तो लड़ाकू थे और कुछ चिड़चिड़े थे। कुछ तो बिल्कुल रूखे और उदास थे। पर सारे के सारे पिशाच विकृत, बिगड़े और मरोड़े हुए थे।

क्या शैतान और उसके पिशाच मानव–मनों को और आज की सरकार को प्रभावित करते हैं या बिगाड़ते हैं? क्या दुष्ट आत्माएं आपके भी जीवन को आक्रांत करती हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इसी पुस्तक के चौथे अध्याय में दिया गया है।

ईश्वर ने इस महाप्रलय की दुर्घटना का अच्छुआ सर्वेक्षण किया। उसको लगा होगा कि अपनी ही सर्वशक्ति द्वारा सर्जित उच्चतम और श्रेष्ठ जीव विद्रोही बन गया। अब केवल ईश्वर ही एकमात्र अच्छा जीव रह गया जिसने पाप नहीं किया और नहीं कर सकता।

ईश्वर ने जब महाप्रलय की इस दुर्घटना का सर्वेक्षण किया, तो उसे अवश्य लगा होगा कि चूंकि उसकी सर्वशक्तिमान सृजनक्षमता के भीतर सर्जित सबसे उत्कृष्ट, सर्वोच्च सत्व उसके मन में प्रवेश करने और उसमें जगह बनाने के लिए प्रवृत्त हो गया है तो इसके विद्रोह को कुछ हुआ, इससे अकेले ईश्वर ही बचा जो पाप नहीं, जिसने पाप नहीं किया होगा जो पाप नहीं कर सकता।

और ईश्वर ही पवित्र ईश्वरीय परिवार या और राज्य का पिता है।

जॉन 1:1–5 देखिए। पवित्र शब्द जो बाद में ''मांस का बना'' (पद 14) हमेशा के लिए अस्तित्व में था– शाश्तत्व से रहा। वह पिता के साथ रहता था। पिता ईश्वर ने ही सब को बनाया और सारी वस्तुओं को बनाया। पूरे ब्रह्मांड को बनाया। अपने द्वारा बनाया जो बाद में ईसा मसीह बना (ईफीसियाई. 3:9; कोल. 1:16–17)।

जब ईसा धरती पर था, तब उसने स्वर्ग के अपने पिता ईश्वर से प्रार्थना की। पिता ने ईसा के बारे में ऐसा कहा, ''मेरा प्यारा बेटा जिसमें मैं अच्छी तरह खुश हूं।'' ईसा धरती पर मानव के रूप में जिए; जैसे हमें होता है, उस प्रकार सारी चीजों के प्रति प्रलोभन और मोह दिखाए गए। फिर भी वह पाप किए बिना जीए।

अंग्रेजी बाइबिल का चौथा शब्द है ''ईश्वर'' (जेनेसिस. 1:1) और इसका मूल हिब्रू शब्द है 'एलोहिम'। यह संज्ञा शब्द है, बहुवचन में है, जैसे अंग्रेजी शब्द परिवार, चर्च या झुंड। पवित्र परिवार है ईश्वर। असल में एक ही ईश्वर है– एक परिवार है, जिसमें एक से अधिक सदस्य हैं।

ईश्वर ने देखा कि ईश्वर के परिवार में ईश्वर नीचे के किसी पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता कि वह पाप नहीं कर सकता। केवल ईश्वर पाप नहीं कर सकता। इस समूचे विस्तृत विश्व के लिए अपने प्रयोजन की पूर्ति के लिए ईश्वर ने देखा कि अपने से निम्न स्तर के किसी (ईश्वर के परिवार के रूप में) पर भी समूचे ब्रह्मांड में ईश्वर के सर्वोच्च प्रयोजन के पालन के लिए पूरी तरह भरोसा नहीं किया जा सकता।

मानव ने पतित देवदूतों का अनुसरण क्यों किया?

बाद में ईश्वर ने निश्चय किया कि मैं अपने को, मानव द्वारा, प्रजनित कर लूंगा। वह उत्पादन मेरा जैसा होगा और मेरी छाया में होगा। पर वह बनेगा, पहले, भौतिक मांस और रक्त से। अगर नया उत्पादित मानव पाप करेगा और उसका पश्चाताप नहीं करेगा तो उसे मरण ग्रस लेगा। फिर भी वह पिता ईश्वर द्वारा प्रजनित पवित्र परिवार में जनम लेगा। ईश्वर गौर करने लगा कि ईसा द्वारा यह काम कैसे किया जा सकता है। क्योंकि ईसा ने उस प्रयोजन के लिए अपने को अर्पित कर लिया था।

और इसलिए ईश्वर ने मनुष्य को धरती पर पैदा किया। यही कारण था कि सर्वोच्च और सर्वशक्तिमान ईश्वर ने यह अति विराट, उत्कृष्ट कृति बनाई। ईश्वर ने अपने को पुनरुत्पादित कर लिया। अगला अध्याय इस विषय का और स्पष्ट रूप देगा, इसमें कोई संदेह नहीं।

यह अध्याय पूरा करने से पहले, एक अंतिम मुख्य विचार प्रकट कर देना बेहतर होगा। ईश्वर का सर्वोच्च समूचा प्रयोजन एक ही है, वह है उत्पन्न करना। अपने को पुनरुत्पादित कर लेने को भी ईश्वर तैयार था। और उसी समय ईश्वर ही अपने द्वारा प्रजनित सृष्टियों पर सर्वोच्च शासन शाश्वत रूप से करने का विचार था। स्पष्टता से ईश्वर ने इस धरती को ही अपने ब्रह्मांड का मुख्यालय चुन लिया। और ईश्वर के सर्वोच्च राजसिंहासन पर स्वयं विराजमान हुआ। (देखिए कोरिंथियाइयों I 15:24)। पर, शैतान ने धरती पर ईश्वर का राज्य उलट दिया। इसलिए अब ईश्वर ने मानव द्वारा अपने राज्य के पुनःस्थापन का विचार किया। क्योंकि मानव ईश्वर की छाया में ही प्रजनित है और किसी भी हालत में उसे ईश्वर के परिवार का अंग बनना है। हमें पॉल की चेतावनी पर ध्यान देना होगा कि कभी भी शैतान के अस्तित्व पर अनभिज्ञ नहीं होना है। या उसकी युक्तियों या साधनों से अनजान नहीं रहना है। और उसे न ही हमें धोखा देकर हमारा नाजायज फायदा उठा लेने का मौका देना है। (II कार. 2:11)। हमारा सर्वोच्च मुख्य प्रयोजन अगले अध्याय में स्पष्ट किया जाएगा।

शुभ समाचार

आपने यह कहावत सुनी होगी ''शुभ समाचार और अशुभ समाचार।'' इस अध्याय के पिछले भाग ने आपको अशुभ समाचार दिया। शुभ समाचार है मानव द्वारा ईश्वर का प्रयोजन और सच्चाई यह है कि दो–तिहाई देवदूत, अब भी, पवित्र और धर्मपरायण हैं। वे पिशाचों से अधिक संख्या में हैं और वे आज भी ईश्वर के अदृश अभिकर्ता के रूप में ईमानदार हैं। करोड़ों मानव–मनों में धर्मपरायण चरित्र बढ़ाने के मामले में सहायता करने और अमल में लाने में सहायक होते हैं। क्योंकि उन मानवों को ईश्वर के सुत बनना बाकी है, सर्वोच्च ईश्वर का बेटा बनना बाकी है, सर्वोच्च ईश्वर का वारिश बनना और ईश्वर के महा परिवार का सदस्य बनना बाकी है।

3

मानव का रहस्य

यह अवश्य विस्मयकारी लगता है! उच्च शिक्षा मानव र्काय की, कायिकी, नृविज्ञान और मनोविज्ञान आदि तकनीकी पाठ्यक्रम पढ़ाती है। सारे विश्वविद्यालय मानव को अलग से पृथक लेकर इंच–इंच तक गहराई से अध्ययन करते हैं। वे मानव के हर पहलू और हर दशा का अध्ययन करते हैं। वे मानव–मस्तिष्क को भी पृथक् लेकर अध्ययन करते हैं। फिर भी, काफी प्रगत अनुभवी मनोवैज्ञानिकों के लिए भी मानव–मन एक पूर्ण रहस्य ही बना रहता है। उनको मालूम नहीं है कि मानव क्या है और क्यों है? यह तीसरा रहस्य है जिसे मानवता ने कभी नहीं समझा।

क्या वह केवल की उच्चतम जीवप्रजाति कृति है? क्या वह, अंतर्निहित शक्तियों से उत्पन्न मात्र हुआ है? क्या उसमें क्रम विकास की प्रक्रिया द्वारा बुद्धिमान योजना या अभिकल्पना नहीं है? लेकिन मानव में क्यों सोचने–समझने और भेद करने की शक्ति है और सारे मानव ज्ञान का भंडार उसमें भरा पड़ा है जबकि ऐसा भंडार पशु में रखने की शक्ति बिल्कुल नहीं है? क्या मानव अमर आत्मा है? क्या मानव मांस और रक्त का बना है जिसमें अमर आत्मा उसके अंदर छिपी पड़ी है? आखिर मामव जीव क्या है?

और क्यों?

मानव जाति क्यों इस धरती पर है? क्या हम ऐशे ही बने हैं? या हममें कोई अभिकल्पना और प्रयोजन है?

हम कहते हैं कि हर कार्य का कोई–न–कोई कारण है। वह कार्य, यहां, मानव है। मानव यहां है। कैसे – क्यों वह यहां जीने आया? क्या वह जबर्दस्ती पटका गया, या बस, ऐसे ही, क्रम विकास की प्रक्रिया में वह अंधा, अचेत, बुद्धिहीनता से बनाया गया?

हमें जानना चाहिए!

यह एक रहस्य है। इसी रहस्य ने उच्च शिक्षा को चकरा दिया है।

सर्वसम्मति से इस बीसवीं शताब्दी में उच्च शिक्षा आ गई है, जो क्रम विकास सिद्धांत को मान लेती है। उच्च शिक्षा कभी नहीं मान सकती कि सृष्टि सर्वोच्च मन, पूर्ण बुद्धिमत्ता और असीम शक्ति ईश्वर द्वारा अभिकल्पित और नियोजित है। लकिन, क्रम विकास सिद्धांत किसी भी अंश में विस्मकारी उपलब्धि के विरोधाभासी विश्व की व्याख्या नहीं कर सकता। साथ ही साथ बढ़ती और लगातार चढ़ती बुराइयों की समस्याएं वह सुलझा नहीं सकता। मानव अस्तित्व के लिए कोई प्रयोजन नहीं बता सकता। किसी भी मान्यता के बिना, धरती पर मानव की उपस्थिति और सभ्यता की वर्तमान स्थिति के कारण जो बाइबिलीय सत्यों द्वारा व्यक्त हुए हैं, उन्हें उच्च शिक्षा तिरस्कारपूर्वक ठुकरा देती है। आज की सभ्य दुनिया की शिक्षा बिल्कुल भौतिकवादी हो गई है। आज की शिक्षा क्रम विकास के अज्ञेयवाद, राजनीति और कार्ल मार्क्स का अर्थशास्त्र तथा सिग्मंड फ्रायड की नीति और सामाजिक पद्धतियों का सम्मिश्रण है। उच्च शिक्षा मानव जाति और मानव सभ्यता के रहस्यों से बिल्कुल अनभिज्ञ है।

लेकिन उच्च शिक्षा नहीं जानती। और, वह जानना भी नहीं चाहती! जब हम क्या और क्यों के प्रश्नों से लड़ रहे हैं, तब ये बुद्धिमान लोग–ज्ञान के अभिरक्षक कहलाने वाले बुद्धिमान–खिसक जाते हैं या खड़े होकर लड़ते हैं। मानव क्या है और क्यों है आदि प्रशनों के मामले में वे जानबूझकर अज्ञानी बने रहते हैं!

अंतः शिक्षा अपना मन और अपना मुंह — एकदम बंद कर लेती है। विज्ञान को मालूम नहीं है। धर्म भी कुछ प्रकट नहीं करता, क्योंकि धर्म को भी कुछ मालूम नहीं है!

हां, अविश्वसनीय सच है— लेकिन!

ईश्वर मौजूद है।

यह हठीला अज्ञान क्यों? क्योंकि इसमें ईश्वर का संबंध है। शैतान ईश्वर का प्रतिपक्षी है। शैतान इस धरती के सिंहासन पर बैठ गया है और उसने सभी बुद्धिमानों को और समाज के हर स्तर के सभी लोगों को मन से अंधा बना दिया है। एक क्षण के लिए मान लीजिए, शिक्षित बुद्धिमानों का मन अति उच्च प्रशिक्षण पाता है और उसके नाम के पीछे कुछ अक्षरों की उपाधियां लगती हैं। बुद्धिमान किसी विशेष क्षेत्र में काफी प्रशिक्षित हैं। उसे उससे विशेष क्षेत्र के बाहर ज्ञान के किसी अन्य क्षेत्र के बारे में कुछ प्रश्न पूछिए। तब वह उतना ही अज्ञानी है, जितने कि शिक्षा के इस अति विकसित भूलभुलैया में पड़े लोग हुआ करते हैं।

इस विश्व की सभ्यता के प्रधान विभाजन — सरकार, धर्म, शिक्षा, विज्ञान, तकनीकी, उद्योग आदि — सब ईश्वर से कतराते हैं। वे चाहते हैं कि ईश्वर उनके कार्यों में दखल न दे! ईश्वर का नाम उल्लेख भी उन्हें व्याकुल कर देता है।

लोकातीत दुष्ट शक्ति पिशाच शैतान और अदृश पैशाचिक आत्मिकजीवों के अदृश दुष्प्रभाव के सिवा दूसरा कोई भी इस अज्ञान को नहीं समझ सकता। जब हम प्रकाशना 12:9 में पढ़ते हैं कि पूरा विश्व शैतान द्वारा छला गया है; उसमें पूर्ण विकसित बुद्धिमान भी शामिल होते हैं। ईसा मसीह ने ईश्वर को धन्यवाद दिया कि असली सत्य बुद्धिमान, विवेकी और समझदार लोगों से छिपाए गए हैं और भौतिकवादी ज्ञान के क्षेत्र में जो बच्चे हैं, उनको बताया गया है।

इस पुस्तक के पहल अध्याय में हम 'ईश्वर कौन है और क्या है' आदि प्रश्नों पर विचार कर चुके हैं। और हम देखते हैं कि ईश्वर बिल्कुल असली है, यथार्थ है। एक से अधिक व्यक्तियों का है ईश्वर। ईश्वर एक परिवार है। ईश्वर एक सर्वोच्च पवित्र परिवार है। इस धरती पर बने सारे पदार्थों और जीवों का

सृष्टिकर्ता है। ईश्वर का एक ही प्रयोजन है। ईश्वर के परिवार का अंग बनाने के लिए मानव द्वारा अमर्त्य, पवित्र, सदाचारी और आत्मिक चरित्र की सृष्टि करना ही ईश्वर का प्रयोजन है।

अतः इस धरती पर मानव की उपस्थिति का सृष्टिकर्ता ईश्वर के प्रयोजन से कोई निश्चित संबंध अवश्य होगा।

इन मूलभूत अतिमुख्य प्रश्नों और कथनों के आधार पर अब हम प्रश्न कर सकते हैं कि आज के इस अस्वस्थ और अस्तव्यस्त विश्व में क्यों ये सारी बुराइयां होती हैं? अब इस विश्व के सामने एक प्रश्न है – एक ही प्रश्न है – मानव उत्तरजीविता का प्रश्न! इसका कोई समाधान नहीं है। क्या इस धरती पर मानव जीवन इस बीसवीं शताब्दी के बाकी छोटे अंश तक जीवित रह पाएगा? मानवता ने आबादी की वृद्धि की है और उसके मन में उत्पन्न शक्ति द्वारा आणविक शक्ति भी बढ़ाई है। यह शक्ति पूरी आबादी का विध्वंस कर देगी। क्या मानवता दोनों को जीवित रख सकती है?

अब धरती पर पाप करने वाले देवदूतों के लिए ईश्वर के प्रयोजन के बारे में जो बताया गया है उस पर गौर कीजिए। क्योंकि देवदूतों का वह विद्रोह सीधे मनुष्य के पीछे ईश्वर के प्रयोजन की ओर ले आता है–हमारे इस प्रश्न की ओर कि मनुष्य क्या और क्यों है।

सर्वनाश में धरती का फलक

पाप करने वाले देवदूतों ने धरती की सृष्टि को विकसित करने, सुंदर बनाने तथा पूर्ण करने की बजाय उसे नष्ट कर दिया और सूना बना दिया।

अब जेनेसिस 1:1–2 देखिएः ''शुरू में ईश्वर ने स्वर्गों को (आरएसवी) और धरती को बनाया। और वह धरती किसी निश्चित आकार में नहीं थी और रिक्त भी थी, गहराई तक धरती का फलक अंधकार से घिरा हुआ था...।''

''आकारहीन और रिक्त'' के लिए मूल हिब्रू में ''तोहू और बोहू'' शब्दों का प्रयोग हुआ है। इनका अर्थ है – ''बेकार, सूना, विगड़ा हुआ''। 'था' शब्द का अनुवाद भी 'हो गया'। इस प्रकार, संभवतः, लाखों वर्षों बाद, सारी की सारी धरती पर समुद्रीय फलक आ गया होगा। और देवदूतों की नियमहीनता के कारण प्रकाश अंधकार में बदल गया होगा।

मैं यहां इसी सिलसिले में एक बाइबिलीय सिद्धांत जोड़ना चाहूंगा। इसैया में यह निर्देश दिया गया है: ''वह ज्ञान की शिक्षा किसको देगा? और वह किसको धर्म सिद्धांत समझने योग्य बनाएगा? नीतिवचन पर ही नीतिवचन होना चाहिए, नीतिवचन पर नीतिवचन; पंक्ति पर पंक्ति, पंक्ति पर पंक्ति; थोड़ा यहां और थोड़ा वहां'' (इसैया 28:9–10) पर अधिकतर कौन बाइबिलीय समझदारी का यह सिद्धांत – इस संदर्भ का 'थोड़ा' पद लेकर प्रयुक्त करने का प्रयत्न करेगा और उसमें अपनी निजी युक्तियों के साथ कौन ''व्याख्या'' करेगा?

अभी तक लिखी गई पुस्तकों में 'पवित्र बाइबिल' ही एकमात्र अद्वितीय ग्रंथ है। इसका कारण यह है कि इसके सत्य थोड़ा यहां, थोड़ा वहां दिए गए है। क्योंकि यह ग्रंथ एक कूट पुस्तक है। ईश्वर का विधान था कि हमारे वर्तमान समय के अंत तक इसे कोई न समझ पाए। इसका उल्लेख इसी पुस्तक के अन्य स्थान पर हुआ है। जिसने बाइबिल को सीधे और लगातार, शुरू से, पढ़ने का प्रयत्न किया है, उन्हें भ्रांति में डाला गया है। कई लोगों ने अपने हाथ उठा दिए और बोले, ''मैं बाइबिल बिल्कुल समझ नहीं सकता। ''मैंने भी एक बार ऐसे ही कहा है। इसीलिए तो ब्रूस बर्टन ने कहा था कि बाइबिल ऐसी पुस्तक है जिसे कोई भी समझ नहीं सकता। मैंने इसी पुस्तक में और कहीं विस्तार से बताया है कि बाइबिल र्वग पहेली के समान है। जब तक वर्ग पहेली के विभिन्न टुकड़ों को सही ढंग से एक साथ बिठाया नहीं जाता, तब तक असली चित्र नहीं मिलता।

जेनेसिस 1 में जैसा कि दिया गया है, उससे इस मामले का सीधा संबंध है। बाइबिल के अन्य भागों में धर्मग्रंथ के कई अन्य अंशों द्वारा बहुत कुछ भरा गया है।

इसलिए, अब इसकी पृष्ठभूमि को समझ लें। जेनेसिस 1:1 ईश्वर ने स्वर्गों और धरती की सृष्टि की। हमने पहले भी, अध्याय 2 में, देखा कि स्वर्ग (या विश्व) और धरती की सृष्टि देवदूतों की सृष्टि के बाद हुई थी। धरती के देवदूतों ने विकास, वृद्धि, सुधार और रमणीयता द्वारा धरती की सृष्टि की, पर पूर्ति नहीं की। बदले में, उन्होंने धरती को बिगाड़ दिया और उजाड़ भी दिया। धरती पर ईश्वर का राज्य निष्प्रभावी और व्यर्थ कर दिया।

ब्रह्मांड के समस्त जीवधारियो में से अकेले ईश्वर पर ही विश्वास किया जा सकता है कि वह अपने नियमों के रास्ते से कभी विचलित नहीं होगा। ईश्वरीय आध्यात्मिक चरित्र व्यक्ति या सर्जित सत्ता का ईश्वर के सही रास्तों के ज्ञान प्राप्त करने, और विरोध, प्रलोभन, या अपनी प्रतिकूल इच्छा के बावजूद उन रास्तों पर चलने की इच्छा रखने का स्वागत कार्य या आचरण है। इसे ईश्वर प्रदान करता है और उस सत्ता के लिए आवश्यक है कि वह सायास उसे ग्रहण करे। इस तरह अब ईश्वर ने अब निश्चय किया था उसने पहले से ही तय कर रखा था कि अपने प्रजनन द्वारा चरम सर्जनात्मक आज्ञप्ति को पूरा करे! यह काम मनुष्य के जरिए पूरा किया जाना था। ईश्वर जानता था कि इसे पदार्थ के माध्यम से अस्तित्व में लाया गया।

ईश्वर की छाया में मानव

मानव की सृष्टि के लिए धरती को तैयार करते समय ईश्वर ने धरती के फलक नवीनीकरण किया। इसकी व्याख्या स्त्रोत 104:30 में की गई हैः ''तुमने अपनी आत्मा पहले भेजी, उनकी सृष्टि हुईः और तुमने धरती के फलक का नवीकरण किया।''

अब फिर से जेनेसिस 1:2 देखेंः धरती बिगड़ी हुई अवस्था में थी। ''......और ईश्वर की आत्मा ने जल–प्रवाह का फलक हटा दिया।''

सबसे पहले ईश्वर ने जो काम किया, वह है कि अंधकार मिटाकर पहले की तरह मौलिक प्रकाश लाया। ईश्वर ने कहा, ''प्रकाश होः और प्रकाश आ गया'' (जेने. 1:3)।

इस प्रकार छः दिनों में ईश्वर ने धरती के फलक का नवीकरण कर दिया और उसे मानव की सृष्टि के लायक बना दिया। (यह नवीकरण कोई मूल सृष्टि नहीं है, बस, उसकी मूल सृष्टि की स्थिति का पुनर्स्थापन मात्र है)।

ईश्वर ने समुद्रों से सूखी भूमि अलग कर दी। इसके बाद ईश्वर ने धरती पर वनस्पत्तियों की सृष्टि की। फिर पानी में जल जीवों की सृष्टि की। फिर पशु–जीवों। हिब्रू में मूसा ने लिखा, पद 20, 21, 24 में रीढ़दारों को 'नेफेश' कहा गया है। अनुवादकों ने इन तीन पदों का अनुवाद अंग्रेजी में करते समय 'नेफेश' के लिए ''जीवित जंतु'' शब्द का प्रयोग करके सही रूप दिया है। फिर भी, जेनेसिस 2:7 में मानव के बारे में कहते समय, इसी 'नेफेश' शब्द का अनुवाद ''आत्मा'' कर दिया है। क्योंकि अनुवादकों ने गलती से समझा कि केवल मानव ही आत्माएं हैं। 'नेफेश' का शाब्दिक अर्थ है 'पशुओं का जीवन'। यहां भौतिक जीवन का उल्लेख है, न कि आत्मा का।

फिर से, धरती पक्की थी। फिर भी, अपूर्ण थी। सृष्टि समापन में अंतिम रूप देना बाकी रह गया था।

जैसा कि पहले भी लिखा गया है, ईश्वर द्वि–अवस्था अपनाता है। इसकी तुलना केक पकाने के काम के साथ की जा सकती है। पहले केक का अपूर्ण रूप अवन से बाहर निकाला जाता है। पर, यह पूर्ण नहीं है। तब दूसरी अवस्था पर जाना पड़ता है– केक पर चाशनी लगाना। यह अवस्था केक को सुंदर, पूर्ण और अलंकृत करती है।

ईश्वर ने लूसिफर और उसके देवदूतों को धरती पर रखा। पर ईश्वर का विचार था कि वे इस सृष्टि को पूर्ण रूप देंगे जैसे पहले थी। वे धरती को सुंदर, उन्नत और अलंकृत बनाते हुए अंतिम रूप देंगे। पर देवदूतों ने पाप किया। इसका परिणाम रहा कि इस ग्रह को अस्तव्यस्त कर, उलझाकर और अंधकारमय कर दिया।

अब ईश्वर ने मानव के लिए धरती के फलक का नवीकृत कर दिया। ईश्वर के चरित्र की छाया के समान मानव बनाया गया। और ईश्वर के रूप और आकार सदृश मानव को बनाया गया। और अब, ईश्वर ने चाहा कि मानव इस धरती को उन्नत और सुंदर बनाएगा, केक पर चाशनी लगाने के समान अंतिम रूप देगा। धरती की सृष्टि में मानव की भी यही भूमिका रहेगी। इस विचार के विपरीत, मानव ने जहां भी हाथ लगाया या काम किया, धरती के उस भाग को बिगाड़ा, दूषित किया, तंग किया, विकृत कर दिया।

धरती पर मानव का प्रयोजन

सृष्टिकर्ता ईश्वर ने मानव को धरती पर क्यों रखा? आखिरकार ईश्वर का सर्वोच्च प्रयोजन था अपने को पुनः स्थापित कर लेना। फिर से अपनी ही पुनः सृष्टि कर लेना, जैसी उस ईश्वर की इच्छा थी। अपने सर्वोच्च लक्ष्य के अनुसार धार्मिक और

सद्गुणयुक्त पवित्र चरित्र बनाना था। फिर उसी प्रकार लाखों, करोड़ों असंख्य प्रजनित और अपने द्वारा बच्चों को बनाना था। ये ही बच्चे ईश्वर के जीव बनेंगे और ईश्वर के परिवार के सदस्य बनेंगे।

ईश्वर ने धरती को मानव के हाथ दिया ताकि मानव इस धरती को पूर्ण, पक्का और सदाचारी बनाए। मानव इस सृष्टि को अंतिम रूप देगा। (पाप करने वाले देवदूतों ने जानबूझकर यह काम करने से इनकार कर दिया था।) और इस प्रकार करने से, ईश्वर के राज्य की पुनःस्थापना होगी। इसमें ईश्वर के जीवन का तरीका काम आएगा। और आगे, मानव की अपनी स्वसम्मति के साथ, ईश्वर के पवित्र, सदाचारी चरित्र द्वारा इस खास प्रक्रिया, मानव की सृष्टि के अंतिम रूप– को पूरा करना है।

एक बार मानव में यह पूर्ण और सदाचारी चरित्र स्थापित कर दिया जाए, और मानव, मर्त्य मांसधारी जीव को अमर्त्य आत्मा में परिवर्तित कर दिया जाए, तब उसमें विस्मयकारी मानव की अंतःशक्ति भरी जाएगी। ईश्वर के पवित्र परिवार में मानव पैदा हुआ। वही मानव धरती पर ईश्वर के राज्य की पुनः स्थापना करता है। और इसके बाद सृष्टि की पूर्ति में भाग लेता है। इस विश्व के संपूर्ण अनंत विस्तार पर सृष्टि पूर्ण होगी। मानव की इस विस्मयकारी अंतःशक्ति का सविस्तार वर्णन इसी पुस्तक के आगे के पन्नों में किया जाएगा। ईश्वर ने अकथनीय लाखों–करोड़ों संख्या मे अपने आप को पुनरुत्पादित कर लिया होगा।

इस प्रकार, सप्ताह के छठे दिन ईश्वर (एलोहिम) ने पुनः कहा, ''हम मानव को अपनी इच्छा के अनुसार अपनी प्रतिमूर्ति के रूप में बनाऐंगे'' (जेनेः 1:26)। मानव को ऐसा बनाया गया (उसकी सम्मति के साथ) ताकि वह अपने सृष्टिकर्ता के साथ विशेष रिश्ता रखे। इसलिए वह ईश्वर के रूप और आकार में बनाया गया। उसमें आत्मा भर दी गई (आसव के रूप में) ताकि उस रिश्ते को संभव बना सके। इसके बारे में और कुछ बातें आगे बताएंगे।

आत्मा नश्वर है

पर ईश्वर ने मानव को भौतिक तत्व से बनाया। जैसे ईश्वर का संकल्प था, सर्वोच्च उपलब्धि के लिए यह आवश्यक था।

''और प्रभु ईश्वर ने धरती की धूल से मानव को बनाया और जीवन की सांस (हवा) उसकी नाकों में भरी; और मानव जीवित आत्मा बन गया'' (जेनेसिस. 2:7)। मानव धरती की धूल पदार्थ से बनाया गया और सांस लेने के लिए हवा भरी गई। इस प्रकार वह जीवित आतमा बन गया। इसका मतलब यह नहीं कि मानव अमर्त्य आत्मा है या अमर्त्य आत्मा का है। भौतिक धरती से वह बना था और मानव आत्मा बन गया।

'आत्मा' शब्द मूसा के लिखे हिब्रू शब्द 'नेफेश' का अनुवाद है। हिब्रू शब्द 'नेफेश' कहा गया है (जेनेसिस. 1:20), ''चल प्राणी'' (हिब्रू; नेफेश); जेनेसिस 1:21, ''महा तिमिंगल और हर जीवित प्राणी'' हिब्रू, नेफेश); जेनेसिस 1:24, ''जीवित प्राणी'' (हिब्रू, नेफेश)। अनुवादकों ने अंगेजी भाषा में अनुवाद करते समय अंग्रेजी शब्द 'प्राणी' का प्रयोग किया। पर जेनेसिस 2:7 में, उसी शब्द 'नेफेश' का अनुवाद करते समय उन्होंने अंग्रेजी शब्द 'आत्मा' का प्रयोग किया। अब मानव एक 'जीवित आत्मा' (नेफेश) बन गया।

इसलिए आत्मा भौतिक है, भौतिक तत्व से बनी है और मर सकती है। यह सत्य है। बहुत कम लोगों ने इस पर विश्वास किया है। और शायद दूसरे किसी भी धर्म ने विश्वास नहीं किया। एक और प्रमाण है जो ईश्वर के एक सच्चे चर्च को पहचान कराता है।

मानव मन कैसे काम करता है।

अब हम एक और सत्य पर विचार करेंगे, जहां तक मुझे मालूम है, एकमात्र एक सच्चा चर्च है।

क्या कभी आपने मानव मन और प्राणी के दिमाग के बीच के बड़े अंतर के बारे में सोचा है? संभवतः, यह विकास के सिद्धांत की असत्यता का एक और प्रमाण है!

प्राणी जगत में उच्च कशेरुकीय प्राणियों के भौतिक मस्तिष्क, आकार, रूप और बनावट में मानव मस्तिष्क जैसे ही हैं। ह्वेल, हाथी, डाल्फिन आदि के मस्तिष्क बड़े आकार के होते हैं और चिंपैंजी का मस्तिष्क लगभग मनुष्य जितना ही बड़ा होता है। फिर भी मानव मस्तिष्क का काम अविश्वसनीय रूप से बहुत बड़ा होता है। कुछ ही लोग जानते हैं कि क्यों!

धर्म ग्रंथ के कुछ अंश यही दिखाते हैं कि मानव के अंदर आत्मा है। आत्मा भौतिक तत्व नहीं है और मानव भौतिक पदार्थ है। ईश्वर की पवित्र आत्मा से भेद दिखाना हो तो मैं इसे 'मानव' आत्मा का नाम दूंगा। फिर भी, यह आत्मा है न कि भौतिक पदार्थ।

यह 'मानव' आत्मा मानव के भौतिक मस्तिष्क को बुद्धिमत्ता की शक्ति प्रदान करती है। यह आत्मा देख नहीं सकती, सुन नहीं सकती, स्वाद नहीं ले सकती, सूंघ नहीं सकती या कुछ भी अनुभव नहीं कर सकती। यह मस्तिष्क आंख द्वारा देखता है, कानों से सुनता है, आदि। 'मानव' आत्मा अपने आप सोच नहीं सकती। भौतिक मस्तिष्क सोच सकता है।

तो फिर, इस 'मानव' आत्मा का क्या कार्य है? यह 'आत्मा' नहीं है। लेकिन (1) यह मानव मस्तिष्क को बुद्धिमत्ता की सोच की शक्ति प्रदान करती है– (2) और यह वह साधन है जो ईश्वर ने प्रदान किया है, जो मानव और ईश्वर के बीच व्यक्तिगत संबंध को संभव बनाता है।

मानव जीवन का असली मूल्य क्या है?

दार्शनिक, मानवतावादी आदि लोग मानव मूल्य को काफी ऊंचा मानते हैं जैसे उनके अंदर ही सर्वोच्च मूल्य छिपा हो। वे आपके भीतर के 'ईश्वर' की, आपके भीतर नैसर्गिख संसाधनों के उपयोग की बातें करते हैं।

वे निरा अज्ञानी हैं और सच्चे मूल्यों और अविश्वसनीय, लेकिन वास्तविक मानव क्षमता से अनभिज्ञ हैं। और विस्मयकारिता से अपरिचित भी हैं।

मानव जीवन एक साथ उससे बहुत कम मूल्यवान जितना कि वे मानते हैं और उससे कहीं बहुत सामर्थ्यवान है जितना वे जानते हैं।

असली सत्य प्रकट किया गया है। जब तक उसे प्रकट न किया जाए, तब तक वह रहस्य ही बना रहेगा। छले गए और दंभी बुद्धिजीवी उसे कभी समझ नहीं पाएंगे। मैं फिर से दोहराता हूं, ईसा ने अपनी प्रार्थना में कहा, ''मैं तुमको धन्यवाद देता हूं, ओ पिता, धरती और स्वर्ग के प्रभु, क्योंकि तुमने इन विषयों को बुद्धिमान और विवेकी लोगों से छिपा रखा, और केवल बच्चों पर उन्हें प्रकट किया'' (मत्ती. 11:25)।

मानव मूल्य से संबद्ध असली सत्य क्या है? मानव जीवन का असली मूल्य क्या है? उसके अपने असली मूल्य से बहुत अधिक मान गया है। और उसकी सर्वोच्च शक्ति को आश्चर्यचकित रूप में कम महत्व दिया गया है। सचमुच यह सत्य लड़खड़ा जाता है।

आप एक सूंदर, आकर्षक, भोले बच्चे को देखिए जो कुछ ही घंटे पहले पैदा हुआ था। या अस्सी वर्ष का संतुष्ट जीवन बिताए हुए बूढ़े को देखिए। और अपने आप से प्रश्न कीजिए, ''बस यह जीवन कितना महत्वपूर्ण है? एक तो अभी शुरू कर रहा है और दूसरा, पहले ही, बिता चुका है।'' क्या आप इस प्रश्न का सही उत्तर दे सकते हैं.?

हम समझें। यहीं एक मुश्किल की बात उठती है। बिल्कुल चूकने वाली बात यहां आती है। असल में, दुनिया भर के शिक्षित लोग भी चूक जाते हैं। आज दुनिया भर के वैज्ञानिक और प्रगतिशील शिक्षा का यही मानना है कि भौतिक तत्व को छोड़कर और कुछ है ही नहीं। वे आत्मा का अस्तित्व नहीं मानते। कहने का मतलब है कि आप मानें या न मानें, वे ईश्वर का अस्तित्व नहीं मानते।

मस्तिष्क अनुसंधान के नवीन विज्ञान पर हम विचार करें। हम सीख सकते हैं कि मानव मस्तिष्क कई कार्य करता है जो दूसरे किसी प्राणी के मस्तिष्क के लिए असंभव है। फिर भी हम सीखते हैं कि भौतिक रूप से, आकार की दृष्टि से, उन दोनों मस्तिष्कों में खास भेद नहीं हैं। जानवर अपनी सहज वृत्ति के अलावा कुछ सोच नहीं सकते, भेद नहीं कर सकते, अध्ययन नहीं कर सकते, निर्णय नहीं ले सकते। जानवर नहीं जानते कि मानव क्या जानता है। जानवर में निर्णय, विवेक, प्रेम, दया, सहयोग का गुण नहीं है। और न ही उसको प्रतियोगिता, षडयंत्र, बैर, ईर्ष्या, अप्रसन्नता मालूम है। वह तो संगीत, कला और साहित्य का मूल्यांकन नहीं जानता। उसमें आध्यात्मिक गुण या विशिष्टताएं नहीं हैं। फिर भी विज्ञान और उच्च शिक्षा मानव की बुद्धिमत्ता शक्ति को केवल भौतिक मानते हैं।

मुझे अपनी नजर में तार्किक दृष्टि से साबित करना था कि ईश्वर है और वस्तुतः पदार्थ से अधिक वास्तविक है। मुझे साबित करना था कि असल में पवित्र बाइबिल ईश्वर का प्रमाणिक शब्द है। इसके द्वारा ईश्वर मानव के साथ संपर्क रखता है, सत्य प्रकट करता है, नहीं तो मानव के लिए वह अगम्य हो जाएगा। और मैंने वह उद्घाटित प्रयोजन, अभिकल्पना अर्थ पायाजो आत्मदंभी विद्वानों से छिपाए गए हैं।

क्या मानव अपने स्रष्टा से, जिसने मानव को अभिकल्पित कर सृष्टि की, कह सकता है, ''मुझे तुमने इस प्रकार क्यों बनाया? और किस प्रयोजन के लिए?'' और क्या वह अपने स्रष्टा को निर्देश दे सकता है? क्या इसके बजाय उसे मन खुला नहीं रखना चाहिए और जब उसका सृष्टा उसके अस्तित्व का कारण प्रकट कर रहा हो तो उसे सुनना नहीं चाहिए?

स्रष्टा इन लोगों के लिए अपनी उच्चतम कूट भाषा की पुस्तक, पवित्र बाइबिल, में सच्चाई प्रकट की है और अनुदेश भी दिए हैं। इसका महत्वपूर्ण संदेश पवित्र आत्मा की उपस्थिति और अंतर्निवास द्वारा मानव के समझने के लिए खोल दिया गया। अब मानव–मन विश्वास और आज्ञाकारिता में प्रकाशना को समर्पित करने और मानने को तैयार हुआ। अतः उस मानवमन में पवित्र आत्मा भर दी गई। ऐसे मानव के लिए सत्य बिल्कुल सामान्य कर दिया गया– जो अद्भुत और अवर्णनीय था।

जरा यह प्रश्न देखिए! इस पर सोचिए! अगर मनुष्य में केवल भौतिक मस्तिष्क होता, जैसे मूक कशेरुकीय जीवों में होता है, तो ईश्वर, मस्तिष्क में ये सारे उत्कृष्ट आध्यात्मिक सत्य कैसे भर पाता? इसका उत्तर ईश्वर न करता। मूक जानवरों को ईश्वर की या आध्यात्मिक ज्ञान की कोई जानकारी नहीं है।

पर मर्त्य मनुष्य में जो मानव–आत्मा है, वह उस महा आत्मा ईश्वर से सीधा संपर्क रखने को आसान बना देती है। सर्वोच्च ईश्वर के मन और मूक जानवर के मस्तिष्क के बीच संचार का कोई सीधा माध्यम नहीं है।

इस पर चिंतन कीजिए। कभी–कभी, हम मानव कहते हैं कि ईश्वर ने मनुष्य को कितना अद्भुत बनाया है। उसका मस्तिष्क और उसके शारीरिक अंग, सब के सब कितने अद्भुत तरीके से एक साथ काम कर रहे हैं। मस्तिष्क को बुद्धिमत्ता–शक्ति प्रदान कर और महा ईश्वर के मन के साथ सीधा संपर्क रखने का माध्यम भी खोलकर, लेकिन इस आत्मा के बिना, मनुष्य भी क्या जीव है? वह मूक पशु से बढ़कर कुछ भी

नहीं है। लेकिन मनुष्य में आत्मा हो तो मानव की सृष्टि बहुत ही विस्मयकारी और चिंतन करने लायक हो जाती है। मनुष्य में यही मानव ईश्वर का प्रजनित हो जाता है। ईश्वर की आत्मा मानव की आत्मा से मिल जाती है। फिर, मनुष्य को सर्वोच्च स्रष्टा ईश्वर के बच्चे के रूप में अनुप्राणित कर देती है।

फिर, मानव जीवन का असली मूल्य मानव आत्मा के अंदर, मानव मस्तिष्क के साथ मात्र निर्भर करता है। यह बताना पड़ेगा कि यह मानव आत्मा सर्वोत्तम शिक्षा–प्राप्त दार्शनिकों की समझ में नहीं आई। फिर भी यही मानव मन का अति मुख्य तत्व है।

आत्मा मर सकती है

सृष्टिकर्ता की पुस्तक प्रकट करती है कि मानव धरती की धूल से बनाया गया था। यह तो भ्रमशील मानवतावादी शिक्षण के विपरीत बात है। यही धूल आत्मा बनती है। सारे से सारे केशेरुकीय जीवों के समान मर्त्य बनती है। मानव इतिहास में मां हव्वा से शैतान के बोले इस झूठ को स्वीकार करके कि मानव अमर है, मनुष्य ने पहली बार झूठ स्वीकार करना शुरू किया।

जीवात्मा केवल सांस लेने वाला जानवर है। बाइबिल के आधार पर सारे जानवर 'जीवात्मा' माने जाते हैं– हिब्रू में 'नेफेश' कहा जाता है। अतः, जैसे जेनेसिस 2:7 में कहा गया है कि मानव जीवात्मा हो तो मूक जानवर भी वैसे ही हैं– जीवात्मा हैं। पर मानव की जीवात्मा में मानव की आत्मा छिपी है।

यह मानव आत्मा मानव–जीवन प्रदान नहीं करती। जैसे अन्य सारे कशेरुकीय हैं, उसी प्रकार मानव–जीवन रक्त–संचार द्वारा आता है, हवा के रूप में सांस लेने के कारण आता है। पर ईश्वर का कहना है कि हर मानव के अंदर आत्मा है। यह आत्मा जानवरों मे नहीं है। यह मानव–आत्मा मानव मस्तिष्क को बुद्धिमत्ता के साथ काम करने की शक्ति प्रदान करती है– ज्ञान प्राप्त करने, सोचने, भेद करने, निर्णय करने, अच्छा या बुरा व्यहार पैदा करने की क्षमता देती है।

मानव मस्तिष्क और जानवरों का मस्तिष्क दोनों एक– समान हैं। मानव–मन की श्रेष्ठता श्रेष्ठ मस्तिष्क के कारण नहीं आती, बल्कि मानव मस्तिष्क के अंदर भरी गई मानव आत्मा के कारण आती है। जानवर के मस्तिष्क में बुद्धिमत्ता नहीं, बल्कि सहज वृत्ति भरी गई है।

आपको विचित्र प्रकार का धक्का लग सकता है। क्योंकि इसमें ज्ञान का परिणाम बदलता है। वह भी ज्ञान सिखाया नहीं गया है। पर मानव जीवन का असली मूल्य केवल मानव आत्मा पर निर्भर करता है। यह मूल्य मानव मस्तिष्क के साथ जुड़कर काम करता है।

ईश्वर ने मानव को भौतिक पदार्थों से बनाया। पर बाद में अपना ही प्रतिरूप और इच्छा देकर उस मानव का रूप और आकार दिया।

पर जानवर और मानव में एक ही प्रकार की सांस भरी गई है, जीवन का एक ही प्रकार का स्रोत है। दोनों एक ही प्रकार मरते हैं। मानव जीवन जानवर के अस्तित्व के समान है। पर मानव में ईश्वर का रूप और आकार है और उसके मस्तिष्क में मानव–आत्मा भरी गई है।

मनुष्य की सृष्टि के साथ रिश्ता रखने के लिए हुई। इसलिए मानव अपने स्रष्टा के रूप और आकार में बनाया गया। इसके कारण उसके अंदर की मानव आत्मा की उपस्थिति द्वारा ईश्वर के साथ संपर्क और रिश्ता संभव था।

मानव की सृष्टि अभी पूर्ण नहीं हुई

लेकिन मानव की सृष्टि अभी पूरी नहीं हुई। वह मन से और आत्मा के केवल 'आधा' है। उसमें अपनी आत्मा के साथ ईश्वर की आत्मा जोड़ने की जरूरत है। तभी वह ईश्वर की संतान माना जाएगा– जब वह ईश्वर के साथ जुड़ जाएगा– उसके लिए ईश्वर के परिवार में जन्म लेना संभव होगा।

यहां एक क्षण के लिए ध्यान दीजिए। फिर से ईश्वर की सृष्टि–प्रक्रिया में द्वैत पर ध्यान दीजिए। पहले मानव, आदम की सृष्टि भौतिक रूप में हुई जिसमें मानव आत्मा भरी गई। जब मानव की सृष्टि अंतिम रूप से पूर्ण होगी, तब वह पूर्ण रूप से आत्मा का बना होगा, वह आत्मिक सृष्टि का होगा।

जब मानव ईश्वर की पवित्र आत्मा प्राप्त करता है, तब उसमें अमर्त्य ईश्वर की मुख्य आत्मा और मन भर दिए जाते हैं। वे मानव आत्मा के साथ घुल जाते हैं। ईश्वर की आत्मा पशु द्वारा ली नहीं जा सकती, भरी भी नहीं जा सकती, क्योंकि जानवर के अंदर वह आत्मा नहीं है जिसके साथ ईश्वर की आत्मा जुड़ सके।

इस अवस्था में, मैं एक सत्य भर देना चाहता हूं। जब मैं यह अंश लिख रहा था, उस समय पश्चिमी विश्व की जनता में एक विवादात्मक प्रश्न खड़ा हो गया। वह था– भ्रूणहत्या का प्रश्न।

गर्भधारण के समय मानव भ्रूण में मानव आत्मा घुस जाती है। जब बच्चा जन्म लेकर बड़ा होता है, तब यही आत्मा पवित्र आत्मा के साथ घुलेगी। स्रष्टा ईश्वर उसमें वह पवित्र आत्मा भरेगा। अब वह मानव ईश्वर के जीवन के साथ अनुप्राणित होगा। वह जीवित ईश्वर की संतान बनेगा। फिर भी वह मानव अभी तक पैदा नहीं हुआ है, गर्भावधि की अवस्था में ही है। मां के गर्भ में ही भ्रूण को नष्ट करने का अर्थ होगा– ईश्वरीय जीव की शक्ति का भविष्य नष्ट करना।

अतः भ्रूण–हत्या भी हत्या ही है।

अब, फिर इसे अपने मूल प्रश्न पर आएं: ''मानव जीवन का एकमात्र असली मूल्य क्या है?''

मानव जीवन पशु– अस्तित्व जैसा है। पर उसमें मस्तिष्क को बुद्धिमत्तता के साथ शक्ति प्रदान करने के लिए मानव–आत्मा भर दी गयी है। मानव की यह आत्मा पवित्र आत्मा और मन के साथ जुड़ना संभव बनाती है तथा ईश्वर भरना भी संभव बनाई है। जब मर्त्य मनुष्य मरता है, उसका शरीर फिर से घूल में मिल जाता है। और आत्मा ईश्वर के पास वापस लौट जाती है।

मृत्यु के बाद जीवन

मृत्यु के बाद शरीर को छोड़ने वाली मानव–आत्मा, असल में, आत्मिक ढांचे की है; स्वयं अचेतन अवस्ता में है। फिर भी पुनर्जीवन पर, पुनर्जीवित शरीर में सारी यादें, ज्ञान और चरित्र वापस लाए जाते हैं। इतना ही नहीं, मृत्यु के पहेल उस व्यक्ति के जो आकार और रूप थे, वे भी वापस लाए जाते हैं। मानव–आत्मा स्वयं देख नहीं सकती, सुन, सोच या जान नहीं सकती। उसके अंतर्निहित और स्वतःपूर्ण एकमात्र असली जीवन, मानव–आत्मा से जुड़ी ईश्वर की आत्मा में निहित है। मानव–जीवन का मूल्य मानव–आत्मा में और उसकी शक्ति में निहित है। क्योंकि वह ईश्वर की आत्मा से जुड़ी है। यही ईश्वरीय आत्मा ईश्वर का मन और ईश्वर की जीवन है।

दार्शनिक लोग यही समझते हैं कि मानव–मूल्य अपने–आपमें एक मात्र सर्वोच्च मूल्य हैं। वे 'मानवीय–गरिमा की बात करते वे हर मानव के अंदर

छिपी स्वाभाविक 'ईश्वरीय' शक्तियों की बात करते हैं। वे आत्म–विश्वास, आत्म प्रशस्ति का समर्थन करते हैं। वे मर्त्य मनुष्य से अपने बारे में इस तरह सोचवाते हैं कि जैसे वह अमर ईश्वर हो।

इसके विपरीत, मानव जीवन का एकमात्र मूल्य मानव आत्मा और ईश्वर के प्रजनित होने की क्षमता और बाद में, स्वयं ईश्वर के रूप में जनमने में है, इनसान के भीतर एक बच्चा अपने–आपमें देवता नहीं है बल्कि रक्त–मांस का बना एक नश्वर जीव है जिसे मानव आत्मा द्वारा बुद्धि प्रदान की गई है।

अतः, मनुष्य का मूल्य अपने–आपमें उससे बहुत कम है जितना कि इस दुनिया के आत्माघोषित बुद्धिमान मानते हैं। लेकिन उसके भीतर रहने वाले जीवित ईश्वर की आत्मा और जीवन के माध्यम से परमेश्वर द्वारा उत्पन्न होने के बाद किसी मानव की क्षमता का मूल्य उससे अनंतगुना अधिक हो जाता है जितना कि दुनिया ने समझा है।

जैसा कि पहले ही विस्तार से बताया है, ईश्वर द्वैत सिद्धांत के आधार पर सृष्टि करता है। अतः यह कार्य मनुष्य की सृष्टि के साथ होता है। यह निष्पादन दो स्तरों पर होता हैः (1) पहले भौतिक अवस्था– यह काम पहले मनुष्य, आदम के साथ शुरू हुई थी। और (2) आत्मिक अवस्था पक्ष– यह ''दूसरे आदम'' ईसा मसीह से शुरू होता है (I कोरिंथियाई. 15:45–46)।

साथ ही, उसकी सृष्टि (और् जन्म) से मनुष्य बनाया गया। उसमें 'मानव' आत्मा डाली गई। वही आत्मा मनुष्य का अनिवार्य अंग बन गई। पर वह मन से और आत्मा से अपूर्ण है। उसको एक और ''आत्मा''– ईश्वर की पवित्र आत्मा– की जरूरत थी। और जब ईश्वर का तोहफा प्राप्त हो गया तो मनुष्य की आध्यात्मिक सृष्टि के प्रजनन (या प्रथम अवस्था) में– ईश्वर की ''आत्मा ही स्वयं हमारी आत्मा की साक्षी बन जाती है कि हम ईश्वर की संतानें हैं'' (रोमनों: 8:16)।

इसकी सबसे स्पष्ट व्याख्या I कोरिंथियाइयों 2 में की गई है।

''.....आंख ने नहीं देखा, कान ने नहीं सुना, मनुष्य के हृदय (मन) में नहीं घुसा, उसके लिए ईश्वर ने जो चीजें बनायीं जो उससे प्यार करती हैं'' (पद 9)– आत्मिक ज्ञान।

स्वाभाविक मन सांसारिक और भौतिक पदार्थों का ज्ञान प्राप्त कर सकता है. साथ ही, वह नैतिकता, आचार शास्त्र, कला, संस्कृति आदि का भाव रख सकता है। जबकि मूक जानवरों में ये गुण नहीं होते। लेकिन अच्छे और बुरे के क्षेत्र में वह मानव स्तर पर ही वह जान सकता है कि अच्छा क्या है और अच्छा अच्छा कर सकता है मनुष्य के अंदर निहित मानव–आत्मा ही ऐसा कराती है। पर 'अच्छा' का यह भाव और निष्पादन मानव आत्मा के स्तर पर सीमित होते हैं क्योंकि स्वाभाविक रूप से स्वार्थी होती हैं। मानव स्तर पर वे प्रेम रख सकते हैं और प्रेम प्रकट कर सकते हैं, पर ईश्वर की पवित्र आत्मा के बिना, ईश्वर के स्तर पर प्रेम नहीं रख सकते या प्रेम प्रकट नहीं कर सकते। और न आध्यात्मिक चीजों का ज्ञान ही प्राप्त कर सकते हैं, जैसे I कोरिंथियाइयों 2 में कहा गया है।

केवल ईश्वर प्रकट करता है

''पर ईश्वर ने अपनी आत्मा द्वारा हम पर उनको (आध्यात्मिक चीजों) प्रकट किया.. ...'' (श्लोक 10)। इस पर विशेष रूप से ध्यान दीजिए कि आध्यात्मिक ज्ञान पविज्ञ आत्मा नामक व्यक्ति द्वारा प्रकट किया गया, और आज हमको ईश्वर की आत्मा द्वारा प्रकट किया गया जो ईश्वर की कृपा और दया द्वारा ईश्वरीय उपहार के रूप में ही प्राप्त हो सकता है। ईश्वर ही प्रकट करने वाला है। पवित्र आत्मा वह करणत्व है, वह माध्यम है, जिससे हम उसे समझ सकते हैं जिसे केवल ईश्वर प्रकट कर सकता है।

''क्योंकि मनुष्य अपने अंदर निहित मानव आत्मा को छोड़ कर मानवीय चीजों के बारे में क्या जानता है....?'' (श्लोक 11)। अगर व्यक्ति पवित्र आत्मा है त्रिमूर्ति का तीसरा व्यक्ति है तो, तो मानव के अंदर आत्मा नहीं, एक और मानव है? मनुष्य जो जानता है, कोई गाय, बकरी या कुत्ता उसे जान नहीं सकता।– और मनुष्य के भीतर जो आत्मा है वह हो तो मनुष्य भी समझ नहीं सकता। उदाहरण के लिए, रसायनशास्त्र, भौतिकी, प्रोद्योगिकी और विज्ञानिक ज्ञान। इसी प्रकार, सहज मनुष्य इस एक आत्मा के साथ बिल्कुल सीमित है– ''इतना सीमित कि ''ईश्वर की आत्मा को छोड़ कर कोई भी मनुष्य ईश्वरीय चीजों के बारे में नहीं जानता।''

जब पवित्र आत्मा 'मानव' आत्मा के साथ मिल कर उसके अंदर घुसती है, मनुष्य आध्यात्मिक चीजों के बारे में तभी समझ पाता है– ''लेकिन प्राकृतिक मनुष्य ईश्वरीय आत्मा से संबंधित चीजें नहीं प्राप्त कर सकताः क्योंकि वे उसके लिए मूर्खता हैः वह उन चीजों को समझ भी नहीं सकता, क्योंकि वे चीजें आध्यात्मिक रूप से समझी जाती हैं।'' (श्लोक 14)।

अति उच्च शिक्षा प्राप्त लोग सारी चीजों को–विकास वाद के सिद्धांत का चश्मा चढ़ाकर ही देखते हैं। विकास केवल भौतिक जीवन और विकास से संबंधित है। वह आत्मिक जीवन और समस्याओं के बारे में कुछ नहीं जानता और कुछ नहीं सिखाता और विश्व की सारी की सारी बुराइयां आध्यात्मिक प्रवृत्ति की हैं।

इसलिए, कुल मिलाकर, अति उच्च शिक्षा प्राप्त लोग बड़े अज्ञानी हैं। उन्हें केवल भौतिक पदार्थों का ही ज्ञान होता है। और उनकी अच्छाई आत्म केंद्रित होती है। उनके लिए ईश्वर और ईश्वरीय चीजों का ज्ञान मूर्खता है। लेकिन निस्संदेह, ईश्वर कहता है, ''इस विश्व का विवेक ईश्वर के मामले में मूर्खता है'' (1 कोरिंथियाइयों 3:19)।

ईश्वर से विमुख दुनिया

अब पहले आदम पर वापस चलते हैं।

धरती पर मानव की सृष्टि का ईश्वर का प्रयोजन याद कीजिएः (1) धरती पर ईश्वर के राज्य की पुनर्स्थापना। और उस राज्य के द्वारा मानव जीवन को व्यवस्थित करके (अ) देवदूतों ने जिस धरती को उजाड़ रखा था, उसकी भौतिक सृष्टि की पूर्ति करना और (आ) उस प्रक्रिया में सदाचारी आत्मिक चरित्र के विकास के द्वारा मानव सृष्टि की पूर्ति करना; और (2) ईश्वर के साम्राज्य की स्थापना करना। तथा अंततः, विस्तृत ब्रह्मांड की सृष्टि पूर्ण करके अविश्वसनीय मानव शक्ति की स्थापना करना!

इस सर्वोच्च प्रयोजन के लिए आवश्य थाः (1) मानव शैतान का तरीका नकार दे और प्रेम के रास्ते को अंगिकार करे और (2) मानव पहले भौतिक पदार्थों से बनाया जाए, ताकि,

अगर वह शैतान के ''पाने'' के तरीके के शिकंजे में फंस जाए तो उसे बदला जा सके उसे ईश्वर के प्रेम के रास्ते पर लाया जा सके और अगर वह बदलने को तैयार नहीं होता तो उसका जीवन कलंकित करके बिना भविष्य के समाप्त कर दिया जाएगा। या सतत यातना में डाल दिया जाएगा, जैसे वह कभी रहा ही नहो।

आत्मिक जीवों के सृजन पूरा हो जाने के बाद, (जैसे एक तिहाई देवदूत दुष्ट चरित्र के हो गए), बदले नहीं जा सकते! एक बार आत्मा की सृष्टि पूर्ण हो गयी तो वह अटल और अमर रहेगी। वह परिवर्तनशील नहीं है। पर भौतिक तत्व निरंतर बदलते रहते हैं।

सृष्टि अपने आध्यात्मिक सृजन की ईश्वर की प्रधान योजना के माध्यम से जिसका वर्णन आगे किया जाएगा, ईश्वर और पवित्र शब्द द्वारा मास्टर–प्लान बनाया गया था कि पवित्र शब्द सर्वोच्च गरिमा उतार देगा और कालांतर में ईसा समीस के रूप में मानव शरीर में जन्म लेगा और इस तरह, मानव सृजन के आध्यात्मिक पहलू ईश्वर के आत्म प्रजनन को संभव बनाएगा। चरम सृजनात्मक उपलब्धि की कैसी महान प्रधान योजना थी! हमारा ई ईश्वर प्रतिभा, योजना, अभिकल्पना के साथ–साथ सूक्ष्मतम जीव या कीट से लेकर सबसे बड़े सूर्य तक का जो हमारे महान सूर्य को भी छोटा करके नगण्य बना देता है, सृजन करने के मामले में कितना महान है!

और मानव की क्षमता इस माने में विस्मयकारी है कि महा तेजस्वी ईश्वर मानव रूप में अपने आपको पुनरुत्पादित कर लेता है– इस प्रकार मानव ईश्वर के परिवार में पैदा ले सके!

पहला मानव, आदम, का सृजन धरती के सिंहासन से शैतान, पूर्व लुसिफर को बरा कर ईश्वर के राज्य की पुनर्स्थापना के योग्य साबित करने की योग्यता के साथ किया गया था।

लेकिन इसके लिए आवश्यक था कि 1) वह प्रतिरोध करता और शैतान के ''पाने'' के तरीके को नकारता जो शैतान के दुष्ट राज्य का आधार था, और 2) ईश्वर के नियम के मार्ग यानी प्रेम (देने) के नियम का मार्ग अपनाता जो ईश्वर के राज्य का आधार है!

आदम और हौवा के स्रष्टा ने पहले उनसे बात की और उन्हें ईश्वर की सरकार और उसके आध्यात्मिक कानूनों का निर्देश दिया। केवल जेनेसिस 2 में उनको दिए ईश्वर के निर्देश का सबसे संक्षिप्त सारांश दिया गया है। ईश्वर के उन्हें पहला निर्देश देने तक शैतान का उनसे किसी प्रकार का संपर्क करने से दूर रखा गया।

दो प्रतीकात्मक वृक्ष

ईश्वर स्वर्ग के गरिमामय सुंदर बगीचे में, ईश्वर ने उन्हें जहां रखा था, दो बहुत ही प्रतीकात्मक वृक्ष थे। उन वृक्षों और उनके आश्चर्यजनक महत्व के बारे में हमने कम सुना है सिवा उसके अधिकांश लोगों ने ''आदम के सेब'' के बारे में जो सुना है। वह वर्जित वृक्ष, शायद, सेब का नहीं था।

इन दोनों प्रतीकात्मक वृक्षों का असली महत्व यही दिखाता है कि विश्व का निर्माण हो गया है। इस आधुनिक बीसवीं शताब्दी के हमारे समय के उस महा रहस्य का उत्तर उन वृक्षों में मिलता है। आज हम विस्मयकारी प्रगति और विकासशील विश्व में जी रहे हैं। फिर भी विरोधाभास यह है कि आज भयंकर बुराइयां बढ़ती जा रही हैं। लेकिन आज चकरा देने वाला प्रश्न है कि चंद्रमा तक हो आने वाला हमारा मन, हृदय को प्रतिरोपित करने वाला हमारा मन, कंप्यूटर उत्पन्न करने वाला हमारा मन और प्रोद्योगिक आश्चर्यों का जनक हमारा मन अपनी ही समस्याओं को क्यों सुलझा नहीं सकता? क्यों इस विश्व में शांति नहीं है?

जब तक हम विश्व निर्माण के आधार पर विचार नहीं करते और इसकी शुरुआत से लेकर अस्तव्यस्त और स्पंदमान वर्तमान तक के विकास के बारे में नहीं जानते सीखते तब तक हम आज की घटनाओं और स्थितियों का रहस्य नहीं समझ सकते।

दुनिया की शुरुआत इन दो विशेष वृक्षों के समय पर ही हुई थी। आज के गलत बाइबिलीय शिक्षण में हम जीवन के वृक्ष और वर्जित वृक्ष के बारे में वस्तुतः कुछ भी नहीं सुनते।

पर अब समझिए। ईश्वर ने धरती की धूल से मनुष्य की सृष्टि की। पर हम जानते हैं कि ईश्वर दुहरी अवस्थाओं में सृष्टि करता है। अब भी मानव शीरीरिक रूप से पूर्ण नहीं हुआ है। ईश्वर उस मनुष्य से चाहता था कि वह ''वृद्धि करके धरती को भर दे''। पर मनुष्य वह काम कर न

सका क्योंकि अब तक वह शीरीरिक रूप से पूर्ण नहीं हुआ था। अतः ईश्वर ने उसे गहरी निद्रा (एनस्थीसिया) में डाल दिया और एक आपरेशन किया। ईश्वर ने एक पसली निकाली और उसमें से एक स्त्री को बनाया। वे अब एक परिवार बन गए। मनुष्य की शारीरिक सृष्टि पूर्ण हुई। वे अब अपने ही प्रकार के शरीरों को पुनरुत्पादन कर सकते थे।

लेकिन ईश्वर का बनाया मनुष्य मर्त्य है। लेकिन अभी उसका केवल एक भौतिक रासायनिक अस्तित्व था जो रक्त संचार, हवा की सांस द्वारा आक्सीकरण, और भोजन से मिलने वाले ईंधन और धरती से मिलने वाले पानी से जीवित था। उसमें अंतर्निहित, आत्मपोषी जीवन नहीं था। लेकिन उसमें मानव आत्मा थी जो ईश्वर की पवित्र आत्मा से जुड़ कर उसे शास्वत जीवन प्रदान कर सकती थी।

अमर्त्य जीवन प्रदत्त

लेकिन ईश्वर ने इस प्रतीकात्मक वृक्ष द्वारा मानव को अमर्त्य जीवन प्रदान किया। ईश्वर ने उससे यह अमर्त्य जीवन स्वीकार करने आग्रह या विवश नहीं किया। उसने मानव को स्वीकार करने की स्वतंत्रता दी। आदम उस बगीचे के सारे पेड़ों के फल खा सकता है, इस एक वर्जित वृक्ष को छोड़कर। वह पेड़ ''अच्छे और बुरे ज्ञान'' का है।

अगर आदम इस जीवन–वृक्ष का फल ले ले तो क्या बिगड़ जायेगा? शायद आपने इस प्रश्न का उत्तर कभी सुना नहीं होगा। आज वह प्रतीकात्मक वृक्ष उन लोगों को प्रदान किया जाता है जो ईश्वर द्वारा ईसा मसीह के पास बुलाए जाते हैं। मूल आदम और ईसाई कहलाए जाने वाले में एक भेद है। आदम ने अब तक पाप नहीं किया है और जीवन वृक्ष स्वीकार करने पर भी उसे पश्चाताप करने की आवश्यकता नहीं थी। नहीं तो पश्चाताप करने वाले और आत्मा–जनित विश्वासी ईसाई के बीच कोई अंतर नहीं रह जाता। आदम जीवन वृक्ष ले भी सकता था।

आदम ने अमर्त्य ईश्वर की पवित्र आत्मा प्राप्त की होगी और अपनी मानव आत्मा के साथ ईश्वर से जुड़ा होगा। पर, बात तो यह थी कि आदम को चुनने का मौका दिया गया था। जीवन–वृक्ष लेकर वह शैतान का तरीका नकारा सकता था।

लेकिन, फिर से, वही प्रश्न उठता है। अगर आदम ने जीवन वृक्ष ले लिया होता, तो क्या होता?

उसने अपनी मानव आत्मा के साथ जुड़ने के लिए पवित्र आत्मा को पा लिया होता। मानव पवित्र आत्मा को प्राप्त करने तक मानसिक या आध्यात्मिक रूप से पूर्ण नहीं था। वह उसी तरह इश्वर के बेटे के रूप में उत्पन्न हो सकता था जैसे धर्मांतरित आत्मा उत्पन्न ईसाई हो जाती है।

वह अपनी मानव आत्मा के साथ जुड़ने के लिए उसे ईश्वर के पुत्र के रूप में उत्पन्न करने वाली, सच्चा अमर जीवन प्रदान करने वाली, उसे ईश्वर के साथ का आदमी बनाने वाली, ईश्वर की पवित्र आत्मा प्राप्त कर लेता।

आज के आत्मा जन्य ईसाइयों के मामले की तरह, जहां ''ईसा मसीह (हमारे भीतर) गरिमा की उम्मीद'' हैं (कोलोसियाइयों 1:27)। और फिर, ईसा मसीह की चेतना भी हममें है (फिलिप्पियों 2:5), इसी तरह शास्वत की चेतना आदम में रही होती। लेकिन इसके विपरीत उनके भीतर शैतान की चेतना और अभिरुचि प्रवेश कर गई और उनके भीतर काम किया, यह उनके सभी बच्चों में भी थी जिनसे यह पूरी दुनिया बनी है। हम एफीसियाइयों 2:2 में पढ़ते हैं कि शैतान हवा की शक्ति के राजकुमार के रूप में सचमुच मनुष्यों के भीतर काम करता है।

इस मौके पर हम एक ऐसे विंदु को स्पष्ट करते हैं जिसे गलत समझा जा सकता है। शैतान के बहकावे में हौवा छली गई थी लेकिन आदम नहीं (1 तिमथी 2:13–15)। आदम ने ईश्वर की अवज्ञा और जान–बूझ कर पाप किया। लेकिन हालांकि कि इस मौलिक प्रलोभन में वह छले नहीं गए थे लेकिन ईश्वर के स्पष्ट समादेश की उनकी सोद्देश्य अवज्ञा ने उन्हें मानसिक विकृति की एक अवस्था पैदा करते हुए और उनके मन को शैतान के छल की ओर से खोलते हुए, उन्हें ईश्वर से अलग कर दिया। उसी पल से आदम और उनके बाद उनके बच्चे शैतान के बहकावे के प्रति सुग्राह्य हो गए। शैतान ने आदम के मन में काम करना शुरू कर दिया, उसी तरह यदि उन्होंने जीवन का वृक्ष लिया होता तो उनके मन में ईश्वर काम कर सकता था।

बंधक बनाई गई एक दुनिया

इस तरह उसी पल से शैतान ने अध्यात्मिक रूप से आदम का अपहरण कर लिया तभी से उनका सारा परिवार शैतान की कैद में है।

ईश्वर ने आदम को जीवन का अपना तरीका बताया होगा – जो ईश्वर का आध्यात्मिक कानून है। वह कानून हृदय से निकलने वाले प्रेम का मार्ग है। लेकिन यह 'ईश्वर का प्रेम रहा होगा..... पवित्र (आत्मा) द्वारा (मानव) हृदयों में उड़ेला गया।' (रोमनों. 5:5) मानव का प्राकृतिक भौतिक प्रेम ईश्वर की पवित्र विधि की पूर्ति नहीं कर सकता।

जैसे मानव माता–पिता उत्पन्न मानव भ्रूण को जन्म लेने के लिए पहले भ्रूणीय विकास से गुजरना होता है आत्मा प्रेरित ईसाइयों का भी और यही हाल आदम का भी रहा होगा। क्योंकि उन्होंने ईश्वर का प्रत्यक्ष सानिध्य और संपर्क अनुभव किया होगा।

मैं इसकी तुलना मां और उसके नवजात शिशु को जोड़ने वाली नाभि–नाड़ी से करना चाहूंगा। गर्भकाल में मां से बच्चे को मानवजीवन और भौतिक आहार इसी नाभि–नड़ी से दिया जाता है। पवित्र आत्मा द्वारा ईसाई को ईश्वर का आत्मिक जीवन दिया जाता है। साथ ही, ईश्वर द्वारा आत्मिक ज्ञान मानव शरीर के भीतर रहने वाली पवित्र आत्मा द्वारा दिया जाता है (I कोरिंथियाइयों. 2:10)। ईश्वर की विधि (उसकी जीवन–शैली) का पूरा बोध ईश्वर पवित्र आत्मा द्वारा प्रदान करता है। पर ईश्वर की विधि मानव से कार्य और निष्पादन की मांग करती है और प्रमे ही ईश्वर की विधि को पूर्ण करती है (रोमनों. 13:10))। और यह ईश्वर के और ईश्वर प्रदत्त प्रेम से ही पूरा हो सकता है। (रोम. 5:5)।

अतः आदम को ईश्वर के तरीके से जीने के का गहरा आध्यात्मिक ज्ञान होगा। और उन्हें वह दैवी प्रेम भी दिया गया होगा जो प्रेम के उस उत्कृष्ट कानून को पूरा कर सकता है और उसका कार्यान्वयन कर सकता है।

उसको ईश्वर की आत्मा द्वारा, ईश्वर का महत्वपूर्ण विश्वास भी प्राप्त हुआ होगा। उसको ईश्वर से ज्ञान, मार्ग–दर्शन और सहायता भी मिली होगी। उसको ईश्वर पर भरोसा रहा होगा ताकि वह अपने वश से बाहर के विषयों में सहायता प्राप्त कर सके। ऐसे विषयों में ईश्वर अलौकिक रूप से हमारे लिए सब कुछ

करता है, जो हम अपने लिए भी कर नहीं सकते। दूसरे शब्दों में, ईश्वर हमारी लड़ाइयां हमारे लिए स्वयं लड़ता है।

ईश्वर की विधि और राज्य नकारना

लेकिन, बदले में आदम ने भिन्न प्रकार का ज्ञान चुना। उसने खुद अच्छे और बुरे ज्ञान अपने ऊपर ले लिया। वह अपने आप पर भरोसा करता था। उसने ज्ञान और अच्छे तथा बुरे के निष्पादन की शक्ति, दोनों के लिए अपने को जिम्मेदार बनाया। उसने ईश्वर पर भरोसा करने का विचार छोड़ दिया और स्वावलंब को चुना। एक ही सदाचार उसने ग्रहण किया। वह था स्वसदाचार। पर वह तो ईश्वर के लिए गंदे लत्ते के समान था।

आदम और हव्वा ने ''अच्छे और बुरे के ज्ञान'' का वृक्ष ले लिया। उस वृक्ष का फल खाने का अर्थ है कि आप अपने, अच्छे–बुरे का ज्ञान चुनते हैं, यानी क्या अच्छा है और क्या बुरा है इसका निर्णय स्वयं लेते हैं। संभवतः इसी को कहते हैं ईश्वर की विधि नकारना। यह विधि उनको बताती थी कि किसे अच्छा कहते हैं और किसे बुरा कहते हैं।

महिमामय महादूत लूसिफर को ईश्वर ने मूल रूप में ऐसा ही बनाया। ईश्वर की सृष्टि–शक्ति का परमोत्कर्ष था। आज बहुत कम लोग उस महाशक्ति को समझ पाते हैं। वे भी शैतान के चंगुल में फंसकर चालाकी भरे धोखेबाज बनते हैं। स्पष्टतया आदम ने उसे पूर्ण रूप से कम महत्व का समझा।

धूर्त शैतान आदम को उसकी पत्नी हव्वा के द्वारा ग्रस्त कर लिया। उसने यह नहीं कहा, ''मेरा तरीका अपनाओ!'' वह विचक्षण सांप जैसा दिख रहा था। उसने बड़ी बुद्धिमानी से हव्वा को धोखा दिया।

शैतान ने हव्वा के मन में ईश्वर की सत्यवादिता के बारे में संदेह पैदा किये। उसने हव्वा के मन में अन्याय और अप्रसन्नता का भाव जगाया। उसने हव्वा को धोखा दिया कि ईश्वर पर विश्वास करना अनुचित है– स्वार्थ है। उसने विचक्षणता से उसके में घमंड पैदा किया। उसने हव्वा को ऐसा सोचने को बहकाया कि वर्जित फल खाना सही है।

आदम, धोखे में नहीं था, फिर भी वह पत्नी के पीछे गया। और इस तरह उसने अपने सृष्टा के कथन पर अविश्वास करके, उद्धारक और शासक के रूप में, मूल उद्घाटित ज्ञान के स्रोत को नकार कर सही और गलत का फैसला अपने हाथ में लिया। उसने शैतान के तरीके पर विश्वास किया और उसे अपनाया!

आदाम का विश्व दंडादेशित

जब ईश्वर ने मनुष्ट को आदम के बगीचे से और दुबारा अंदर आने से मना कर दिया कि कहीं – ऐसा न हो, कि वह फिर वापस जाए और पाप में अमरजीवन प्राप्त करे! (जेन. 3:22–24) – ईश्वर ने दंडादेश सुनाया!

वस्तुतः, ईश्वर ने कहा, ''तुमने अपने और तुमसे पैदा होने वाली दुनिया के लिए यह निर्णय लिया है। तुमने ज्ञान के मूलभूत स्रोत के रूप में मुझे ठुकरा दिया। तुमने सदाचारी जीवन जीने के लिए, मेरी आत्मा के जरिए आने वाली मेरी शक्ति नकार दी, तुमने मेरी आज्ञा और राज्य के विरुद्ध विद्रोह किया, तुमने शैतान के ''पाने'', ''लेने'' का तरीका चुना है, इसलिए मैं तुमको और इस विश्व को दंडाज्ञा सुनाता हूं कि 6,000 वर्षों तक तुम लोग मुझ में और मेरी आत्मा में प्रवेश करने और प्रजनित होने से वंचित रहोगे–बहुत ही थोड़े से लोगों को छोड़ कर जिन्हें मैं विशेष रूप से बुलाऊंगा। और वे कुछ लोग ईश्वर के साम्राज्य के प्रारंभिक कार्यों के लिए विशेष सेवा करने बुलाए जाएंगे। उन लोगों को वह काम करना है, जो काम तुम लोगों ने नहीं किया – नकारा, प्रतिरोध किया और शैतान तथा उसके तरीकों को स्वीकार कर लिया तथा मेरे आध्यात्मिक कानून के रास्ते को नहीं अपनाया।

''इसलिए आदम तुम और तुम्हारी सारी संततियां जिनसे दुनिया बनेगी जाओ और ज्ञान का भंडार बनाओ। तुम स्वयं निर्णय करो कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है। तुम अपनी ही शिक्षा–पद्धतियां और ज्ञान के प्रचार करने के माध्यम बनाओ क्योंकि तुम्हारा ईश्वर, शैतान तुम्हें पथभ्रष्ट करेगा। 'ईश्वर क्या है' की अपनी ही धारणाएं अपने धर्म, अपनी सरकारें, अपनी जीनव–पद्धतियां, समाज के प्रकार और सभ्यताएं बनाओ। इन सबमें शैतान अपने आत्म–केंद्रीयता के अपने आचरणों–दंभ, काम और लोभ, ईर्ष्या और वैर, प्रतियोगिता और फूट, तथा हिंसा और युद्ध, मेरे और प्रेम के मेरे कानूनों के प्रतिविद्रोह के जरिए तुम्हारे साथ छल करेगा।

तुम्हारे वंशजों के विश्व के 6,000 वर्षों की मानवीय यातनाएं, मनोव्यथा, निराशा, पराजय और मृत्यु का पाठ लिखने के बाद—तुमसे उत्पन्न दुनिया के तुम्हारी चुनी जीवन शैली की चरम निराशावादियों को स्वीकार करने के बाद मैं अलौकिक रूप से हस्तक्षेप करूंगा। तब अलौकिक दैवी शक्ति से मैं समूचे विश्व का शासन अपने हाथ में ले लूंगा। मैं शांति की एक प्रसन्न दुनिया का सृजन करुंगा और प्रायश्चित करने पर मैं सब को शास्वत मोक्ष प्रदान करुंगा। उस भावी सुखी दुनिया के एक हजार साल बाद मैं उन सबको मृत से जीवित करुंगा जिन्हें इन 6000 वर्षों के दौरान बुलाया नहीं गया होगा। उनका फैसला तब होगा। और प्रायश्चित कराने और आस्था रखने पर उन्हें शास्वत जीवन प्रदान किया जाएगा।

''इन 6,000 वर्षों के दौरान यदि मैं स्वयं उन्हें अपने से अलग कर दूंगा तो उनका निर्णय अनंत काल तक नहीं होगा। अपने जीवनकाल में वे जैसा बोयेंगे वैसा काटेंगे। लेकिन, जब मैं उनके लिए शास्वत जीवन के द्वार खोलूंगा तब उनको रोकने या धोखा देने के लिए शैतान नहीं रहेगा। तब शैतान उन पर हावी नहीं होगा। इन पहले 6,000 वर्षों के दौरान जो कुछ लोग बुलाए जाएंगे उन्हें शैतान के आकर्षण को नकारना होगा उसका प्रतिरोध करना होगा। जो ऐसा करेंगे वे मेरे साथ मेरे सिंहासन पर बैठेंगे और मेरे सर्वोच्च शासन के अधीन सभी राष्ट्रों पर शासन करने के लिए, मेरे अधीन रहने की शक्ति पाएंगे।''

स्वावलंबन का उद्भव

इसका आशय क्या है?

पहले मानव, आदम ने ईश्वर का ज्ञान और अवलंबन नकार दिया। उसने अपने ही ज्ञान और क्षमताओं पर निर्भर रहने का निर्णय लिया।

आदम से विकसित आज का नवीन विश्व मानव पूर्ण रूप से स्वावलंबन पर निर्भर करता है। हमारे समय में जो मनोविज्ञान सिखाया गया, वह स्वावलंबन ही है। वे सिखाते हैं कि अपने अंदर की स्वाभाविक शक्तियों पर निर्भर रहो। अधिकतर विश्वविद्यालय के परिसरों में स्वावलंबी व्यावसायिकता का वातावरण फैला

है। यह दंभ की आत्मा है। विश्वविद्यालय के छात्र को स्वयं व्यावसायिक बनने के बारे में सोचने के लिए उकसाया जाता है। इसका मतलब यह है कि वह खुद को उनसे बेहतर उनके मार्कानाम की शिक्षा नहीं मिली है। विकास के सिद्धांत की आधारभूत धारणा के माध्यम से, वह छात्र उन लोगों से अपने आपको उच्च मान लेता है, जो ईश्वर और प्रभु ईसा मसीह पर विश्वास करते हैं। वह उन्हें तिरस्कार की दृष्टि से देखता है।

मोक्ष बंद हो गया

आदम के इस भाग्यसूचक और घातक निर्णय लेने पर ईश्वर ने 6,000 वर्षों के लिए आदम द्वारा प्रजनित इस विश्व से जीवन–वृक्ष को बंद कर दिया (जेनेसिस. 3:22–24)। यह निर्णय बाइबिल लिखने के लिए चुने गये भविष्यवक्ताओं और ईसा मसीह द्वारा चुने गए इस विश्व के चर्च के भविष्यवक्ताओं पर लागू नहीं होगा। उनको छूट मिली। पर स्वयं ईसा ने स्पष्ट रूप से कहाः ''कोई भी व्यक्ति मेरे पास नहीं आ सकता; केवल वह व्यक्ति आ सकता है जिसे बुलाने के लिए पिता ने मुझे यहां भेजा था।'' (जॉन. 6:44)।

इसके बाद ईश्वर ने इस विश्व का निर्माण करने के साथ, अपने प्रयोजन के निष्पादन के लिए 7000 वर्षों का एक मास्टर प्लान बनाया।

शैतान ने हव्वा को धोखा दिया। वर्जित फल के सेवन में भाग लेकर आदम ने जानबूझकर पाप किया। तब से यह पूरा विश्व धोखा खा गया (प्रकाशना. 12:9)।

एक क्षण के लिए हम रुकें। आइए अनुभव करें कि यह उस दुनिया का आधार है जिसमें हम आज भी रहते हैं। इस स्थिति में, शैता ने आंखों से घूर कर देखा होगा। क्योंकि उसने विश्वास किया होगा कि ईश्वर हारा गया है। आदम के माध्यम से धरती के सिंहासन से शैतान का शासन उखाड़ फेंकने में ईश्वर हार गया होगा।

पर ईश्वर कहता है, ''मेरा प्रयोजन अब भी जिंदा है।''

ईश्वर की 7,000 वर्ष की योजना में ईश्वर का प्रयोजन शानदार और अत्याधिक महिमा में निष्पादित होगा।

जरा इस बिंदु को समझिए, यही इस विश्व के लिए रहस्यमय था। जब ईश्वर ने जीवन–वृक्ष बंद कर दिया। 6,000 वर्षों के बाद दूसरा आदम, ईसा मसीह इस धरती पर आएगा। उसमें सर्वोच्च शक्ति और महिमा होगी। वह शैतान को सिंहासन से उतार फेंकेगा और मानव जाति के सभी राष्ट्रों पर शासन करेगा।

पहले मानव आदम को ईश्वर का राज्य चुनने और धरती पर ईश्वर का राज्य पुनःस्थापित करने और शैतान को धरती के सिंहासन से उखाड़ फेंकने का मौका दिया गया। चूंकि आदम ऐसा करने से चूक गया, आम तौर पर मानवता को मुक्ति दिलाना बंद हो गया। दूसरा आदम यानी ईसा मसीह, के आने और वह काम करने तक जो पहला आदम काम कर नहीं पाया यानी, शैतान को सिंहासन से उतारने, स्वयं धरती के सिंहासन पर बैठने, इस धरती पर ईश्वर का राज्य पुनः स्थापित करने तब तक किसी को मुक्ति नहीं दी जाएगी।

मानव परिवार से जीवन–वृक्ष का बंद होना आज के विश्व की स्थापना का सूचक है। आज भी, इस विश्व पर अदृश रूप से शैतान का शासन चल रहा है। तो फिर, ईश्वर कैसे अपना प्रयोजन निष्पादित करने जा रहा है? इस विश्व की जब नींव पड़ी थी ईश्वर ने तभी तय कर लिया था कि मानव जाति को अपहर्ता शैतान की कैद से आजाद कराने के लिए शब्द बलि के बकरे के रूप में धरती पर जन्म लेगा। (प्रकाशना. 13:8)।

तो फिर, उन अगले 6,000 वर्षों में पैदा होने वाले मानव द्वारा ईश्वर अपने को पुनरुत्पादित करने अपने इस प्रयोजन का निष्पादन कैसे करने वाला था?

पुनर्जीवन द्वारा मोक्ष

शैतान की दुनिया की स्थापना के समय ही यह निर्णय भी हुआ (हिब्रू. 9:27) कि ईश्वर ने निर्धारित किया कि सारे मानवों को एक बार मरना है। और उसके बाद, मृत्यु से पुनर्जीवन पाकर फैसले के लिए आना है। इस बीच में सारी मानव जाति फैसले के लिए बुलाई नहीं जाएगी और न तो उसे दंड दिया जाएगा और न उनका उद्धार ही किया जाएगा। उस समय यह निर्णय हुआ कि आदम के समय के सभी मानवों को मरना है, उसी प्रकार ईसा मसीह के समय में सबको पुनर्जीवित करके न्याय के लिए बुलाया जाएगा। के समय के 'सब' को पुनर्जीवन द्वारा जीवित करना है और फैसले के लिए लाना है (I कोरिंथियाइयों. 15:22)। आदम के समय के सभी मृत मानवों के पुनरुत्थान की यह सच्चाई शैतान द्वारा छले गए सारे मानवों के लिए रहस्य है। आज भी परंपरागत ईसाइयत धर्म हर वसंत ऋतु में वैगन ईस्टर पर ईसा के पुनर्जीवन का उत्सव मनाया करती है। लेकिन आदम के समय के कई अरब लोग जो मर गए, भविष्य में उनके पुनर्जीवन के बारे में कोई कुछ नहीं कहता। इसी पुस्तक में, बाद में, उस पुनर्जीवन पर विचार किया जाएगा।

इस बीच में, जब ईसा मसीह को मानवता का पापधारक बनकर आना है तब वह ईश्वर के चर्च की स्थापना करेगा। उस चर्च के प्रयोजन और कार्य इस पुस्तक के छठे अध्याय में दिए गए हैं।

यहां एक मिनट ठहरिए! पूरे विश्व को शैतान ने कैसे अंधा बनाया, समझिए। यह समझिए कि छली गई परंपरागत ईसाइयत क्या समझ नहीं पाई।

यह सबसे महत्वपूर्ण विषय है!

परंपरागत ईसाइयत ईसाई धर्म की इस कल्पित मान्यता द्वारा छली गई है कि आत्मा अमर है कि जो लोग ''ईसा मसीह'' में विश्वास करते हैं वे मृत्यु के तुरंत बाद शास्वत आलस्य, दायित्व मुक्ति और शांतिपूर्ण परमानंद के स्वर्ग में जाने और जो ईसा मसीह में विश्वास नहीं करते उनके हमेशा—हमेशा के लिए बिना किसी आस के सतलत जलती शास्वत आग और अपर्णनीय दर्द और यंत्रला के नर्क में जाएंगे।

उनको सिखाया गया है कि मानव अमर्त्य आत्मा है और उसको पहले ही अमर जीवन मिला हुआ है। वह इनकार करता है (रोमनों, 6:23) कि पाप का दंड मृत्यु है और मनुष्य केवल ईश्वर के तोहफे के रूप में ही अमर जीवन पा सकता है। परंपरागत ईसाई धर्म की गलत शिक्षण की तुलना रेल या सड़क की इकतरफा यात्रा से की जा सकती है। यह यात्रा आपके जीवन की यात्रा है। उस रेखा के अंत में एक स्विच रखा है जो स्वयंमेव आपको सीधे लगातार जलने वाले नरक में भेज देगा जहां अवर्णनीय दर्द और यातना होगी। पर अगर आपने जीवन यात्रा में किसी भी समय खुलेआम आप ''ईसा को स्वीकार'' किया है तो उस रेखा के अंतर में स्विच लगेगा और उस स्थान से आप सीधे स्वर्ग में भेजे जा सकता है।

बहु कल्पित ''ईसाई'' धर्म का उपदेश यही है कि ईश्वर ने पहले मानव को पूर्ण अमर्त्य मनुष्य के रूप में बनाया था। लेकिन जब ईश्वर नहीं देख रहा था शैतान चुपके से घुस आया और ईश्वर की इस विस्मयकारी रचना को तहस–नहस कर दिया। उसके बाद मोक्ष को इस क्षति की पुर्ति, और मानवजाति को पुनः यथासंभव उस अवस्था में लाने की कोशिश के रूप में पेश किया जाता है जिस अवस्था में ईश्वर ने उसे सिरजा था।

सिद्धांत दर सिद्धांत उन्हें बाइबिल में उद्घाटित सत्य के ठीक विपरीत शिक्षा दी गई है और वे उस पर विश्वास करते आए हैं।

उनको शैतान के इस पहले झूठ की शिक्षा दी गई है कि मानव अमर्त्य आत्मा है। यह उपदेश, जब कोई इस पर सोचना बंद कर देता है, यह है कि ''उबारी गई माएं'' जो मर कर स्वर्ग गई हैं, हमेशा अपने खोए बोटों का ख्याल करती हैं जो नर्क की आम में अकथनीय यातना में चीख रहे हैं, आर्तनाद कर रहे हैं।

पर ईश्वर के पवित्र शब्द का असली सत्य क्या है? क्या मृत लोग जानते हैं कि जीवित लोग क्या कर रहे हैं। हमारे विवाह के कुछ ही दिनों के बाद मेरी पत्नी ने मुझसे कहा कि अपनी मां की मृत्यु के बाद, तब मेरी पत्नी बारह वर्ष की थीं, मैं समझती थी समझा था कि मेरी मां स्वर्ग में मेरे सारे कार्यों को देख रही हैं।

मार्च 1985 के एक निबंध 'खुला सत्य' का एक अंश यहां उद्धृत करता हूं: ''धर्मग्रंथ साफ–साफ प्रकट करता है कि जब तुम मरते हो तो तुम मर गए हो। बाइबिल के अनुसार, मृत व्यक्ति कुछ नहीं सुनता, कुछ नहीं देखता, कुछ नहीं सोचता या कुछ नहीं जानता। मृत व्यक्ति किसी भी प्रकार की जानकारी बिल्कुल नहीं रखताः क्योंकि जीवित लोग जानते हैं कि वे मरेंगे, पर मृत व्यक्ति कुछ नहीं जानता। उनको कोई प्रतिफल नहीं मिलेगा। क्योंकि उनकी यादें भूल गई हैं; मर गई हैं। साथ ही उनका प्रेम, और उनकी घृणा, और उनका वैर, अब नष्ट हो गए हैं....... (एक्लेसियाई 9:5–6)।''

इस बिंदु पर बाइबिल का संदेश काफी स्पष्ट है। मृत्यु–मृत्यु ही होती है, इसमें कोई संदेह नहीं। धर्म प्राचरक पॉल ने लिखा कि 'पाप की मजदूरी मृत्यु है।' (रोमनों, 6:23)। मृत्यु की परिभाषा है जीवन की अनुपस्थिति – सिर्फ ईश्वर से अलग होना नहीं।

धर्मग्रंथ हमें चेतावनी देता है कि जब तुमको मौका मिलता है, उसका फायदा उठा कर जीवन में सारे काम कर लोः ''तुम्हारा हाथ जो भी काम करना चाहता है, अपनी पूरी शक्ति लगाकर कर दो। क्योंकि कब्र में जब तुम जाओगे, वहां कोई काम नहीं है, माध्यम नहीं है, ज्ञान या विवेक नहीं है (एक्सल. 9:10, संशोधित अधिकृत संस्करण)।''

यह इससे और स्पष्ट नहीं हो सकता था। पर उनका क्या होगा जो इस चिर संचित विश्वास से चिपके रहना चाहते हैं कि अगर वे अच्छे हैं मरने के बाद स्वर्ग जाएंगे और अगर बुरे हैं तो नर्क में चीत्कार करेंगे?

धर्मप्रचार पीटर की अनुक्रिया पर ध्यान दीजिए। अगर कोई स्वर्ग जाने लायक है, जरूर ईश्वर के अपने हृदय से संबंधित व्यक्ति ही हो सकता है, है न ऐसा? डेविड ऐसा ही एक व्यक्ति था (एक्ट्स 13:22)। पर पीटर से यह प्रकट करने को कहा गया कि डेविड मरे भी और दफनाएं भी गए'' और उनकी कब्रें आज भी हमारे पास हैं (ऐक्ट्स 2:29, संशोधित अधिकृत संस्करण)। और आगे भी, ''डेविड स्वर्ग नहीं गए'' (एक्ट्स 2:34)।

ईसा ने स्वयं भी कहा था, ''कोई भी व्यक्ति स्वर्ग में नहीं गया'', जहां ईश्वर का सिंहासन है (जॉन 3:13)।

क्या हममें से प्रत्येक दुबारा जिंदा होगा?

लेकिन यह वर्तमान जीवन जीने के अलावा भी इस जीवन के साथ बहुत कुछ जुड़ा है, उस महा ईश्वर ने मानव को यहां धत्री पर अद्भुत, अमर प्रयोजन के लिए भेजा है, जिसे इस विश्व के मानवजनित धर्मो ने भी बिल्कुल नहीं समझा।

हम इस धरती पर एक अद्भुत–कारण के लिए पैदा हुए हैं। इसमें आपको हमारे मुख्य प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा कि हम मानव मर्त्य क्यों बनाए गए और क्यों भावों और परेशानियों के क्रंदन से दुखी बनाए गए या मानव को अच्छे और भले समय का अनुभव क्यों कराया गया।

जब हम मरते हैं तब मृत हो जाते हैं। फिर भी हम हमेशा के लिए मृत नहीं रहते। क्रब में मरे लोग फिर से जीवित उठेंगे! ईसा का कहना पढ़िएः ''इस पर आश्चर्य प्रकट मत करो। क्योंकि वह समय आ रहा है जब कब्रों में पड़े मृत लोग उसकी आवाज सुनेंगे और जिन्होंने अच्छा काम किया है, पुनर्जीवन पर आगे बढ़ेंगे, और जिन्होंने बुराइयां की हैं, वे (न्याय) के पुनर्जीवन पर आगे बढ़ेंगे (जॉन 5:28—29, संशोधित मानक संस्करण)।''

इस जीवन में हमारे व्यवहार का एक महत्व है! हम मावन जो पैदा हुआ, आखिर उसे लेखा—जोखा देना है और पुनर्जीवन के क्रम में आना है।

मैंने पहले ही स्पष्ट कर दिया कि मनुष्य के अंदर की आत्मा देखती नहीं, सुनती नहीं, सोचती नहीं। आंखों द्वारा मस्तिष्क देखता है, कान द्वारा सुनता है और आत्मा द्वारा दी गई शक्ति से सोचता है। मरने पर, ''तो फिर धूल धरती पर लौट जाती है, जैसे पहले थी और आत्मा ईश्वर के पास वापस चली जाती है, जिसने दिया'' (एक्लेसियाई. 12:7)।

आत्मा स्मृति और चरित्र का तहवील घर है। आत्मा ऐसे विचित्र जंतु के समान है जो मृत व्यक्ति का मानव रूप और आकार भी धारण कर सकती है, जिससे न्याय के पुनर्जीवन में मर हुए लोग अपने जीवन के उसी रूप में दिखाई देंगे। अपने जीनव में निर्मित वही चरित्र बनाये रखेंगे और उनकी यादगार में सुरक्षित हर विषय को याद रखेंगे। पर, इस बीच में मृत्यु में, होश नहीं रहता; कुछ नहीं जानते'' (एक्लेसियाई 9:5)।

वस्तुतः केवल ईश्वर के सच्चे सर्च को छोड़ कर ईसाइयत के नाम से जाने जाने वाले सभी चर्चों द्वारा दिया जाने वाला सबसे सार्वभौम मिथ्या उपदेश यह है कि यदि उद्धारक के रूप में ईसा मसीह को नहीं स्वीकार करते तो सभी नष्ट हो जाते हैं और यह भी कि ''मोक्ष'' का केवल एक ही दिन है।

पर सत्य यह है कि जो ईश्वर से कट गए, अभी तक उनका न्याय नहीं हुआ!

ईश्वर का मूलभूत मास्टर प्लान कुछ ही लोग समझते हैं। इस पुस्तक में जो सत्य बताया गया है, जो 58 वर्ष से अधिक पूर्व बताया गया है, संभवतः उस पर पाठक उतना आश्चर्यचकित नहीं होगा, जितना आश्चर्य लेखक को हुआ था। यह पूरा विश्व ठगा गया है, जैसे ईश्वर के पवित्र शब्द ने भविष्यवाणी सुनाई थी! जो ठगा गया, वह धोखे का जानकार नहीं रहा! शैतान को कम मत समझो!

क्या मानव ईश्वर से कट गए?

आज विश्व में बढ़ती बुराइयों पर विचार करते हुए कोई भी यही समझेगा कि मानव ने अपने आप ईश्वर से संबंध तोड़ लिया। पर, असल में ईश्वर ने मानवता से संबंध तोड़ लिया। पर क्यों?

क्या आपको ऐसा लगता है कि ईश्वर अनुचित कार्य करता है? ठीक इसका उल्टा हुआ है!

यह बात स्पष्ट कर दूं। आदम ने, वर्जित वृक्ष चुनकर अपने को अपने परिवार सहित ईश्वर से अपना रिश्ता तोड़ लिया और क्योंकि आदम से जनमे सारे मानवों ने पाप किया, इसलिए हरेक मानव ने ईश्वर से संबंध तोड़ लिया (इसैया 59:1–2)।

ईश्वर के परिवार का व्यक्ति जिसने आदम से बात की, वह था शब्द या 'पवित्र शब्द'। यही बाद में ईसा मसीह के रूप में पैदा हुआ। आदम का पिता, ईश्वर से कोई संपर्क नहीं था। जब पवित्र शब्द ने जीवन वृक्ष को बंद कर दिया और शैतान से धरती का सिंहासन लेने और सारी धरती पर ईश्वर के शासन की पुनर्स्थापना के लिए परमशक्ति और गरिमा के साथ ईसा मसीह के आने तक के लिए सारी मानव जाति ईश्वर से कट गई। इस बीच ईसा मसीह जो दूसरे आदाम माना जाता हैं, पहले आगमन के समय पिता, ईश्वर का अस्तित्व प्रकट करने के लिए आएं (लूक. 10:22)। उस समय तक, इस विश्व को पिता ईश्वर के अस्तित्व का कोई ज्ञान नहीं था। यहूदी धर्म के इस विश्वास का एक कारण यह भी है कि ईश्वर एक ही व्यक्ति है, परिवार नहीं। यही कारण है ब्रह्मवादियों ने यह ज्ञान खो दिया, या शायद उन्हें कभी इसका ज्ञान था ही नहीं कि ईश्वर एक परिवार है हम जिसके अंग के रूप में जन्म ले सकते हैं।

इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि नव विधान में पिता ईश्वर और ईसा मसीह के भी ईश्वर होने की बात पढ़ने के बावजूद लोग यह गलत दर्शन क्यों ले आए कि पवित्र आत्मा ''घोस्ट'' या त्रिमूर्ति का तीसरा व्यक्ति है। और इस क्रम में पवित्र आत्मा की निंदा करने, ईश्वर को सीमित करने और इस ज्ञान को मिटाने का काम किया कि धर्मांतरित मनुष्य ईश्वर के दैवी परिवार के सदस्य बन सकते हैं। इस तरह शैतान ने सत्य और ईसा मसीह के सुसमाचार के प्रयोजन की ओर से 'ईसाई धर्म' को अंधा बना दिया।

उन्होंने एक अत्यंत महत्वपूर्ण सत्य, को नजरअंदाज कर दियाः मृत्यु से पुनर्जीवन के सत्य को।

ईसा मसीह के पुनर्जीवन को स्वीकृति देते हुए वे पैगन ईस्टर मनाते हैं। उन्होंने बाइबिल के इस उपदेश को पूरी तरह नजर अंदाज कर दिया कि उन सबको जो कभी जीवित थे, मृत से जीवित किया जाएगा अलबत्ता यह काम अलग–अलग पुनरुत्थानों के अलग–अलग काल क्रमों में किया जाएगा।

इस मरणासन्न विश्व की विशाल मानवता को पवित्र बाइबिल जो एक आस दिलाती वह है कि मृत से पुनर्जीवन की आशा। पर यह तो निश्चित रूप से सकारात्मक आशा है। इसके बारे में आनेवाले अध्यायों में इसका विस्तृत विवेचन किया जाएगा और बाइबिल के उद्धरण भी दिए जाएंगे।

जैसा कि प्रकाशना 12:9 में स्पष्ट किया गया है यह दुख की बात है कि शैतान ने जो आज भी सारी धरती पर राज कर रहा है। सत्य के मामले में सारी दुनिया को छला है और उसकी ओर से उसकी आंखें बंद कर दी हैं।

असली सत्य चौंकाने वाला है। पर आप तो अपने ही बाइबिल में इसको स्पष्ट प्रकट करते हुए देख सकते हैं। इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ते समय इस विषय पर विचार कीजिए।

सोचिए! जब ईश्वर ने आदम और हव्वा को ईडन के बगीचे से भगा दिया, तो उसने स्वर्ग पर देवदूतों का पहरा लगा दिया ताकि मानवजाति मानलीजिए कि अमर ईश्वर ने उसमें दुबारा ने घुस सके। स्वर्ग का प्रवेश द्वार खुला छोड़ दिया होता। और मानव वर्जित वृक्ष पहले ही, ले चुका था। मानव पहले ही पाप की ओर झुक गया था। तब क्या हुआ होता? शायद पाप करने वाली पूरी मानव जाति जीवन का वृक्ष लेने के लिए उमड़ पड़ती! किसी भी प्रकार के पश्चाताप के – ईश्वर या ईसा मसीह पर किसी भी प्रकार का विश्वास किए बिना– मानव जाति अपने आपको अमर जीवन प्राप्त करने में लग गई होती।

एक क्षण के लिए सोचिये?

ईश्वर अनुचित नहीं

अगर ईश्व ने इसकी अनुमति दी होती तो कितना अनुचित किया होता! मनुष्य अपने सारे पापों के साथ, और पाप की यह प्रवृत्ति होती है कि जो पाप करता है, उसमें यह बढ़ता जाता है, अमर हो जाता– पाप के बदले मिलने वाली भौतिक, मानसिक, शारीरिक और अध्यात्मिक यातनाओं पीड़ाओं के साथ हमेशा जीता रहता!

लगता नहीं कि मानव समझ गया कि अब वह पाप का गुलाम हो गया है। पाप ने उसे पिता ईश्वर से उसका नाता तोड़ दिया। बिरले ही हैं जो समझते हैं ईसा मसीह की मृत्यु द्वारा, हमारा उद्धार नहीं हुआ है, कि मृत्यु द्वारा पिता, ईश्वर के साथ हमारा मेल–जोल हुआ है। उनके जीवन से हमारा उद्धार हुआ है। (रोमनों 5:10)। मानव ने कभी नहीं समझा कि पाप से हमेशा के लिए दूर होकर असली पश्चाताप प्रकट करने पर ही और ईसा मसीह में विश्वास प्रकट करने पर ही मानव को दंड से मुक्ति मिलेगी! पाप गुलाम बनाता है! वह दंड देता है! वह वेदना, मनोव्यथा, अनुताप देता है। वह शारीरिक घाव देता है, बीमारी और रोग देता है। वह कुंठा और निराशा भी देता है।

ईश्वर यदि आदम और हव्वा के वर्जित फल खाने के बाद भी स्वर्ग का द्वार खुला छोड़ देता तो वह सबसे अनुचित, निर्दय, निष्ठुर काम करता! तब जीवन के वृक्ष तक सबकी पैठ सुगम हो जाती, जो अमर जीवन का उपहार है!

लेकिन ईश्वर ने क्या किया? उसने पुरुष और स्त्री को खदेड़ दिया। उनके दुबारा प्रवेश पर रोक लगा दी।

इतना होते हुए भी, ईश्वर ने सारे मानव परिवारों को अति उत्तम आनंद और स्वर्गसुख में मोक्ष तथा अमर जीवन देने का रास्ता खोला। पर, ईश्वरीय विवेक के साथ, उसने एक काल–क्रम निश्चित किया और कुछ शर्तें तय कीं! पहले 6,000 वर्षों के लिए, पूर्वनिश्चित कुछ लोगों को छोड़कर, सारे के सारे लोग दूर कर दिये जाएंगे। वह 6,000 वर्षों का समय अब पुरा होने वाला है।

इस बिंदु पर, परंपरागत ईसाईपन का संपूर्ण विश्व ठगा गया। यहां एक अति महत्वपूर्ण सत्य हैः धरती के सिंहासन पर बैठे शैतान ने ईसा मसीह को मार डालने का प्रयत्न किया? इसके बाद उसने ईसा मसीह की इस धरती पर अपना शासन शुरू करने से पहले, ईसा को प्रलोभन देने और अधिकार से वंचित करने के प्रयत्न किये (मत्ती 4)। शैतान अधिकांश धर्म प्रचारकों को आत्मबलिदान का कारण था। उसने चर्च के विरुद्ध तीव्र अत्याचार कराए। उसने चर्च के शुरुआती महीनों और वर्षों के दौरान लोगों को हिंसात्मक विवाद के लिए उकसाया। वह विवाद यह था कि ईसा मसीह का सुसमाचार घोषित करना है या ईसा मसीह के बारे में बना मानव का सुसमाचार। शैतान ने दूसरे को जिताया। बीस वर्ष के अंदर ही ईसा मसीह के बारे में एक गलत और जाली सुसमाचार सबके द्वारा घोषित किया गया—कुछ उत्पीड़ितों को छोड़ कर, ईश्वर के छोटे और सच्चे मूल प्रताड़ित चर्च के रूप में जिनकी निष्ठा अक्षुण्ण थी।

आज ही मोक्ष का एकमात्र दिन है?

इन ठगे 'ईसाइयों' ने पढ़ाया और आज भी पढ़ाते हैं कि आज ही मुक्ति का, मोक्ष का एकमात्र दिन है। उनका जाली मोक्ष उन्हें मृत्यु के तुरंत बाद स्वर्ग में भेज देगा, उन्हें 'अमर्त्य आत्माएं' बनाएगा। ईश्वर की विधि न मानने और पाप करने के बाद वापस आने पर भी पश्चाताप प्रकट करने की जरूरत नहीं है। सिर्फ उन्हें ईसा मसीह को 'स्वीकार करना है'।

शैतान ने यह तथ्य बताकर 'परंपरागत ईसाई धर्म' के अनुयायियों के मनो को अंधा बना दिया कि जब तक इस पूरी धरती पर महिमामय ईसा मसीह अपनी सर्वोच्च शक्ति और महिमा के साथ नहीं आते और ईश्वर के राज्य की पुनःस्थापना नहीं होती, तब तक ईश्वर का जीवन का वृक्ष बंद रहेगा। मैं फिर से दोहराता हूं, यह आदेश दिया गया कि हर मानव को एक बार मरना है। और मृत्यु के बाद पुनर्जीवन के लिए न्याय सुनने को आना है (हिब्रू 9:27)। इस बीच आदम के विश्व पर न्याय नहीं सुनाया गया। अंतिम न्याय सुनाते समय सबको अपने पापों का हिसाब देना होगा।

लेकिन इस बीच ईश्वर ने कुछ खास निश्चित कारणों के लिए कुछ उपवाद भी बनाए। पैगंबर चर्च की नींव का अंग बनने के उद्देश्य से पैगंबर भेजे, ईसा ने शिक्षा देने और ईश्वर के पुनर्स्थापित राज्य की आगामी सहस्राब्दी में जब सारे मानवों के लिए जीवन का वृक्ष उपलब्ध होगा, राजाओं के राजा ईसा मसीह के अधीन राज करने और शिक्षा देने के लिए प्रशिक्षित किए जाने के लिए इस दुनिया से अपने शिष्य चुने।

ईश्वर के साम्राज्य में जब जीवन का वृक्ष खोला जाएगा, शासन करने और अध्यापन करने का प्रशिक्षण पाने के लिए चर्च को बुलाया गया इस दौरान, पैगंबरों और सच्चे चर्च के लिए बुलाए गए थोड़े से लोगों को छोड़ कर सबके लिए पैगंबर जोएल ने भविष्यवाणी की यह आगे चल कर होगा– शैतान की दुनिया के 6,000 साल बाद कि ईश्वर सभी मानवों पर अपनी आत्मा उड़ेगा (जोयल 2:28)।

इस बीच में ईश्वर के प्रयोजन के लिए यह आवश्यक था कि पैगंबरों को पवित्र आत्मा दी जाए। जब धरती के सारे राष्टों पर ईश्वर के राज्य की पुनःस्थापना हो जाए तब ईसा मसीह के अधीन शासक और शिक्षक बनने के लिए प्रशिक्षण पाने हेतु जिनको बुलाया गया, उनको भी पवित्र आत्मा दी जाए।

चर्च बुलाते समय, ईसा ने साफ–साफ कहाः ''उस पिता को छोड़कर जिसने मुझे उनको मुझे उनको बुलाने के लिए भेजा है, कोई भी व्यक्ति मेरे पास नहीं आ सकता।'' (जॉन 6:44)। चर्च केवल किया का 'पहला फल' है। यह समूचा सत्य छठे अध्याय में और अधिक स्पष्ट किया जाएगा।

दूसरा आदम क्यों?

पुनरीक्षण के लिएः आदम के करीब 4,000 वर्ष के बाद, ईश्वर ने आदर्श जीने बिताने, शैतान पर विजय पाने के लिए ईसा मसीह को भेजा। उस काम के लिए जिसमें पहले आदम नाकाम रहे थे, यानी शासक के रूप में शैतान को दुनिया के सिंहासन से हटा कर उसकी जगह लेने के लिए। जो भी ईसा की तरह शैतान पर, अपने आप पर और पापों पर विजय प्राप्त करता है (जो बुलाया गया है) वह उस समय ईसा मसीह के सिंहासन पर उनके पास बैठेगा जब वह ईश्वर के राज्य की स्थापना करने और ईश्वर के राज्य की स्थापना करने और ईश्वर के शासन की पुनर्स्थापना करने आएंगे, जिसे पुराने लुलिफर ने ठुकरा दिया और जिसे चालने में नाकाम रहा।

''सदाचारी एबेल'' से लेकर अब तक जो थोड़े से लोग बुलाए गए उनको, ईसा के धरती पर वापस आने पर, वह काम करना पड़ेगा, जो आदम ने मना कर दिया था– यानी शैतान के तरीके को नकारने, क्योंकि उसने ईश्वर के राज्य के खिलाफ विद्रोह किया था!

तो फिर, कौन असली ईसाई है? सिर्फ वही लोग जो ईश्वर की पवित्र आत्मा से संचालित होते रहे हैं या हो रहे हैं (रोमनों 8:9, 11, 14)। कोई भी व्यक्ति तब तक पवित्र आत्मा प्राप्त नहीं कर सकता जब तक कि 1) वह व्यक्ति अपने पापों ईश्वरीय नियम के अपने उल्लंघनों के लिए प्रायश्चित नहीं करता, 2) जब तक कि वह ईसा मसीह में पूरा विश्वास नहीं करता, ईसा पर भरोसा नहीं करता, जिसमें ईसा मसीह में विश्वास करना, मेरा आशय है कि वह जो कहते हैं, उस पर यानी पवित्र बाइबिल पर विश्वास करना।

इस तरह सच्चे प्रायश्चित और आस्था के बाद ईसा मसीह बुलाए गए लोगों का ईश्वर पिता मेल–मिलाप कराते हैं और हम पवित्र आत्मा प्राप्त करते हैं जो हमें ईश्वर के बच्चों के रूप में अनुप्रमाणित करती है।

आइए इस बिंदु पर एक और प्रश्न को हल कर लिया जाए। आदम के पैलौठी के बेटे केन, अबेल और सेथ प्राश्चित क्यों नहीं कर सके और शुद्ध रूप से उस प्राश्चित के आधार पर ईश्वर की आत्मा और जीवन क्यों नहीं प्राप्त कर सके? किसी भी अतिक्रमण पर दंड न दिया जाए तो ईश्वर की विधि, विधि हो नहीं हो सकती। आदम ने पाप किया। उसकी सारी संतानों ने पाप किया और उन पर मृत्यु दंड भी लगाया गया। जब तब उनका असली स्रष्टा, ईसा मसीह, उनके बदले मृत्युदंड नहीं चुकाता।, तब तक वे हों यो कोई भी व्यक्ति उस विधि के दंड से छुटकारा नहीं पाएगा। इसलिए, ईसा मसीह के क्रूसारोपित होने तक कोई भी मुक्ति संभव नहीं थी। केवल ईसा का प्रायश्चित ही किसी मानव को पिता ईश्वर से मिला सकता है।

अब, इनका और हजारों करोड़ दूसरे लोगों का क्या होगा? यदि बुलाया नहीं जाता, और ईश्वर उन्हें आकर्षित नहीं करता तो अभी तक उनका फैसला नहीं हुआ है! मेरा मतलब यह नहीं है कि उनको अपने पापों का लेखा–जोखा नहीं देना है। वे अवश्य देंगे! पर उनका निर्णय होने वाला है। ईश्वर के असली चर्च में न्याय आरंभ हो गया है (I पीटर 4:17), यीशु ने कहा, ''जब तक पिता उसे आकर्षित नहीं करता, कोई भी मेरे पास नहीं आ सकता...।'' (जॉन 6:44)। अन्यथा कोई भी ईसा के पास नहीं आ सकता! लेकिन चर्च तो महज पहली फसल है।

शैतान की छली हुई दुनिया में बहुतों ने फर्जी ईसा का पा लिया है, समझा जाता है कि उसने अपने पिता के ईसा की धर्मादेशों को छोड़ दिया है। लोग पूजा भी करते हैं, पर ईसा ने स्वयं स्पष्ट रूप से कहा था: ''लोग बेकार में मेरी उपासना कैसे करते हैं। लोगों के लोग धर्मादेशों का धर्म सिद्धांत पढ़ाने के लिए.... और उसने उनसे कहा, ईश्वर के धर्मादेश को नकारकर तुमने बहुत अच्छा किया। कि तुम अपनी परंपराओं का पालन कर सकते हो,.... अपनी परंपराओं के माध्यम से ईश्वर के कथन को व्यर्थ करके जो तुमसे कहे गए हैं, और तुम इसी तरह की बहुत सी चीजें करो'' (मारकुस 7:7,9, 13)।

ठगे गए करोड़ों लोग अनुभव नहीं कर पाते कि वे व्यर्थ में ईसा मसीह की उपासना करते हैं। वे 'दूसरे ईसा' की उपासना करने के लिए ठगे गए हैं।

हर मानव बुलाया जाएगा

जब यीशु राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु बनकर धरती पर आएंगे तो वह एक हजार वर्षों तक शासन करेंगे। उनके आने पर हर जीवित व्यक्ति बुलाया जाएगा।

उन एक हजार वर्षों के बाद प्रकाशना 20:11—12 का ''महा श्वेत सिंहासन न्याय'' होगा। आदम से लेकर जो भी कभी जीवित था और ईश्वर द्वारा बुलाया नहीं गया है अपने पूर्व जीवन की तरह मांस और रक्त से बने मर्त्य मानव बनकर पुनर्जीवित होगा। इसके बाद वह अपने पूर्व जीवन के पापों का हिसाब देगा और बयान देगा। उन पापों का दंड होगा मृत्यु। इसके बाद ही वे समझेंगे कि ईसा मसीह ने उनके बदले मृत्यु दंड स्वयं पा लिया। पर असली पश्चाताप और विश्वास प्रकट करने पर, उनको माफ कर दिया जाएगा और वे ईश्वर की पवित्र आत्मा पाएंगे तथा अमर जीवन के लिए प्रजनित होंगे।

ईश्वर की अद्भुत प्रधान योजना हर एक को बुलाएगा जो अमर मुक्ति प्राप्त करने के लिए कभी जीवित थे। पर निश्चित है कि उन्हें असली पश्चाताप और ईश्वर के सत्य के प्रति विश्वास प्रकट करना होगा। पर पुनर्जीवन में काल—क्रम

होगा (I कोरिथियाइयों 15:22–23)। ''क्योंकि आदम के समय के सभी मरेंगे, ईसा मसीह के समय के सभी जीवित किए जायेंगे। पर, हर व्यक्ति अपने ही क्रम में आएगाः ईसा मसीह पहला परिणाम है, बाद में...'' (प्रकाशना 20:11–13 में दो और पुनर्जीवन प्रकट किए गये हैं, जबकि I कोरिंथियाइयों 15 में इसका उल्लेख नहीं है।)

ईश्वर के तरीके कितने अद्भुत हैं– आज की मानव जाति के छिपे होने पर भी, उन पर इतनी बाधाएं होते हुए भी कितने अद्भुत हैं! जैसे धर्म प्रचारक पॉल ने चिल्लाकर कहा थाः ओ! ईश्वर के ज्ञान और विवेक दोनों के गहरे धनी! उसके न्याय कितने रहस्यमय हैं और उसके तरीके कितने अदृश हैं! (रोमनों 11:33)।

ईश्वर मानव द्वारा अपने आपको प्रजनन कर लेता है! (जेनेसिस 1:1) ईश्वर के लिए मूल हिब्रू में प्रयुक्त शब्द है 'एलोहिम'। चर्च या परिवार के समूह जैसा शब्द है। ईश्वर ने कहा, 'हम'– मैं नहीं– 'मानव को अपने प्रतिरूप में बनाएगे।' ईश्वर सचमुच एक परिवार है जिसमें हम, सचमुच पैदा होंगे!

तो फिर मनुष्य क्या है? वह धरती की धूल से बना एक जीव है। वह चिकनी मिट्टी है। और ईश्वर ही प्रधान कुम्हार है। वही मानव का ढांचा बनाकर, रूप देकर, आकार देकर हमारे चरित्र का गठन करता है। जब वह बुलाता है और अपनी तरफ हमें खींचता है तो हमें उत्तर देना होता है। हमारी स्वीकृति के साथ वह हमारे अंदर अपना आध्यात्मिक पवित्र, सदाचारी, धार्मिक और पूर्ण चरित्र उंडेलता है!

मनुष्य क्यों है? ईश्वर ने धरती पर मनुष्य को इसलिए बनाया कि वह हममें अपने पूर्ण चरित्र का निर्माण करें! पाप करने वाले देवदूतों ने ऐसा करने से मना कर दिया। ईश्वर अपने ही काल–क्रम और तरीके से हमें विकसित करता है ताकि– हरेक– स्वयं ईश्वर बनें और इस अपूर्ण ब्रह्मांड की सृष्टि को पूर्ण करे। पर, अब तक, हम शैतान द्वारा चालित इस ठगे हुए विश्व में ही जी रहे हैं।

4

सभ्यता का रहस्य

कुछ ही लोग इस पर विचार करते हैं। यदि आप विचार करें तो आपको लगेगा कि क्या इस दुनिया की सभ्यता से बढ़ कर भी कोई रहस्य चीज हो सकती है। इस आश्चर्यजनक विरोधाभास की व्याख्या कैसे करें? मानव मनों की यह दुनिया है जो चांद तक मनुष्य को भेजती और वापस लाती है, विज्ञान और तकनीकी के चमत्कार दिखाती है, मानव हृदय प्रतिरोपित करती है, पारिवारिक जीवन और सामूहिक संबंधों की सहज मानवीय समस्याएं क्यों सुलझा नहीं पाती राष्ट्रों के बीच क्यों शांति स्थापित नहीं कर पाती?

विकसित देशों ने आश्चर्यजनक प्रगति की है। उन देशों ने अति उत्तम यांत्रिक विश्व का निर्माण किया है जिसमें हर सुख–साधन, नवीन सुविधा और संतोष के सभी तरीके बनाए हैं, फिर भी उस पर अपराध, हिंसा, अन्याय, बीमारी और रोग, टूटते परिवार और पारिवारिक कलह के शाप लगे हैं। साथ ही साथ विश्व के आधे से अधिक भाग अशिक्षा, दयनीय गरीबी, गंदगी और दरिद्रता में जी रहा है। हिंसा और विनाश तेजी से बढ़ रहे हैं। कई लोग पूछ भी सकते हैं, ''अगर ईश्वर है तो क्यों वह इतनी हिंसा और मानव–दुख होने और बढ़ने देता है?''

हम इस बीसवीं शताब्दी की दुनिया में, आज वह जैसी है, पैदा हुए हैं। हम इसे स्वीकार भी करते हैं। पर हम इसकी व्याख्या नहीं कर सकते। कोई यह खत्म होने को आई फिल्म देखने जैसा है। हम केवल यही देख रहे हैं कि इस समय कौन–सा दृश्य चल रहा है। हमें यह बिल्कुल मालूम नहीं है कि इसकी शुरुआत कैसे हुई थी और कितने परिवर्तनों के बाद, इस स्थिति तक यह दृश्य पहुंचा है। हमने इसे शुरू से नहीं देखा है। हम यह भी समझ नहीं पाते कि अब इस दृश्य में क्या और क्यों हो रहा है। किसी फंतासी लेखक ने काल–यंत्र के बारे में लिखा था जो पीछे इतिहास में ले जा सकता था। अगर हमारे पास ऐसा काल–यंत्र होता तो हम छः हजार वर्ष पूर्व जा सकते थे, जहां हम असलियत देख पाते कि इस विश्व की स्थापना के समय स्वर्ग के बगीचे में क्या हुआ था। हमें यह अवश्य मालूम होगा। यह सभ्यता वहीं से तो शुरू हुई थी। तब हम अच्छी तरह समझ पाते कि इस विश्व के सन्निकट अंत की चर्चा क्यों हो रही है।

हमारी बीसवीं शताब्दी के संस्कृति विकसित होकर बीसवीं शताब्दी की इस अवस्था में कैसे पहुंची? सोचने समझने वाले लोगों के लिए 'यह बड़ा रहस्य है!' वस्तुतः अधिकांश लोग सोचने वाले लोग नहीं हैं कभी भी खुद से इस तरह के सवाल नहीं करते। नहीं हैं। लेकिन अगर कोई पूछता, तो वह पाता कि यह प्रश्न रहस्य से ढंका है। अतः आइए इसे समझा जाएं।

इसी पुस्तक में यह बात पहले भी समझाई गई है कि कैसे ईश्वर ने अपने–आपको पुनरुत्पादित करने के सर्वोच्च प्रयोजन के लिए मनुष्य की सृष्टि की। पर इस सर्वोच्च प्रयोजन को चाहिए था कि हमारी सृष्टि ऐसी हो जिसमें हमारी अपनी सम्मति, परिश्रम, प्रयत्न और आनंद हों। इनके साथ ईश्वर का सर्वोच्च आत्मिक चरित्र हो। यह सब करते समय ईश्वर ने मानव को धरती पर क्यों रखा? यह खास ग्रह क्यों चुना?

अपूर्ण धरती

ईश्वर ने मानव को यहां रखा ताकि धरती पर ईश्वर का राज्य पुनःस्थापित किया जाए। मूलतः लूसिफर और उसके देवदूतों को यहां रखा गया था। ईश्वर ने अपूर्ण धरती पर उन्हें छोड़ रखा। याद रखिए, ईश्वर द्वैत अवस्थाओं में सृष्टि करता है। जैसे कोई महिला केक बना रही हो। वह

महिला पहले केक का अंश पकाएगी। पर यह काम अधूरा माना जाएगा जब तक उस पर वह चाशनी नहीं लगाती। ईश्वर का रूप और यहां के पदार्थ पहले सिरजे गए। बाद में देवदूत यहां रखे गए। लेकिन ईश्वर ने चाहा कि देवदूत धरती की सतह का विकास करें, उसे सुंदर बनाएं और उन्नति करें। इस काम के लिए ईश्वर ने उनको अपना राज्य दे दिया ताकि वे लोग यह काम करते समय अपने आचरण और कार्यक्षमता को नियंत्रित करें। लेकिन, लूसिफर ने अपने विश्व में समरसता और सहकारिता से राज्य का शासन करने के विचार से सिंहासन पर बैठकर विद्रोह करना शुरू कर दिया। उसने सहकारिता और समरसता की कार्यविधियों को होड़, बुराई, विद्रोह और विनाश में बदल दिया। धरती का प्रकाश अंधकार में बदल गया। धरती की सतह पर वीरानी, सड़न और ध्वंस छा गई।

फिर छः दिनों में (साम 104:30) ईश्वर ने अपनी आत्मा भेजी और मानव के लिए धरती की सतह का नवीनीकरण किया।

इतने पर 'केक पर चाशनी लगाने' का काम पूरा नहीं हुआ था। ईश्वर ने वह काम करने के लिए मानव को धरती पर भेजा जो काम पाप करने वाले देवदूतों ने नहीं किया।

अब धरती को सुंदर बनाने का काम मानव का पूरा करना था। ईश्वर संभ्रम, भद्दापन या सड़न था बल्कि उच्चतम गुणवत्ता की सुंदरता, पूर्णता, चरित्र आदि का सजृन उसका काम था।

ईश्वर के स्वर्ग का वर्णन देखिए– ईश्वर के सिंहासन की पीठिका– जहां हम देख सकते हैं कि ईश्वर विराजमान है, जैसा प्रकाशना के चतुर्थ अध्याय में वर्णित है। ईश्वर से घिरे सिंहासन पर आसीन है। प्रकाशमान भव्यता, गुण और सुंदरता और चरित्र घेरे हुए हैं। इतनी अधिक चकाचौंध और महिमामयी सुंदरता, मानव आंखों ने कभी नहीं देखी होगी।

ईश्वर ने चाहा कि मानव धरती पर काम करे, इसे सुधारे, सुंदर बनाए इसे चरित्र प्रदान करें। और इस प्रकार अपने जीवन में 'पवित्रता का सौंदर्य' बढ़ाएं (I कोरिंथियाई 16:29)। ईश्वर ने कभी नहीं चाहता था कि मानव गरीबी, गंदगी और दरिद्रता या भद्देपन में जीए। मानव धरती को सुंदर बना सकता था। और ऐसा करके वह अपना चारित्रिक विकास कर सकता था। उसकी सभ्यता 'धरती का स्वर्ग' हो सकती थी।

मानव ने क्या किया है?

लेकिन मानव ने धरती पर क्या किया जहां पर ईश्वर ने उसे भेजा था? मानव ने धरती पर जहां भी उसका हाथ लगा उसे भद्दा, प्रदूषित, दूषित, अपवित्र किया। उसने वायु को प्रदूषित कर दिया, नदी, झील और समुद्र का पानी गंदला कर दिया। उसने धरती को जाड़ दिया। और इस प्रकार वर्षा के क्रम को बिगाड़ दिया। और रेगिस्तानों को बढ़ा दिया। उसने मिट्टी को हर सातवें साल विश्राम का सैबथ देने की उपेक्षा करके मिट्टी की उर्बरता खत्म कर दी। मानव ने नगर अवश्य बनाए, लेकिन उन्हें झुग्गी–झोपड़ियों, मैल और गंदगी में बदलने दिया।

ये सारी चीजें कैसे हुईं? पहले मानव ने नकार दिया और ईश्वर से दूर हो गया। अपने पर अवलंबित रहा– और आदम के सारे बच्चों ने यही किया।

इस प्रकार मानव ने मानव निर्मित और शैतान प्रेरित सभ्यता बनाई। मानव ने धरती को तहस–नहस कर दिया जिसे उसको परिवर्धित और समुन्नत करना था, बल्कि उसने अपनी गलत जीवन शैली द्वारा अपना स्वास्थ्य बिगाड़ लिया और अपने आत्मिक चरित्र को भ्रष्ट और विकृत कर लिया। आखिर, अब हम छः हजार वर्षों के अंत के नजदीक हैं; ईश्वर ने उसे यह स्वतंत्र शासन का भार दिया है। मानव ने व्यापक विनाश के फ्रांकेन्स्टाइन अस्त्र बनाए. जो पूरी मानव जाति को समूल नष्ट कर सकते हैं। बशर्ते कि दयालु ईश्वर हमें अपने–आपसे बचाने के लिए हस्तक्षेप न करें।

एक मर्यादित पूर्वानुभव

हम जिस युग में जी रहे हैं, उसे बाइबिलीय भविष्यवाणी अंतिम दिन कहती है– यही अंतिम पीढ़ी है जिसके बाद ईसा धरती पर आएंगा, अपना शासन चलाएंगे और धरती को सुसंस्कृत करेंगे जिसे मानव जाति को करना था। इन अंतिम दिनों में, बाइबिलीय भविष्यवाणी के अनुसार आध्यात्मिक और भौतिक ज्ञान बढ़ने थे। ईश्वर के असली चर्च की पुनः स्थापना होनी थी। मूल धर्म प्रचारकों के दिनों में संतों को दिए गए विश्वास का महिमामय ज्ञान फिर से फैलाना था।

चर्च की ओर से ईसा मसीह ने तीन कालेज बनवाए– संयुक्त राष्ट्र में दो और इंग्लैंड में एक। ये तीनों परिसर, भौतिक सौंदर्य की दृष्टि से, आपस में एक से बढ़कर एक थे। छात्रों में ईश्वर के धर्मपरायण चरित्र के विकास के लिए उच्च चरित्र भौतिक विन्यास होता था। इन छात्रों में ईश्वरीय चरित्र का सौंदर्य, इन कालेजों के परिसरों के भौतिक सौंदर्य से बढ़ कर था। कैलिफोर्निया के पसानेडा मुख्यालय परिसर की छह दिवसी यात्रा पर आई एक रानी ने परिसर की सैर करने के बाद कहा कि, ''मैं अभी–अभी स्वर्ग में थी।''

इस परिसर ने तीन बार संयुक्त राष्ट्र के सबसे सुंदर, सबसे उत्कृष्ट भूदृश्य और सबसे अच्छी तरह अनुरक्षित परिसर का पुरस्कार पाया है। मानवजाति को जो करना चाहिए था, उसका उदाहरण बनकर ये तीनों परिसर खड़े हैं। ये परिसर सुंदरता के मर्यादित पूर्वानुभव हैं जो कल की अद्भुत दुनिया में और भी पुस्पित होंगे जब ईसा मसीह के राज्य में ईसा मसीह और उनके संत राज करेंगे।

पूर्व लखपतियों की सख्तहाल हवेलियों का जीर्णोद्वार किया गया है। उनके पीछे के इलाके को जिस पर झुग्गी–झोपड़ियां उग आई थीं को साफ–सुथर कर दिया गया है और उसका निर्माण करके पसेडेनिया का सबसे सुंदर इलाका बना दिया गया है।

अगर आदाम ने जीवन– वृक्ष चुना होता तो क्या होता?

इन भौतिक और मानवीय चरित्र का अधःपतन कैसे आरंभ हुआ?

अगर आदम ने अर्पित जीवन–वृक्ष लिया होता तो सभ्यता का पूर्ण रूप ही बदल गया होता। धरती भर शांति, सुख, आनंद, स्वास्थ्य और अतिवृष्टि फैल गयी होती।

पर उसका क्या परिणाम निकला?

आदम ने अच्छाई और बुराई का ज्ञान अपने जिम्मे लिया। पर यह तो केवल मानवीय–भलाई थी। उसके अंदर स्थित मानव–आत्मा के लौकिक मानवीय स्तर से श्रेष्ठ नहीं थी। उसने ईश्वर पर निर्भर रहना पसंद नहीं किया और विकृत शैतान के छल और प्रेरणावश ज्ञान, सामर्थ्य और शक्ति के लिए अपने आप पर भरोसा किया जो दैहिक मानवीय स्तर तक सीमित थे। ये ज्ञान, क्षमता, शक्ति आदि भाव केवल दैहिक मानव जीवन मात्र के हैं जो विकृतकामी शैतान द्वारा प्रभावित हुए हैं और सारे मानव धोखा दिये गये हैं।

अगर उसने जीवन का वृक्ष चुना होता तो निस्संदेह वह शैतान का उत्तराधिकारी होता, धरती के सिंहासन पर आसीन होता, ईश्वर के राज्य का पुनर्निर्माण करता, अमर ईश्वर द्वारा प्रदत्त शक्ति प्राप्त करता, प्रभावित होता और मार्ग प्रदर्शन पाता। लेकिन उसने तो शैतान को अपने मन में बैठ जाने की जगह दी। हुआ यह कि सचमुच शैतान ने उसका अपहरण कर लिया, उसे बंदी बना लिया।

इस प्रकार पहले सर्जित मानव ने ईश्वर पर विश्वास नहीं किया; ईश्वर का निरादर किया; अपना रास्ता अपनाने का निश्चय किया; अपना काम स्वयं करने का निर्णय लिया। आदम ने प्रत्यक्षतः जानबूझकर या दुर्भावना वश नहीं बल्कि स्वेच्छा से ऐसा किया।

आदम स्वेच्छा से शैतान का बंदी बना।

विश्व वशवर्ती हुआ

आदम पूरी क्षमता के साथ ईश्वर का बेटा बनने के लिए सिरजा गया था। हालांकि वह अभी तक ईश्वरोत्पन्न बेटा नहीं बना है लेकिन क्षमता की दृष्टि से वह उसी अनुरूप सिरजा गया था। जैसे ही उसने ईश्वर के सोद्देश्य व्यादेश के खिलाफ विद्रोह करके 'अपनी मर्जी के काम करने' शैतान का रास्ता अपनाया वह आध्यात्मिक दृष्टि से शैतान की संपत्ति बन गया। उसने शैतान के शासन के कानून, मिथ्याभिमान, आत्मकेंद्रियता जो स्वतः आत्मगौरव, स्पृहा, प्रतिस्पर्धा, ईश्वर के देने के रास्ते की बजाय पाने की इच्छा के आचरणों को जन्म देती है, के कानून को चुनकर शैतान के शासन के आगे घुटने टेक दिए।

सारी मानवता आदम और हव्वा द्वारा प्रजनित थी। आज की वर्तमान दुनिया की नींव वही थे। दुनिया में तभी से विश्व बंदी है! इस प्रकार इस विश्व ने सर्वशक्तिमान पोषक का रास्ता अपनाना छोड़कर अपहर्ता का रास्ता अपनाना!

लेकिन पिता ईश्वर को फिरौती देनी पड़ी और अपने भावी आत्मिक बेटो को अपने पास बुलाना पड़ा। ईश्वर ने उस समय उसमें मानवता भरने, सुधारने या मुक्त कराने का निर्णय नहीं लिया था।

विश्व की संस्थापना पर:

आदम के पाप करने पर, ईश्वर ने जीवन वृक्ष पूर्ण रूप से इस विश्व के लिए बंद कर दिया। जब तक दूसरा आदम, ईसा मसीह शैतान को हराकर धरती का सिंहासन अपने हाथ में न लेता, तब तक यह जीवन–वृक्ष बंद रहेगा।

दंड के बिना कोई विधि नहीं हो सकती। मानव के पाप का दंड मृत्यु है।

आदम और उसकी सारी संतानों को मृत्यु–दंड दिया गया वह दंड तो भुगतना ही था। कोई इससे बच नहीं सकता था। शैतान ने यह सोचकर बुरी नीयत से अवश्य घूरा होगा कि उसने ईश्वर का राज्य पुनःस्थापित करने और धरती के सिंहासन से शैतान को निकाल फेंकने के ईश्वर के लक्ष्य को नाकाम कर दिया है। सचमुच आदम की सारी संतानों को मृत्यु–दंज भुगतना ही पड़ेगा क्योंकि सबने पाप किया था।

लेकिन शैतान भी शायद समझ नहीं पाया कि ईश्वर की योजना अब भी मानवता को बचाने और शैतान को अपदस्थ करने की थी।

ठीक इस विश्व की स्थापना के समय यह निश्चय किया गया था कि ईसा मसीह को ''ईश्वर के बकरे'' के रूप में, सारे मानव पापों के दंड स्वरूप बलि पर चढ़ाया जाए (प्रकाशना. 13:8)। यह एवजी लाभदायक होता है। उस समय ईश्वर द्वारा यह भी निश्चित किया गया कि आदाम की सारी संतानों को मरना है।

लेकिन मृत्यु के बाद ईश्वरीय दंड प्राप्त करने के लिए उन्हें पुनर्जीवित किया जाएगा (हिब्रू. 9:27), लेकिन आदम के समान सब को मरना है। इसलिए ईसा में वे सारी संतानों को न्याय के लिए पुनरुत्थान द्वारा मृत्यु से जीवित किया जाएगा (I कोरिंथियाइयों. 15:22)।

लेकिन व्यक्तिगत चयन से ईश्वर का पवित्र और उत्कृष्ट आध्यात्मिक चरित्र न भरे बिना और कार्यों से उसका प्रमाण दिए बिना कोई भी ईश्वरोत्पन्न नहीं हो सकता।

ईश्वर ने मानव द्वारा अपने–आपको पुनरुत्पादित करने के अपने मूल सर्वोच्च प्रयोजन के लिए 7,000 वर्षों की अवधि निश्चित की। यह प्रधान मस्तिष्क का निम्नलिखित प्रयोजन के कार्यान्वयन की प्रधान योजना थी।

लगभग 6,000 वर्षों में एक ऐसी सभ्यता विकसित हुई है जिसे हम दुनिया कहते हैं। लेकिन यह बंधक बनाई गई दुनिया है। यह शैतान की दुनिया बन गई है हालांकि लाखों लोगों को यह मानने के लिए छला गया है कि यह ईश्वर की दुनिया है। आज भी शैतान उस सिंहासन पर विराजमान है।

इस बीच में शैतान ने सारे मानवों के अंदर घुसकर उन्हें धोखा दिया। इस विश्व में उसने असंख्य बुराइयां भरीं।

लेकिन कैसे शैतान ने सारे मानवों के मन में वे सारी बुराइयां कैसे भरीं? यहां तक कि शिक्षा विज्ञान, सरकार और विस्मयकारी मानवीय उपलब्धियों के क्षेत्र के लोगों के मन में भी? यह प्रश्न बड़ा रहस्यमय है जिस किसी ने भी नहीं समझा।

शैतान–प्रधान प्रसारक

एफीसियाइयों 2:2 में, शैतान वायु की शक्ति का राजकुमार कहलाता है, वह लोगों के मन में काम करता है। मैं तब तक इसे नहीं समझ सका जब तक कि: (1) मैं यह नहीं समझ गया कि रेडियो और टेलिविजन की ध्वनि और चित्र को हवा कैसे प्रसारित करती है और (2) मैंने मानव मस्तिष्क के अंदर की मानव–आत्मा सच्चाई नहीं जान ली। जब आपका रेडियो सही रेडियो वेवलेंथ पर सेट किया जाए या टेलिविजन सेट को सही चैनेल पर सेट किया जाए तो प्रसारक का संदेश आपको स्पष्ट रूप से प्राप्त होगा। हवा की शक्ति का राजकुमार शैतान प्रसारित करता है– शब्दों में नहीं, न ही ध्वनि या चित्रों में. बल्कि आचार–व्यवहार, मनोदशा मनोवेगों द्वारा।

उदाहरण के लिए हम एजरा 1:1 मे पढ़ते हैं कि जब पेर्शिया के राजा साइरस ने दूसरे मंदिर के निर्माण के लिए यहूदियों की एक बस्ती के लोगों को येरूसलम वापस भेजने की घोषणा की, उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया गया था क्योंकि ईश्वर ने उसकी मानव–आत्मा को उकसाया– दूसरे शब्दों में कहें तो, उसके मन में मनोवेग और सुझाव डाले। और राजा ने वैसा ही किया। इसी प्रकार शैतान भी लोगों की मानव आत्मा के अंदर घुसता है और उनमें दुश्मनी, ईर्ष्या, अप्रसन्नता, असहिष्णुता, क्रोध, द्वेष, कड़ुवाहट और फूट के विचार पैदा करता है। लोगों को शैतान की जबरदस्त शक्ति की समझ ही नहीं थी। हर मानव के अंदर की मानव आत्मा अपने आप शैतान के वेव–लेंम्थ के अनुसार सेट हो गई। ऐसा लगता है, जैसे शैतान ने धरती भर की हवा को अपने स्वकेंद्रीकरण और घमंड के व्यवहार से अधिभारित कर दिया है।

और इस प्रकार का एक विश्व– एक सभ्यता– मूल आदम और हव्वा से विकसित हुई। जब ईश्वर ने जीवन का वृक्ष बंद कर दिया, वही कार्य विश्व की संस्थापना का सूचक बन गया। पर इसकी स्थापना हुई ईश्वर को नकारते हुए, ईश्वर की विधि की अवज्ञा से। यही विधि ईश्वर के जीवन का तरीका बताती है। इन छः हजार वर्षों की मानव सभ्यता में सारी बुराइयां, दुख, दर्द और वेदनाएं इसी के परिणाम स्वरूप फैलीं।

ईश्वर ने सात हजार वर्षो का एक मास्टर योजना अपने जबरदस्त प्रयोजन के निष्पादन के लिए बनाई। पहले छः हजार वर्षों तक शैतान को धरती के सिंहासन पर रहने की अनुमति दी गई। ताकि इस कालावधि में मानवता अपने अनुभव द्वारा यह कड़ुवा सबक सीखे कि ईश्वर की विधि के विरोध में शैतान का स्वकेंद्रीकरण का तरीका केवल दर्द, यातना, मनोव्यथा और मृत्यु ही दिलाएगा।

मानव जाति का संपूर्ण विश्व इस ''लेने'' को चुनने के कारण, जीवन के स्वकेंद्रित तरीके को अपनाने के कारण धोखे में आ गया।

इस अवस्था में, यह याद रखने की बात है कि जब तक ईसा इस धरती पर आए और पिता के बारे में बताया, तब तक पूरे विश्व को पिता ईश्वर के अस्तित्व का ज्ञान ही नहीं था (मात्ती. 11:27)।

संस्थापना से लेकर यह विश्व पिता ईश्वर से कट गया। पश्चाताप प्रकट करने वाले विश्वासियों को पिता ईश्वर से मिलाने के लिए ईसा आए (रोमनों. 5:10)।

सभ्यता की शुरुआत

आप संक्षेप में ध्यान दीजिए कि मानव सभ्यता कैसे विकसित हुई।

ईश्वर ने पहले मानव उत्पन्न किए जो भौतिक और मानसिक स्थिति से पूर्ण थे। भौतिक रूप से पूर्ण यह जोड़ी चिरकालिक रोगों या बीमारियों की प्रवृत्ति से बिल्कुल मुक्त थी। आंशिक रूप से इसकी पुष्टि इसी तथ्य से हो जाती है कि आदम 930 वर्ष तक जीवित था। और लगभग 2000 वर्षों में से मानव जीवनावधि आदम से नोआ तक 900 वर्ष बनती है।

इस पर विचार कीजिए! वह पहला मानव सृष्टि के प्रारंभ से लेकर आज तक की कुल अवधि के छठवें भाग तक जीवित रहा!

आदम और हव्वा के दो बच्चे कैन और अबेल और एबल थे। जब वे बड़े हुए, शायद किशोरावस्था में ही, कैन अपने भाई अबेल के विरुद्ध ईर्ष्या और शत्रुता की भावना रखने लगा। जीवन के वृक्ष के बंद होने के कारण वे पिता ईश्वर से कटे हुए थे, दूर थे। तब ''पवित्र शब्द'' (अंग्रेजी में 'प्रभु' या 'शास्वत') ने कैन से बात की और चेतावनी भी दी। पर कैन तो शैतान के अधीन आ गया था। वायु की शक्ति के राजकुमार शैतान ने कैन के मन में अप्रसन्नता, क्रोध और वैर की भावना जगा थी। केन ने अपने भाई को मार डाला। जब 'शास्वत' ने उसके भाई के बारे में पूछा तो उसने ईश्वर से झूठ बोल दिया। सबसे पहले पैदा हुआ खूनी और झूठा बनने के लिए शैतान की ओर झुका।

ईश्वर ने उसे आवारा और लापता होने का दंड दिया।

मानव परिवार के ईश्वर को नकारने, शैतान द्वारा संचालित होने के बाद भी भौतिक पदार्थों के साथ काम करने में सक्षम था। कुछ पीढियों के बाद कैन का एक बेटा वीणा, आर्गन और दूसरे संगीत के वाद्य बनाने लगा (जेनेसिस. 4:21) और दूसरा पीतल और लोहे का कारीगर बना।

ईश्वर की आध्यात्मिकता से दूर से दूर तक होते जाने के बावजूद मानवजाति ने भौतिक विकास में प्रगति कर रही थी। लेकिन यहां यह बात याद रखिए, ''प्रभु के भवन–निर्माण के सिवा, उनका निर्माण निरर्थक रहा (साम 127:1)। मैथ्यू 7:24–27 में भी देख सकते हैं कि दोष पूर्ण नींव पर गिरना लाजिमी है। जैसा कि हम जानते हैं, सभ्यता ईश्वर और उसके निर्देशन की नींव पर नहीं शैतान के धोखे और नियंत्रण के अधीन मानव के स्वावलंब पर पनपी।

नोआ से पहले मानव के विकास के बारे में बाइबिल हमें बहुत कम ही बताती। लेकिन 1,500 से 1,600 वर्षों बाद, मानव सभ्यता इतनी बुरी हो गई कि अकेले नोआ ही सदाचारी रह गया था। जनसंख्या का विस्फोट हो गया था लेकिन मानवता लगातार बुरी होती जा रही थी। नोवा के चेतावनी देने के सौ वर्ष बाद ईश्वर ने नोवा, उसकी पत्नी, उनके तीन बेटों और उनकी बहुओं, कुल आठ व्यक्तियों को छोड़ कर बाकी की मानवता को बहा ले जाने के लिए बाढ़ भेज दी।

बुराई का परिणाम

ध्यान दीजिए शैतान ने किस हद तक मानवता को बुराई की ओर प्रवृत्त कर रखा था। जेनेसिस 6:5 में देखिएः ''ईश्वर ने देखा कि धरती पर मानव की दुष्टता बहुत बड़ी है। उसके मन में उढनेवाले विचार की हर कल्पना लगातार दुष्टता की कल्पना है।'' बढ़ गई धरती पर हिंसा भरी पड़ी है। मानव के विचार, चिंतन, और योजनाएं लगातार आत्मकेंद्रित, वासनायुक्त और बुरे लक्ष्य वाली थी।

यह हिंसा इतनी विश्वव्यापी हो गई कि ईश्वर ने मानवता को बढ़ती विपत्ति और वेदना में लंबे समय तक तड़पने से बचाकर, उनसे दूर रखने का निश्चय किया।

ईश्वर ने धरती भर के प्रलय द्वारा उनके कारुणिक जीवन का अंत कर दिया। महान श्वेत सिंहासन में उनके आंख खोलते ही बिलकुल अगले पल पुनर्जीवित होने के लिए। (प्रकाशना 20:11–12)। ईसा मसीह धरती पर सदाचार, शांति और आनंद में शासन करेंगे तब उनको जीवित किया जाएगा। उस समय शैतान चला गया होगा। उनके मन तब ईश्वर के सत्य के प्रति खुल जाएंगे और उनके लिए अमर मुक्ति खुल जाएगी।

लेकिन ईश्वर ने मानव जीवन को सुरक्षित रखना चाहता था–मानवता को एक नई और् ताजा शुरूआत देना चाहता था।

इतने लाख लोगों में ईश्वर ने एक ही मानव को देखा जो ईश्वर के साथ–साथ चल रहा था। दो लोग एक साथ चल नहीं सकते जब तक वे ऐसा करने को सहमत नहीं होते। केवल नोआ ईश्वर और ईश्वर के जीवन के तरीके के साथ चलने को सहमत हुआ। ईश्वर ने सदाचार के प्रचारक के रूप में नोआ का उपयोग किया (II पीटर. 2:5)। नोआ ने 500 साल की उम्र से लेकर 600 साल की उम्र तक लगभग सौ साल तक लापरवाह विश्व को चेतावनी दी।

नोआ अपनी पीढ़ियों में एकदम 'शुद्ध' था, अपनी वंशावली और कुलपरंपरा में वह ''शुद्ध'' था (जेनेसिस 6:9)।

इसका प्रमाण उस हिब्रू शब्द में निहित है जिसका का अनुवाद ''शुद्ध'' यानी अपनी वंशावली और कुलपरंपरा में वह ''शुद्ध'' था यह अध्यात्मिक चरित्र

(जेनेसिस. 17:1) का या फिर भौतिक चरित्र (लेवेटिकस 20:21) का उल्लेख हो सकता है। इसलिए जेनेसिस 6:9 इस अनुवाद की अनुमति देती है कि नोआ या तो ''निस्पाप" थे या ''निष्कलंक" थे। संदर्भ (जेनेसिस 6:2) स्पष्ट रूप से संकेत करता है कि ''शुद्ध" का अभीप्सित अर्थ ''निष्कलंक" ही है। इसलिए जेनेसिस 6:9 का अच्छा अनुवाद यह है कि नोआ अपने समकालिनों में इकलौते सदाचारी (आध्यात्मिक चरित्र में) और ''निष्कलंक" (अपने आनुवंशिक वंशानुक्रम में) व्यक्ति थे।

प्राक्प्रलय विश्व का अंत

नोआ की पीढ़ियों की कुलपरंपरा इस अध्याय की विषय वस्तु है। उन पीढ़ियों के माध्यम से दुष्टता अत्यधिक बढ गई थी, नोआ की पीढ़ी के माध्यम से जो जलवायु संकट तक पहुंच गई थी जिसने दुनिया का अंत कर दिया।

यह सार्वत्रिक बुराई और भ्रष्टाचार क्या था? यीशु ने सार्वभौम भ्रष्ट बुराई का ''खाने, पीने, शादी करने और शादी में देने के रूप में वर्णन किया है" (मत्ती 34:38)। खाना खाना और मदिरा पीना बुरा नहीं है। शादी करना भी अपने आप में बुरा नहीं है। और खाने–पीने और शादी करने में दुरुपयोग और अतिरेक था–खाने, पीने और शादी करने के तरीके और सीमा में बुराई थी

अनुचित भोजन मदिरा का अत्यधिक सेवन, रंगरेलियां मनाना दंगा–फसाद (5:21)। करना, हिंसा आदि बुराइयां हो सकती थीं। जैसा कि जेनेसिस 6:2 में कहा गया है, ''जिस किसी को भी चुन कर पत्नी बना लेना'' भी बुराई माना गया है। वैसे उस समय अनियंत्रित और सार्वत्रिक रूप से अंतरजातीय विवाह होते थे। इतने व्यापक स्तर पर सार्वभौम रूप से कि केवल नोआ अपनी पीढ़ियों में, कुल परंपरा में– निष्कलंक और शुद्ध थे। वही मूल गोरी नस्ल के थे।

यह पर्याप्त रूप से स्पष्ट है कि नोआ के समय, धरती पर कम से कम तीन प्राथमिक या प्रमुख श्वेत, पीले और काले श्वेत। हालांकि अंतरजातीय विवाह ने कई जातिगत मिश्रण तैयार किए।

ईश्वर ने बाइबिल में विभिन्न जातियों के उद्भव का स्पष्ट वर्णन संक्षेप में प्रकट नहीं किया है। लेकिन यह स्पष्ट है कि आदम और हव्वा को गोरा बनाया गया था। ईश्वर का चुना राष्ट्र इस्राईल भी गोरों का देश था। ईसा भी गोरे थे। पर यहां एक उचित अनुमान लगाया जा सकता है कि मां हव्वा के शरीर में ऐसे बिंबाशयों का सृजन किया गया हो जिसमें पीले और काले तथा गोरे जीन रहे हों ताकि आदाम और हव्वा के कुछ गोरे बच्चों के साथ–साथ काले और पीले बच्चों को भी जन्म देते।

बाढ़ के बाद मानव जाति को जिंदा रखने के लिए ईश्वर ने जिस अकेले व्यक्ति को चुना वह अपनी नस्ल में पूरी तरह शुद्ध था – आदम तक उसके सारे पूर्वज एक ही नस्ल के थे और निस्संदेह वह गोरी नस्ल था – वह गोरी नस्ल किसी भी माने में श्रेष्ठ नहीं है।

यदि आप पालन करते हैं/और किसी पशुधन प्रदर्शनी में अपने अच्छे–अच्छे जानवरों को प्रांतीय या राष्ट्रीय प्रदर्शनी में– प्रदर्शित करने की योजना बना रहे हैं– आप पहले यह निश्चय करना चाहेंगे कि प्रदर्शनी में केवल अच्छी नस्ल के जानवर जाएं! नस्ल का मिश्रण स्वभाव बदल देता है।

ईश्वर ने कौमी विवाह रोकने के लिए कौमों को अलग रखने की मंशा से मूल रूप से राष्ट्रीय सीमाएं निश्चित कर दीं। ध्यान दीजिए, ''उच्चतम महा (ईश्वर) ने उनके राष्ट्रों की विरासत विभाजित की (जमीन या भौगोलिक सीमाओं के संबंध में), जब उसने आदाम के बच्चों को अलग कर दिया (ध्यान दीजिए अलग किया) उसने जातियों की सीमा भी तय की....'' (विधिविवरण. 32:8)।

लेकिन लोग ने अंतर जातीय विवाह चाहते थे– जब तक कि केवल एक ही जाति न रह जाती!

वह आशा आज भी मानव प्रकृति में वंशागत रूप से विद्यमान जान पड़तीहै!

नोआ अपनी पीढ़ियों में एकदम शुद्ध थे। उनकी पत्नी और तीन बच्चे भी उसी गोरी जाति के थे। पर जाफेत ने स्पष्टतः किसी पूर्वदेशी औरत से विवाह किया और हैम ने एक काली औरत से।

हम ऊपर दिए गए विवरणों के आलावा, बाद के पहले के सभ्यतागत विकास के बारे में अधिक नहीं जानते।

हमें बाढ़ से पहले के सभ्य विकास के बारे में ऊपर जो कुछ भी बताया गया है, उससे कुछ ही अधिक जानते हैं। मानव जाति को उस प्रलय से सबक लेना चाहिए था लेकिन उसने ईश्वर से नाता तोड़ लिया और शैतान के झांसे में आ गया था इसलिए उसने उससे कोई सबक नहीं लिया और आज भी नहीं ले रहा है। लेकिन एक बार फिर, ''जैसा कि नोआ के दिनों में था,'' यीशु ने एक भविष्य कथन में कहा था, जनसंख्या विस्फोट हो रहा है, और बुराइयां बढ़ रही हैं। इस बार नाभिकीय युद्ध धरती से सारी मानवता को खत्म कर देने का खतरा बनेगा। लेकिन ईश्वर से सच्चे चर्च के कुछ ''चुने लोगों'' के लिए ईश्वर विनाश को छोटा कर देगा (मत्ती 24:21–22) और इस बार ईसा मसीह राजाओं के राजा के रूप में धरती के सिंहासन पर आसीन होंगे।

नगरों का उत्पत्ति

बाढ़ के बाद की दूसरी पीढ़ी में नमरूद नाम के व्यक्ति ने लोगों को शहरों में संगठित किया। सबसे पहले बेबल की मीनार बनी और बेबिलोन नगर बसा। इसके बाद निनवे और दूसरे नगर बसे। जो बाद में नगर राज्य बन गए।

ईश्वर ने इन राष्ट्रों की सीमा तय की। विभिन्न जातियों का भौगोलिक विभाजन करना ईश्वर का लक्ष्य था।

इस अवसर पर मैं सी पॉल मेरेडिथ के शोध प्रबंध, ''शैतान्स ग्रेट डिसेप्शन'' (शैतान के महान छलावे) से कुछ अंश (पृष्ठ 14–16) उद्धृत करता हूं।

> बाढ़ के बाद धरती का हर व्यक्ति जानता था कि ईश्वर कौन है और उसने दुष्टों को क्यों डुबो दिया। वे बुराई करने से डरे– पहले... मानव... बिना नगरों के और बिना विधि के रहते थे और सभी एक ही भाषा बोलते थे....।
>
> धरती की केवल एक जाती के लोगों का यह समूह क्योंकि जल प्रलय में दूसरी सभी जातियां अरारत से जहां बड़ी नाव आकर रुकी थी, जा कर दूसरे देशों में बसना शुरू किया। ''और पूरी धरती की केवल एक *भाषा* और एक ही बोली थी। जब वे पूरब से यात्रा करके आगे बढ़ रहे थे, शिनर में उन्हें एक समतल जमीन मिली, और वे वहां बस गए (जेनेसिस 11:1–2)। यही लोग आज सुमेरियाई (मिलर का *'ऐंसिएंट हिस्टरी;* बाइबिल की रोशनी में, पृष्ठ 51), पूरब के पहाढों से होकर इयूफेरेट्स और टिग्रिस नदी की लाई मिट्टी से बने विलक्षण रूप से उपजाऊ भूभाग में पहुंचे। सिनार के इस भूभाग को अब बेबीलोन के नाम से जाना जाता हूं (जेएस ब्रेस्टेड्स ऐंसिएंट टाइम्स, पृष्ठ 107)। यहां ऐसी जमीन थी जिसमें वह जो कुछ भी चाहते प्रचुर मात्रा में पैदा कर सकते थे.....
>
> इन लोगों ने भी, आदाम और हव्वा की तरह, ईश्वर की अवहेलना की और अपने लिए परेशानियां मोल ले लीं। भूभाग उपजाऊ था। महा प्रलय से पहले सभ्यता के विनाश के का कारण वहां इनसानों के मुकाबले जंगली जानवर तेजी से बढ़ने लगे। चूंकि उनके अस्त्र आदिम किस्म के थे इसलिए वहां जान–माल का खतरा अधिक था (एक्सोडस. 23:28–29)। इसका क्या किया जा सकता था?
>
> कुश का बेटा नमरूद विशाल काय, बलशाली अश्वेत था जो आगे चलकर बहुत बड़ा शिकारी बना। उसी ने हिंसक जंगली जानवरों से लड़ने के लिए लोगों को इकट्ठा करके उन्हें एकजुट किया। वह परमेश्वर के समक्ष महन शिकारी था (जेनेसिस 10:8–9)। दूसरे शब्दों में, नमरूद अपनी ताकत के लिए हर जगह प्रसिद्ध था। उसने प्रलय के बाद जंगली जानवरों के डर से धरती के लोगों का उद्धार किया। उसकी प्रसिद्धि बढ़ने लगी। वह दुनियादारी के मामलों में नेता बना। वह महत्वाकांक्षी था।

पहला नगर–बेबिलोन

धरती पर विचरने वाले जंगली पशुओं के साथ लगातार लड़ते रहने के मुकाबले जनता की रक्षा करने का एक दूसरा अच्छा तरीका भी था। नमरूद ने घरों को मिलाकर एक नगर का निर्माण किया और नगर की चारों तरफ ऊंची दीवारें खड़ी कीं और लोगों को उसके भीतर जमा कर लिया। इस प्रकार जनता की सुरक्षा हुई और निमराड उन पर शासन कर सका। यह व्यवस्था जनता को स्वीकार्य थी क्योंकि, ''चलिए हम अपने लिए एक नगर बनाएं.....और अपना नाम कमाएं, अन्यथा हम विदेश में तितर–बितर हो जाएंगे।'' (जेन. 11:4)।

उन्होंने किले बंद शहर बनाकर न सिर्फ खुद को जंगली पशुओं से बचाया बल्कि अपने लिए एक प्राधिकार भी स्थापित किया – ''हम अपने लिए एक नाम कमाएंगें। यह बाढ़ के बाद से ईश्वर के खिलाफ खुली बगावत का इंसान का पहला काम था। नमरूद उनका नेता था। उन लोगों ने एक मीनार भी बनाई, जिसका शिखर ''स्वर्ग तक पहुंचता'' था। इतनी'' ऊंची मीनार के साथ वे अपनी मर्जी का काम कर सकते थे– उनका विचार था कि वे ईश्वर की अवज्ञा करना चाहें तो ऐसा करके उन्होंने खुद को ईश्वर की पहुंच से दूर कर लिया है। यह मानव जाति के प्राधिकार का केंद्र बनने वाला था – ईश्वर के प्रति उनकी आज्ञाकारिता की आवश्यकता को मान्यता नहीं मिलने वाली थी! शैतान की तरह वे सोच रहे थे कि अगर वे ''बादलों की ऊंचाई से ऊपर चढ़ गए'' तो वे ''उच्चतम के समान'' हो सकते हैं (इसैया. 14:14)। नमरूद के पिता. कुश का भी इस नगर और मीनार के निर्माण में काफी योगदान था (द टू बेबीलोंस. एलेक्जेंडर हिसलाप, पृष्ठ 26)।

इन लोगों की भाषा एक नहीं थी, बल्कि ये लोग तीन जातियों या परिवारों के थे – गोरे, पीले और काले। जैसे ईश्वर ने विभिन्न प्रकार के फूलों और जानवरों में विभिन्न किस्म बनाए – उदाहरणार्थ, कई किस्म के और कई रंग के गुलाब ताकि उनमें अच्छी सुंदरता आए। इसी प्रकार ईश्वर ने मानव चर्म में तीन रंग और तीन जातियां बनाईं। ईश्वर ने जातीय अंतरविवाह रोकना चाहा। पर मानव ने हमेशा ईश्वर की विधि, लक्ष्य और तरीकों का उल्लंघन करना चाहा। वे जातीय अंतरविवाह द्वारा एक ही जाति या परिवार के बनना चाहते थे। जैसा कि पहले कहा गया है, ईश्वर ने जातियों के लिए अलग–अलग सीमाएं बनाईं, भौगोलिक विभाजन भी किया, शांति और समरसता से जीने का प्रावधान किया। पर लोग समामेलित एकरूपता में रहना चाहते थे। बेबल की मीनार खड़ी करने का एक प्रयोजन था कि लोगों को एकत्रित करें और उन्हें बंट कर बिखरने से रोकें।

उन लोगों ने मीनार बनाई, ''नहीं तो इस पूरे विश्व की सतह पर हम और कहीं भी बिखर जाएंगे'' – भौगोलिक विभाजन में (जेनेसिस. 11:4)। पर ईश्वर ने उनकी मीनार का निर्माण देखा और पूछा, ''ठहरो, सारे लोग एक हैं। और उन सबकी भाषा एक है। और अब उन्होंने ऐसा करना शुरू कर दिया है और अब वे जो कुछ भी करने की करेंगे उन्हें वैसा करने से रोका नहीं जा सकेगा'' (जेन. 11:6)।

मानव जाति ने ऐसा क्या ''करने की कल्पना की''? इस बीसवीं शताब्दी का मानव वाह्य अंतरिक्ष में विचरण करता है, चांद तक गया और आया है, अति पेचीदा मशीनें आविष्कार करके उत्पन्न की हैं; कंप्यूटरीकृत उपकरण बनाएं, हृदय को प्रतिरोपित किया है, और यहां तक कि मृत पदार्थ में जान भरने की कोशिश की है। भौतिक निष्पादन के लिए मानव मन की क्षमता असीम लगती है। पर, इसकी समस्याएं भौतिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक हैं और उनके सामने, अब भी वह ईश्वर के बिना असहाय ही है।

इसलिए ईश्वर ने उनकी भाषा अस्त–व्यस्त कर दी और '' उन्हें दूर देशों में बिखेर दिया.....पूरी धरती की सतहों पर'' (जेनेसिस. 11:8)।

सी. पॉल मेरेडिथ के शोध–प्रबंध से उद्धरण जारी रखेंगे; (पृष्ठ 16–17, 25–29) जो अब अप्राप्त है।

> उसके बाद नमरूद'' बहुत शक्तिशाली बनने लगा'' और ''प्रभु के सामने वह शक्तिशाली शिकारी'' (जेनेसिस. 10:8–9 शासन के अर्थो में) बना जिसमें शासन करने का भाव भरा था (''शक्तिशाली'' हिब्रू शब्द ''गिब्बर'' उसके बाद, जिसका अर्थ है ''तानाशाह'', शक्तिशाली के लिए बाइबिल में प्रयुक्त अन्विति)। शास्वत के सामने.... शक्तिशाली बन गया। निमराड जनता पर अत्याचारी बन बैठा। उसने विधियां बनायीं। इतना मात्र नहीं, वह ''शक्तिशाली....सामने'' अमर के। (हिब्रू शब्द यहां ''पैनियम' का अनुवाद ''सामने'' हुआ है जबकि ''खिलाफ'' होना चाहिए। बाइबिल कहती है कि नमरूद ईश्वर के विरुद्ध था!....

नमरूद शक्ति बढ़ाता जा रहा था, लेकिन जनता की उपासना करने की स्वाभाविक अभिलाषा की पूर्ति होनी थी। नमरूद और उसके अनुयायी सच्चे ईश्वर के विरुद्ध थे। वे ईश्वर की स्तुति अपने ढंग से करना चाहते थे! उन्होंने ''ईश्वर की विशुद्ध महिमा को सरकने वाले (रोमन्स 1:23) सांपों और ईश्वर के बनाए दूसरे जीवों के रूप में बदल दिया– (वे लोग आत्मा के रूप में, सच्चाई में ईश्वर की उपासना करनी चाहिए थी मूर्तियों के रूप में नहीं, जॉन 4:24 और एक्सोडस. 20:4–5)। अपने नागरिक अधिकार के दम पर लोगों पर अपनी पकड़ और मजबूत करने के लिए नमरूद उन चीजों का पुरोहित बन गया लोग जिसकी पूजा करते थे, और धीरे–धीरे खुद को ईश्वर की जगह पर स्थापित कर दिया....

पर सदाचार का प्रचारक नोआ (II पीटर. 2:5) अटल रहा और उसका बेटा शेम उसका निष्ठावान समर्थक बना रहा। जब नमरूद तेजी से अपने साम्राज्य का विस्तार करता जा रहा था उस समय नोओ के प्रतिनिधि, शेम का विरोध होने लगा....। नमरूद शेम के विरोध में दुष्ट शक्तियों का प्रतिनिधि बना.....।

शेम अति वाक्पटु व्यक्ति था। कहा जाता है कि नमरूद को हराने वाले मिस्रियों के एक समूह ने उसका साथ दिया।

प्रत्यक्षतः नमरूद की मृत्यु से उसकी शुरू की हुई फर्जी पैगन उपासना मिट गई।

सेमिरामिस...

नमरूद अत्यंत महत्वाकांक्षी था। लेकिन ''स्वर्ग की भावी रानी, सेमिरामिस'' उससे भी अधिक महत्वाकांक्षी थी। (जेरेमिया. 7:18) – नमरूद.... विश्व का सबसे महान और शक्तिशाली व्यक्ति बन गया था। अब वह मर चुका था। सेमिरामिस ने सोचा कि अगर उसे दुनिया के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति से..... बड़ी हैंसियत और अधिकार प्राप्त करना है..... तो उसे अपनी शक्ति सुनिश्चित कराने के लिए..... कुछ अवश्य करना होगा।

निमरूद का साम्राज्य, जो उस समय की सबसे अधिक आबादी वाली दुनिया था, अब सेमिरामीस के अधीन आ गया था। मनरूद के इतना शक्तिशाली होने का कारण यह था कि उसने खुद को सुर्य भगवान का प्रतिनिधि साबित कर रखा था। अब सेमिरामिस को किसी भी तरह या हर तरह से दुनिया का शासन अपने हाथ में रखना था। अगर सेमिरामिस को जनता पर अपनी पकड़ बनाई रखनी थी तो उसे भी उसी धार्मिक नियंत्रण का उपयोग करना था जिसने नमरूद को इतना शक्तिशाली बनाया था। अपने जीवन में नमरूद ने नायक का सम्मान पाया था। उसकी मृत्यु के बाद, सेमिरामिस ईश्वर के रूप में उसकी उपासना कराएगी।

असल में सेमिरामिस ही मिथ्या देवताओं के उपासक विश्व के अधिकतर गैरईसाई धर्मों का संस्थापक थी। यहां तक कि तथाकथित ईसाइयों के क्रिस्मस, नववर्ष और ईस्टर जैसे त्योहार उसी की विकसित की हुई मिथ्या धार्मिक प्रणालियों का नतीजा हैं। इस विषय में और विस्तृत जानकारी के लिए पाठक अलेक्जेंडर हिस्लॉप कृत *'द टू बेबीलोन्स'* पढ़ सकते हैं।

आज, अंग्रेजी बड़ी तेजी से मुख्य अंतर राष्ट्रीय भाषा बनती जा रही है। लोग घालमेल शादियां कर रहे हैं। और एक विश्वव्यापी भाषा की ओर लौटने लगे हैं।

वर्तमान बुरी दुनिया विकास कर रही है

महा प्रलय के बाद धरती पर जो एक परिवार जीवित था, वह नोआ का परिवार था। इस परिवार में नोआ, उसकी पत्नी, उनके तीन पुत्र शेम, हैम और जाफेत तथा उनकी पत्नियां थीं उस एक परिवार से समूची मानव आबादी निकली।

बाइबिल तीन विश्वों की बात करती है – वह विश्व जो पहले प्रलय में कारण पानी में बह गया, यह वर्तमान दुष्ट विश्व और आने वाला विश्व।

महा प्रलय के पानी के भाप बन कर उड़ जाने के बाद धरती पर केवल नोआ परिवार बचा था। शेम गोरा था और उसकी पत्नी भी गोरी थी। उसने अपना परिवार अलग चलाना शुरू कर दिया। हैम ने काली औरत से विवाह किया था। उसके बच्चे भी काले थे। वह भी अपना परिवार अलग चलाने लगा। जाफेत ने पीली औरत से विवाह किया था। वह भी अलग परिवार का हो गया। उसका परिवार पीले वंश का माना गया। बाइबिल में दर्ज प्रारंभिक इतिहास में 'जाति' के बदले, 'परिवार' ही कहा गया है।

बेबल की मीनार की घटना के बांट दी ताकि वे लोग केवल अपनी नई और अलग भाषा में ही संपर्क कर सकें।

और जैसे–जैसे समय बीतता गया, परिवार बढ़ते गए और हर परिवार अपनी–अपनी अलग भाषा बोल रहा था। ईश्वर ने भौगोलिक विभाजन चाहा था, न कि जातीय एकता।

नमरूद ने कई नगरों का निर्माण किया – बेबिलोन, एरेक, अक्काड, कल्नेह, निनेवे आदि। वहां जैसे–जैसे समय बीतता गया, राष्ट्रीय सरकारों के साथ राष्ट्र बनने लगे। उनमें बेबिलोन (जो चालदिया के नाम से जाना गया), मिश्र, असीरिया आदि शामिल हैं। सेमिरामिस द्वारा चलाया गया धर्म विभिन्न देशों में अपनी–अपनी भाषा में प्रचारित होने लगा। मिश्र में नमरूद और सेमिरामिस को आइसिस और हर राष्ट्र के देवताओं के अपने–अपने नाम थे लेकिन पैगन धर्मों का सारा गोरखधंधा सेमिरामिस से विकसित हुआ।

मानवता की पीढ़ियों के आगे बढ़ने के साथ इस दुनिया की सभ्यता विकसित होती गई जैसे नमरूद द्वारा चलाई गई शासन–व्यवस्था नमरूद और सेमिरामिस द्वारा हुई धार्मिक व्यवस्था के साथ इसका प्रारंभ हुआ। आधुनिक अकादमीय शिक्षा व्यवस्था अफलातून ने प्रारंभ की, सुकरात ने उसकी शिक्षा दी। वाणिज्य, उद्योग, वित्त और बैंकिंग की पद्धतियां विकसित हुई लेकिन शैतान द्वारा प्रेरित और मानवता निर्मित इन प्रणालियों में से कोई भी पद्धति ईश्वर से उत्पन्न नहीं हुई थी। सारे कानून मानव निर्मित थे – चाहे राजाओं और तानाशाहों की आज्ञप्तियों द्वारा या नगर परिषदों, राज्य विद्यायिकाओं, राष्ट्रीय कांग्रेसों, संसदों, डायटों द्वारा किसी द्वारा बनाए हुए हों। सामाजिक प्रथाएं और गड्डमड्ड वर्तमान के सभी पहलू विकसित हुए।

इस तरह की दुनिया से, ईश्वर ने अपनी एक कौम चुनी। बल्कि एक विशेष प्रयोजन के लिए जिसे पूरा करने में वह कौम पहले नाकाम रही थी।

प्रलय के बाद का दुनिया का इतिहास संकेत करता है कि शेम कमोवेशे ईश्वर के तरीके और ज्ञान पर चलता रहा। पर अब्राहम के पहले तक कोई भी व्यक्ति, सचमुच, ईश्वर के साथ नहीं चला। अब्राहम से ईश्वर ने वे वादे किए जिस पर समूचा मोक्ष पर निर्भर करता है यहां तक कि और आर्थिक समृद्धि भी जो ब्रितानिया और संयुक्त राष्ट्र को प्राप्त हुआ है।

मानव सभ्यता का सारांश

महिमामय और अद्भुत प्रयोजन के लिए धरती पर मानवता की सृष्टि की गई थी। ईश्वर स्वयं को उत्पन्न कर रहा था। शांति और चरम संतुष्टि में परम प्रसन्न और आनंदमय होने, उत्पादक, सर्जनात्मक, और शास्वत जीवन में प्रसन्नता पूर्वक सफल होने के लिए मानव का सृजन करना ईश्वर का उद्देश्य था। इसका आशय था ईश्वर का चरमोत्कृष्ट आध्यात्मिक चरित्र – विशुद्ध रामराज। यह प्रयोजन परा होगा।

इसका मतलबल हुआ कि ईश्वर का सर्वोच्च पूर्ण आत्मिक चरित्र – पूर्ण आदर्श राज्य। यह प्रयोजन निष्पादन किया जायेगा।

पर इसके निष्पादन के लिए, मानवता को अपना निर्णय स्वयं लेना है। पूर्व सुंदर शिशु लूसिफर ने एक भिन्न कार्य विधि चुनी और वह कार्य–विधि एकदम उलटी दिशा की ओर बढ़ रही थी। आदिम मानव को या तो ईश्वर के प्रयोजन के अनुसार जीना था और वही तरीका अपनाना था या उलटी दिशा में आत्म–निर्भरता का, शैतान का तरीका अपनाना था। आदिम मानव आदम ने सही और गलत का ज्ञान अपने आप लेने का निर्णय लिया। उसने हमेशा के लिए अपना मानव परिवार मानव स्तर पर अपने ऊपर निर्भर करने का निर्णय लिया, जिसमें बुराइयां मिश्रित होंगी। महज अपने अलग तरीके के ज्ञान के लिए नहीं, आने वाली सारी समस्याओं के समाधान के लिए भी मानव पर निर्भर करने का निर्णय लिया। उसने ईश्वर से आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने से नकार दिया और आदर्श राज्य के तरीके पर जीने की शक्ति के लिए ईश्वर पर निर्भर करने से नकार दिया।

मानव ने ईश्वर के बिना आत्म–निर्भरता के अपने विश्व का निर्माण किया।

ईश्वर ने अपने प्रयोजन के निष्पादन के लिए एक प्रधान योजना बनाई। यह सात हजार वर्षों की अवधि की थी। उसने पहले छः हजार वर्षों तक शैतान को धरती के सिंहासन पर टिके रहने की अनुमति दी। ईश्वर का विचार था मानव अपना सबक सीखे, और ईश्वर का तरीका और चरित्र स्वेच्छा से स्वीकार करे।

करीब छः हजार वर्षों तक मानवता यह पाठ लिखती रही। लेकिन इस ढलते समय में भी उसने अभी उसे तक नहीं सीखा है। उसने अभी तक अपना आत्मकेंद्रित तरीका नहीं छोड़ा है और वह अपने सुख के लिए ईश्वर का तरीका स्वीकार करने को आगे नहीं आया है। ईश्वर कार्य–कारण के नियम के अपनी पूरी कीमत वसूलने की अनुमति दे रहा है। शैतान द्वारा छले गए और गुमराह किए गए मानव–समाज ने अभी तक मानव को अपनी आत्म–निर्भरता के तरीके की असफलता नहीं स्वीकार करने दी है।

आज मानव की दुनिया अपने अंतिम चरण में है। पूरी दुनिया युद्ध, हिंसा, विनाश, आतंकवाद की गिरफ्त में है। आधा विश्व आज भी अज्ञान, अशिक्षा, गरीबी में, गंदगी और दरिद्रता में जी रहा है। आधी विकसित दुनिया भी अस्वास्थ्य, बीमारी, मानसिक तनाव, डर, निराशा से ग्रस्त है। वह अपराध, शराबखोरी, नशाखोरी, विकृत और दुरुपयुक्त यौन लिप्सा, टूटते घरों, कुंठा जन्य निराशा से जर्जर है।

मानव जाति अपने जीवन के अंतिम कगार पर खड़ा है। पर अब भी, ईश्वर इस उद्धत मानवता को स्वयं बचाने के मामले में दखल नहीं देगा। जब तक मानव उस बिंदु पर आकर नहीं खड़ा हो जाता, जहां अगर ईश्वर उसकी सुरक्षा में हस्तक्षेप करने में जरा सी भी देरी करेगा तो अपने आपको स्वयं नष्ट कर लेगा, जब तक ईश्वर उसके मामले में हस्तक्षेप नहीं करेगा ईश्वर के अधीन अगले विश्व में उन्हें आने ही देगा, जब तक मानव जाति के बाकी अंश के लोग पूर्ण रूप से अपनी समस्याओं को सुलझाने में अपनी असमर्थता न स्वीकार करने या सुख और संतोष में वैशविक शांति स्थापित न हो जाए। मानव को यह समझने के लिए बाध्य करना है कि ईश्वर के बिना वह असमर्थ और व्यर्थ है।

आखिर व्यापक विनाश के अस्त्रों का अविष्कार हो चुका है और इतनी बड़ी मात्रा में उनका उत्पादन किया जा चुका है कि वे इस ग्रह, पृथ्वी के सारे जीवों को नष्ट कर सकते हैं इन अंतिम दिनों की, मानव जाति की हांफती सांस के समय ईसा ने भविष्यवाणी सुनाई कि कैसे सारी चीजों का अंत होगा। ईसा के सुसमाचार को दबाए जाने और उसकी जगह एक अलग यीशु के बारे में मानव निर्मित सुसमाचार लाए जाने के बाद उन्होंने कहा, ''ईश्वर के राज्य का यह सुसमाचार सभी राष्ट्रों में प्रमाण के रूप में दुनिया भर में प्रचारित किया जाएगा। उसके बाद अंत (इस दुनिया का) आ जाएगा।''

यह सुसमाचार अब हर देश में सुनाया जा चुका है। इसकी घोषणा के पचास वर्षों के दौरान, आणविक शक्ति इतनी विकसित है; इतिहास में पहली बार इतनी बड़ी क्षमता में इसका उत्पादन किया गया है कि धरती के हर मानव के जीवन का अंत कर सकती है। इसके बाद ईसा ने महा संकट की भविष्यवाणी की – इतने बड़े संकट के समय की कि यदि ईश्वर दखल नहीं देगा तो किसी भी मानव का जीवित बचना संभव नहीं होगा। पर अपने चर्च के वास्ते मानवता के पूर्ण विनाश के पहले ईश्वर अलौकिक रूप से दखल देगा। मानव जाति स्वीकार करेगी कि ईश्वर के बिना मानव अपर्याप्त है. इसके तुरंत बाद, ईसा मसीह बादलों के बीच अपनी सर्वोच्च शक्ति और महिमा दिखाते हुए प्रकट होंगे ताकि शैतान को उसके स्थान से हटा दें और आदर्श राज्य की ओर यह विश्व ले जाने के लिए ईश्वर की अपनी नयी सभ्यता शुरू करें (माट. 24:14, 31–41)।

शैतान के पापी विश्व के ये अंतिम दिन आ गए हैं। वर्तमान पीढ़ी से ईश्वर की आदर्श राज्य की नई सभ्यता शुरू की जाएगी।

5

इस्राईल का रहस्य

क्या कभी आपको यह बात सबसे अस्वाभाविक लगी कि महान ईश्वर ने इस्राईल कौम को अपनी सबसे पसंदीदा कौम के रूप में पैदा किया है?

इन परस्पर विरोधी तथ्यों पर विचार करें:

ईश्वर कहता है कि वह व्यक्तियों का सम्मानकर्ता नहीं है। तो क्या वह किसी कौम का सम्मानकर्ता है? क्या कोई उसका चहीता है? क्या आपने कभी अनुभव किया कि ईश्वर अपने पैगंबरों को छोड़ कर अपने चुने लोगों को भी मोक्ष प्रदान करने से इनकार करता है? कि चुनी हुई कौमों से ईश्वर ने केवल भौतिक और कौमी वादे किए हैं, क्योंकि ईश्वर की पवित्र आत्मा उनके लिए अगम्य है।

क्या कभी यह बात आपके मन में आई कि बाइबिल केवल एक कौम इस्राईल से संबंधित पुस्तक है और दूसरी कौमों का जिक्र तभी आया है जब ईस्राइली कौम उनके संपर्क में आती है?

और यहां एक और आहतकारी तथ्य प्रस्तुत है! आज की ईसाइयत पूरी तरह से अनुभव नहीं करती, यहां तक कि इसे यहूदी भी नहीं समझ सके और इतिहासकारों ने भी इसका अभिलेखन नहीं किया है और न पहचान ही सके हैं इस्राईल का उत्तरी राज्य यहूदी नहीं था। बाइबिल में पहली बार जहां यहूदी शब्द आया है वह जगह है 2 किंग्ज अध्याय 16, श्लोक 6, जहां इस्राईल कौम सीरिया से मिलकर यहूदियों के खिलाफ युद्ध कर रही थी!

इस्राईल के बारे में सभी अर्थों में विस्मयकारी राज्य एक रहस्य है जो किसी भी धर्म – ईसाइयत यहां तक कि यहूदियत के लिए भी पूरी तरह अज्ञात है!

दरअसल यह सच है कि इस्राईली कौम ईशा की पसंदीदा कौम थी। लेकिन समझें: उन्हें ईश्वर के चहेते के रूप में नहीं चुना गया था न विशेष अनुग्रह के लिए ही। उन्हें एक विशेष प्रयोजन से चुना गया था – अंततः ईश्वर के राज्य की स्थापना की पूर्व तैयारी के लिए!

यह एक उलझन कहानी है! इस अध्याय के शीर्षक, 'इस्राईल का रहस्य' के उत्तर, का सभी कौमों के लिए ईश्वर के लक्ष्य में बड़ा महत्व है! व्यक्ति इस महत्वपूर्ण ज्ञान के बिना मनुष्य के वास्तिविक लक्ष्य और उसकी अविश्वसनीय क्षमता को नहीं समझ सकता।

परम प्रधान योजना

स्रष्टा ईश्वर मनुष्य में और मनुष्य के माध्यम से स्वयं को उत्पन्न करता है! ईश्वर का चरम लोकोत्तर **लक्ष्य** विस्मयकारी ढंग से शब्दों से परे है। प्राचीन कौम इस्राईल की स्थापना उस चरम प्रधान योजना का अभिन्न अंग है।

नोआ के समय के जल प्रलय की सात पीढ़ियों बाद शास्वत को एक ऐसा व्यक्ति मिला जो उसका आज्ञापालन कर सकता था। उसका नाम अब्राहम था। वह मेसोपोटामिया के हारन में पैदा हुआ था। यह आदमी एक तरह से ईश्वर का पिता बनने वाला था। यही वह व्यक्ति था जिससे इस्राइली कौम पैदा हुई। इसी कौम से ईश्वर ने अपने पैगंबर पैदा किए। और उचित समय आने पर ईश्वर का अपना बेटा, ईसा मसीह।

भाग्य का आदमी

अब्राहम, जैसा कि उनका मूल नाम था, ईश्वर को नहीं तलाश रहे थे। बल्कि ईश्वर ने उन्हें बुलाने और परखने का फैसला किया। इस प्रचीन कुल पिता को आगे चल कर बाइबिल में निष्ठावानों का पिता कहा गया है। ईश्वर एक बहुत ही खास प्रयोजन से उन्हें बुला रहा था। वह प्रयोजन ''उनका उद्धार करना'' या ''उन्हें स्वर्ग में लाना'' नहीं था। ईश्वर उन्हें इसलिए बुला रहा था कि उसे उसमें

ईश्वर के प्रति आज्ञाकारिता और नेतृत्व की क्षमता दिख रही थी। ईश्वर उन्हें विशेष सेवा के लिए तैयार होने और अंततः ईश्वर के राज्य – कल की आने वाली दुनिया में ऊंचा पद पाने के लिए बुला रहा था। मैं अब एक पुस्तक से उद्धरण देता हूं जिसे मैंने 50 साल पहले लिखा था यूनाइटेड स्टेट्स ऐंड ब्रिटेन इन प्रोफेसी, पृष्ठ 16 से प्रारंभ करकेः

> ''इस व्यक्ति, अब्राहम को ईश्वर ने आदेश दियाः ''तुम अपने देश और अपने परिवार और अपने पिता के घर से बाहर निकलो, एक ऐसे देश में जो मैं तुम्हें दिखाऊंगा और मैं तुमसे एक महान कौन बनाऊंगा''' (प्रकाशना 12:1–2)।
>
> यहां एक व्यादेश था, जो एक शर्त था और एक वादा भी बशर्ते कि आज्ञाकारिता की शर्त पूरी की जाती। और इस तरह ईश्वर ने उसी तरह एक खास व्यक्ति, अब्राहम से कौम पैदा की जैसे उसने एक विशेष व्यक्ति से पूरी दुनिया शुरू की थी। जैसे वह दुनिया जो ईश्वर से, और ईश्वर की उपासना के आर्शीवादों और शासन से दूर छिटक गई है, एक व्यक्ति से प्रारंभ की गई थी जिसने ईश्वर के खिलाफ विद्रोह किया, और उसकी सरकार को अस्वीकार कर दिया उसी तरह ईश्वर के अपने रक्त–मांस से जन्मी कौम, जिससे ईश्वर के राज्य का पुनर्जन्म होना है, एक व्यक्ति से शुरू की गई थी जिसने बिना प्रश्न किए ईश्वर की आज्ञा का पालन लिया और उसके दैवी शासन को स्वीकार किया।
>
> क्या अब्राहम तर्क करने और कारण पूछने के लिए रुके थे? क्या उन्होंने कहा थाः '' हमें पहले इस पर तर्क कर लेना चाहिए; मैं यहां बेबीलोन में हूं दुनिया के वाणिज्य, समाज और उल्लास के केंद्र में। आप मुझे यह वचन यहीं क्यों नहीं दे सकते, जहां हर चीज सुखद और मनमोहक है? मुझे यह सब छोड़ कर उस असभ्य देश में क्यों जाना चाहिए?
>
> क्या अब्राहम ने टालमटोल की, प्रतिरोध किया, तर्क किया, बगावत की?
>
> निश्चित रूप से उन्होंने नहीं किया।
>
> उद्‌घटित ग्रंथ इसका बस इस तरह वर्णन करता हैः ''इस तरह अब्राहम चल पड़े।'' ईश्वर के साथ कोई तर्क नहीं हुआ। इस तरह की कोई मानवीय बहस नहीं हुई कि ईश्वर बिलकुल गलत है। कोई मूर्खतापूर्ण प्रश्न नहीं किए गएः ''मुझे यहां से क्यों जाना चाहिए?'' क्या मैं अपनी मर्जी का काम नहीं कर सकता?'' यह कहने के लिए भी नहीं रुके, ''ठीक है, एक रास्ता है जिसे मैं देख रहा हूं।''

''अब्राहम रवाना हो गए'' बस सीधी–सादी निर्विवाद आज्ञाकारिता!

यहां भी हम द्वैत का सिद्धांत देखते हैं। अब्राहम इस दुनिया की विकासमान संस्कृति के केंद्र में थे। याद रखें यह एक बंधक बनाई गई दुनिया थी, शैतान के तर्ज पर विकसित हो रही दुनिया। ईश्वर ने अब्राहम को अपनी कौम इस्राईल, प्राचीन विधान के कौंग्रीगेशन या चर्च का कुलपिता बनने के लिए चुना था। मानवता के माध्यम से धरती पर इस महान प्रयोजन को पूरा करने के लिए ईश्वर के समूहों, काम–काज में द्वैत का सिद्धांत अंतरगुंफित है। प्राचीन विधान के अधीन इस्राईल का भौतिक कौंग्रीगेशन हुआ था और नवविधान के अंतर्गत ईश्वर का आध्यात्मिक चर्च। शब्द जैसा कि मूलतः नवविधान के यूनानी संस्करण में लिखा है, एक्कलेसिया था जिसका अर्थ होता है बुलाए गए लोग।

चूंकि प्राचीन विधान का इस्राईल सांसारिक अग्रज, और नवविधान की तरह का चर्च था इसलिए अब ईश्वर ने इस्राईल कौम का जनक शैतान की दुनिया से बुलाया। आगे चल कर अब्राहम ने खुद को अजनबी, यात्री और तीर्थ यात्री माना। यह उनके शब्द नहीं थेः ये सभी आस्था में भरे, वादे न पाकर, लेकिन उनको काफी दूर देखा और उनसे सहमत थे, और उनका आलिंगन किया और स्वीकार किया कि वे धरती पर अजनबी थे, तीर्थ यात्री थे। क्योंकि जो इस तरह की बातें करते हैं वे स्पष्ट रूप से घोषणा करते हैं कि वे एक देश तलाश रहे हैं (एक अलग सभ्यता) और सचमुच यदि उन्हें उस देश का ध्यान रहता जहां से वे चले थे तो उन्हें शायद वहां दुबारा लौटने का अवसर मिल जाता। लेकिन अब वे एक बेहतर देश की कामना करते हैं, यानी स्वर्गिक देश कीः इसलिए ईश्वर को उनका ईश्वर कहलाने में लज्जा नहीं है। क्योंकि उसने उनके लिए एक शहर तैयार किया था'' (हिब्रू 11ः 13–16) एक बेहतर देश, एक स्वर्गिक देश तलाशने वाले, जो सारी धरती पर व्याप्त ईश्वर का राज्य होगा।

और ईश्वर ने इस मनुष्य (अब्राम) को जिसका नाम उसने बाद में बदल कर अब्राहम रखा, अपनी कौम *इस्राईल* का पिता बनाया! ईश्वर के सारे वादे अब्राहम

और उसके सभी वंशजों के लिए किए गए थे। और यदि हमें उनके बच्चों में से एक, ईसा मसीह के जरिए उत्तराधिकार में ईश्वर के राज्य में शास्वत जीवन का वादा पाना है तो हमें अब्राहम जैसा ही बनना चाहिए।

अपने विशेष रक्त–मांस से बनी कौम इस्राईल के बारे में शास्वत ने कहाः ''मैंने यह कौम अपने लिए बनाई है; वे मेरी प्रशंसा को आगे बढ़ाएंगे (इसैया 43:21)। यह भविष्यकथन अभी पूरी होना है और जल्द ही पूरा हो जाएगा!

अब्राहम से दुहरे वादे

कुछ ही लोगों ने इसे महसूस किया है लेकिन ईश्वर की योजना में लगातार एक द्वैत चलता रहता है, जिसे हम उनके प्रयोजन का अध्ययन करते हुए नीचे देखेंगे।

पहले आदम थे, भौतिक और ऐहिक; और एक ईसा मसीह हैं, दूसरे आदम, आध्यात्मिक और दैवी। पुराना प्रसंविदा है आद्यात्मिक और शास्वत। ईश्वर ने मनुष्य को नश्वर बनाया, भौतिक बनाया, धरती की मिट्टी से और मानव राज्य से। लेकिन यीशु के माध्यम से वह ईश्वरोत्पन्न होकर अमर हो सकता है।

और इसी तरह वादों के भी दो चरण थे जो ईश्वर ने अब्राहम से किए थे – पहला पूरी तरह से भौतिक और कौमी और दूसरा आध्यात्मिक और व्यक्तिगत। मसीहा और उसके माध्यम से मोक्ष्य के वादे के बारे में बाइबिल के सरसरी अध्येयताओं को अच्छी तरह मालूम है। वे जानते हैं कि ईश्वर ने अब्राहम से आध्यात्मिक वादा किया था कि ईसा मसीह उनके उत्तराधिकारी के रूप में जन्म लेंगे – और वह मोक्ष हमें ईसा मसीह के माध्यम से प्राप्त होगा। लेकिन, और यह अविश्वसनीय लगेगा फिर भी, यह सच है कि लगभग कोई नहीं जानता कि वह मोक्ष क्या है, मोक्ष संबंधी वे वादे क्या हैं। जिसे हम ईसा मसीह के माध्यम से प्राप्त करेंगे। हम उन्हें कैसे और कब प्राप्त कर सकते हैं – हालांकि वे अविश्वसनीय जान पड़ते हैं! यह सच एक दूसरे अध्याय से संबंधित है। इस अध्याय की विषयवस्तु के लिए जो चीज महत्वपूर्ण है वह यह कि ईश्वर ने अब्राहम से कुछ भौतिक–कौमी वादे भी किए थे जिन्हें लगभग पूरी तरह नजरअंदाज कर दिया गया।

अब एक बार फिर इस पर ध्यान दीजिए कि ईश्वर ने पहले अब्राहम को कैसे बुलाया, और उनके वादों की दुहरी प्रकृति पर भी। ''अब ईश्वर ने अब्राहम से कहा था, तुम अपने देश और अपने कुटुंब और अपने पिता के घर से निकलो, उस देश में जाओ जिसे मैं तुम्हें दिखाऊंगा, और मैं तुम्हें एक महान कौम बनाऊंगा और तुममें धरती के सारे परिवार ईश्वरीय अनुग्रह पाएंगे'' (जेनेसिस 12:1–3)।

दुहरे वादे पर ध्यान दें: 1) ''मैं तुमसे एक महान कौम बनाऊंगा'' – भौतिक राष्ट्रीय वादा कि उनके रक्त–मांस जन्य बेटे महान कौम होंगे – एक जाति का वादा: 2) ''...और तुममें दुनिया के सारे परिवार ईश्वरानुग्रह प्राप्त करेंगे।'' – ईश्वरानुग्रह का आध्यात्मिक वादा। यही वादा (जेनेसिस 22 : 18) में भी दुहराया गया है: '' और तुम्हारे बीज में धरती की सारी कौमें ईश्वरानुग्रह प्राप्त करेंगी।'' इस ''एक बीज'' से विशेष रूप से ईसा मसीह का उल्लेख किया गया है। जैसा कि (जेनेसिस 3:8, 16) में पक्के तौर पर पुष्टि की गई है।

यही वह जगह जहां ईसाई होने का दम भरने वाले और् उनेक आचार्य गलती करते हैं और धर्मग्रंथ संबंधी अज्ञान के शिकार हैं। वे यह नहीं देख पाते कि ईश्वर ने अब्राहम से दुहरे वादे किए थे। वे एक बीज – ईसा मसीह के माध्यम से आध्यात्मिक मोक्ष के मसीहाई वादे को मानते हैं। वे खड़े हो कर वादों पर स्त्रोत गाते हैं – इस मिथ्या भ्रांति के शिकार होकर कि मरने पर वादे के अनुसार स्वर्ग जाएंगे।

यह केंद्रीय बिंदु है। यही वह बिंदु है जहां दंभी ''ईसाई'' और उनके गुरुजन सत्य की लीक फांद जाते हैं। यही वह बिंदु है जहां से वे उस पटरी का स्विच बंद कर देते हैं जो उन्हें भविष्य कथनों की लापता मास्टर प्लान तक ले जा सकती है। वे इस तथ्य को समझने से चूक जाते हैं कि ईश्वर ने अब्राहम से जाति के सांसारिक और ईश्वरानुग्रह के आध्यात्मिक वादे किए थे।

इस महान तथ्य का खुलासा आगे चल कर।

लेकिन यह स्पष्ट तथ्य कि ''महान कौम'' का वादा अकेले जाति का उल्लेख करता है – गलतियों 3:16 के ''एक बीज'' का नहीं, जो ईसा मसीह थे, अब्राहम के बेटे और ईश्वर के बेटे। बल्कि उसका आशय प्राकृतिक रक्त–मांस के अनेक – बहुत से जन्में बीजों से है – आगे चलकर ईश्वर के अपने वादे को दुहराने से सुनिश्चित हो जाता है।

कई कौम बनने वाला है इस्राईल

ध्यान पूर्वक विचार करें! इन वादों को समझें!! ''और जब अब्राहम निन्यानबे वर्ष के थे ईश्वर उनके सामने प्रकट हुआ, और उनसे कहा, ''मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर हूं. मेरे सामने चलो और तुम परिपूर्ण हो जाओगे। और मैं अपने और तुम्हारे बीच प्रसंविदा करूंगा और तुम्हें तेजी से बढ़ाऊंगा.....तुम बहुत – सी कौमों के पिता बनोगे। तुम्हारा नाम अब्राहम होगा; क्योंकि मैंने तुम्हें कई कौमों का पिता बनाया है'' (जेनेसिस 17:1–5)।

ध्यान दें यह वादा अब्राहम की आज्ञाकारिता और शुद्ध जीवन की शर्त पर आधारित है। ध्यान दें ''महान कौम'' अब बहुत–सी कौमें बन जाती है – एक से अधिक कौम। यह ''यह एक बीज'' ईसा मसीह का परिचायक नहीं हो सकता। निम्न श्लोक इसे साबित करता है:

'' और मैं तुम्हें अत्यधिक उर्वर बनाऊंगा और मैं तुमसे कौमें बनाऊंगा 9एक से अधिक) और तुममें से राजा निकलेंगे (श्लोक 6)। ध्यान दें कि कौमें और राजा अब्राहम से उत्पन्न होंगे।

भौतिक प्रजनन – अनेक बीज, एक वंशज के अलावा जिसके माध्यम से ईसा मसीह के जरिए आध्यात्मिक जनन द्वारा बिखरे लोग अब्राहम के बच्चे बनेंगे (गलातियों 3: 29)। बिखरे हुए व्यक्तिगत ईसाई कौमों का निर्माण नहीं करते। यह सच है कि चर्च को ''उत्कृष्ट पौरोहित्य, एक पवित्र कौम (1 पीटर 2:9) कहा जाता है लेकिन ईसा का चर्च अनेक कौमों में विभाजित नहीं है।'' यह जाति की बात करता है ईश्वरीय ़अनुग्रह की नहीं।

''और मैं अपने और तुम्हारे बीच अपनी प्रसंविदा स्थापित करूंगा और तुम्हारे बाद तुम्हारे बीज को उनकी पीढ़ियों में.....'' (जेनेसिस 17:7)। ''उनकी पीढ़ियों में'' ''बीज'' बहुवचन है। '' और मैं तुम्हें और तुम्हारे बाद तुम्हारे बीज को एक ऐसा दूंगा जिसमें तुम अजनवी हो कैनन (फिलिस्तीन) का सारा देश, अनंत काल के स्वामित्व के लिए; और मैं उनका ईश्वर होऊंगा'' (श्लोक 8)।

ध्यान दें उनके ''बीज'' को देश – भौतिक स्वामित्व का वादा किया गया है जिनमें से वह ''उनके'' है, ''उसका'' नहीं। श्लोक 9 में एक बार फिर बहुवचन के सर्वनाम का प्रयोग किया गया है। ''और तुम्हारे बाद तुम्हारा बीज अपनी पीढ़ियों में।''

लेकिन अब इस वादे को ध्यानपूर्वक जांचें!

महान राष्ट्रों का भविष्य अब्राहम से किए ईश्वर के वादों पर निर्भर है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसकी जाति, रंग या नस्ल से परे मृत्यु के बाद के जीवन की आशा अब्राहम से किए गए इन वादों के आध्यात्मिक पहलू पर निर्भर है – ''एक बीज'' ईसा मसीह के माध्यम से ईश्वरीय अनुग्रह!

कितनी बड़ी कौम के लिए कितनी जमीन!

ये अनौपचारिक, प्रासंगिक, महत्वहीन वादे नहीं हैं। ये महानतम विश्वशक्तियों की स्थापना की नींव है; किसी भी व्यक्ति की आध्यात्मिक मुक्ति का आधार हैं। मनुष्यों के लिए ये विलक्षण वादे हैं। स्रष्टा द्वारा मानव जाति का भविष्य उन पर निर्भर किया गया है।

ईसा मसीह पिताओं से किए गए वादों की पुष्टि के लिए आए थे रोमन 15:8) – अब्राहम, इसाक और जैकब। यही वादे अब्राहम के बेटे इसाक और इसाक के बेटे जैकब से दुबारा किए गए थे।

430 साल बाद ईश्वर ने अपनी कौम इस्राईल को उत्पन्न किया – अब्राहम, इसाक और जैकब के वंशज जिनके नाम बदल कर ईश्वर ने इस्राईल रख दिया।

इन लोगों को मिस्र की गुलामी से निकालने और वादे के देश में ले जाने के लिए ईश्वर ने मूसा को बुलाया। मूसा ईश्वर को नहीं तलाश रहे थे. बल्कि ईश्वर ने इस विशेष समादेश को पूरा करने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए मिस्र के फराओं के राजमहल में राजकुमार के रूप में मूसा का लालन–पालन कराया। इस तरह अब एक बार फिर मूसा को नेतृत्व के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित कराने के बाद ईश्वर ने अब्राहम, इसाफ और जैकब के वंशजों को मिस्र की गुलामी से निकालने के लिए उन्हें दुनिया से बाहर बुलाया।

परस्पर जातीय विवाह का निषेध

इसलिए अब यह सवाल एक बार फिर उठता कि ईश्वर ने ''चुनिंदा लोगों के रूप में'' हिब्रू की यह विशेष कौम क्यों उत्पन्न की? क्यों, जबकि ईश्वर ने अपनी पवित्र आत्मा को उनके लिए गम्य कभी नहीं बनाया?

यहां एक बात ध्यान देने योग्य है। संभावना यह है कि वे कौमें सभी या – लगभग सभी – श्वेत जातीय नस्ल की थीं, सृजन के समय से अपरिवर्तित।

जैकब और उनके बेटों और परिवारों को जोसेफ के कहने पर मिस्र में आने के बाद गोशेन नामक जगह पर – भौगोलिक दृष्टि से मिस्रियों से अलग रखा गया था, आपस में शादी–व्याह करते हुए।

इस संबंध में पल भर के लिए अब्राहम पर वापस जाएं। उन्होंने अपने बेटे इसाक को उस समय देश में रहने वाली काली कैन्नानिट जाति में शादी करने से मना कर दिया था। उन्होंने अपने मुख्य सेवक को इसाक के लिए एक पत्नी तलाशने के लिए अपने परिवार और अपनी जाति में भेजा। अब्राहम ने कहा, ''मेरे बेटे के लिए के लिए कैन्नानिटों में से पत्नी न तलाशना जिनके बीच मैं रहता हूं'' (जेनेसिस 24:3)।

अगली पीढ़ी में जैकब ने अब्राहम के भतीजे लेबान की बेटियों जीह और रैचल से शादी की जो अब्राहम के भाई हेरान के देश में रहता था। हेरान का सारा समुदाय जहां लेबान रहता था, उसी परिवारिक वंश परंपरा का था जिसके अब्राहम थे।

लीह से जैकब के छह और रैचल से दो बेटे थे – सभी एक ही मूल जातीय नस्ल के थे, और लीह और रैचल की दासियों से दो–दो बेटे थे कुल मिला कर 12। लीह और रैचल की दासियां भी निस्संदेह शुद्ध हिब्रू नस्ल की थीं। ये 12 इस्राईल कौम के 12 कबीलों के जनक बने।

लेकिन ईश्वर ने विशेष रूप से जन्म से तैयार किया और मूसा के प्रवक्ता के रूप में उनकी सहायता करने के लिए उनके भाई आरोन को बुलाया (मूसा बड़बड़ाए)।

ईश्वर ने मिस्र के खिलाफ जो ताऊन पैदा किए उनमें वह यह दिखाने के लिए कि वे देवता नहीं थे, मिस्री देवताओं और पूजा की वस्तुओं को उनके खिलाफ मोड़ रहा था। यहां तक कि मिस्रियों के प्रति प्रेम में भी ताऊन भेजे गए थे।

अंतिम ताऊन वसंत से शुरू होने वाले ईश्वर के पवित्र कलेंडर के पहले महीने के चौदहवें दिन पास्का की बलि के बाद आया था। इस्राइली पंद्रहवें दिन की रात में मिस्र से बाहर निकल गए थे। वे लाल सागर के तट पर पहुंचे, लेकिन इसी बीच फराओ ने अपना मन बदल लिया था और अपनी सेना के साथ उनका पीछा किया। इस्राईल के बच्चे लाल सागर पर पहुंच गए थे। और उन्हें रोक दिया गया था, मानों मर गए हों। वहां कोई पुल नहीं था। दूरी इतनी अधिक थी कि औरतों–बच्चों के साथ तैर कर पार नहीं की जा सकती थी। गुस्से से भरी फराओ की सेना उनके पीछे लगी थी। वे कुछ कर भी नहीं सकते थे। वे रोक लिए गए थे असहाय! उस अवसर पर उन्हें ईस्वर पर ही भरोसा करना था!

मिस्र में ईश्वर ने सिलसिलेवार ताऊन लाकर उन्हें गुलामी से मक्ति दिलाई थी। अब ईश्वर ने सागर के पानी को पीछे मोड़ कर दोनों तरफ पानी की दीवार बनवा दी और उन दीवारों के बीच सागर की सतह पर चौड़ा रास्ता तैयार हो गया।

ईस्राइली उस रास्ते से चलकर कर पार हो गए। उन्होंने पीछे मुड़ कर देखा मिस्त्री सागर तल के रास्ते प्रवेश कर रहे हैं। जब सारे मिस्त्री सागर की दीवार के बीच के रास्ते के अंदर आ गए तो ईश्वर ने पानी को फिर से बहने की अनुमति दे दी, जिससे मिस्त्री सेना डूब गई।

टूटे वादे

नियत समय पर इस्राइलियों ने सिनाई पर्वत की तलहटी में तंबू खड़े कर दिए।

ईश्वर ने अपने धर्मतंत्रीय नियम के अंतर्गत उनकी सहमति के बिना उनके लिए उनका राष्ट्र नहीं बनाया। मूसा के माध्यम से ईश्वर ने उनके सामने अपना प्रस्ताव रखा। यदि वे उनकी सरकार के उनके नियमों का पालन करेंगे तो वह उन्हें समृद्ध कर देगा, और उन्हें सबसे धनवान और सशक्त देश बना देगा।

फिर भी ईश्वर के जन्मसिद्ध वादे अपनी प्रकृति में कौमी और भौतिक थे – उनसे आध्यात्मिक मुक्ति का कोई वादा नहीं किया गया था।

लोग राजी हो गए। इस तरह से वे ईश्वर की चहेती कौम बन गए। लेकिन क्यों?

इसे हम जानते हैंः उनसे ईश्वर प्रयोजन का ईश्वर के अंतिम राज्य की तैयारी के साथ एक निश्चित संबंध था – जब सारी धरती पर ईश्वर के राज्य की पुनर्स्थापना की जाएगी और सबके लिए आध्यात्मिक मुक्ति की पेशकश की जाएगी!

निस्संदेह, मूल सांसारिक जातीय नस्ल को अक्षुण्ण रखने का एक कारण था। लेकिन और भी बहुत कुछ था।

कौमों ने ज्ञान विकसित कर लिया था। आदम के विद्रोह के बाद मानव जाति सांसारिक और भौतिक ज्ञान की प्राप्ति तक सीमित कर दी गई थी।

लेकिन आज के शिक्षित लोगों और वैज्ञानिकों की तरह वे कह रहे थे, ''हमें पर्याप्त ज्ञान दो और हम सारी समस्याएं हल कर देंगे और सारी बहुराइयां खत्म कर देंगे – हम रामराज्य ला देंगे!''

उस समय तक मानव जाति को ईश्वर की ओर से आध्यात्मिक ज्ञान और पूर्णता नकार दी गई थी। ईश्वर ने जब उन्हें अपने कानून, अपनी तरह की सरकार, अपनी जीवन शैली का ज्ञान देने का फैसला किया! वह दुनिया के सामने साबित करने जा रहा था कि उसकी पवित्र आत्मा के बिना मानव जीवन के सच्चे तरीकों के इस तरह का ज्ञान प्राप्त करने और उसका उपयोग करने में अक्षम होता है। वह दिखाने जा रहा था कि इनसान के मन में अपनी आत्मा के साथ और ईश्वर की पवित्र आत्मा के योग के बिना आध्यात्मिक विवेक बुद्धि नहीं आ सकती। ईस्राईल कौम उस तथ्य के निदर्शन के लिए उसकी गिनी पिग है। ईश्वर ने अपनी पीढ़ियों, अपने पूर्वजों के मामले में तकरीबन एक शुद्ध, मौलिक नस्ल की कौम चुनी है। इसके अतिरिक्त उनमें अब्राहम, इसाक और जैकब (इस्राईल) के आनुवंशिक गुण भी थे।

इस तरह ईश्वर ने उन्हें अपनी कौम बनाते हुए उनके साथ एक प्रसंविदा की। उसने पत्नी, इस्राईल के साथ एक विवाह प्रशंविदा भी किया था जिसने अपने पति, ईश्वर के साथ निष्ठा का वादा किया था। यह अभी होने वाली आध्यात्मिक प्रसंविदा का भौतिक रूप था।

और इसने साबित क्या किया?

इस्राईल की आनुवांशिकता और परिवेश

यहां लगभग पूरी तरह स्पष्ट जातीय नस्ल और ईश्वर में विश्वास करने की अब्राहम, इसाक और इस्राईल की आनुवांशिकता वाली एक कौम थी। कोई मनुष्य अपने जीवन में क्या बनता है इसके लिए दो पूर्व शर्तें होती हैं: आनुवांशिकता और परिवेश। आनुवंशिकता का अर्थ होता है कि स्वास्थ्य, मेधा, और चारित्रिक गुणों के क्षेत्र में जन्म से उत्तराधिकार में क्या पाया है। परिवेशन में सारे बाहरी प्रभाव और आत्म निर्धारित प्रभाव सम्मिलित होते हैं – चाहे अच्छे हों या बुरे।

आनुवंशिकता यदि अच्छी और उच्चगुणवत्ता की हो व्यक्ति को प्रारंभ से ही लाभ की स्थिति में रख देती है। प्रेरक परिवेश, उन्नायक प्रभाव और सही आत्म प्रेरणा और भी सुधार ला सकती है। लेकिन हतोत्साहक परिवेशक, बुरे प्रभाव और पथ भ्रांत आत्मप्रेरणा उत्कृष्ट आनुवंशिकता के व्यक्ति को भी असफल और दुष्ट प्रकृति का व्यक्ति बना सकती है।

ईश्वर ने एक उन्नत आनुवंशिकता के सभी प्राकृतिक लाभों के साथ अपनी चुनिंदा कौम प्रारंभ की हालांकि वह उसे गुलामी से निकाल कर लाया गया था। ईश्वर ने उन्हें गुलामी से बाहर निकाला और उन्हें एक नया और ताजा प्रारंभ प्रदान किया। आदमी कह सकता है कि उनके पास हर चीज ईस्वर की दी हुई थी। लेकिन सवाल उठता है कि क्यों? ईश्वर ने इस्राईल कौम को इस तरह क्यों तैयार किया और उत्पन्न किया?

सोचिए, पहली बात तो यह कि ईश्वर ने मनुष्य को क्यों बनाया? ईश्वर मनुष्य के जरिए स्वयं को उत्पन्न करता है! वह एक मनुष्य में ईश्वर के अपने सच्चे पवित्र और धर्मपरायण अध्यात्मिक चरित्र का सृजन कर रहा है! और बदले में उसका प्रयोजन धरती पर ईश्वर के राज्य की पुनर्स्थापना करना है। और इसके अलावा विशाल अधूरे ब्रह्मांड के सृजन के लिए अरबों ईश्वरीय सत्वों का सृजन करना भी उसका प्रयोजन है। और उससे आगे?

आह! ईश्वर ने अभी तक उद्‌घाटित नहीं किया है कि इससे आगे उसका लक्ष्य क्या है!

पहले मनुष्य के सृजन के बाद से ईश्वर ने जो कुछ भी किया है वह ईश्वर के समग्र परम लक्ष्य की दिशा में एक प्रगतिशील कदम रहा है!

ईश्वर के राज्य के प्रकार

मानव के अभी तक के इतिहास का अंतिम लक्ष्य ईश्वर के राज्य के लिए तैयार होना है जो सारी धरती पर ईश्वर की सरकार को पुनर्स्थापित करेगा। ईश्वर का

राज्य वस्तुतः ईश्वर का उत्पन्न किया और जन्मा परिवार है, जो दरअसल, ईसा के दूसरे आगमन पर पहले पुनरुत्थान और तात्कालिक स्थांतरण से प्रकट होगा! और ईश्वर के उत्पन्न और जन्में बेटों से स्पष्ट है कि मेरा आशय उनसे नहीं है जिन्हें प्रवंचना वंश उपदेश दिया है कि हर वह व्यक्ति जो ईसा मसीह को प्राप्त करने का दावा करता है वह इसी मानव जीवन में ''दुबारा जन्म'' पा चुका है।

यह सबसे बड़ा छल है जिससे दुष्ट शैतान ने उनको (तथाकथित ईसाइयत में बहुतों को) छला है जिन्होंने मिथ्या धर्मांतरण ''स्वीकार'' किया है। हो सकता है कि उनकी मंशा नेक हो लेकिन वे छले गए हैं! और, सचमुच, छला गया व्यक्ति नहीं जानता कि वह छला गया है – हो सकता है कि वह पूरी तरह निष्ठावान हो!

लेकिन अब सोचें! प्राचीन विधान की कौम इस्राईल ईश्वर के राज्य के लिए कैसे तैयार हो रही है?

ईश्वर के राज्य में सरकार

पहला, अब्राहम अत्यंत उत्कृष्ट अर्हक क्षमता के व्यक्ति थे। निस्संदेह उन्होंने अपने बेटों इसाक और इस्राईल के साथ पुनरुत्थान और ईश्वर के राज्य में स्वयं ईसा मसीह के नीचे दूसरे स्तर का पद पाएंगे। ईश्वर का राज्य एक अध्यात्मिक राज्य होगा जिसमें चर्च और समूची पृथ्वी पर व्याप्त राज्य, दोनों शामल होंगे। ये एक टोली के रूप में संभवतः सीधे ईसा मसीह के अधीन दूसरे क्रम के अधिकारी होंगे। और चर्च और राज्य दोनों के अधिकारी होंगे।

पूरी संभावना है कि इस्राइली कौम के मूसा, जिन्हें ईश्वर ने उनके नेता और कानून दाता (हालांकि पिता ईश्वर मूल और वास्तविक कानून दाता है) के रूप में उत्पन्न किया था – पूरी संभावना है कि सहस्राब्दी के दौरान अब्राहम, इसाक,

जैकब की टोली के नीचे होंगे, लेकिन दुनिया भर की कौमी सरकारों के मुखिया होंगे।

कुल मिला कर इस्राईल कौम क्या है?

अपनी उपयुक्त आनुवंशिकता के बावजूद वे स्वयं को योग्य साबित करने में बुरी तरह नाकाम रहे। ईश्वर ने जब उनके सामने उनसे अपनी कौम के निर्माण का पेशकश की तो उन्होंने जवाब दिया, ''प्रभु ने जो भी कहा है हम वह सब करेंगे'' (एक्सोडस ग्रंथ 19:8)। लेकिन उन्होंने अपना वचन पूरी तरह तोड़ दिया और विद्रोह कर दिया। प्रभु ईश्वर के साथ उनका ''पती–पत्नी'' का नाता था। लेकिन आगे चल कर ईश्वर ने उनके बारे में कहाः ''निश्चित रूप से जिस तरह कोई पत्नी छल पूर्वक अपने पति को छोड़ देती है, उन्होंने मेरे साथ वैसा ही बर्ताव किया, हे इस्राईल के वंशजो, कहता है भगवान (जेरेमिया 3:20)।

मूसा के अधीन इस्राईल कौम एक जाति थी विकृत अल्प अंतरजातीय विवाह ने उनकी जातीय कौमियत को दूषित कर दिया था।

वाग्दत्त देश तब कैनन कहा जाता था।

उस जमीन पर जातीय आधार पर काले कन्नानिट बसे थे। लेकिन ईश्वर ने वचन देकर अब्राहम के वंशजों को यह जमीन दी थी! यह वहां बसे कन्नानिटों या दूसरी जातियों का देश नहीं था।

ईश्वर जब अपने बीस लाख से अधिक इस्राइलियों को इस तरह ले आया उसने मूसा के जरिए उन्हें समादेश दियाः ''जब तुम जोर्डन को पार करके कन्नानिटों के देश में पहुंचों; तो तुम वहां के रहने वालों को अपनी आंखों के सामने से खदेड़ देना; उनकी सारी तस्वीरें, और उनकी पिघला कर ढाली मूर्तियों को नष्ट कर देना..... और तुम उस जमीन के वासियों को बेदखल कर दोगे और उस पर रहोगे। (नंबर 33:51–53, 55)।

जातीय–कौमी–धार्मिक दृष्टि से अलग

यही समय है कि हम इसे समझें!

इस्राइली कौम ईश्वर की कौम थी। लेकिन वह सांसारिक कौम थी, अध्यात्मिक नहीं। इसके बावजूद ईश्वर ने उन्हें अपने चर्च के साथ–साथ कौमी सरकार और धर्म दिया। ईश्वर उन्हें सांसारिक दृष्टि से दूसरी कौमों से अलग रखना चाहता था– कौमी (जाती) और धार्मिक दोनों तरह से। उनके दूसरी जातियों के साथ पारस्परिक विवाह करने से दो चीजें होतीः इससे वे अंतरजन करके दूसरी जातियों को जन्म देते, और दूसरे मूर्तिपूजक धर्मों के साथ मिल जाते!

इस्राइलियों ने ईश्वर का आज्ञापालन नहीं किया!

काफी बाद में इस्राईल और जुदाह दोनों की कैद के बाद ईश्वर ने जेरूबबाबेल को उस उपनिवेश का गर्वनर बना कर उनके अधीन बेबीलोन की जुदाहिती आबादी को दूसरा मंदिर बनाने के लिए येरूशलम भेजा।

इस उपनिवेश में एजरा और नेहमिआ दो पैगंबर थे। ईश्वर के व्यादेश के खिलाफ इस उपनिवेश के लोग ने कैन्नानिटों, हित्तीतियों, पेरिजीतियो, जेबुसाइतों और दूसरी जातियों के साथ परस्पर शादियां करने लगे। ''इस तरह पवित्र बीज (जातीय दृष्टि से शुद्ध क्योंकि उनके पास पवित्र आत्मा नहीं थी) उन देशों के लोगों के साथ घुल मिल गया।....'' (एजरा 9:2)।

पैगंबर एजरा नाराज थे! वह कौंग्रीगेशन के सामने खड़े हुए और बोले, ''तुमने तोड़ा है, और इस्राईल का अतिक्रमण करने के लिए अजनवी पत्नियां ले आए हो। इसलिए खुद को देश के लोगों और अजनबी बीवियों से अलग कर लो'' (एजरा 10:10–11)

ईसा मसीह जुदाह कबीले में जन्मे थे और यह आवश्यक था कि वह मूल शुद्ध जातीय नस्ल के होते जैसे नोआ भी थे। लेकिन इसके बावजूद सिनाइ पर्वत पर इस्राईल के साथ की गई प्रसंविदा एक खास तरह की थी और नई प्रसंविदा की अग्रदूत थी। यह नवविधान के चर्च के साथ की जाएगी जो आध्यात्मिक इस्राईल और जुदाह है (जोरेमिया 31:31, हिब्रू 8:6,10)।

इस बीच किसी व्यक्ति ने, प्राचीन विधान के इस्राईल के कुछ लोगों ने ईश्वर का आज्ञापालन किया और ईश्वर के पैगंबर बन कर वे नव विधान के चर्च के आधार बन गए। चर्च पैगंबरों (प्राचीन विधान) और अग्रदूतों (नव विधान), की ठोस नीव पर बना है और स्वयं ईसा मसीह नींव के मुख्य पत्थर हैं (इफीसियाइयों 2:20)।

उनमें से शायद इलिजाह ईसा मसीह और अब्राहम इसाह और जैकब के अधीन होंगे दुनिया भर के चर्चों के मुखिया होंगे। बपतिस्मावादी जॉन एलिजाह के अधीन होंगे। ऐसे संकेत हैं कि पैगंबर डेनिएल मूसा और ईसा के अधीन सभी गैर यहूदी कौमों के मुखिया होंगे।

अपने बावजूद अपनी भूमिका निभाना

अपने बावजूद अपनी भूमिका निभाना लेकिन प्राचीन कौम इस्राईल ईश्वर के राज्य की तैयारी में क्या भूमिका निभाएगा? मैं पहले ही उल्लेख कर चुका हूं कि किस तरह इस दुनिया के बुद्धिजीवी और विद्वान मानते हैं कि पर्याप्त ज्ञान मिल जाए तो मनुष्य सारी समस्याएं हल कर सकता है।

ईश्वर ने प्राचीन इस्राईल और जुदाह को सैकड़ों वर्षों मानवीय द्वारा यह साबित करने का अवसर दिया कि सर्वश्रेष्ठ मानवता भी ईश्वर की पवित्र आत्मा के बिना मानवीय समस्याओं और बुराइयों को हल नहीं कर सकती! पिछले 25 वर्षों के दौरान मैंने योरप, एशिया, अफ्रीका, दक्षिण अमरीका की सरकारों के प्रमुखों से बात की है। मेरा मानना है कि चीन की साम्यवादी सरकार के प्रमुखों का मानना है कि धरती का नियंत्रण पाने के बाद साम्यवादी सारी समस्याएं और बुराइयां हल कर सकत हैं। लेकिन मैंने बहुत से राजाओं, बादशाहों, राष्ट्रपतियों और प्रधानमंत्रियों से व्यक्तिगत रूप से बात की है और उन सभी का मानना है कि अब समस्याओं का समाधान मानवीय क्षमता के परे हो गया है। और यह बात मैंने पीपुल्स रिपब्लिक आफ चाइना के भी बहुत से नेताओं को बताई है।

समस्याएं और बुराइयां आध्यात्मिक प्रकृति की हैं, और एक लौकिक मन ईश्वर की आत्मा के बिना आध्यात्मिक समस्याओं को पूरी तरह नहीं समझ सकता।

प्राचीन इस्राईल के अनेक दशकों और शताब्दियों ने इसे साबित कर दिखाया है। इस्राईल के समय तक ईश्वर ने मानव जीवन, मानवजाति से मानव जीवन के सही रास्तों का ज्ञान छिपा रखा था। ईश्वर ने इस्राईल को अपने लिखित कानून और विवेक के साथ–साथ अपने आध्यात्मिक कानून दिए। लेकिन वे उत्कृष्ट ईश्वर की पवित्र आत्मा के बिना राष्ट्र की समस्याएं हल नहीं करते थे।

ईश्वर कह सकता था। ''मैं ईश्वर हूं। इसके लिए मेरा वचन लो।'' लेकिन ईश्वर ने इस्राईल के जरिए यह प्रमाण दिया कि पवित्र आत्मा के बिना मानव असहाय है! उनके पास उनके सामने प्रकट होने के लिए ईश्वर था लेकिन उसकी पवित्र आत्मा नहीं थी।

इस विषय पर बल देने की अनुमति दें। जब पहले मनुष्य आदम ने जीवन के वृक्ष को अस्वीकार कर दिया और अच्छे–बुरे का ज्ञान अपने ऊपर ले लिया, उसने अपनी मानवीय आत्मा के स्तर पर अच्छा करने की अपनी शक्ति सीमित कर ली। मानव प्रकृति में अच्छाई भी है और बुराई भी। यदि आदम ने जीवन के वृक्ष को स्वीकार किया होता तो ईश्वर की आत्मा उनकी आत्मा से जुड़ जाती और ईश्वर के बेटे के रूप में उन्हें ईश्वर से जोड़ देती। पवित्र आत्मा का आशय अच्छे के आध्यात्मिक ज्ञान से अधिक था। कानून (अच्छाई) को सुनने वाले नहीं बल्कि कानून को करने वाले तर्कसंगत हैं। (रोमन 2:43)। प्रेम कानून को परिपूर्ण करता है लेकिन मानवीय प्रेम नहीं। इसके लिए ईश्वर के प्रेम की आवश्यकता होती है.......बाहर से पवित्र (आत्मा) द्वारा हमारे दिलों में भरा जाने वाला प्रेम (रोमन 5:5)।

ईश्वर ने इस्राईल कौम को अपना कानून उद्घाटित किया। इस कौम का एक उद्देश्य मानवीय अनुभव से यह साबित करना था कि मनुष्य के अंदर ईश्वर की आत्मा न हो तो वह धर्मपरायण नहीं हो सकता।

इसलिए इस बिंदु पर आइए इस कौम और दुनिया भर की गैर यहूदी कौमों के इतिहास पर एक सरसरी नजर डाली जाए।

एक सबसे महत्वपूर्ण घोषणा और वादा इस्राइली जनता से किया गया था, जैसा कि लेविटिकस 26 में अभिलिखित है। मैं एक बार फिर अपनी पुस्तक द यूनाइटेड स्टेट्स ऐंड ब्रिटेन में इन प्रोफेसी (भविष्य कथन में संयुक्त राज्य और ब्रिटेन) के पृष्ठ 110 के प्रारंभ से उद्धरण दे रहा हूं।

मूलभूत भविष्य कथन

इस केंद्रीय भविष्यकथन में ईश्वर ने मूसा के दिनों के लोगों के लिए सशर्त जन्म सिद्ध अधिकार के वादे की पुष्टि की है! इफ्रेम और मनासेह की जन्मसिद्ध अधिकार की कौमें तब दूसरी कौमों के साथ एक कौम के रूप में थीं। ईश्वर के नियमों का पालन करने पर न केवल ईफ्रेम और मनासेह को विशाल राष्ट्रीय संपदा और अनुग्रह मिलता बल्कि समूची कौम स्वतः उस समय उसमें सहभागी हो सकती थी।

ध्यान से देखें कि दस समादेशों में से दो का उल्लेख बलपूर्वक किया गया है। ये परीक्षण के मुख्य ईश्वरीय आदेश थे! एक) आज्ञाकारिता, और ईश्वर में आस्था और उसके प्रति निष्ठा के ईश्वरीय आदेश दो) ईश्वर ने कहाः तुम कोई मूर्ति या उत्कीर्ण छवियां नहीं बनाओगे....... उसके सामने झुकने के लिए। क्योंकि मैं तुम्हारा मालिक, तुम्हारा ईश्वर हूं, तुम मेरे सैबथ का पालन करोगे (श्लोक 1–2)।

एक शर्त थी – उनके समय में इस जन्मसिद्ध विलक्षण वादे की पूर्णता के लिए एक बड़ा ''यदि'' था! ईश्वर ने कहाः यदि तुम मेरे लिखित कानूनों पर चले और मेरे आदेशों का पालन किया तो मैं नियत समय पर तुम्हें बारिश दूंगा, और धरती अपनी उपज देगी.......'' (श्लोक 3–4)। सारी संपदा धरती से निकलती है। वे पूरे साल जोरदार फसलें काटेंगे, एक के बाद दूसरी। श्लोक 6 और मैं देश में शांति प्रदान करुंगा....... और तुम्हें कोई डराएगा नहीं: और न तुम्हारे देश से होकर तलवार ही गुजरेंगी (यानी, युद्ध नहीं होगा)।'' कैसा आर्शीवाद है! कौन से देश में आक्रमण की आशंका के बिना हमेशा शांति रहती है? दरअसल, इस दुनिया में सभी देशों के दुश्मन हैं। यदि दुश्मन देश हमला कर दे तो: श्लोक 7–8 ''और तुम अपने दुश्मन का पीछा करोगे और वे तलवार के जोर से तुम्हारे आगे आ गिरेंगे।

और तुममें से पांच सौ को खदेड़ देंगे और तुम्हारे सौ आदमी दूसरों के दस हजार को भगा देंगे....'' चूंकि इस दुनिया में बहुत से देश हमेशा आक्रामक रहे हैं इसलिए इस्राईल पर हमला हो सकता था। सैन्य उत्कृष्टता वाला सभी हमलावरों को परास्त कर देने वाला कोई राष्ट्र जल्द ही धरती का प्रभावी सबसे शक्तिशाली राष्ट्र बन जाएगा खास कर तब जबकि उसे पास संसाधन हों और उसकी धरती में विशाल संपदा हो। श्लोक 9 ''क्योंकि मैं तुम्हारा सम्मान करूंगा, और तुम्हें उर्वर बनाऊंगा और तुम्हारे साथ अपनी प्रसंविदा करूंगा।''

महत्वपूर्ण बड़ा यदि

लेकिन यदि शर्तें पूरी नहीं होती तो यहां है उसका विकल्प ''........यदि तुम मुझे नहीं सुनोगे, और इस सभी आदेशों का पालन नहीं करोगे तब भी मैं तुम्हारे लिए यह करूंगा, मैं तुम्हारे ऊपर आतंक, यक्ष्मा, डेंगू (बुखार) लाउंगा, तुम्हारी आंखें नष्ट कर दूंगा और दिल का कष्ट (संशोधित मानव संस्करणः आखें नष्ट कर दूंगा और जीवन को दुःखमय कर दूंगा) और तुम जो बीज बोओगे वह व्यर्थ चला जाएगा क्योंकि तुम्हारे दुश्मन उसे खा जाएंगे। और मैं तुमसे मुंह मोड़ लूंगा और तुम अपने दुश्मनों के आगे काट दिए जाओगे। जो तुमसे नफरत करते हैं, तुम पर राज करेंगे........'' (श्लोक 14–17)। उन पर हमला होगा और परास्त कर दिए जाएंगे और एक बार फिर गुलाम हो जाएंगे जैसे वे ईश्वर द्वारा आजाद किए जाने से पहले मिस्र में थे।

भविष्य कथन के सात समय

अब लेविटिकस 26 में पढ़ना जारी रखें: और यदि तुम फिर भी मेरी बात नहीं सुनोगे तो मैं तुम्हें अब तुम्हारे पापों के लिए सात बार अधिक दंड़ित करूंगा'' (श्लोक 18).......

अब जब हम इस कथन पर आते हैं ''तब मैं तुम्हें तुम्हारे पापों के लिए सात बार अधिक दंडित करूंगा, लेविटिकस 26 में, इस वाक्य की शब्दावली और वास्तविक पूर्णता के तथ्य से यह स्पष्ट है कि यह सात भविष्य सूचक सात ''समयों'' या वर्षों की बात करता है। और ''एक दिन के लिए एक साल'' के सिद्धांत पर यह सात 360 दिन–वर्ष–कुल मिला कर 2,520 दिन हो जाता है। और जब प्रत्येक दिन दंड का एक साल होता है....... तो दंड 2,520 दिन के लिए वाग्दत कृपाओं को रोकना, वापस ले लेना बन जाता है! जो हुआ वस्तुतः उसका कारण यही था।

वह राष्ट्रीय दंड – राष्ट्रीय समृद्धि और वर्चस्व के जनसिद्ध वादों का नकार सिर्फ ईफ्रेम और मनासे के नेतृत्व वाले इस्राईल के घर् पर लागू होता था। ये वादे 1800 से 1804 के बीच कैसे पूरे हो गए यह मानव इतिहास में बाइबिल के भविष्य कथन के पूरा होने का विस्मकारी उदाहरण है। यह उपलब्धि हमारी निःशुल्क पुस्तिका द यूनाइटेड स्टेट्स ऐंड अमेरिका इन प्रोफेसी (भविष्यावणी में संयुक्त राज्य अमरीका और ब्रितानिया) में चरणबद्ध ढंग से स्पष्ट रूप से दर्शायी गयी है।

इस कौम इस्राईल ने ईश्वर की आज्ञा का पालन करने का वादा किया था। जब मूसा शास्वत सिनाइ पर्वत पर थे और आगे के निर्देश सुन रहे थे, लोगों ने ईश्वर की जगह पूजा करने के लिए गला कर एक सुनहरा बछड़ा ढाला। उनके असंतोष व्यक्त करने, आस्था के अभाव और अनाज्ञाकरिता के कारण ईश्वर ने उन्हें 40 साल तक उस देश में घुसने की अनुमति नहीं दी जिसका उनसे वादा किया था।

40 साल के अंत में मूसा का देहांत हो गया है। इस्राइलियों को जोशुआ के नेतृत्व में जोर्डन नदी पार कर उस देश में ले जाया गया, उन्हें जो देश देने का वादा किया गया था। जोशुआ के जीवनकाल में ईश्वर की आज्ञा का उन्होंने पूरी तरह नहीं, कमोबेश पालन किया। जोशुआ की मृत्यु के बाद हर आदमी अपनी मनमानी करने लगा। ईश्वर की अवहेलना करने के कारण थे लोग आस–पास सजाओ के बंदी बन जाते। तब वे शास्वत से फरियाद करते और वह उन्हें मुक्त कराने के लिए एक नेता भेजता। यह प्रक्रिया बार–बार दुहराई गई।

इस्राईल ने मानव राजा की मांग की

कुछ पीढ़ियों के बाद ईश्वर ने उनका नेतृत्व कराने और उन पर शासन करने के लिए एक पैगंबर भेजा, पैगंबर सैमुअल। लेकिन नियत समय में जैसे दूसरे देश शसित थे उसी तरह लोगों ने शासन करने के लिए मानव राजा की मांग की। ईश्वर ने सैमुअल से कहा उन्होंने तुम्हें नहीं मुझे अस्वीकार किया है। सैमुअल ने केवल ईश्वर के सेवक के रूप में राज किया था जबकि वहां ईश्वर का दैवी शासन था।

ईश्वर ने उन्हें वह दिया जिसकी वह कामना करते थे, सम्राट साल, एक ऊंचा कद्दावर नेता। लेकिन साल ने ईश्वर की अवज्ञा की और शास्वत ईश्वर ने उन्हें हटा कर डेविड को राजा बना दिया। लेकिन हर बार वह प्रायश्चित करते और पाप से दूर हो जाते थे। डेविड व्यक्तिगत रूप से निस्पाप व्यक्ति नहीं थे। डेविड ईश्वर के ''अपने हृदय के अनुयाई व्यक्ति'' बन गए। उन्होंने बाइबिल में सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ, साम लिखा। ईश्वर ने डेविड के साथ एक बिलाशर्त, अटूट प्रसंविदा की, इस आश्वासन के साथ कि इस्राईल पर राज कर रहा उनका वंश चिरकाल तक अखंड़ित रहेगा। अंत में ईश्वर के नियत समय पर अपने पुनरागमन पर उस सिंहासन पर ईसा मसीह आसीन हो जाएंगे।

दो कौमों में बंटा इस्राईल

डेविड का बेटा सोलोमन कभी हुए किसी व्यक्ति (ईसा मसीह को छोड़ कर) सबसे बुद्धिमान हुआ। लेकिन उसने अपनी जनता पर बहुत अधिक कर लगाए और जब वह मरा तो उसका बेटा रीहोबोम राजा बना। लोगों ने रीहोबोम को अल्टीमेथम देते हुए उसके पास एक प्रतिनिधि मंडल भेजा। यदि वे उनके कर कम कर देगा तो वे उसकी सेवा करेंगे अन्यथा वे राजा के रूप में उसे अस्वीकार कर देंगे। अपने सलाहकारों में से अपेक्षाकृत युवा लोगों की सलाह पर रीहोबोम ने लोगों से कहा कि वह उन पर और भी अधिक कर लगा देगा।

उसके बाद लोगों ने डेविड़ के शाही महल के खिलाफ फैसला किया। उन्होंने जेरोबोम नाम के एक व्यक्ति को राजा नामजद किया जो राजा सोलोमन के अधीन ऐसे पद पर आसीन था जिसे आज हम प्रधानमंत्री कहेंगे। चूंकि रीहोबोम येरूशलम की गद्दी पर आसीन था लोगों ने येरूशलम से थोड़ी दूर उत्तर दिशा में एक नई राजधानी चुनी। (परवर्ती काल के एक राजा ओमरी के अधीन उन्होंने समारिया में एक नई उत्तरी राजधानी बनाई।)

उसके बाद जुदाह और बेंजामिन कौमों ने रीहोबोम का वफादार रहने का निश्चय किया। इसके फलस्वरूप इस्राईल के बागी कबीले उससे अलग हो गए और वे जुदाह की कौम बन गए। गद्दीनसीन होने के बाद जेरोबोम ने लेवितियाइयों को पुरोहिताई से हटा दिया।

उसे डर था कि वे जनता का दिल फिर से रेहोबोम की ओर फेर सकते हैं और उसे अपनी नई गद्दी छोड़नी पड़ सकती है। उसने पवित्र त्योहारों को सात महीने से बदल कर आठ महीने का कर दिया। उसने सातवें दिन के सैवथ को बदल कर रविवार सप्ताह का पहला दिन कर दिया। सैवथ ईश्वर द्वारा अपने और इस्राईल के बीच एक शास्वत, कभी न खत्म होने वाली संविदा बनाया गया था, जिससे वे दूसरी कौमों से अलग ईश्वर की कौम इस्राईल के रूप में पहचाने जा सकेंगे (एक्सोडस. 31:12–18) और जो उन्हें हर हफ्ते याद दिलाएगा कि वह उनका शास्वत स्रष्टा है। क्योंकि छह दिन में ईश्वर ने धरती का नवीनीकरण या पुनःसृजन किया था और सृष्टि ईश्वर का प्रमाण है।

दस लुप्त कबीले

इस तरह इस्राईल के लोग दस लुप्त कबीलों के नाम से जाने गए। उन्होंने उस प्रसंविदा को खो दिया था जो इस्राईल के रूप में उनकी पहचान का चिह्न था। उन्होंने ईश्वर, अपने स्रष्टा का ज्ञान खो दिया था। उन्होंने जल्द ही हिब्रू भाषा भी खोदी।

19 राजाओं और सात राजवंशों के दौरान दस कबीलों वाला इस्राईल का राज्य पाप में लिप्त रहा। 721 से 718 वर्ष ईसा पूर्व में एक युद्ध में इस्राईल के राजभवन को असीरिया ने जीत लिया था। उन्हें उनके घरों, खेतों और गांवों से निकाल कर बंदियों की तरह कैस्पियन सागर के दक्षिणी तट पर स्थित असीरिया ले जाया गया।

सौ साल के भीतर वे वहां से चल कर उत्तर–पश्चिम में चले गए और दस लुप्त जातियों के नाम से जाने गए। आमतौर पर सारी दुनिया ने गलती से यही समझा कि सारे इस्राइली यहूदी थे। लेकिन बाइबिल में यहूदी शब्द केवल जुदाह, बेंजामिन और लेवितियाइयों के लिए प्रयुक्त हुआ है।

लेवितियाई उस समय जुदाह राज्य में शामिल हुए थे जब जेरोबोम ने उन्हें निष्कासित कर दिया था।

2,520 वर्षों का दंड

इस्राईल की कैद –721 से 718 ईसा पूर्व के दौरान इस्राइल कौम ने लेविटिकस 26 में वर्णित 2,520 वर्ष के दंड में वर्ष प्रवेश किया। इसी अवधि में अब्राहम से राष्ट्रीय संपत्ति, समृद्धि और वर्चस्व का किया गया वादा स्थगित कर दिया गया। यह अवधि 1800 से 1804 तक चली जब राष्ट्रीय श्रेष्ठता और वर्चस्व उनका होने वाला था। यह होना ही था क्योंकि ईश्वर ने अब्राहम से इसे बिलाशर्त देने का वादा किया था।

उन्होंने अंततः 1800 के साल से प्रारंभ करके अब्राहम को दिए ईश्वर के वादे का राष्ट्रीय वर्चस्व और समृद्धि कैसे हासिल की, इसका विवरण *यूनाइटेड स्टेट्स ऐंड ब्रिटेन इन प्रोफेसी* में दिया गया है।

इस बीच जुदाह के राज्य के यहूदियों को बेबिलोन के सम्राट नेबुचेड्नेजर ने 585 ईसा पूर्व में जीत लिया। बेबिलोन ले जाए गए यहूदी बंदियों में एक प्रतिभाशाली युवक था पैगंबर डेनियल, जिसने बाइबिल में अपने नाम से एक अध्याय लिखा।

ईश्वर ने पैगंबर डेनियल को शास्वत और सम्राट नेबुचेड्नेजर के बीच मध्यस्थ के रूप में इस्तेमाल किया। इस महान गैर यहूदी सम्राट ने कई कौमों को एक सरकार के अधीन एकजुट करके दुनिया के पहले साम्राज्य का गठन किया था।

ईश्वर ने डेनियल का उपयोग बेबीलोन के सम्राट को यह जताने के लिए किया कि स्रष्टा ईश्वर सारी दुनिया पर राज करता है। और यह भी कि स्रष्टा ईश्वर सारी दुनिया पर राज करता है। और यह भी कि सम्राट नेबुचेड्नेजर इसलिए गद्दी पर विराजमान है कि ईश्वर ऐसा चाहता है। वस्तुतः ईश्वर इस गैर यहूदी सम्राट को अपने अधीन आने और ईश्वरीय अनुग्रह पाने का अवसर दे रहा था।

अध्याय 2 में डेनियल के भविष्य कथन में नेबुचेड्नेजर के चेल्डियाई साम्राज्य, उसके बाद आए फारसी साम्राज्य, और फिर कालांतर में यूनानी मेसोडोनियाई साम्राज्य, रोमन साम्राज्य और मानवीय सरकारों की सारी व्यवस्था के ध्वस्त हो जाने और उनकी जगह पर राजाओं के राजा के रूप में ईसा मसीह के नेतृत्व में ईश्वर के राज्य के उनकी जगह लेने का विस्मयकारी चित्र उकेरा गया है।

गैर यहूदी दुनिया की सरकार

डेनियल 7, और प्रकाशनी 13 और 17 की भविष्यवाणियां भी यही कहती हैं।

दरअसल हालांकि नेबुचेड्नेजर ने ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार किया लेकिन उसने उसके आदेशों का पालन कभी नहीं किया। इसी बीच ईश्वर ने दुनिया की दूसरी कौमों के सर से अपने हाथ उठा लिए।

मेबुनेड्नेजर के चेल्डियाई साम्राज्य के बाद फारसी साम्राज्य आया। जुदाह की कैद और सोलोमन के बनवाए ईश्वर के मंदिर के ध्वंस के 70 साल बाद ईश्वर ने दूसरे मंदिर के निर्माण के लिए बंदी यहूदियों की एक कालोनी को येरूसलम भेजने की बात फारस के राजा साइप्रस के मन में डाली।

इस कालोनी का नेतृत्व गवर्नर करता था।

पैगंबर एजरा और नेहमिया भी येरूशल भेजी गई इस कालोनी में शामिल हो गए। जेरूब्बाबेल ने दूसरे मंदिर का निर्माण किया जिसमें यहूदी कोई कांच सौ साल बाद आए। रोमन यीशु के जन्म से पहले ही सत्ता में आ गए थे। यीशु के जन्म से ठीक पहले राजा हेरोद ने जो यहूदियों पर राज करता था और रोमनों की सेवा करता था, मंदिर को नया प्ररूप दिया और उसका विस्तार किया।

यहूदियों की यह कालोनी ईसा मसीह से लगभग 500 साल पहले येरूशलम भेजी गई थी और जुदाह के क्षेत्र तक फैल गई थी। इस्राईल के राज्य का कोई भी व्यक्ति इस कालोनी में वापस येरूशलम नहीं गया था। वे उत्तर–पश्चिम से होकर पश्चिम की तरफ चले गए थे और अपनी हिब्रू भाषा भी खो चुके थे। यहां तक कि अपनी पहचान का ज्ञान भी। दुनिया ने उन्हें दस लुप्त कबीलें कहा। उनके बारे में विस्तार से चर्चा बाद में।

इन्हीं 500 वर्षों के दौरान ईश्वर ने जुदाह में अपने तथा–कथित छोटे पैगंबर भेजे। इसी अवधि में यीशु के जीवन काल में यहूदी रब्बियों ने मूसा के प्रारंभ किए धर्म के कुछ बिंदुओं को बदल कर गैर यहूदियों में यहूदी धर्म की स्थापना की। उनके प्रकट होने का मंच तैयार हो चुका था।

अब इस्राइल के दस कबीले के राज्य पर वापस चला जाए। जैसा कि ऊपर कहा गया है, जुदाह की कैद से पहले वे उत्तर–पश्चिम से हो कर पश्चिम की ओर चले गए। असीरियाई मध्य योरप में बसे और जर्मन निस्संदेह आंशिक रूप से प्राचीन असीरियाइयों के वंशज हैं।

बहरहाल, तथाकथित दस लुप्त कबीले, इस्राईल का राज्य पश्चिमी योरप और ब्रितानिया में जारी रहे. आज हम विभिन्न कबीलाई पहचानों के मामले में सकारात्मक नहीं हो सकते लेकिन फ्रांस या शायद उत्तरी फ्रांसीसी रूबेन के कबीले हैं। इफ्रैम और मनासेह ब्रितानवी द्वीपों पर यात्राएं करते रहे। वे उपनिवेश निर्माता कौम बने और भविष्यवाणी के अनुसार वे अपना पहला उपनिवेश खोने वाले थे।

जोसेफ के बेटों को इस्राईल नाम दिया गया

मरणासन्न जैकब ने, जिनका नाम बदल करके इस्राईल रख दिया गया था, जोसफ के दो बेटों, इफ्रैम और मनासेह को जन्मसिद्ध आर्शीवाद प्रदान किया, हालांकि वह अंधे थे इसलिए अपने सामने खड़े लड़कों को देख नहीं सके, अपने हाथ फैलाए, ''उन्होंने सावधानी से अपना दायां हाथ फैलाया और उसे इफ्रैम के सिर पर रख दिया जो छोटा था, और अपना बायां हाथ मनासेह के सिर पर रखा; क्योंकि मनासेह पैलॉठी का बेटा था। और उसने जोसफ को आर्शीवाद दिया और कहा, ईश्वर जिनके आगे मेरे पूर्वज अब्राहम और इसाक चले–फिर थे, ईश्वर जिसने मुझे सारी जिंदगी, आज के दिन तक मेरा मरण–पोषण किया और वह देवदूत जिसने मुझे सभी बुराइयों से बचाया, बच्चों को आर्शीवाद दें; और मेरे पूर्वजों अब्राहम, और इसाक के नाम पर उनका नामकरण होने दें। और धरती पर उन्हें खूब फलने–फूलने दें।'' (जेनेसिस 48: 14–16)।

द यूनाइटे स्टेट्स ऐंड ब्रिटेन इन प्रोफेसी से जारीः

> बचन में दिए गए इस बाहुल्य में कौन विकसित हुए? किनके वंशज वह असंख्य बीज बने जिनकी संख्या अरबों में होगी? ध्यान दें यहूदियों के पिता जुदाह नहीं; बल्कि इक्रेम और मनासेह थे! चर्च के नेताओं छात्रों की आंखें धर्मलेख के इस स्पष्ट सत्य की ओर से अंधी क्यों हो गई? ध्यान दें, इस्राईल ने यह आर्शीवाद केवल एक नहीं, दोनों को प्रदान किया था – ''लड़कों को आर्शीवाद दें'', उन्होंने कहा। यह आर्शीवाद दोनों पर साझे में गया। ''मेरे नाम पर उनका नाम पड़ने दें। उनका नाम इस्राईल था। इसलिए वह इन लड़कों के वंशज ही थे जिनका नाम ईस्राईल पड़ा, जुदाह या यहूदियों के वंशजों का नहीं। यह कितना स्पष्ट है कि इस्राईल नाम इफ्रैम और मनासेह रूप से चस्पा होना था!
>
> एक आश्चर्यजनक लेकिन स्पष्ट रूप से प्रभावित तथ्य, बिलकुल आपकी आंखों के सामने! और याद रखें कि आपके समझने के लिए इस धर्मलेख को किसी ''व्याख्या'' या विशेष अर्थ या ''गुप्त प्रतीकात्मकता'' की आवश्यकता नहीं है। यहां स्पष्ट, सादा कथन है कि जैकब का नाम, जिसे बदल कर इस्राईल रुख दिया गया था, ईफ्रेम और मनासेह के लोगों का अधिकार और संपत्ति, उनका लेबल बनने वाला था!
>
> तो फिर आपकी बाइबिल के अनुसार आज के असली इस्राईल (जातीय और कौमी दृष्टि से) कौन है?
>
> इफ्रेम और मनासेह!
>
> इफ्रेम और मनासेह दोनों को एक साथ इस्राईल के नाम पर अधिकार मिला था। यह उनके वंशजों का कौमी नाम बनने वाला था। और उनके वंशज कभी यहूदी नहीं थे! इस तथ्य को दृढ़ता से अपने नव में बैठा लें!
>
> इस तरह निष्कर्ष निकलता है कि ''इस्राईल'' या ''जैकब'' से संबंधित बहुत से भविष्य कथन यहूदियों का या उन कौमों में से किसी कौम का उल्लेख नहीं करते जो आज इस्राईल के दूसरे कबीलों के वंशज हैं। लेकिन इसे अच्छी तरह ध्यान में रखें! वस्तुतः ऐसे पादरियों, ब्रह्मविज्ञानियों, या बाइबिल के कथित विद्वानों में से बिरले ही हैं जो इस तथ्य को जानते हैं। बहुत–से लोग इसे स्वीकार करने से भी इनकार कर देते हैं!

दोनों लड़कों, इफ्रेम और मनासेह, के वंशज प्रतिज्ञात बाहुल्य राष्ट्र और राष्ट्र मंडलों में बढ़ने वाले थे। ये कौमी आर्शीवाद उन पर संयुक्त रूप से बरसाए गए हैं। ये सामूहिक आर्शीवाद थे जो बच्चों को एक साथ मिले थे लेकिन दूसरे कबीलों को नहीं मिले थे!

जैकब ने हाथ फैलाए

लेकिन इस मौके पर जोसफ ने गौर किया कि उनका दायां हाथ पैलोठी के लड़के के
सिर पर नहीं है। उन्होंने उसे हटाने के प्रयास किए।

''ऐसा नहीं, मेरे पिता'', जोसफ ने कहा, ''क्योंकि यह पैलोठी का बेटा है, इसलिए अपना हाथ उसके सिर पर रखें। और उसके पिता ने मना कर दिया और कहा, मैं जानता हूं मेरे बटे; वह (मनासेह) भी एक कौम बनेगा और वह भी महान होगा लेकिन उसका छोटा भाई उससे महान होगा और उसका बीज बहुलता में बढ़ेगा, (या समूह) राष्ट्रों का समूह होगा। और उन्होंने उस दिन यह कहते हुए उन्हें आर्शीवाद दिया कि तुममें इस्राईल धन्य होगा, यह कहते हुए कि ईश्वर ने तुम्हें इफ्रेम और मनासेह के रूप में बनया है और उन्होंने इफ्रेम को मनासेह के आगे कर दिया'' (जेनेसिस 48:18–20)। यहां वादे सामूहिक, संयुक्त रूप से अधिकृत नहीं है, जेकब अब उनमें से दोनों की अलग–अलग ईश्वरीय कृपाओं की भविष्यवाणी कर रहे थे।

ब्रितानिया और संयुक्त राज्य को प्रतिज्ञात आर्शीवाद

याद रखें, यदि प्राचीन इस्राईल ने ईश्वर के आदेश का पालन किया होता (सैबथ के पालन और मूर्ति पूजा के निषेध का (लेविटिक्स 26 में जिसका वर्णन किया गया है) तो उन्होंने मूसा, जोशुआ के पुराने दिनों में और अपनी कैद लगभग 721–718 ईसा पूर्व में ही उस जन्मजात वादे की ईश्वरीय कृपाएं विरासत में पा ली होतीं ईश्वर ने अब्राहम से जिनका वादा किया था। लेकिन याद रखें, यदि उन्होंने आज्ञा पालन न किया तो ये ईश्वरीय कृपाएं 2,520 वर्षों के लिए, यानी 1800 ईस्वी तक के लिए नकार दी जाएंगी।

इसलिए अब यह स्पष्ट हो जाता है कि 2,520 वर्षों के बाद 1800 ईस्वी से प्रारंभ करके जोशुआ के वंशज इफ्रेम और मनासेह से उत्पन्न दो कौमों में पुनःविभाजित हो गए, जिन्हें धरती का सबसे धनवान और शक्तिशाली कौम बनना था।

संयुक्त राज्य मनासेह है

मरणासन्न जैकब के पैंगबरी आर्शीवाद से यह स्पष्ट है कि ईफ्रैम और मनासेह संयुक्त रूप से बड़े पैमाने पर विरासत में जन्मसिद्ध अधिकार पाने, लंबे समय तक साथ रहने और अंत में अलग होने वाले थे।

उत्पत्ति 48 में जैकब ने दोनों के बारे में बातें करते हुए पहले संयुक्त रूप से जोसेफ के दो बेटों को जन्मजात अधिकार सौंपे। उसके बाद अंत में उन्होंने उनके बारे में अलग–अलग चर्चा की – मनासेह को इकलौता महान राष्ट्र बनना था। ईफ्रैम को राष्ट्रों का गण।

आने वाले इन दिनों के बारे में अपनी भविष्यवाणी में जैकब ने कहा, "जोसेफ फलदार शाखा है, किसी कुंएं के पास की फलदार शाखा जिसकी टहनियां दीवार के ऊपर तक फैली होती हैं।" (उत्पत्ति 49:22)। दूसरे शब्दों में जोसेफ–ईफ्रैम और मनासेह संयुक्त रूप से और एक साथ इस आधुनिक युग के उपनिवेश कायम करने वाले लोग थे, उनके उपनिवेश ब्रितानवी द्वीप से निकल कर धरती के चारों तरफ फैले हुए होने थे।

उत्पत्ति 48 में पैगंबर के रूप में की गई जैकब की भविष्यवाणी के अनुसार ईफ्रैम और मनासेह ने मिल कर बहुत बड़ी आबादी खड़ी की और उसके बाद अलग हो गए।

हमारे लोगों ने इस भविष्यवाणी को पूरा कर दिया है। लेकिन संयुक्त राज्य अमरीका मनासेह कैसे हो सकता है जबकि उसकी अधिकांश आबादी इंग्लैंड के अलावा दूसरे देशों से आई है? उत्तर यह है: न्यू इंग्लैंड के विभाजन तक मनासेह का बड़ा हिस्सा ईफैम के साथ बना हुआ था। लेकिन हमारे पूवर्जों को बहुत सी कौमों से छन कर निकलना था, जैसे छननी से मक्का छनता है, इसके बावजूद धरती पर एक भी दाना नहीं गिरना था अन्यथा वह खो जाता (एमोस 9:9)। लोग विभिन्न कौमों के बीच से होकर निकले। ईफ्रैम और मनासेह के अधिकतर लोग अंततः एक साथ इंग्लैंड चले गए, लेकिन मनासेह में से दूसरे बहुत–से लोग जो

छन कर दूसरी कौमों में चले गए थे या दूसरी कौमों से होकर गुजरे थे उन्होंने न्यू इंग्लैंड उपनिवेश के अलग राष्ट्र बन जाने के बाद तक जब तक कि वे संयुक्त राज्य में नहीं चले गए, उन्हें छोड़ा ही नहीं। इसका अर्थ यह नहीं कि वे सारे विदेशी जो उत्प्रवास करके अमरीका पहुंचे हैं, मनासेह हैं, लेकिन निस्संदेह उनमें से बहुत–से मनासेह हैं। बहरहाल, इस्राईल हमेशा उन गैर यहूदियों को अपने भीतर समाहित कर लेता था जो इस्राईल की जमीन पर रह कर और आपस में शादी करके इस्राईली बन जाते थे।

संयुक्त राज्य दुनिया की "कुढाली" बन गया है। मनासेह की वंश परंपरा का खंडन करने की बजाय यह तथ्य, वस्तुतः इसकी पुष्टि करता है। मनासेह ही संयुक्त राज्य है इसके बहुत से प्रमाण हैं। मनासेह को ईफ्रैम से अलग होकर धरती के इतिहास का इकलौता सबसे महान और सबसे समृद्ध राष्ट्र बनना था। अकेले अमरीका ने इस भविष्यवाणी को चरितार्थ किया है। मनासेह वस्तुतः एक तेरहवां कबीला था। बारह मूल कबीले थे। जोसेफ दो स्वतंत्र कबीलों में बंटे तो एक तेरहवां कबीला बन गया। क्या यह महज संयोग हो सकता है कि इसने तेरह उपनिवेशों के साथ एक राष्ट्र के रूप में शुरुआत की?

लेकिन तथाकथित दस लुप्त कबीलों के अन्य कबीलों का क्या हुआ?

हालांकि जन्मसिद्ध अधिकार जोसेफ का था उसके वरदान ब्रितानवी राष्ट्र कुल को मिले फिर भी इस्राईल के दूसरे आठ कबीले भी परमेश्वर के चुनिंदा लोग थे। उन्हें भी अच्छे अनुपात में भौतिक समृद्धि का वरदान प्राप्त है लेकिन उन्हें जन्मसिद्ध अधिकार का वर्चस्व नहीं मिला है।

हमारे पास बीसवीं सदी के राष्ट्रों में इन दूसरे कबीलों की विशेष पहचान का विस्तृत ब्योरा देने के लिए पर्याप्त जगह नहीं है। इतना ही कहना पर्याप्त है कि इसके पर्याप्त प्रमाण हैं कि उत्तर–पूर्व योरप के हालैंड, बेल्जियम, डेनमार्क, उत्तरी फ्रांस, लक्जेंबर्ग, स्विटजरलैंड, स्वीडेन, नार्वे–जैसे राष्ट्रों के लोग इन्हीं आठ अन्य कबीलों के वंशज हैं।

आइसलैंड के लोग भी स्कैंडीनेवियाई समुद्री डाकुओं के प्रजाति समूह के हैं।

योरप की राजनीतिक सीमाएं, आज वे जिस रूप में हैं, अनिवार्य रूप से इस्राईल के इन मूल कबीलों के वंशजों के बीच विभाजन रेखाएं नहीं दर्शातीं।

आज के लिए संयुक्त राज्य और ब्रितानिया के लिए भविष्यवाणियां

ठीक उसी तरह जैसे परमेश्वर ने हमें इतने भौतिक उपहार दिए हैं जितने किसी भी राष्ट्र को इससे पहले कभी नहीं मिले थे, वह हमें सुधारने के लिए, ताकि हम उन उपहारों का आनंद ले सकें, हमारी जनता पर इतनी प्राकृतिक आपदाएं लाने वाला है जैसी आपदाएं किसी राष्ट्र पर कभी नहीं आईं! बहुत–सी भविष्यवाणियां इसका वर्णन करती हैं! आधुनिक इस्राईल की शिनाख्त का एक अतिरिक्त प्रमाण मिकाः 5:7–15 में वर्णित एक चमत्कारिक, विस्तृत और विशिष्टतम भविष्यवाणी में मिलता है। यह विशेष रूप से इस्राईल के अवशेषों, आज के आधुनिक इस्राईल की बातें करती है – वह चाहे जहां कहीं भी हों। यह अमरीकी और ब्रितानवी राष्ट्रकुल के लोगों के वैभव, राष्ट्रों के बीच लाभदायक वर्चस्व का विस्तार से वर्णन करती है!

सूचनाः "और जैकब के अवशेष (यहूदी नहीं) बहुत से लोगों (राष्ट्रों) के बीच रहेंगे, परमेश्वर के यहां से आने वाली ओस की तरह, घासों पर वर्षा की फुहार की तरह, जो इनसान के लिए रुकती नहीं और न इनसानों के बेटों की प्रतीक्षा ही करती है" (श्लोक 7)। याद रखें कि ओस और बारिश कृषि उपज के लिए परमावश्यक हैं और राष्ट्रीय वरदान और ईश्वर प्रदत्त समृद्धि का प्रतीक हैं।

जारीः "और जैकब के अवशेष बहुत–से राष्ट्रों के गैर यहूदियों के बीच होंगे जैसे जंगली जानवरों के बीच शेर रहता है, जैसे भेड़ों के झुंड में कोई शेर शावक रहता है जो यदि उनके बीच से गुजरता है तो पैरों तले रौंदता, चीरता–फाड़ता जाता है और उन्हें कोई उबार नहीं सकता" (श्लोक 8)। एक बार फिर यह प्रतीकात्मकता इस्राईल की आखिरी पीढ़ी का एक महाशक्ति के रूप में वर्णन करती है।

"तुम्हारे वैरियों के खिलाफ नौ हाथ उठेंगे और तुम्हारे सारे शत्रु काट दिए जाएंगे (श्लोक 9) या परास्त कर दिए जाएंगे। वे अमरीका और ब्रितानिया पर परमेश्वर के जन्मसिद्ध वरदान के समय से लेकर 1803 के आस—पास से प्रारंभ होकर प्रथम विश्वयुद्ध, द्वितीय विश्वयुद्ध, से लेकर 1950 के अंत में कोरियाई युद्ध के प्रस्थान विंदु तक पराजित होते रहे हैं।

बहरहाल, उस समय से ये वरदान निश्चित रूप से वापस लिए जा रहे हैं और तब से किसी भी बड़े टकराव में न तो अमरीका शीर्ष पर आया है और न ब्रितानिया ही!

इस तरह यह भविष्यवाणी दर्शाती है कि जिस समय हम ईश्वरीय अनुग्रह प्राप्त कर रहे थे, हम धरती के दूसरे राष्ट्रों के लिए बहुत बड़ा वरदान थे—क्योंकि वह हमारे ही लोग थे जिन्होंने मार्शल योजना, चार सूत्री योजना, प्रगति गठबंधन, भूख से पीड़ित कौमों के लिए करोड़ों बुशेल गेहूं के जरिए धरती की दूसरी कौमों को बार—बार उबारा। हूवर प्रोग्राम ने प्रथम विश्वयुद्ध के बाद विशाल खाद्यान्न आपूर्ति की रक्षा की। इसने दूसरे राष्ट्रों के लोगों को भूखों मरने से बचाया!

प्राचीन काल में जोसेफ ने गेहूं और भोजन की हिफाजत की थी और उसे दूसरों को उपलब्ध कराया था। आधुनिक जोसेफ ने भी वही किया। लेकिन हम अक्खड़ और परमेश्वर और उसके नियमों के प्रति विद्रोही हैं, जबकि हमारे पूर्वज जोसेफ ने पूरे मनोयोग से परमेश्वर की सेवा की और उसके आदेशों का पालन किया। वह हमारे ही लोग थे जो धरती की दूसरी कौमों के बीच "शेर" की तरह थे – दो महान विश्वयुद्धों में दुनिया की शांति और इस ग्रह पर समस्त मानव जीवन के स्थायित्व की रक्षा करते हुए!

आकस्मिक विनाश

फिर भी इस विस्तृत भविष्यवाणी में परमेश्वर कहता हैः और इसे उस दिन में से गुजरने के लिए आना होगा, परमेश्वर कहता है कि मैं तुम्हारे घोड़ों (जंगी घोड़ों मोफत का अनुवाद) —टैंकों, जहाजों राकेटों को तुम्हारे बीच से काट डालूंगा,

और मैं तुम्हारे रथों को नष्ट कर दूंगा और मैं तुम्हारे देश के शहरों को मटियामेट कर दूंगा (हाइड्रोजन बमों से?) और तुम्हारे सभी किलों को जमींदोज कर दूंगा (श्लोक 10–11)। (ध्यान दें, सभी किलों को।)

परमेश्वर कहता है कि वह यह करेगा! परमेश्वर युद्धों के परिणाम तय करता है (साम 33: 10–19)। आप कितनी आसानी से समझ सकते हैं? यहां परमेश्वर धरती के महान राष्ट्रों की शिनाख्त करता है जो सबसे समृद्ध और सबसे उपकारी हैं, सबसे शक्तिशाली लेकिन जैसे ही उनकी सत्ता अपने शिखर पर पहुंचती है उसी समय वह उनकी सत्ता का अभिमान चूर–चूर कर देता है (देखें लेविटिकस 26:19), उनके युद्ध उपकरण छिन्न–भिन्न कर देता है और उनके शहरों को नष्ट कर देता है! क्यों?

क्योंकि जैसा कि पैगंबर स्पष्ट करना जारी रखता है, हमारे देश में हमारे पास बहुत–सी ''जादूगरनियां" और बहुत से ''ज्योतिषी" हैं, ठोंगी पुरोहित हैं जो साधिकार मूसा के दस धर्मादेशों और परमेश्वर के साथ जीने के रास्तों का उपदेश देने के इनकार करते हैं।

अमरीका में हम अपनी मुद्रा पर छापते हैं "हम परमेश्वर में भरोसा करते हैं।" लेकिन इसके विपरीत हम ईश्वर में नहीं, विदेशी मित्रों और अपनी मानवीय विदग्धता पर भरोसा करते हैं।

परमेश्वर से चोरी

हमारी कौमों के लिए परमेश्वर का एक वित्तीय कानून होता है। वह कहता है कि हममें से हर एक के लाभ या सकल आय का 10 प्रतिशत परमेश्वर के उद्देश्यों और उसके कार्यों के लिए परमेश्वर का होता है। मैलाची 3:8–10 में: "क्या कोई आदमी परमेश्वर को लूटेगा? फिर भी तुमने मुझे लूटा है। लेकिन तुम कहते हो, हमने तुम्हें कहां लूटा है? दसांश धर्म शुल्क और चढ़ावों में। तुम एक अभिशाप से अभिशापित हो। क्योंकि तुमने मुझे लूटा है, इस समूची कौम ने। सारा दसांश कर गोदाम में ले आओ ताकि मेरे घर में मांस आए। और इसके साथ मेरे समक्ष साबित करो, कहता है सरायों का मालिक, यदि हम तुम्हारे लिए स्वर्ग की खिड़की नहीं खोलेंगे, और तुम पर अनुग्रह की बरसात नहीं करेंगे तो तुम्हारे पास उसे रखने के लिए पर्याप्त जगह नहीं रहेगी।"

वर्ष 1800 के वाद अब्राहम की आज्ञाकारिता और उनसे किए परमेश्वर के अटूट वादों के कारण हम समृद्ध हुए। लेकिन अब इस इतनी व्यक्तिगत और कौमी समृद्धि हासिल करने के बाद हम ईश्वर से चोरी करके पाप करते हैं। इसने हमारी कौमों पर अभिशाप लाद दिया है। हमने अपना पिछला युद्ध जीत लिया है। हम जब तक पश्चाताप नहीं करते हमारे आगे परेशानियों के सिवा कुछ भी नहीं है।

परमेश्वर का दसांश धर्म शुल्क उसके लिए पवित्र है (लेविटिकस 27:30)। परमेश्वर का सैबथ, प्रत्येक सप्ताह का सातवां दिन उसके लिए पवित्र है। फिर भी हमने पावन और अपावन के बीच कोई अंतर नहीं छोड़ा है। (एजेकिएल 22:26)।

पाप को सार्वजनिक स्वीकृति प्रदान करना

हम व्यक्तिगत और राष्ट्रीय पाप करते हैं और इस तरह के पाप को सार्वजनिक स्वीकृति देते हैं।

बहुत पहले 1927 में जब मैं बाइबिल का अपना पहला पाठ पढ़ रहा था, जिसके फलस्वरूप मैंने धर्मपरिवर्तन किया, मैं और मेरी पत्नी प्रायः विभिन्न चर्चों में जाया करते थे। मैं सत्य की खोज कर रहा था। एक रविवार की सुबह हमने पोर्ट लैंड, ओरेगांव के कस्बे से बाहर के एक अग्रणी बपतिस्मा चर्च की प्रार्थना में हिस्सा लिया। वे एक प्रतियोगिता के निष्कर्ष की घोषणा कर रहे थे जिसके विजेता को एक बहुत सुंदर–सी बाइबिल पुरस्कार में दी जानी थी। प्रतियोगिता का प्रश्न था, "सबसे सार्वभौम पाप क्या है?" विजेता उत्तर थाः "कृतघ्नता।" निश्चित रूप से वह व्यापक पाप है। दूसरा सबसे साधारण और सबसे पुराना पाप है यौनिकता का दुरुपयोग। दरअसल, वेश्यावृत्ति को "दुनिया का सबसे पुराना पेशा" कहा जाता है।

शैतान ने इस पाप को उससे कहीं अधिक सार्वभौम बनाने के लिए इस पर अधिकार जमा रखा है। स्वयं शैतान का कोई लिंग नहीं है। वह इस तथ्य का बुरा मानता है कि परमेश्वर ने इनसानों को लिंग प्रदान किया है। इसीलिए शैतान इनसानों को यौन पापों को सबसे सार्वभौम और विनाशकारी बनाने के लिए प्रेरित करता है।

रोमन कैथलिक उपदेश के अधिकांश तथाकथित "चर्च युग" के दौरान, और इंग्लैंड और संयुक्त राज्य में विक्टोरियाई युग से काम बातचीत में वर्जित विषय था, उसका जिक्र कभी–कभार होता था। शैतान ने सुनिश्चित कराया कि काम को "शर्मनाक" और इतना बुरा समझा जाए कि इसके बारे में चर्चा न की जाए। लगभग सदी के अंत में मनोविश्लेषक सिगमंड फ्रायड ने इस सबको चुनौती दी। प्रथम विश्वयुद्ध तक संयुक्त राज में यौन जानकारियों युक्त किताबों को प्रकाशित करना, बेचना और यहां तक कि उन्हें किसी को उधार देना गैर कानूनी था। प्रथम विश्व युद्ध के बाद यौन सूचनाओं के आदान–प्रदान की राह की कानूनी बाधाएं खत्म की गईं। इस विषय पर किताबों, परचों अखबारी लेखों की बाढ़ आ गई। फिर भी इन सब में ज्ञान का सबसे वांछित आयाम नदारद था।

काम के लुप्त आयाम

लेखक की काम के लुप्त आयाम (मिसिंग डाइमेंशन इन सेक्स) नामक पुस्तक अनुरोध पर मुफ्त में प्रदान की जाती है।

यह ज्ञान का यह लुप्त आयाम प्रस्तुत करती है। बीसवीं सदी के मध्य के प्रारंभ में "नई नैतिकता" का आकर्षक मुहावरा सार्वजनिक रवैया बदल रहा था। आज खुले आम सार्वजनिक प्रसार माध्यमों में काम की चर्चा हो रही है, खास कर टेलिविजन पर जो गड्ड–मड्ड काम को सार्वजनिक स्वीकृति में तब्दील कर रही है। आज यह प्रश्न उठाया जा सकता है कि क्या 2 प्रतिशत दुल्हनें भी कुआंरी विवाह बेदी पर जाती हैं? समाज के अधिकांश हिस्से के लिए विवाह कालवाह्य हो चला है। कुछ क्षेत्रों में तलाकों की संख्या शादियों के बराबर हो गई है। पारिवारिक जीवन ध्वस्त हो रहा है जबकि परिवार किसी भी सभ्यता के निर्माण की इकाई होते हैं।

अधिक से अधिक बच्चे अवांछित हैं. गर्भपात को बड़ी तेजी से सार्वजनिक स्वीकृति मिल रही है।

परमेश्वर ने काम का सृजन केवल मानवता को जीवित रखने के लिए नहीं बल्कि पति–पत्नी के बीच शुद्ध और स्वस्थ प्रेम में प्रीतिकर, आह्लादमय, सुखद प्रसन्नता लाने और विवाहित जोड़े को मजबूती से बांधे रखने के साधन के रूप में किया था।

लेकिन आधुनिक रुझानों में पति–पत्नी को मजबूती से बांध रखने वाला बंधन विवाह को दो फाड़ करने वाली रस्सी साबित हो रहा है। अब समय आ गया है कि आप काम के लुप्त आयाम की सच्चाई जानें। ऊपर वर्णित हमारी पुस्तक में निःसंकोच, निडर, तार्किक और आध्यात्मिक रूप से इसका वर्णन किया गया है।

परमेश्वर समलैंगिकता की निंदा करता है। उसने इस पाप के लिए सोडोम और गोमोरा की पूरी आबादी नष्ट कर दी। रोमनी के पहले अध्याय में यह कहते हुए इसकी भर्तत्सना की गई है कि इस तरह का कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के राज्य मे प्रवेश नहीं कर सकता। इसके बावजूद हम गंदे जुगुप्सापूर्ण नाम समलिंगी को बदल कर इसका आचरण करने वालों को "गे" कहने के प्रयास कर रहे हैं। सार्वजनिक प्रसार माध्यम और स्वयं जनता "यौन पसंद" कह कर इसे स्वीकार्य बनाने के प्रयास कर रही है।

हम शराबियों की कौम बनते जा रहे हैं और शराब पीकर वाहन चलाने के कारण राजमार्गों पर हजारों लोग मारे जा रहे हैं। इसके बावजूद टेलिविजन पर लाखों डालर के विज्ञापन दिखा कर शराब पान को बढ़ावा दिया जा रहा है। हम अपने पापों के जरिए खुद को शराबखोरी एड्स, हर्पीज और यौन संसर्गजन्य दूसरे रोग लगा रहे हैं और उसके बाद उन रोगों के इलाज पैदा करने के लिए चिकित्सीय और वैज्ञानिक अध्ययन करके उन पापों को जारी रखने की अनुमति देंगे।

अब मिकाः 5 में की गई भविष्यवाणी पर आगे बढ़ते हैं। इसलिए यदि हम अंतिम विनाश से ठीक पहले पश्चाताप नहीं करते और "स्वर्ग पर" अंतिम विनाश के आने का मार्ग दर्शन करते हैं (श्लोक 15), जो इस युग के बिलकुल अंत और राजाओं के राजा के रूप में ईसा मसीह की दुबारा वापसी के समय होगा तो परमेश्वर हमें दंड देगा और नष्ट कर देगा! "अपनी शक्ति का हमारा गर्व" टूटता जा रहा है,

चूंकि ब्रितानवी धीरे–धीरे अपने विदेशी समुद्र द्वार खोते जा रहे हैं, चूंकि अमरीका पनामा नहर का स्वामित्व– इस महत्वपूर्ण समुद्र द्वार का नियंत्रण– छोड़ रहा है, चूंकि सोने की आपूर्ति छींजती जा रही है, और मौसम का उलटाव बढ़ रहा है, अकेले यह केंद्रीय भविष्यवाणी इसका प्रमाण प्रस्तुत करती है कि बचे–खुचे इस्राईल वासियों के वंशज आज कहां रहते हैं!

सभी कौमों को दंड !

परमेश्वर की अपनी चेतावनी पूर्ण भविष्यवाणियों से यह स्पष्ट हो जाएगा कि सुधारक दंड की अधिकतम गुणित तीव्रता की गाज राष्ट्र कुल के देशों में रहने वाले ब्रितानवी लोगों समेत ब्रितानिया और अमरीका पर गिरेगी। और यह पहले उन्हें ध्वस्त करेगी! लेकिन सुधारक विनाश झेलने वाले वही इकलौती कौम नहीं होंगे। परमेश्वर दूसरी सभी कौमों का भी स्रष्टा है!

परमेश्वर का संबंध उन कौमों और जातियों से भी है जिन्हें हमने "विधर्मी" कहा है। वे भी इनसान हैं। परमेश्वर के अध्यात्मिक और स्वाभाविक रूप के अनुरूप ढलने की क्षमता के साथ ईश्वर के स्वरूप में उनका भी सृजन किया गया है! परमेश्वर ने गैर यहूदी कौमों के पास देवदूत पॉल को भेजा था!

सारी मानव जाति ने परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह किया है, उसे खारिज कर दिया है और परमेश्वर उसके बताए रास्ते से विमुख हो गई है! धरती पर तब तक शांति स्थापित नहीं हो सकती जब तक सारी कौमें परमेश्वर और उसकी परमसत्ता द्वारा नियंत्रित उसके मार्ग की ओर नहीं मुड़तीं! सारी मानवता अभी से बड़ी तेजी से बढ़ते संकट के भंवर में फंसी हुई है जो इस दुनिया की मानव निर्मित, शैतान प्रेरित सभ्यता के चरम विनाश का संकेत करती है।

जेरेमियाः के माध्यम से परमेश्वर कहता हैः "धरती के अंतिम छोर तक एक शोर सुनाई देगाय क्योंकि कौमों के साथ भगवान का प्रतिवाद है, वह पूरी ताकत लगा कर दलील पेश करेगा"– कैसे? वर्ल्ड टुमारो कार्यक्रम इस समय दुनिया भर में उसकी शांति पूर्ण दलीलें पहुंचा रहा है लेकिन कुछ छिट–फुट व्यक्तियों को छोड़ कर दुनिया इस तरह की "दलीलें" नहीं सुनती।

आगे के शब्द बताते हैं कि अब परमेश्वर अपनी दलील कैसे देगाः "मैं.... वह उन्हें जो पापी हैं, तलवारों की धार उतार देगा, भगवान कहते हैं.... देखो, बुराई एक कौम से दूसरी कौम तक जाएगी और धरती के छोर से एक महा झंझावात उठेगा।" (जेरेमियाः 25:31—32)।

परमेश्वर ब्रितानिया—अमरीका को दंड देने के लिए संयुक्त योरप का उपयोग करेगा। उसके बाद वह रोमन योरप को मटियामेट करने के लिए साम्यवादी समूहों का उपयोग करेगा।

हम वैश्विक संकट के युग में प्रवेश कर रहे हैं— चरम वैश्विक अव्यवस्था! एशिया, अफ्रीका, दक्षिण अमरीका, मध्य अमरीका, आयरलैंड, मध्यपूर्ण के साथ—साथ योरप और उत्तरी अमरीका में भी युद्ध, कलह और हिंसा फैली हुई है। जनसंख्या विस्फोट मानव अस्तित्व के लिए विश्वव्यापी खतरा बनी हुई है। अपराध, हिंसा, बीमारी, रोग, असमानता, गरीबी, गंदगी, दरिद्रता, अपक्षय, यातना वगैरह से सभी राष्ट्र ग्रस्त हैं!

लेकिन जिस तरह इस्राईल का पहले उद्धार किया गया है, उसी तरह सुधारक दंड भी उसे पहले मिलेगा!

हमारी महान पीड़ा

सूचना जेरेमियाः की भविष्यवाणीः

"क्योंकि इस तरह भगवान कहता हैय हमने कांपने की, भय की, और शांति की नहीं, आवाज सुनी है। अब तुम पूछो, और देखो कि क्या कोई पुरुष बच्चा जनने की पीड़ा झेलता है? यही कारण है कि जब कोई औरत प्रसव पीड़ा झेलती है तो प्रत्येक पुरुष अपने हाथ अपनी कमर पर रख लेता है और सारे चेहरे पीले पड़ जाते हैं? अफसोस! क्योंकि वह दिन महान होता है, क्योंकि उसके जैसा दूसरा कोई नहीं होताः यह जैकब के भी कष्ट का समय है....." (जेरेमियाः 30:5—7)।

याद रखेंः जोसेफ के दो बेटों— ईफ्रैम और मनासेह (उत्पत्ति 48:16), को जन्मसिद्ध अधिकार प्रदान करते हुए जैकब ने कहा, "उन्हें इफ्रैम और मनासेह को— मेरा नाम दिया जाए जो आज ब्रितानिया और अमरीका हैं। यह बताता है कि सबसे भयावह राष्ट्रीय आपदाएं किन पर आने वाली हैं— ब्रितानिया और अमरीका पर!

लेकिन अब ये आपदाएं कब आने वाली हैं? यह मानकर न चलें कि यह प्राचीन इस्राईल के साथ घटी किसी चीज का हवाला है। सही ढंग से पढ़ें और देखें कि यह भविष्यवाणी कब पूरी होने वाली है!

जेरेमिया में जारी 30:7: "...यह जैकब के भी कष्ट का समय है। लेकिन उसे इससे उबार लिया जाएगा (उसके इसका सबक सीख लने के बाद!) आरएसवी से जारी, "और मेजबानों का मालिक कहता है कि यह उस दिन में गुजरने के लिए आएगा, मैं उनकी गर्दन से जुआ (गुलामी का जुआ) तोड़ दूंगा, और मैं उनके बंधन खोल दूंगा और अजनबी उनके नौकर नहीं रह जाएंगे लेकिन वे अपने मालिक, अपने परमेश्वर और अपने राजा डेविड की सेवा करेंगे, जिन्हें मैं उनके बीच से खड़ा करूंगा।"

(डेबिड, पुनरुत्थान के समय— ठीक ईसा मसीह के आने के समय!)

इस तरह समय ईसा मसीह के आने के ठीक पहले का है— हमारी जनता को मुक्त करने के लिए आने का समय, जैसे मूसा ने प्राचीन इस्राईल को मिस्र की गुलामी से मुक्त कराया था।

ईसा मसीह ने पहले ही इसकी भविष्यवाणी की थी!

दूसरी भविष्यवाणियां पहले की किन्हीं भी राष्ट्रीय आपदाओं से बड़ी आपदा के इसी समय की बातें करती हैं। नवविधान की मुख्य भविष्यवाणी मैथ्यू 24, मार्क 13 और ल्यूक 21 में ओलिव्ज पर्वत पर की गई ईसा मसीह की भविष्यवाणी है।

देवदूत ने ईसा से व्यक्तिगत रूप से पूछा था कि उनका पुनरागमन और इस दुनिया का अंत और कल की खुशहाल दुनिया का प्रारंभ कब होगा। ईसा ने कहा कि उस समय के बिलकुल करीब आ पहुंचने का संकेत यह होगा कि ईश्वर के राज्य के उनके मूल सुसमाचार का सारी कौमों के साक्षी के रूप में सारी दुनिया में उपदेश दिया जाएगा (मत्ती 24:14)। लेकिन उनकी वापसी से ठीक पहले और क्या होगा?

यहां समूचे इतिहास की या कभी होने वाली सबसे बड़ी उथल–पुथल का वर्णन किया गया है। जेरेमियाह ने "जैकब के संकट" के रूप में इसका वर्णन किया है, "इतना बड़ा कि इसके जैसा दूसरा नहीं है।" (मत्ती 24:21–22)।

डेनियल ने भी इतिहास के उसी सबसे गंभीर संकट का वर्णन किया है। हमारे निकट भविष्य के एक समय के बारे बोलते हुए डेनियल ने भविष्यवाणी कीः "उस समय माइकेल उठ खड़ा होगा, महा राजकुमार (सर्वोच्चदेवदूत), जो तुम्हारे बच्चों के लिए खड़ा होता हैय और एक ऐसे संकट का समय आएगा जैसा संकट किसी भी कौम के अस्तित्व में आने के समय से कभी नहीं आया, यहां तक कि उस समय भी नहीं" (डेनियल 12:1).

ब्रितानिया और अमरीका पर वही सबसे गहन संकट और कब? वही श्लोक जारी, '' . . . और उस समय तुम्हारे लोगों को गुलाम बनाने वाले इस संकट से,, बचा लिया जाएगा, उस प्रत्येक व्यक्ति को जिसका नाम किताब में लिखा मिलेगा। और उनमें से बहुत–से जो धरती की धूल में सोए (मृत) पड़े हैं पुनरुत्थान, शास्वत जीवन में जाग जाएंगे....." (श्लोक 1–2)।

यह समय ईसा के आगमन, खरे लोगों के पुनरुत्थान के समय से ठीक पहले का समय है। ईसा का दूसरा आगमन इस दुनिया की सभ्यता का अंत कर देगा और कल के असाधारण, शांतिपूर्ण, खुशहाल दुनिया का शुभारंभ करेगा।

6

चर्च का रहस्य

संभवतः इस पुस्तक के पाठकों को पहली नजर में यह सबसे बड़ा रहस्य नहीं लगेगा। इसका कारण जो सत्य है, वह यह कि चर्च का उद्देश्य और अर्थ उतना ही कम समझा गया है जितना कम बाइबिल समझी गई है। उस सत्य का उद्‌घाटन एक दहला देने वाले सत्य के रूप में अवश्य आना चाहिए। चर्च के बारे में वास्तविक सच्चाई, इसकी उत्पत्ति का कारण, और इसका उद्देश्य तथाकथित ईसाई दुनिया से भी छिपा रह गया।

यह ईसा मसीह के सुसमाचार से जटिल रूप से गुंथा हुआ है। यह पाठक का दिमाग चकरा देने वाला तथ्य है कि ईसा मसीह के सुसमाचार की लगभग 50 ईस्वी से 1953 तक दुनिया के सामने घोषणा ही नहीं की गई। देवदूत पॉल ने उसी समय इसके बारे में बता दिया था जब उन्होंने कहा था, ''यदि हमारा सुसमाचार गुप्त है तो पथभ्रांतों के लिए गुप्त है, इस संसार के देवता ने जिनके अविश्वासी मन को इतना अंधा कर दिया है कि वे ईश्वर के प्रतिरूप ईसा मसीह के महिमामय सुसमाचार की ज्योति नहीं देख पाते'' (II कोरिंथियाई 4:3–4) लाखों लोगों ने इसका अर्थ समझे बिना यह परिच्छेद पढ़ा है।

चर्च केवल ईसाई दुनिया के लिए

चर्च शब्द केवल ईसाई धर्म पर लागू होता है। (ईसाई धर्म, जैसा कि आम तौर पर समझा जाता है, तथाकथित मानने वालों की संख्या के लिहाज से सबसे बड़ा धर्म)। दूसरे धर्मों के पास मस्जिदें, सिनेगाग और मंदिर हो सकते हैं। लेकिन क्या चर्च एक इमारत है? बहुत से लोग ऐसा ही समझते हैं, लेकिन यह समझ चर्च के असली उद्देश्य और अर्थ के बारे में उनका अज्ञान दर्शाती है। लेकिन इस पुस्तक में हमारा सरोकार केवल चर्च से है। क्योंकि इससे जुड़े रहस्य का खुलासा कर दिया जाए तो यह धरती के सभी लोगों के लिए सबसे महत्वपूर्ण हो जाता है।

ईसा मसीह द्वारा स्थापित चर्च का प्रत्येक मानव के लिए सबसे महत्वपूर्ण अर्थ है जो कभी जिंदा रहा है।

फिर भी कभी जिंदा ईसाई जगत के भीतर भी मतत्याग, मतभेद और बदलते समय ने उस सच्चे मूल अर्थ और उद्देश्य को धुंधला कर दिया जो दरअसल, एक रहस्य है।

चर्च शब्द अंग्रेजी भाषा का शब्द है जो मूल यूनानी शब्द *एक्कलेसिया* से अनुवादित है। *एक्कलेसिया* का अर्थ होता है *पुकारे गए लोग*। प्राचीन विधान के इस्राईल को आम तौर पर ''धर्म संगति'' शब्द *चर्च* का समानार्थी है। फिर भी चर्च और धर्मसंगति के बीच एक स्पष्ट अंतर है. इस्राईल की धर्म संगति अलग थी एक अलग राष्ट्र के रूप में। लेकिन अध्यात्मिक रूप से वे उन्हीं अर्थों में पुकारे गए लोग नहीं थे जिन अर्थों में नवविधान का *चर्च* उनका वर्णन करता है।

तथाकथित ईसाई दुनिया से भी जो चीज छिपी हुई है वह है चर्च का असली उद्देश्य – वह वास्तवकि कारण जिसके लिए दूसरे आदम, ईसा मसीह ने *चर्च* की स्थापना की थी।

चर्च का असली उद्देश्य

इस पुस्तक के लगभग प्रत्येक पाठक को आश्चर्य चकित करते हुए मैं पहले बताऊंगा कि चर्च क्या नहीं था और क्या नहीं है। यह वह उपकरण नहीं है जिससे ईश्वर ''दुनिया को बचाने'' के प्रयास कर रहा है। कुछ ही लोग हैं जो इसे अनुभव करेंगे। लेकिन यीशु ने धर्मांतरितों को पाने या ''उन्हें अपना दिल देने'' के लिए लोगों को आमंत्रित करने या उन्हें व्यक्तिगत उद्धारक'' के रूप में स्वीकार कराने के कोई प्रयास नहीं किए।

इसके विपरीत उन्होंने बारह नियुक्त शिष्यों को ''बुलाया''–नियुक्त किया। शिष्य शब्द का अर्थ है छात्र। ये बारह छात्र थे जिन्हें यीशु ने ईश्वर के राज्य के सच्चे सुसमाचार की शिक्षा दी थी। ईश्वर के धरती पर मानवजाति के सृजन का इकलौता उद्देश्य यही था। उस अर्थ को पहले सर्जित मानव आदम ने अस्वीकार कर दिया, खो दिया था।

इस मौके पर आइए संक्षेप में दुहरा लिया जाए। ईश्वर स्रष्टा और अपनी समूची सृष्टि का परम शासक है। उसने प्रधान देवदूत लूसिफर को ईश्वर की सरकार के संचालन के लिए नियुक्त किया था। ईश्वर की सरकार ईश्वर के कानूनों पर आधारित होती है – ईश्वर के कानून एक जीवन शैली हैं – निर्गामी प्रेम का मार्ग।

ईश्वर की सरकार को लुसिफर ने, जो शैतान बन गया, नकार दिया और शैतान ने विपरीत रास्ते से शासन किया – विद्रोह, आत्मकेंद्रीयता और टकराव।

पहले सर्जित मानव, आदम को शास्वत ईश्वर को प्राप्त करने का अवसर दिया गया था – ईश्वर के प्रति आज्ञाकारिता, और ईश्वर के कानून और ईश्वर की सरकार के प्रति पूर्ण समर्पण के साथ जीवन। वह शैतान को धरती पर प्रतिस्थापित कर सकते थे। उन्होंने ईश्वर की सरकार और उसके रास्ते को अस्वीकार कर दिया। शैतान गद्दी पर बना रहा जहां वह आज भी राज कर रहा है। आदम और मानव परिवार का अपहरण कर लिया गया, और शैतान के आत्मकेंद्रित, विद्रोही रास्ते पर जीने के लिए उसके साथ छल किया गया। उसके

बाद ईश्वर ने ईसा मसीह, यानी दूसरे आदम के दुबारा आने और शैतान को जीत कर उसकी जगह धरती के सिंहासन पर आसीन होने तक के लिए जीवन के वृक्ष और पवित्र आत्मा को ओझल कर दिया। अपने पहले आगमन, धरती पर मानव के रूप में प्रकट होने के समय, यीशु गद्दी पर कब्जा करने नहीं, बल्कि शैतान को जीतने, धरती की गद्दी पर उसकी जगह आसीन होने की योग्यता प्राप्त करने और अपने बहे रक्त की फिरौती देकर अपहृत दुनिया को मुक्त कराने आए थे।

अब चर्च क्यों? ईसा मसीह शैतान की दुनिया के चुनिंदा, सोच–समझ कर चुने हुए लोगों का शैतान के रास्ते को छोड़ कर ईश्वर के कानून की ओर उन्मुख होने और ईसा मसीह के साथ शासन करने की योग्यता प्राप्त करने के लिए, जब वह शैतान को अपदस्त करते हैं। चर्च में जिनका आह्वान किया गया था उनका आह्वान महज मोक्ष्य और शास्वत जीवन के लिए नहीं किया गया था बल्कि ईश्वर की सरकार का मार्ग सीखने और चर्च युग में अपने नश्वर जीवन में दैवी चरित्र विकसित करने के लिए किया गया था।

सात वार्षिक त्योहार प्राचीन विधान के इस्राईल को दिए गए थे और हमेशा–हमेशा के लिए विहित थे। उनका सही अर्थ लंबे समय तक गुप्त रहस्य बना रहा। वे ईश्वर की मुक्ति की योजना उस दैवी योजना की तस्वीर प्रस्तुत करते हैं जिससे ईश्वर स्वयं का पुनरुत्पादन करता है। पासोवर (या पास्का या ईस्टर) यीशु द्वारा मानव के उन पापों का मूल्य चुकाने चित्र प्रस्तुत करता है जिसके लिए उसने पश्चाताप कर लिया है। बिना खमीर की रोटी का सात दिन का उत्सव चर्च के पाप से बाहर आने का चित्र पेश करता है जैसे इस्राईल मिस्र से बाहर आया था। पेंटिकास्ट का दिन जिसे नवान्न की दावत कहा जाता है – चर्च का चर्च युग में ईश्वर के पहले उत्पन्न किए गए, बच्चों के रूप में चित्र प्रस्तुत करता है। तूर्यनाद का दावत धरती के सिंहासन पर आसीन होने और सभी कौमों पर राज करने के लिए ईशा मसीह के दूसरे आगमन का चित्र प्रस्तुत करता है। प्रायश्चित का दिन शैतान को कैद में डाले जाने का प्रतीक है। तंबुओं की

दावत ईसामसीह और ईश्वर के जन्में बच्चों के अधीन एक हजार साल के शासन का चिह्न प्रस्तुत करता है। अंतिम महान दिन, अंतिम फैसले के दिन का चित्र प्रस्तुत करता है जिसका वर्णन अध्याय 7 में किया जाएगा। आइए अब इस अध्याय के विषय, चर्च पर वापस चला जाए।

चर्च की संस्था

चर्च क्या है? चर्च क्यों है? हो सकता है कि पहली बार उल्लेख करने पर चर्च की संस्था रहस्य न जान पड़े। आधुनिक पश्चिमी जगत चर्चों की उपस्थिति के तथ्य को दुनिया के सभ्य जीवन के एक अंग के रूप में मान कर चलता है।

दुनिया में चर्च का संस्थान क्यों? इसे क्यों और किस उद्देश्य से प्रारंभ किया गया था?

यदि आप गैर ईसाई दुनिया के लोगों से यह सवाल करें जहां दूसरे धर्म स्वीकृत हैं तो संभवतः उनके पास कोई उत्तर नहीं होगा। वे चर्च के बारे में बहुत कम जानते हैं। परंपरागत ईसाइयत के अधिक आधुनिकतावादी और उदारवादी क्षेत्रों के लोग संभवतः कहेंगे चर्च उन लोगों के लिए मनोवैज्ञानिक प्रभाव रखने वाला भावनात्मक उत्थापक है जिन्होंने विकास के सिद्धांत को उस तरह गले नहीं लगाया है जैसे आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों लगाया है।

यदि आप किन्हीं इंजीलवादी ईसाई संप्रदाय के मानने वालों से पूछें तो वे शायद कहेंगे कि चर्च दुनिया को शास्वत नर्क की आग से बचाने का ईश्वर का उपकरण है। उस तरह के लोगों ने मान लिया है कि यह स्टेशन जैसी चीज है। उस स्थिति में मैं सवाल करता हूं कि तब ईसा मसीह के चर्च की स्थापना करने से पहले ईश्वर लोगों के बचाव के प्रयास किस तरह करता था? आदम और मौलिक पाप के 4000 साल बाद तक ईसा मसीह नहीं थे। यदि ईश्वर लोगों को धर्मांतरित करने के प्रयास करता है और करता रहा है तो वह आदम और ईसा के 4000 साल बाद तक किस तरह से यह काम करता था? जैसा कि हम अध्याय 3 में देख चुके हैं ईश्वर ने दुनिया की स्थापना के समय ही जीवन के वृक्ष को बंद

कर दिया था। इन वर्षों के दौरान दुनिया की ओर से पवित्र आत्मा और मुक्ति को बंद कर दिया गया था।

लेकिन सर्वशक्तिमान ईश्वर के अपने कथन में उद्‌घाटित तथ्यों के मद्देनजर, पिछले अध्यायों में जिनका वर्णन किया गया है, ये सारी मान्यताएं गलत थीं। वे प्रकाशना 12:9 में व्यक्त इस तथ्य का मुखर प्रमाण हैं कि दुनिया शैतान द्वारा छपी गई है। उनके मन मानवता को लेकर ईश्वर के उद्देश्य की ओर से बंद कर दिए गए थे, जैसा कि II कोरिंथियाइयों 4:3–4 में कहा गया है, ऐसे में धरती पर रहने वाले तकरीबन हर व्यक्ति के लिए वस्तुतः एक रहस्य बन कर रह जाता है।

किसी चर्च को लेकर अखबारों और समाचार प्रसारणों में प्रायः खबरें आती रहती हैं। लोग सोचते हैं कि पास के किसी नुक्कड़ के चर्च या किसी संप्रदाय की खबर आ रही हैं। लेकिन उसके अस्तित्व का तथ्य मन में नहीं आएगा क्योंकि वह एक रहस्य है। लेकिन जब हम सवाल करते हैं कि चर्च क्यों है? एक संस्था के रूप में चर्च कैसे अस्तित्व में आया? इसके अस्तित्व का कारण या उद्देश्य क्या है? क्या इससे कोई फर्क पड़ता है कि आप चर्च से जुड़े हैं या नहीं और अगर जुड़े हैं तो किस चर्च से जुड़े हैं? तब तो यह सचमुच एक रहस्य बन जाता है। औसत आदमी के पास इसका कोई जवाब नहीं है।

चर्च की उत्पत्ति और इसके उद्देश्य की सच्चाई का रहस्यों की किताब–बाइबिल में उद्‌घाटन किया गया है। उस रहस्य को स्पष्ट करने के लिए इस पुस्तक में दूसरे विषयों की अपेक्षा अधिक पृष्ठों की आवश्यकता है।

मेरा व्यक्तिगत अनुभव

मुझे अपने व्यक्तिगत अनुभव याद आते हैं जो संभवतः दूसरे बहुत से लोगों जैसे हैं। मेरे माता–पिता फ्रेंड्स चर्च के, जिसे आमतौर पर क्वैकर के नाम से जाना जाता है, सदस्य थे। हमारा परिवार कई पीढ़ियों से क्वैकरों का परिवार था। मुझे बचपन से ही चर्च में ले जाया जाता था, और इसे सामान्य जीवन का हिस्सा समझा जाता था। मैं प्रत्येक रविवार को चर्च जाता था क्योंकि मेरे माता–पिता मुझे ले जाते थे। नियमित आदत के रूप में मैं 18 साल की उम्र तक चर्च जाता रहा। मेरे मन में यह सवाल कभी नहीं आया कि हमें चर्च क्यों जाना चाहिए, या चर्च कैसे अस्तित्व में आया, या इसका असली अर्थ और, उद्देश्य क्या है।

मैं उन दिनों धर्मातरित होने के अनुभव से कभी नहीं गुजरा। जब मैं किशोरा अवस्था में पहुंचा मुझे बताया गया कि चर्च में मेरी जन्मसिद्ध सदस्यता है। यह मान लेने के लिए मेरा मार्ग दर्शन किया गया था कि मैं अमर आत्मा हूं, कि जब मैं मरूंगा सचमुच मेरी मृत्यु नहीं होगी बल्कि मैं स्वर्ग चला जाऊंगा जहां मेरा कोई दायित्व नहीं होगा, बल्कि हमेशा–हमेशा के भव्य गरिमा में सुस्ती और आराम होगा। लेकिन मैं धामिक या सैद्धांतिक रूप से मेरी कोई रुचि नहीं थी मैं चर्च जाने और जीवन के धार्मिक पहलू से स्वीकार करके चलता था। लेकिन मेरा कोई विशेष या गहरा धार्मिक या आध्यात्मिक लगाव नहीं था, और 18 की उम्र तक में मैंने विज्ञान कारोबार शुरू कर दिया और धर्म या ईश्वर की चीजों में मेरी कोई रुचि नहीं रह गई थी और मैंने नियमित रूप से चर्च जाना भी छोड़ दिया था। मैं फिर भी ईश्वर में विश्वास करता था–कहने का आशय यह कि मैं ईश्वर के अस्तित्व को पहले से मान कर चलता था। क्योंकि मुझे ईश्वर के अस्तित्व के बारे में मेरी सबसे शुरुआती स्मृति में सिखाया गया था।

उसके बाद 25 की उम्र में मैंने उस एक और एक मात्र विशेष युवा स्त्री से शादी की। वह ईश्वर की चीजों में अधिक गंभीरता से रुचि लेती थी। मेरी पत्नी के पूर्वज आधे क्वेकर और मेथॅडिस्ट थे। लेकिन हम शिकागो के जिस उप नगर में रहते थे वहां पड़ोस में कोई क्वेकर चर्च नहीं था। हम मेथडिस्ट चर्च से जुड़े क्योंकि वह पैदल की दूरी पर स्थित था। हमें पादरी का व्यक्तित्व अच्छा लगा, और हमें उसकी सदस्यता सामाजिक रूप से अच्छी लगी। मैं समझता हूं कि हमारा अनुभव दूसरे लाखों लोगों जैसा ही था। लेकिन मेरे मन में कभी यह सवाल नहीं उठा था मैंने कभी सोचा भी नहीं कि हमारा चर्च जाना क्यों जरूरी है, या चर्च की संस्था कभी अस्तित्व में आई ही क्यों।

दूसरे लाखों लोगों की तरह मैंने भी मान लिया कि अच्छे लोग चर्च जाते हैं इसलिए हमें भी जाना चाहिए।

चर्च अतीत के इतिहास के संबंध में

और इस तरह अब मैं यह सवाल करता हूं कि क्या कोई प्रश्न करता है कि एक संस्था के रूप में चर्च का कारण या उद्देश्य क्या है। मैं पूछता हूं कि क्या कोई जानता है कि चर्च क्यों हैं? क्या इसके होने का कोई कारण है? ''ईसाइयत'' के नाम से जाने जाने वाले चर्च का अस्तित्व ही हमारे समय के महान रहस्यों में से एक है। यह विषय ही हमारे एक बार फिर यह तथ्य ले आता है कि वर्तमान को लाने वाले पिछले 6000 वर्षों में न जीए और उस दौरान की घटनाओं को न देखने के कारण हम चर्च का असली अर्थ या उसका उद्देश्य नहीं समझ सकते। इस अध्याय में हम चर्च को इस पुस्तक के पहले पांच अध्यायों में वर्णित घटनाओं के सापेक्ष देखेंगे। एक बार फिर चर्च क्या है?

छत की बहुत तीखी ढाल और स्वर्ग की ओर इशारा करती मीनारों और उसके शीर्ष पर बने क्रॉस वाली इमारत चर्च है। दरअसल, बेब्सटर ने चर्च को एक इमारत के रूप में ही परिभाषित किया है। मूल रूप से जब इसकी स्थापना की गई थी तो यह कुछ और ही था।

कुछ लोग सोचते हैं कि चर्च एक इमारत है लोग कुछ लोग जिसमें रविवार के दिन ''पूजा'' करने के लिए भीड़ में जमा होते हैं। उनका मानना है कि *लोग* चर्च जाते हैं। जैसा कि नव विधान में स्थापित है चर्च एक इमारत में गया, पहले एक निजी घर में, और चर्च रविवार को नहीं, शनिवार को जमा हुआ था।

आज के चर्च ईसा मसीह के प्रतिमान से पूरी तरह बदल गए हैं! यह तथ्य भी रहस्य में ढंका है, जिसे वस्तुतः कोई नहीं समझता। लेकिन यीशु ने किस मकसद से चर्च की स्थापना की थी? तब से इसके साथ क्या हुआ?

हो सकता है कि कुछ लोग जानते हों कि यीशु ने चर्च की स्थापना की थी। लेकिन चर्च कौन और क्या है? और यदि वह चर्च के संस्थापक थे तो उन्होंने इसकी स्थापना किस उद्देश्य से की थी?

लेकिन यीशु ने केवल एक चर्च की स्थापना की थी। लेकिन पश्चिमी दुनिया में अलग–अलग कई चर्च हैं–कैथोलिक, प्रोटेस्टैंट, स्वतंत्र। उनके भीतर बहुत से पंथ, संप्रदाय, विभाजन या समवाय हैं, इनमें से प्रत्येक की मान्यताएं उपदेश, कर्मकांड और कार्यक्रम अलग–अलग हैं।

चर्च की शुरुआत एक चर्च के रूप में की गई थी। जैसा कि 1 कोरियाइयों के अध्याय 12 में अभिलिखित है, चर्च में कई सदस्य थे लेकिन केवल एक संस्था थी एक, चर्च था यीशु जिसके मुखिया थे। इस अध्याय के प्रारंभ में हमारा संबंध चार मूल प्रश्नों से है जो एक रहस्य का निर्माण करते हैं और समझ से जिसके खुलासे की आवश्यकता है।

1) ईसा मसीह कौन और क्या हैं? वह धरती पर क्यों प्रकट हुए?

2) चर्च क्या है और उसे अस्तित्व में क्यों लागा गया?

3) वह सुसमाचार क्या है चर्च को जिसके प्रचार का काम सौंपा गया है?

4) चर्च का इतिहास क्या है? आज ईसाइयत पहली सदी में अपने प्रारंभ से इतनी अलग क्यों है?

संस्थानिक रूप से चर्च को समझा जाता है कि वह एक संस्था है, एक धार्मिक संस्था, संगठन या समाज है। व्यक्ति से यदि वह ''अच्छा'' है तो ''अपनी पसंद के चर्च'' से जुड़ने की अपेक्षा की जाती है। दरअसल ''अच्छे लोग'' भी हैं और ''बुरे लोग'' भी और ''अच्छे लोग'' चर्च जाते हैं। लेकिन क्या इससे कोई फर्क पड़ता है कि चर्च कौन–सा है और संप्रदाय कौन–सा?

बिना पादरी का धर्माध्यक्ष

मुझे 50 साल से भी पुरानी एक घटना याद आती है। मैं तब यूजीन, ओरेगान में था। एक पूर्व धार्माध्यक्ष मेरे पास आया जिसने हल ही में शादी की थी। उसकी पत्नी धनवान थी लेकिन वह इतना अभिमानी था कि उससे मदद नहीं लेता था। वह कुछ दिन से सेवा कार्य में नियुक्त नहीं था और उसे काम की जरूरत थी।

''क्या आपको लेन काउंटी में किसी उपदेशक के खाली पद की जानकारी है?'' उसने पूछा। ''मैं अपनी पत्नी का खर्च उठाना चाहता हूं और यह यहीं लेन काउंटी में रहना चाहती है।

''हां'', मैंने जवाब दिया। ''मुझे एक रिक्ति की जानकारी है, लेकिन उससे आपका काम नहीं बनेगा क्योंकि वह ईसाई चर्च है, और लेकिन आप मेथडिस्ट हैं जिसकी आस्थाएं और आचरण अलग हैं।''

''ओह, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता,'' उसने मुझे आश्वासन दिया। ''वे मुझसे जिस भी किसी सिद्धांत का उपदेश देने को कहेंगे मैं उसका उपदेश दूंगा।''

लेकिन क्या इससे सचमुच कोई फर्क पड़ता है कि हम किस चीज में आस्था रखते हैं? ईश्वर के कथन को ही इस प्रश्न का उत्तर देने दीजिए। लगता है कि चर्च का संबंध किन्हीं दूसरी शक्तियों की आराधना से है। समझा जाता है कि इसका संबंध ईश्वर की आराधना से है।

लेकिन यदि ईश्वर चर्च से जुड़ा है तो चर्च के साथ उसका जुड़ाव क्या है? चर्च कैसे प्रारंभ हुआ? यह सब आज की दुनिया के लिए रहस्य है।

1927 के शुरुआती दिनों में वापस चलते हैं जब बाइबिल का मेरा गहन अध्ययन मुझे धर्मांतरण की ओर ले जा रहा था, उन दिनों मैं खुद को इस तरह के सवाल किया करता था। मैं समझता था कि औसत व्यक्तियों के दिमाग में इस तरह के सवाल कभी नहीं आते।

नव विधान (यूनानी) में चर्च को एक्क्लेसिया कहा गया है, जो यूनानी भाषा का शब्द है और जिसका अर्थ होता है बुलाए गए लोगों की सभा, समवाय, जमावडा, समूह। एक्क्लेसिया शब्द में कोई शुचिता नहीं है। बहरहाल, नव विधान में 12 जगह जिस चर्च का नाम लिया गया है वह है ईश्वर का चर्च जो संकेत करता है कि वह ईश्वर का चर्च है जिसके साथ शुचिता जुड़ी है। पुराने विधान का चर्च ''इस्राईल का समवाय'' था, एक मानवी इनसान का।

यीशु ने चर्च की स्थापना क्यों की?

नव विधान में जहां पहली बार चर्च शब्द आता है वह है मैथ्यू 16:18 जहां सिमोन पीटर से बात करते हुए यीशू ने कहा है, ''मै अपने चर्च का निर्माण करूंगा।''

जैसा कि ऊपर कहा गया है, चर्च के लिए प्रेरित यूनानी शब्द एक्क्लेसिया था जिसका अर्थ होता है बुलाए गए लोग। अधिक स्पष्ट शब्दों में यीशु ने कहा, ''मैं पूरी तरह नई और अलग दुनिया में विकसित होने के लिए शैतान की दुनिया से शिष्य बुलाऊंगा, जो ईश्वर का राज्य होगा। और इफीशियाइयों 5:23 में कहा गया है कि ईसा मसीह चर्च के मुखिया हैं।

इस तरह हम इसे जान गए हैं। चर्च चाहे जो भी हो, वह ईश्वर का है और उसका नाम ईश्वर का चर्च है। ईसा मसीह उसके संस्थापक और उसके जीवंत मुखिया हैं।

लेकिन यदि चर्च ईश्वर का है और आज ईसा मसीह उसके मुखिया हैं तो यह कोई ऐसी चीज है जो ईश्वर के लिए महत्वपूर्ण है और इसलिए यह अनिवार्य है कि हम इसे समझें! यह समझने के लिए कि जीवंत ईसा ने इसे क्यों बनाया, यह क्या है और दैवी उद्देश्य में यह कहां फिट बैठता है, हमें यह बात मन में बैठा लेनी चाहिए कि यह कैसे बना। इन प्रश्नों के उत्तर यहां नीचे दिए गए हैं।

प्राचीन विधान का चर्च

प्राचीन विधान इस्राईल का काम अंततः ईश्वर के राज्य की स्थापना की पूर्व तैयारी करना था। बाइबिल में अस्तित्व काल में पहली बार चर्च का जिक्र ऐक्ट्स 7:38 में आता है, जहां वीराने में, सिनाय पर्वत पर मूसा के अधीन इसके गठन की बात कही गई है। इस तरह पुराना विधान इस्राईल ''चर्च'' था। आमतौर पर पुराने विधान इस्राईल में चर्च का उल्लेख ''इस्राईल की धर्म संगति'' के रूप में किया गया है।

बहरहाल, जैसा कि हम देखेंगे कि नवविधान के चर्च का उद्देश्य प्राचीन विधान के ''इस्राईल की धर्म संगति'' से पूरी तरह अलग है। लगभग किसी ने भी नहीं समझा कि अ) यीशु के शैतान को परास्त करके अपनी योग्यता साबित करने तक और ब) यीशु के स्वर्गारोह के बाद उनके गौरवान्वित होने तक दुनिया के समक्ष न तो सुसमाचार की घोषणा की जा सकती थी और न ईश्वर के बुलाए लोगों के समवाय में ईश्वर की आत्मा ही हो सकती थी (जॉन 7:37–39)।

यह कुछ ऐसी चीज है जिसे हमारे जमाने के ईश्वरविद और चर्च के नेता भी नहीं समझते। वस्तुतः यह एक रहस्य है जिसे प्रकट करने और समझने की जरूरत है। आइए अब समझा जाए कि ईसा मसीह कौन और क्या ।

हम अध्याय 1 में पहले ही देख चुके हैं कि ईसा दुनिया के अस्तित्व में आने से पहले पारलौकिक जीवन में परावाक् थे जो ईश्वर भी थे और यीशु के रूप में ईश्वर के बेटे के रूप में जन्म लिया। अब ईश्वर के बेटे के रूप में यीशु क्या थे? उन्हें दूसरा आदम (1 कोरिंथियाइयों 15:45) कहा गया था। उन्हें दूसरा आदम क्यों कहा जाना चाहिए? पहले आदम को जीवन का वृक्ष लेने का अवसर मिला था जिसका आशय था ईश्वर का जीवन–ईश्वर की आज्ञा का पालन करना और धरती की गद्दी से शैतान को हटा कर उस पर आसीन होगा। यीशु भी ठीक वही करने और शैतान की दुनिया से बुलाए गए लोगों के माध्यम से धरती पर ईश्वर के राज्य की स्थापना करने आए थे। वह ईश्वर का एक संदेश ले आए थे जिसे सुसमाचार कहा जाता है। और वस्तुतः उनका सुसमाचार ईश्वर के यहां से उनके द्वारा भेजा गया संदेश ईश्वर के राज्य का सुसमाचार था। और ईश्वर का साम्राज्य, जैसा कि हम देखेंगे, धरती पर ईश्वर के राज्य की पुनर्स्थापना और शैतान को सिंहासन से अपदस्थ करना होगा।

यीशु चर्च का निर्माण करने के लिए भी आए थे। और वह एक अपहृत दुनिया की फिरौती की कीमत चुकाने भी आए थे और उस कीमत से–अपनी मृत्यु से सारी मानवता के पापों का दंड चुकाने आए थे।

यीशु धरती के शासक और राजा

अब, उसकी बात जिसे धर्मविज्ञानियों सहित सभी ''ईसाइयों'' ने नहीं समझाः यीशु राजा बनने के लिए जन्मे थे!

अपने जीवन के लिए पिलेट के समक्ष सुनवाई के लिए लाए जाने पर यीशु से पूछा गया, ''तो तुम राजा हो?'' और यीशु ने जवाब दिया, ''आप ही कहते हो कि मैं राजा हूं। इसी प्रयोजन से मैं जन्मा था.....'' (जॉन 18:37) यीशु ने यह भी कहा (श्लोक 36), मेरा राज्य इस दुनिया का नहीं है......(अन्यथा) मेरे सेवक लड़ेंगे''–यह दर्शाते हुए कि यह दुनिया शैतान की है। यीशु धरती के सिंहासन पर आसीन होने, अपने अधीन शिक्षा देने और शासन करने के लिए तैयार रहने के लिए इस दुनिया के लोगों का आह्वान करने आए थे।

यीशु के अस्तित्व में आने और जन्म लेने से पहले ईश्वर ने उनकी होने वाली मां, मेरी से अपने देवदूत के माध्यम से कहा थाः ''और देखो, तुम अपनी कोख में गर्भ धारण करोगी, और एक पुत्र को जन्म दोगी, और उसे यीशु के नाम से बुलाओगी। वह महान होगा और सर्वोच्च का बेटा कहा जाएगाः और मालिक ईश्वर उसे उसके पिता डेविड का सिंहासन देगा और वह जैकब के घर पर हमेशा राज करेगा, और उसके राज्य का कोई अंत नहीं होगा (लूकस 1:31–32)। उनका सुसमाचार उसी राज्य–ईश्वर के राज्य–का सुसमाचार था।

यह महत्वपूर्ण है कि इस समय यह समझें कि अपने जीवनकाल में यीशु ईश्वर और इनसान दोनों थे। इसैयाह 7:14 में यीशु की मां को ऐसी कुंआरी बताया गया था जो एक बेटा जनने वाली थी। इस भविष्यवाणी में उस बेटे को इमैनुअल के नाम से पुकारा जाना था, जिसका अर्थ होता है ''हमारे साथ ईश्वर''। दूसरे शब्दों में यीशु ईश्वर के साथ–साथ मानव भी थे। उनका कोई मानव पिता नहीं था। सर्वशक्तिमान ईश्वर उनका पिता था जिसने पवित्र आत्मा से उन्हें जन्म दिया था। लेकिन यीशु वस्तुतः ''हमारे साथ ईश्वर'' थे वह दूसरे सभी आदमियों की तरह मानव थे। वह भी दूसरे सभी इनसानों की तरह प्रलोभन के शिकार हो सकते थे. हालांकि वह रक्त–मांस के इनसान के रूप में ईश्वर थे इसके बावजूद अपने सेवा क्षेत्र में उन्होंने इनसान के रूप में काम किया। याद रखें कि वह दूसरे आदम थे। उनके लिए यह अनिवार्य था कि वह एक मानव के रूप में ''वर्जित वृक्ष'' को अस्वीकार कर देते और जीवन के वृक्ष को स्वीकार करते। यह आवश्यक था कि उन्होंने, जैसा कि पहले आदम भी कर सकते थे, ईश्वर, यानी पिता पर विश्वास करने का फैसला किया। दरअसल, ईसा मसीह में ईश्वर था और यीशु ने पूरी तरह पिता का आज्ञा पालन किया। उन्होंने खुद को शैतान से धरती का सिंहासन छीनने के योग्य साबित किया।

यीशु ईश्वर थे

यीशु का मानव शरीरधारी ईश्वर होना जरूरी क्यों था? यह क्यों जरूरी था कि वह ईश्वर होते? क्यों जरूरी था कि वह मानव होते? ईश्वर के रूप में वह समस्त मानव जाति के निर्माता थे। इफिसियाइयों 3:9 में उद्‌घाटित किया गया है कि ईश्वर ने ईसा मसीह द्वारा सारी चीजों का सृजन किया। जब यीशु ने इनसान के रूप में जन्म लिया, उस समय हमारे सृष्टा के रूप में उनका जीवन समस्त मानव जीवन से महान था। चूंकि वह मानव हैं जिन्होंने पाप किए और मृत्यु दंड के भागी बने, ईश्वर का कानून इनसानों के पाप के दंड के रूप में इनसान की मृत्यु की मांग करता था। लेकिन हमारे सिरजहार के रूप में यीशु अकेले ऐसे इनसान थे जिनकी मृत्यु समस्त मानव जाति के पापों का दंड चुका सकती थी।

सृष्टा ईश्वर किसी और तरीके से मृत्यु दंड प्राप्त मानवता को दंड मुक्त नहीं कर सकता था।

हमारे घावों को भरने के लिए पीटे गए यीशु

हमें यह बात अपने मन में बैठा लेनी चाहिए कि हालांकि यीशु मानव शरीर में ईश्वर थे, लेकिन वह आपकी और मेरी तरह इनसान भी थे। वह भी उसी तरह की शारीरिक पीड़ाएं सह सकते थे। रोमन गवर्नर पिलेट ने शोर मचाने वाले यहूदियों की कोलाहलपूर्ण मांग पर उन्हें मृत्युदंड दिया था।

वह मजबूत, जवान कद्दावर आदमी थे लगभग 33 साल की उम्र के, स्वास्थ्य से भरपूर। चूंकि उन्होंने कभी स्वास्थ्य का भी कोई नियम नहीं तोड़ा था, उन्होंने मृत्यु प्रक्रिया की वह यातना झेली जिसे कभी किसी इनसान ने नहीं झेला था। वह सुनवाई के दौरान सारी रात पिलेट के सामने खड़े रहे। बाद में उसी सुबह पिलेट ने मारे जाने से पहले उन्हें चाबुक लगाए जाने की सजा दी।

किसी खंभे के साथ झुका कर बांध दिया जाता था और छाती तक कोड़े मारे जाते थे। उन्हें चमड़े के फीते में तस्मे के साथ चार–पांच इंच की दूरी पर सीसे के टुकड़े, हड्डियों के टुकड़े, और धातु के नुकीले दांतेदार टुकड़े जड़े चाबुक से पीटा गया था। उन्हें इस तरह बनाया गया था कि जब चाबुक शरीर के गिर्द लिपटे तो वे मांस में गहराई तक चुभ जाएं। उन्हें उनका मांस उघड़ जाने और पसलियों के खुल जाने तक पीटा गया था। कोड़े इसलिए लगाए जाते थे कि शिकार कमजोर हो जाए और सूली के टेक पर आसनी से मर जाए। जैसा कि इसैयाह 52:14 में भविष्यवाणी की गई थीः ''उनका चेहरा इतना विकृत हो गया था कि किसी आदमी का नहीं हुआ होगा और उनका रूप कि इनसान के बेटों से अधिक बिगड़ गया था।''

कोड़ों की इस तरह की अकथनीय मार इसलिए झेली गई थी कि आस्तिकों को शारीरिक अतिक्रमण, बीमारी, या रोग से चंगा किया जा सके (इसैयाह 53:5; 1 पीटर 2:24)। हमारे अपने सृष्टा ने कितनी बड़ी कीमत चुकाई कि हम, आस्था रख कर, चंगा किए जा सकें। इसके बावजूद लगभग सभी तथाकथित आस्तिक पूरी तरह से नजर अंदाज कर देते हैं कि उनके उद्धारक ने उनके लिए क्या दिया है, उस पर विश्वास करने की बजाय, मानवी डॉक्टरों, दवाओं, औषधियों और चाकुओं पर विश्वास करते हैं।

इस दारुण दंड से यीशु इतना कमजोर हो गए थे कि वह कुछ दूर के बाद अपना सलीब उठाने में असमर्थ हो गए, जिसे कि उन्हें उठाना ही था। उनके बदले सलीब ढोने के लिए दूसरा आदमी नियुक्त करना पड़ा था।

सबसे कष्ट कर और घृणित मृत्यु

शहर की चारदीवारी के बाहर, खोपड़ियों की जगह (गोल्गोथा) में ईसा को कीलों से सूली पर टांग दिया गया। उन्हें अपमानित किया गया, उन पर थूका गया, उनका मजाक उड़ाया गया और उपहास किया गया।

इससे भी बड़ी बात यह कि चूंकि उस समय उन्होंने हमारे पापों को अपने सर ले लिया था, हमारी जगह उनकी कीमत चुकाने के लिए, इसलिए उनके पिता, ईश्वर ने भी उन्हें त्याग दिया था। जब वह सूली पर लटके हुए थे एक सैनिक ने उन्हें भाला घोप दिया, वह दर्द से चीख पड़े (मत्ती 27:50, मोफत) और उसके बाद वह मर गए। उन्होंने ऐसा इसलिए किया कि आपने और मैंने ईश्वर के कानून का उल्लंघन किया है। उन्होंने आपके और मेरे लिए सबसे बड़ा संभव बलिदान दिया।

एक और परमावश्यक सत्य। मृत्यु से ईसा का पुनरुत्थान एक और केवल एक मानव का पुनरुत्थान था जो एक बार मर चुके इनसानों के अमर जीवन में पुनरुत्थान को संभव बना सकता था।

अब एक और महत्वपूर्ण भविष्यवाणी। इसैया 9:6-7; ''क्योंकि हमारे बीच एक बच्चा जन्मा है, हमारे बीच एक बेटा दिया गया हैः और सरकार उसके कंधों पर होगी; और उसे असाधारण, सलाहकार, शक्तिशाली ईश्वर, शास्वत पिता, शांति का राजकुमार कहा जाएगा। उसके राज्य और शांति का राजकुमार कहा जाएगा। उसके राज्य और शांति की वृद्धि का कोई अंत नहीं होगा, डेविड के सिंहासन पर और उनके राज्य पर, उसे व्यवस्थित करने, और अब से हमेशा–हमेशा के लिए निर्णय से और न्याय से इसकी स्थापन करने के लिए। मेजबानों के मालिक का उत्साह इसे पूरा करेगा। ''ध्यान दें कि सरकार उसके कंधों पर होगी। यीशु सारी धरती के राजा होने वाले हैं। उनके आने का एक उद्देश्य इस राज्य की घोषणआ करना भी था। यीशु का सुसमाचार केवल खुश खबरी नहीं था– ईश्वर के भावी राज्य की घोषणा या उसका शुभी समाचार भी था। कैसे त्रासदी है कि परंपरागत ईसाइयत ने उसे महत्वपूर्ण और गौरवशाली सुसमाचार संदेश को छोड़ दिया है और उसकी जगह ईसा के व्यक्ति से संबंधित सुसमाचार अपना लिया है।

यीशु राजा बनने के लिए मानव के रूप में जनमें थे अंततः ईश्वर के राज्य की स्थापना करने, ईश्वर की सरकार द्वारा सारी धरती पर राज करने, के लिए! लेकिन उस शासन के लिए यीशु से कहीं अधिक की आवश्यकता थी। प्रत्येक राष्ट्र का राजा, राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री या शासक दूसरों के कमोबेश विशाल संगठन के जरिये शासन करता है जो उसके अधीन विभिन्न पहलुओं या विभागों पर शासन करते हैं।

इसी तरह ईसा मसीह के पास भी एक संगठित सरकार होनी चाहिए जिसमें उनके अधीन बहुत–से प्रशिक्षित और योग्य लोग होने चाहिए, यीशु ने कहा, मैं अपना चर्च बनाऊंगा'' (मत्ती 16:18)। चर्च में शैतान की दुनिया से बुलाए गए बहुत से लोग थे जिन्हें ईसा के सभी कौमों पर राज करने के लिए आने पर उनके अधीन अनगिनत सरकारी पद संभालने के लिए शिक्षित–प्रशिक्षित किया जाना था।

यीशु आध्यात्मिक उद्धारक

यीशु आध्यात्मिक उद्धारक के रूप में भी आए थे, ईश्वर के लोगों की उनके नियत समय में, उनके पापों से बचाने के लिए ताकि वे ईश्वर के दैवी परिवार में जन्म ले सकें (मत्ती 1:21)।

याद रखें कि जीवन के वृक्ष को जो पवित्र आत्मा का प्रतीक है, आदम के पाप करने के बाद दुनिया के प्रारंभ में ही मानव जाति से काट पर अलग कर दिया गया था। दुनिया यह नहीं समझती कि ईश्वर की आत्मा को कुल मिलाकर दूसरे आदम के आने और शैतान को हटा कर धरती पर ईश्वर के राज्य की पुनर्स्थापना करने तक के लिए समूची मानवता से अलग कर दिया गया था।

कुल मिलाकर जहां तक मानवता की बात है आदम के पाप के समय ही मानवों के लिए एक बार मरना नियत कर दिया गया था और मृत्यु के बाद, निर्णय आएगा (हिब्रू 9:27)।

प्राचीन इस्राईल के लोगों को पवित्र आत्मा नहीं दी गई थी। चूंकि ईश्वर ने मानवता की मुक्ति की तैयारी के एक विशेष काम से पैगंबरों का आह्वान किया और उन्हें पैदा किया, इसलिए वे अपना सौंपा गया काम पूरा कर पाते इसके लिए यह जरूरी था कि एक चर्च के साथ एक अपवाद किया जाता और उन्हें पवित्र आत्मा से संबलित किया जाता।

इसी तरह चूंकि यीशु के माध्यम से ईश्वर सभी कौमों पर अपने राज्य और सरकार की स्थापना की पूर्व तैयारी के रूप में एक विशेष काम से अपने चर्च का आह्वान कर रहा था, इसलिए अब यह आवश्यक था चर्च के लिए वही अपवाद किया जाता और यह भी कि वे पवित्र आत्मा द्वारा समर्थित होते।

ईश्वर ने पैगंबरों को बलपूर्वक अपनी आत्मा से महज उन्हें मुक्ति देने के लिए समर्थित नहीं किया था। इसी तरह परमेश्वर ने संतो को महज उनकी मुक्ति और अपने राज्य में उन्हें प्रवेश देने के लिए अपनी दुनिया से नहीं बुलाया था। अन्यथा ईश्वर व्यक्तियों का सम्मानकर्ता और साथ–ही–साथ इस समय अपने कुछ चर्चों को बुलाने और दूसरों को मुक्ति से इनकार करने वाला हो जाता।

यदि ईश्वर अपने चर्च के सिर्फ कुछ लोगों के लिए मुक्ति के द्वार खोलता और सिर्फ उन्हें ही मोक्ष प्रदान करता जबकि कुल मिलाकर दुनिया की प्रबलता को आगे के लिए छोड़ देता तो ईश्वर निश्चित रूप से व्यक्तियों का सम्मानकर्ता होता सारी दुनिया के साथ भेदभाव करने वाला। यीशु ने स्पष्ट कहा था कि जब तक ईश्वर, यानी पिता उन्हें नहीं खींचता कोई भी व्यक्ति उनमें नहीं आ सकता। (जॉन 6:44)। तथाकथित ईसाइयत इसके ठीक उल्टा मानती है। यह छद्म ईसाइत सिखाती है कि इस मौजूदा समय में ईश्वर सबका आह्वान करता और प्रत्येक व्यक्ति को उबारने के प्रयास करता है। यदि ऐसा होता तो शैतान निश्चित रूप से ईश्वर पर भारी जीत प्राप्त कर रहा है। क्योंकि अधिकांश मानवजाति ईसा या उनके माध्यम से मुक्ति के बारे में बहुत कम या फिर सिरे से कुछ नहीं जानती।

मुक्ति का एक कालक्रम

प्रधान योजना कभी भी जन्मे प्रत्येक व्यक्ति के लिए मोक्ष और शास्वत जीवन की मांग करती है लेकिन यह योजना यह काम एक निश्चित कालक्रम में करने की मांग करती है।

जिन्हें इस समय दुनिया से चर्च में बुलाया गया है उन्हें एक विशेष प्रयोजन और विशेष काम से बुलाया गया है। यह विशेष काम था समूची मानवता के धर्मांतरण को संभव बनाने के लिए आध्यात्मिक प्रशिक्षण देने का काम। उन्हें उस समय बुलाया जाता है जब शैतान और शेष दुनिया उन्हें सता और उनके खिलाफ युद्ध कर रही होती है। शेष दुनिया को तब बुलाया जाएगा जब शैतान को हटा दिया जाएगा और जब यीशु और संत उनकी मदद कर रहे होंगे और ईश्वर के राज्य में उन्हें अमर बना दिया जाएगा।

शैतान ने नास्तिक दुनिया और तथाकथित परंपरागत ईसाइयत की चेतना को इस तरफ से बंद कर रखा है (II कोरिंथियाइयों 4:4)। शैतान ने सारी दुनिया को छला है, परंपरागत तथाकथित ईसाइयत को भी (प्रकाशना 12:9)।

यीशु जिस बड़े प्रयोजन से आए थे उसके बारे में न तो आज के पाखंडी ईसाई जानते हैं और न उनके ब्रह्मविज्ञानी नेता ही!

यीशु क्यों आए थे?

यीशु शैतान के गद्दीनसीन रह कर दुनिया को छलते रहने के दौरान उसकी दुनिया को बचाने के लिए नहीं आए थे। यीशु अपने दूसरे आगमन पर दुनिया को बचाने आएंगे, जब शैतान को दूर कर दिया जाएगा। तब फिर यीशु 1900 साल से भी पहले क्यों आए थे? राज करने, कौमों पर शासन करने के लिए नहीं, शैतान के गद्दीनसीन रहते दुनिया को बचाने के लिए भी नहीं।

उनका मानव जन्म ''दूसरे आदम'' का आगमन था। वह आए थे 1) उस मामले में अपनी योग्यता साबित करने जहां पहले आदम नाकाम हो गए थे, धरती के सिंहासन से भूतपूर्व प्रधान देवदूत लुलिफर को प्रत्यस्थापित करने, ईश्वर की सरकार द्वारा शासन करने के लिए। वह आए थे 2) ईश्वर के राज्य के भावी प्रतिष्ठान की घोषणा करने और अपने चुने हुए भावी अग्रदूतों को उस भविष्य सूचक सुसमाचार की शिक्षा देने। वह आए थे 3) हमारे प्रत्यक्ष सृष्टा के रूप में मर कर हमारे पापों का दंड अपने सर लेने– जिसे हम उस दुनिया में बांट सकते थे. और वह आये थे 4) ईश्वर द्वारा मृत्यु से पुनर्जीवित किए जाने और इस क्रम मे ईश्वर की प्रजा के लिए शास्वत ईश्वरीय जीवन की प्राप्ति संभव बनाने और अपने दूसरे आगमन के बाद सारी मानवता में से उन सबके लिए जो इच्छुक हैं जो कभी भी इस धराधाम पर रहे हैं। और वह आए थे 5) अपने नेतृत्व में शासन करने के लिए प्रशिक्षित करने के लिए ईश्वर के चर्च की स्थापना करने के लिए।

इस बीच शैतान का शासन

इस बीच, पहले आदम के समय से 4,000 वर्ष तक कपटी और दुष्ट शैतान अदृश्य रूप से ईश्वर और ईश्वर के ज्ञान से पूरी तरह कटी हुई मानवता को लुभाता–फुसलाता और उन पर हुकूमत करता रहा था! वह अब भी सत्ता के उसी

सिंहासन पर विराजमान है— हालांकि ईश्वर के राज्य का संचालन नहीं कर रहा है लेकिन समूची मानवता को ईश्वरीय नियमों के ठीक विपरीत जीवन जीने के लिए नियंत्रित कर रहा है— छलकते प्रेम, सहयोग, शांति, प्रसन्नता और आह्लाद के ईश्वरीय मार्ग की बजाय मिथ्याभिमान, लिप्सा, प्रतिद्वंद्विता, कलह और हिंसा का जीवन।

यीशु के जन्म के तुरंत बाद शैतान ने रोम के नियुक्त राजा हेरोद के माध्यम से भावी राजा की हत्या कराने की कोशिश की (मत्ती 2:13—15)। लेकिन ईश्वर ने जोसफ और मेरी को बालक को लेकर हेरोद के मरने तक के लिए मिस्र चले जाने की चोतावनी दी।

जब यीशु लगभग 30 की उम्र के थे वह अपने अग्रदूत चुनने के लिए लगभग तैयार थे और उनके बीच इनसान के लिए ईश्वर के संदेश, अपने सुसमाचार का प्रचार करने और शिक्षा देने वाले थे. लेकिन पहली बात तो यह कि उनके लिए यह साबित करना अनिवार्य था कि वह शैतान की जगह लेने और शैतान को जीत कर ईश्वर के राज्य की स्थापना करने योग्य हैं।

संभवतः यह पूरे समय में ब्रह्मांड भर की सबसे महत्वपूर्ण, और निर्णायक टकराव और लड़ाई थी। (मैथ्यू के अध्याय 4 में इसका विस्तार से वर्णन किया गया है।

युगों की सबसे बड़ी लड़ाई

यीशु ने 40 दिन और 40 रातों का उपवास रखा।— इस बीच न तो खाना खाया और न पानी पीया। लेकिन अपनी शारीरिक कमजोरी में वह आध्यात्मिक रूप से मजबूत हो गए। अब शैतान ने छल की अपनी सबसे धूर्ततापूर्ण, सबसे सूक्ष्म और सबसे निरंकुश शक्ति का उपयोग किया। उसने अवश्य सोचा होगा कि वह ईसा मसीह से अधिक विदग्ध है और आध्यात्मिक रूप से उन पर हमला करके उन्हें हरा सकता है। शैतान जानता था कि इस बार वह धरती भर से अपदस्थ होने से बचने की लड़ाई लड़ रहा है।

शैतान ने पहला आघात उस मर्म पर किया जो उसकी नजर में शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों तरह से सबसे कमजोर था। निश्चय ही ऐसे व्यक्ति के लिए

जो पूरे 40 दिन का भूखा हो वह भोजन के किसी भी प्रलोभन के सामने कमजोर पड़ जाएगा। और सबसे बड़ी आध्यात्मिक कमजोरी मिथ्याभिमान है!

''यदि'', शैतान ने ललचाते हुए खिल्ली उड़ाई– उसने उस प्रभावकारी छोटे से शब्द ''यदि'' का प्रयोग किया– ''यदि, तुम ईश्वर के बेटे हो''– कोई सामान्य इनसान होता तो अपमानित हो जाता, उद्धत हो उठता। वह क्रोध से पटलवार करताः '' 'यदि' मैं ईश्वर का बेटा हूं' से तुम्हारा आशय क्या है। मैं तुम्हें दिखा दूंगा कि मैं ईश्वर का बेटा हूं!''

लेकिन शैतान ने अपने पहले हमले मे कहा, 'यदि तुम ईश्वर के बेटे हो तो आदेश दो कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं। ईश्वर का बेटा चमत्कार तो कर ही सकता है. मेरे सामने साबित करो कि तुम ईश्वर के बेटे हों! तुम बुरी तरह भूखे हो। चमत्कार करके दिखाओ। चमत्कार से अपना पेट भर लो!''

लेकिन यीशु ने ईश्वर के कथन का उद्धरण देते और उसका पालन करते हुए जवाब में केवल इतनी ही कहाः ''इनसान को केवल रोटी पर ही जिंदा नहीं रहना चाहिए, बल्कि ईश्वर के मुंह से निकले प्रत्येक शब्द का पालन करते हुए जीना चाहिए।''

शैतान पहला और सबसे कारगर हमला जाया चला गया। लेकिन शैतान कभी हार नहीं मानता। वह यीशु को येरुशलम ले गया और उन्हें मंदिर की ऊंची मीनार पर बैठा दिया। उसने सवाल जारी रखा कि क्या यीशु ईश्वर के बेटे हैं।

''यदि तुम ईश्वर के बेटे हो, नीचे कूद जाओः क्योंकि लिखा है कि वह तुम्हारी जिम्मेदारी अपने फरिश्तों पर सौंपेगाः और वे तुम्हें अपने हाथों में थाम लेंगे, अन्यथा किसी भी पल तुम्हारे पैर पत्थर से टकराकर टूट जाएंगे।'' इस बार शैतान ने बाइबिल का उद्धरण दिया लेकिन उसने उसके प्रसंगार्थ को तोड़–मरोड़ दिया, शैतान जैसा करने के लिए विद्वानों को प्रभावित करता है।

यीशु उसके पास वापस आएः ''फिर यह लिखा भी लिखा गया है कि तुम्हें अपने मालिक, ईश्वर को नहीं फुसलाना चाहिए।'' यह विधि विवरण 6:16 से उद्धृत है और वाईएचडब्ल्यूएच (हिब्रू) को फुसलाने का हवाला देता है, जो ईसा मसीह बने।

लेकिन शैतान ने फिर भी हार नहीं मानी।

उसके बाद वह यीशु को एक पर्वत के ऊपर ले गया, उन्हें दुनिया के सारे राज्य और उसकी गरिमा को दिखाते हुए। ''मैं तुम्हें ये सारी चीजें दे दूंगा, यदि तुम मेरे आगे नतमस्तक हो जाओ और मेरी आराधना करो।''

यीशु ने इससे इनकार नहीं किया कि शैतान अब दुनिया की कौमों से ऊपर था। यह तत्काल सत्ता पाने का प्रलोभन था। शैतान जानता था कि 1900 साल से भी ज्यादा लंबे अरसे बाद यह सारा राज्य यीशु को विरासत में मिलने वाला है। लेकिन उसने यीशु को शैतान की बात पर विश्वास करने का प्रलोभन दिया कि वह उन्हें लौटा देगा और यीशु को तत्काल विश्व की सत्ता दे देगा। लेकिन शैतान ने तय किया कि अब धरती पर राज्य करने की इस महान लड़ाई को खत्म करने का समय आ गया है।

यीशु ने अब एक आदेश दिया। यह जताते हुए कि वह शैतान के मालिक हैं उन्होंने परमाधिकार से आदेश दिया!

''शैतान इसलिए तुम भागो! और हार मान कर यहां से दूर चले जाओ। लेकिन शैतान ने हार नहीं मानी। और न अभी तक हार मानी है। वह आज भी ईश्वर के चर्च के खिलाफ लड़ाई लड़ रहा है!

यीशु ने योग्यता साबित की थी

ईसा मसीह, दूसरे आदम ने अपनी योग्यता साबित की थी। उस पल तक कभी नहीं जिस पल तक दुनिया में ईश्वर के आगामी राज्य के सुसमाचार की घोषणा नहीं हो जाती। अब ईश्वर के बेटे ने प्रतिरोध किया और शैतान को जीत लिया।– ईश्वर की सरकार की पुनर्स्थापना की योग्यता साबित कर दी थी और धरती पर ईश्वर का राज्य स्थापित कर दिया था! लेकिन अब चर्च को भी उनके साथ राज्य करने योग्य साबित करना होगा!

अन्य प्रयोजनों के अलावा यीशु दुनिया से अपने चर्च का आह्वान करने आए थे– जिन्हें पुकारा गया था वे इसी दुनिया में और इसी दुनिया के थे। प्रत्येक ने अपने पापों द्वारा अपने ऊपर सबसे बड़ा दंड मृत्यु दंड लाया था। लेकिन ईश्वर ने सारी चीजें शब्दों से पैदा की थीं जो सबसे पहले यीशु बना। इसलिए यीशु का जीवन सारी मानवता के सामूहिक जीवन से अधिक मूल्यवान था!

दुनिया के सबसे धनवान, सबसे शक्तिशाली व्यक्ति के मानवी बेटे की कल्पना कीजिए। उस टाइकून का बेटा उसका उत्तराधिकारी है– जो उसकी अतुल संपदा का वारिश होगा। उसे उस अकूत संपदा का एक हिस्सा अभी से आवंटित कर दिया गया है जबकि अभी वह उत्तराधिकारी है। यह नौवजवान एक दूसरे नौजवान से गहरा लगाव रखता है। उसके उस मित्र ने एक अपराध किया है, लाखों डालर के कर्ज में डूबा है जिसे वह चुका नहीं सकता। वह गहन पश्चाताप करता है लेकिन चोरी के लिए जेल जाने से खुद को बचा पाने में असमर्थ है। अपने मित्र के प्रति अनुकंपा में उस टाइकू का बेटा अपने धन से लाखों डालर का वह कर्ज चुका देता है। उसके दोषी मित्र का सारा कर्ज अदा हो जाता है। उसका अपराध, उसकी भारी देनदारी अब उस पर लटकी नहीं रह जाती। वह देनदारी और उसकी भारी सजा के मुक्त हो जाता है!

सारी मानवता ने पिता आदम का अनुसरण किया था।– अपने सर पर परमदंड– मृत्युदंड लाद लिया था। यीशु (शब्द) अब ईश्वर के बेटे इस दुनिया से बुलाए गए अपने चर्च को पाते इससे पहले उस चर्च का चरमदंड– मृत्यु दंड से मुक्त होना अनिवार्य था। ताकि वे विरासत में शास्वत जीवन पा सकते! यीशु के परमदंड–मृत्युदंड के रूप में आने के कारणों में से एक प्रमुख कारण– न केवल उनके लिए जो उनके चर्च में बुलाए गए थे बल्कि समस्त मानवता से प्रत्येक को उसके नियत समय पर!

और चूंकि वह पाप करने वाली मानवता के बदले जो मृत्युदंड भरेंगे वह उनके मानव जीवन का अंत कर देगा, उनके मानव जीवन के दूसरे सभी उद्देश्यों के पूरा हो जाने के बाद इस दंड के भुगतान को उनके मानव जीवन के अंतिम कार्य के रूप में सुरक्षित रखा गया था।

फिर भी इससे पाठक को इसका बोध हो जाता है कि यीशु कितने महान थे जो ईश्वर का चर्च तलाशने आए थे!

मन में लगातार यह बात बैठाए रखें कि हालांकि उनका सांसारिक सेवा कार्य तक प्रारंभ हुआ जब उनकी उम्र महज 30 साल थी (उनके मानव जीवन में) फिर भी वह अमर शास्वत थे जो हमेशा रहे थे. वह 30 साल का मानव जीवन कितना महान था!

और यह यीशु ने जो नाजेरथ कस्बे में पले–बढ़े, इनसान के रूप में जन्म लेने के समय से ही शैतान का प्रतिरोध किया और उसे जीता, शैतान के पाने के आत्मकेंद्रित रास्ते को अस्वीकार कर दिया था और अंतिम बड़े संघर्ष में स्वयं को ईश्वर की सरकार की पुनर्स्थापना और उस सरकार के शासन करने के लिए धरती पर ईश्वर के राज्य की स्थापना के योग्य साबित किया! यह काम करने में पहले आदम जहां नाकाम रहे वहीं दूसरे आदम यीशु कामयाब रहे।

''पीटर'' नेतृत्व के लिए नामित उपाधि

शैतान को जीतने के लिए हुई निर्णायक लड़ाई के तुरंत बाद बपतिस्मादाता जॉन के दो शिष्य जॉन के साथ यीशु से मिले। जॉन ने उन्हें अपने घर तक अपने साथ चलने को कहा। उनमें से एक जोना का बेटा ऐंड्रू था। उसने अपने भाई सिमोन बार जोना को बुला लिया।

यीशु ने सिमोन की ओर देखा और उससे कहा, ''तुम जोना के बेटे सिमोन होः तुम्हें सेफस (यूनानी में पीटर) कहा जाएगा, जिसका अर्थ होता है पत्थर (जॉन 1:42)।

मारकूस 3:14, 16 में हम पढ़ते हैंः ''और उन्होंने (यीशु) बारह शिष्यों को आदेश दिया कि उन्हें उनके साथ रहना चाहिए और यह भी कि वह उन्हें उपदेश देने के लिए भेजें.... और सिमोन को उन्होंने पीटर की उपाधि दी।'' वेब्सटर के मुताबिक उपाधि ''पेशे से व्यूत्पन्न एक अतिरिक्त नाम'' होता है।

पीटर सदियों से धार्मिक नेता, मुखिया या मुख्यालय को दिया जाने वाला एक उपनाम या उपाधि रहा है। पीटर पहले और मुख्य अग्रदूत थे। अग्रदूत घोषणा करने या उपदेश देने के लिए भेजा जाने वाला 'व्यक्ति' होता है।

इस तरह सांसरिक सेवा कार्य के बिलकुल प्रारंभ में चर्च की आधारशिला तैयार करते समय ईसा मसीह ने अपना प्रधान मानव अग्रदूत और दूसरे 11 शिष्य चुने। पैगंबरों के साथ, जिनके लेखन ईश्वर के पहले चुने हुओं की धर्म संगति (और इस्राईल कौम) के समय से अक्षुण्ण रखे हुए थे, वे ईश्वर के चर्च की नींव

का निर्माण करने वाले थे। यीशु स्वयं न केवल संस्थापक, बल्कि चर्च के मुखिया और् आधार शिला'' थे। इफीसियाइयों 2:19–21; 5:23)।

मजबूत नींव का महत्व

30 की उम्र से पहले यीशु एक बढ़ई थे– जो लकड़ी के साथ–साथ पत्थर के भी काम करते थे। वह अच्छी तरह जानते थे कि इमारत खड़ी करने से पहले नींव डाली जानी चाहिए।

लेकिन यीशु ने स्वयं अपने अग्रदूत चुने। आगे चल कर उन्होंने उनसे कहाः ''तुमने मुझे नहीं चुना है बल्कि मैंने तुम्हें चुना है'' (जॉन 15:16, 19)।

अब यीशु ने सुसमाचार की, उस संदेश की ईश्वर यानी पिता ने अपने दूत के रूप में उनके साथ दुनिया में जिसे भेजा था, घोषणा आरंभ कर दी (मलाची 3:1)।

हम मारकुस के अध्याय 1 में पढ़ते हैंः ''ईश्वर के बेटे ईसा मसीह सुसमाचार का प्रारंभ....यीशु ईश्वर के राज्य के सुसमाचार का उपदेश देते (घोषणा करते, शिक्षा देते) और यह कहते गालिली में आएः समय पूरा हो चुका है, और ईश्वर का राज्य आने ही वाला है, तुम पश्चाताप करो और सुसमाचार पर विश्वास करो ''(मारकुस 1:1, 14–15)।

और मैथ्यू सेः ''और यीशु उनके सिनेगॉग में शिक्षा देते, और ईश्वर के राज्य के सुसमाचार का उपदेश देते समूचे गालिली में गए' (मैथ्यू 4:23)।

ईश्वर के राज्य के इस भविष्यसूचक संदेश की अध्याय 7 में विस्तार से चर्चा की गई है। यह ईश्वरीय परिवार द्वारा पुनर्प्रतिष्ठित और प्रबंधित धरती पर भविष्य में ईश्वर की सरकार की स्थापना का सुसमाचार था –शैतान की वर्तमान बुरी दुनिया के प्रति स्थापित करने के लिए ईश्वर का राज्य।

चंगा करने, पानी को शराब में तब्दील कर देने जैसे चमत्कारों के साथ यीशु के इस असाधारण भावी सुसमाचार की घोषणा ने काफी उत्तेजना पैदा की। उनके और उनके शिष्यों के पीछे–पीछे भारी भीड़ चलती। वह अपने शिष्यों को

भावी अग्रदूत बनने की शिक्षा दे रहे थे जबकि वह जनता को अपने संदेश का उपदेश देते।

फरीसियों ने यीशु का विरोध क्यों किया

घोषित समाचार येरुशलम तक जा पहुंचा। वहां के फरीसी, यहूदी और सैड्यूसी चौकन्ने हो गए। फरीसी यहूदियों का धार्मिक पंथ था जिनमें से कुछ छोटे लेकिन उनके लिए महत्वपूर्ण सरकारी पदों पर थे। उस समय फिलिस्तीन पर रोमन साम्राज्य का शासन था। रोमनों ने वहां के शासन की निगरानी के लिए जिले का एक राजा और छोटी–सी सेना भेज रखी थी। लेकिन रोमनों ने रोमन स्रमाट के अधीन कुछ यहूदी फरीसियों को निचले स्तर का नागरिक प्रशासनिक अधिकारी बना रखा था। ये अच्छा लाभ देने वाले राजनीतिक पद थे और ये फरीसी न तो अपने काम से हाथ धोना चाहते थे और न जनता पर अपना अधिकार ही छोड़ना चाहते थे। इन यहूदी शासकों और उनके धर्माधिकारियों ने यीशु के सुसमाचार के संदेश को बिलकुल गलत समझा। वे जानते थे कि यीशु एक ऐसी सरकार की घोषणा कर रहे हैं जो धरती के सभी कौमों को अपने अधीन कर लेगी और उन पर राज करेगी। उन्होंने जिस चीज को गलत समझा वह था ईश्वर के राज्य का समय और उसकी प्रकृति। और पाखंडी ''ईसाइयत'' आज भी उसे गलत ही समझती है। उन्होंने मान लिया कि यीशु कोई विद्रोही हैं, स्वयं अपने मानव जीवन में तत्काल, रोमन साम्राज्य को उखाड़ फेंकना और अपना राज्य स्थापित करना चाहते हैं।

तत्काल उन्हें राजद्रोह और विश्वासघात का आरोप लगने, अपना काम छिनने और संभवतः बगावत के लिए मौत के घाट उतार दिए जाने की आशंका सताने लगी। इसलिए उन्होंने यीशु का विरोध किया और उनकी भर्त्सना की।

परंपरागत ईसाइयत फरीसियों के विरोध और यीशु को मृत्युदंड दिए जाने का मूल कारण वस्तुतः कभी नहीं समझ सकी। फरीसियों में चरित्र भ्रष्ट राजनीतिज्ञ भी शामिल थे।

यीशु के सेवा काल 28 ईस्वी में (लगभग ठीक 100 समय चक्र मेरे पहला पास्का रखने से 1900 साल पहले) होने वाले पहले पास्का के समय पास्का के लिए येरुशलम गए।

वह वहीं थे जब निकोडेमस नाम का प्रतिष्ठित फारसी रात में चुपके से यीशु से मिलने आया। उसे डर था कि दूसरे फारसी जानते हैं कि उसने व्यक्तिगत रूप से यीशु से बात की है।

निकोडेमस ने कहा, ''रब्बी, हम (हम फरासी) जानते हैं कि तुम ईश्वर के यहां से आए अध्यापक हो।'' फरासी जानते थे कि यीशु मसीह हैं! वे इसैया 7:14, इसैया 9:6–7, इसैया 53 से परिचित थे। फरासी जानते थे कि यीशु आगम में वर्णित मसीहा हैं। लेकिन उन्होंने केवल एक मसीही साक्षात्कार को समझा। इसलिए उन्हें लगा कि वह तत्कालिक रोमन साम्राज्य को उखाड़ फेंकने की योजना बना रहे हैं!

दरअसल, यीशु जानते थे कि वे क्या सोच रहे हैं। इसलिए उन्होंने तत्काल इस तथ्य का प्रचार प्रारंभ कर दिया कि नए आत्मिक जन्म–पुनरूत्थान के समय तक सभी कौमों पर राज करने वाले ईश्वर के राज्य की स्थापना नहीं हो सकती!

पुनः जन्मे का सवाल

यीशु ने तुरंत जवाब दिया, ''अवश्य, अवश्य, मैं आपसे कहता हूं, कोई आदमी दुबारा जन्मे बिना ईश्वर का राज्य नहीं देख सकता।''

लेकिन निकोडेमस इसे नहीं समझ सका। वह जानता था कि जन्म लेने का अर्थ वास्तविक जन्म मां की कोख के प्रसव होता है। आज के ब्रह्मविज्ञानी भी उसे नहीं जानते! वे एक आत्मिक सत्ता के रूप में वास्तविक दूसरे जन्म से इनकार करते हैं। वे यह मान कर असली सच्चाई का आध्यात्मीकरण करते हैं कि महज यह कहना कि व्यक्ति ईसा मसीह को अपना उद्धारक स्वीकार करता है, दुबारा जन्म लेना हो जाता है। इस मामले में शैतान ने उन्हें छला है और वे लाखों लोगों को छल रहे हैं।

निकोदेमस ने कहा, ''जब कोई व्यक्ति बूढ़ा हो जाता है तो वह दुबारा कैसे जन्म ले सकता है?''

अब यीशु ने अर्थ स्पष्ट किया– लेकिन निकोदेमस ने उनके कथन की सादगी को स्वीकार नहीं किया और न आज के ब्रह्मविज्ञानी और धार्मिक नेता ही स्वीकार करते हैं।

''सत्य है, सत्य है'', यीशु ने जवाब दिया ''......यदि आदमी पानी और आत्मा से नहीं जन्मा है तो वह ईश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। कि जो मांस से जन्मा है वह मांस है और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है। (बलाघात मेरा–जॉन 3:5–6)।

फरीसी जल बपस्तिमावाद के बारे में जानते थे। वे गैर यहूदी मूर्तिपूजक नवदीक्षितों को यहूदी बनाने के लिए वर्षों से इसका उपयोग करते आए थे. वे बपतिस्मादाता जॉन के बपतिस्मा– पश्चाताप के बपतिस्मा– ''पापों के उपशमन के लिए'' (मारकुस 1:4)। यीशु का आशय निकोदेमस की समझ में आ जाना चाहिए था– कि जल बपतिस्मा एक प्रारंभिक कर्मकांड है आत्मा से जन्म लेने की पूर्व तैयारी का अनुष्ठान।

यीशु ने यह कह कर इसे दुबारा स्पष्ट कर दिया कि ''जो मांस से जन्मा है वह मांस है।'' कि जो इनसान से जन्मा है वह नश्वर इनसान है– मांस और रक्त का बना हुआ– जमीन के पदार्थ से बना हुआ। ''जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है। अब मानव नहीं बल्कि आत्मा से बना हुआ– अनश्वर! अब पदार्थ या मांस से बना हुआ नहीं।

यीशु ने और भी स्पष्ट किया।

''मैने तुमसे जो कहा उस पर हैरत मत करो। तुम दुबारा जन्म अवश्य लोगे।'' उसके बाद उन्होंने दुबारा जन्मे लोगों की तुलना हवा से की– मानव की आंखों के लिए अदृश्य। हवा का जिस ओर मन करता है उधर बहती है और आप उसकी आवाज सुनते हैं। लेकिन आप नहीं जानते कि यह किधर से आती है और कहां जाती है। यही उस प्रत्येक व्यक्ति के साथ होता है जो आत्मा से जन्मा है'' (जॉन 3:8, संशोधित मानक संस्करण)।

लेकिन निकोदेमस ने कथन की इस तरह की स्पष्टता को नहीं समझा और न आज के धार्मिक नेता ही समझते हैं!

इस पुस्तक के प्रत्येक पाठक को हमारी निःशुल्क पुस्तिका व्हाट डू यू मीन– बार्न अगेन? (आपका आशय क्या हैं– दुबारा जन्मा) पढ़नी चाहिए।

फरीसियों के इस प्रतिनिधि के सामने यीशु ने ईश्वर के राज्य के मोक्ष या आध्यात्मिक अवस्था का हवाला दिया।

वह राज्य नश्वर मानवों का नहीं होगा! यह रक्त–मांस के बने नश्वर व्यक्तियों से नहीं बना है जिन्होंने ''ईसा मसीह को स्वीकार किया है'' और अपनी पसंद के चर्च से जुड़े हैं! फिर भी चर्च के लाखों सदस्य इस मामले में छल के शिकार हैं।

चर्च के ये लाखों सदस्य नहीं समझते कि चर्च क्या है और न इसके उद्देश्य को ही जानते हैं। और न यही कि चर्च क्यों है – इसका प्रयोजन – इसके होने का कारण!

निकोरेमस को दिए यीशु के स्पष्टीकरण से बाइबिल के पुनरुत्थान वाले अध्याय, 1 कोरिंथियाइयों 15 की तुलना कीजिएः ''और ऐसा लिखा है, पहले मानव आदम को जीवित (नश्वर) मनुष्य बनाया गया था; अंतिम आदम को एक उत्तेजक आत्मा। बहरहाल वह पहला नहीं था जो आध्यात्मिक है, बल्कि वह जो प्राकृतिक है; और उसके बाद वह जो आध्यात्मिक है। पहला मानव मिट्टी का है, ऐहिक है; दूसरा आदमी स्वर्ग का मालिक है। जैसा ऐहिक है वैसे ही वे भी हैं जो ऐहिक हैं। स्वर्गिक जैसा है वैसे ही वे भी हैं जो स्वर्गिक हैं। और जैसे हमने ऐहिक की छवि धारण की है वैसे ही हम स्वर्गिक छवि भी धारण करेंगे। भाई अब मैं कहता हूं कि रक्त–मांस ईश्वर के राज्य का वारिश नहीं हो सका...'' (1 कोरिंथियाइयों 15:45–50)।

मैं बार–बार दुहराता हूं कि ईश्वर स्वयं को दुबारा उत्पन्न करता है!

आज चर्च का लोकप्रिय उपदेश है कि चर्च ही ईश्वर का राज्य है। लेकिन ''रक्त और मांस ईश्वर के राज्य के वारिश नही हो सकते'' (1 कोरिंथियाइयोंः 15:50)।

एक बार फिरः चर्च क्यों?

लेकिन फिर चर्च क्या है? और चर्च क्यों हैं? ईश्वर का चर्च क्यों होना चाहिए?

बहुतों के, संभवतः अधिकतर के जीवन में चर्च कोई भूमिका नहीं अदा करता। दरअसल, उनके जीवन मे ईश्वर कोई भूमिका नहीं अदा करता। सचेतन रूप से उनकी दुनिया में ईश्वर नहीं है। बस लोग, भौतिक चीजें और स्वार्थ। अलबत्ता, बहुत ही प्रतिभाओं के अवचेतन कल्पना में काफी पीछे वह अनुमान सुसुप्तावस्था में पड़ा होगा कि ईश्वर है। लेकिन वह उन्हें सत्य नहीं जान पड़ता।

इसका अर्थ यह भी कि औसत आदमी के मन में यह धारणा नहीं है कि वह क्या है, वह क्यों है, या उसके जीवित होने का कोई उद्देश्य या आशय भी है।

फिर भी चर्च है। लेकिन फिर वही सवाल उठता है कि क्यों? यह वस्तुतः क्या है? यह क्या प्रयोजन सिद्ध करता है?

हम देख चुके हैं कि सचमुच एक प्रयोजन है नीचे जिसका सविस्तार वर्णन किया जा रहा है। विंस्टन चर्चिल ने संयुक्त राष्ट्र की कांग्रेस के सामने वह कहा था। धरती पर मानवता के होने का एक कारण है। और उस प्रयोजन को तलाशने के लिए एक मास्टर योजना है। चर्च उस योजना का मुख्य हिस्सा है।

उस बनावट को कभी अपनी दृष्टि से ओझल न होने दें जिसने चर्च के निर्माण का मार्गदर्शन दिया। यह बात मन में बैठाए रखें कि ईश्वर कौन और क्या है– दैवी सर्जक परिवार जो आदमी में स्वयं को उत्पन्न करता है।

यह बात भी मन में रखें: धरती पर ईश्वर के राज्य की पुनर्स्थापना के लिए ईसा मसीह को अपने साथ और अपने अधीन ईश्वरीय सत्व के योग्य और संगठित कार्मिकों की आवश्यकता होगी। सब के सब शैतान के छद्म मार्ग को अस्वीकार करके ईश्वर की सरकार और उसके सत्यनिष्ठ मार्ग के प्रति अपनी निष्ठा साबित कर चुके लोग!

उसकी परम प्रधान योजना में ईश्वर के चर्च को उन ईश्वरीय सत्व के समर्पित और संगठित काार्मिक तैयार करने के लिए अभिहित किया गया था। उसके बाद चर्च मानवता को मुक्ति देने में ईश्वर की मदद करने वाला उसका सहायत बन गया।

याद रखें कि ईश्वर ने अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए एक 7,000 वर्षीय मास्टर योजना बना रखी है। हम बता चुके हैं कि उसका लक्ष्य स्वयं को उत्पन्न करना है। लेकिन वस्तुतः स्वयं को उत्पन्न करने का अर्थ दुनिया को पाप से ईश्वरीय धर्मपरायणता की ओर प्रवृत्त करना है। इसका आशय है ईश्वर की भावी संतानों में ईश्वर की शुद्ध आध्यात्मिक प्रकृति भरना। अततः वे ईश्वरीय परिवार के जन्मे बेटे हो जाएंगे।

और जैसे ईश्वर ने सब कुछ एक बार में नहीं बल्कि क्रमिक चरणों में सिरजा है उसी तरह वह दुनिया के लिए क्रमिक चरणों में मुक्ति भी ला रहा है। चर्च मानवता की मुक्ति के लिए आवश्यक पूर्व तैयारी का साधन है। इसलिए एक बार फिर इस पार जोर देकर कहने की अनुमति दें कि चर्च का उद्देश्य केवल उनको मुक्ति देना नहीं, जिन्हें चर्च में बुलाया गया है बल्कि पूर्वनियत और चर्च में बुलाए गए लोगों को शिक्षित–प्रशिक्षित करना भी है, दुनिया को मुक्ति देने में ईश्वर जिनका उपकरण के रूप में उपयोग करेगा।

चर्चः अध्यापकों का कॉलेज

आइए एक सादृश्य के जरिए इसका निरूपण किया जाए। अमरीका के बहुत से राज्यों में राजकीय अध्यापक कॉलेज हैं। राज्य तब तक स्कूल प्रारंभ और संचालित नहीं कर सकते जब तक कि उनके पास उन स्कूलों के लिए प्रशिक्षित अध्यापक ने हों। चर्च को उस समय के लिए जब ईश्वर सारी दुनिया को मुक्ति और शास्वत जीवन की पेशकश करेगा, ईश्वर के राज्य के लिए शासक और शिक्षण तैयार करने वाला ईश्वर का अध्यापक कॉलेज कहा जा सकता है।

चर्च को योजना के मुताबिक इस दुनिया के पूर्व नियत मानवों को बुलाने और कल की दुनिया के नेतृत्वकारी पदों के लिए उन्हें शिक्षित करने के लिए ईश्वर का साधन होना था। जब वे दूसरों को पढ़ाएं और प्रशिक्षित करेंगे। यही कारण है कि नव विधान में चर्च को ईश्वर के उद्धार का पहला फल कहा गया है।

इन सबकी वजह से ईश्वर की चरम प्रधान योजना की प्रक्रिया में कुछ चरण आवश्यक हैं। एक समय पर एक चरण।

अब हम पाठक को याद दिला दें कि आदम के पाप के समय, मानवता के बिलकुल प्रारंभ में ही पवित्र आत्मा मानवता के लिए बंद कर दी गई थी।

इसे दूसरे आदम, ईसा मसीह के धरती के सिंहासन से शैतान को हटा कर ईश्वर क राज्य की स्थापना करने तक के लिए मानवता के लिए बंद कर दिया गया था। इस तथ्य को जॉन 6:44 में स्पष्ट किया गया है, इस चर्च युग पर लागू करते हुए कि कोई भी व्यक्ति तब तक उनके पास नहीं आ सकता जब तक ईश्वर जिसने उन्हें भेजा है उसे आकर्षित नहीं करता यही कारण है कि नवविधान में उन्हें बार–बार आमंत्रित या पसंदीदा कहा गया है।

यही कारण है कि वनविधान में पूर्वनियत का जिक्र दो बार आया है– यानी जिन्हें बुलाया गया, यह पहले से तय था कि उन्हें बुलाया जाएगा। दरअसल, वे नियुक्त हैं, वे स्वयंसेवी नहीं हैं।

सच्चे ईसाईः नियुक्त, स्वयंसेवी नहीं

केवल ईसा मसीह के ही माध्यम से पाप करने वाली मानवता और ईश्वर यानी पिता के बीच मेल–मिलाप हो सकता है। उन्हें पहले ईसा मसीह के पास आना चाहिए। लेकिन पिता, यानी ईश्वर के चुने बिना और अपनी पवित्र आत्मा द्वारा खींचे बिना कोई ईसा मसीह के पास नहीं आ सकता।

यह एक आश्चर्यजनक नई सच्चाई की प्रतीत हो सकता है लेकिन आप जितना ही नवविधान का अध्ययन करते जाते हैं, और जिस तरह यह सच्चाई लगातार पूरे नवविधान भर में पुष्ट होती जाती है, उसी अनुपात में यह आपके मन में स्पष्ट होती जाती है।

कोई आश्चर्य नहीं कि चर्च और उसका प्रयोजन एक रहस्य रहा है। शैतान ने छली गई और नकली ईसाइयत की चेतना को अंधा कर दिया है।

कोई भी जो 'अपनी पसंद के चर्च से जुड़ता है'' वह ईश्वर के सच्चे चर्च से जुड़ ही नहीं सकता। व्यक्ति पहले ईश्वर द्वारा चुना और उसकी आत्मा द्वारा खींचा जाता है, पूरी तरह हृदय विदारक पश्चाताप तक लाया जाता है, और अपनी पूरी जीवन शैली में बदला जाता है, और न केवल व्यक्तिगत उद्धारक के रूप में ईसा मसीह पर विश्वास कर लेता और मान लेता है, बल्कि ईसा मसीह पर विश्वास कर लेता है। याद रखें ईसा मसीह ईश्वर के शब्द हैं। यीशु व्यक्ति के रूप में ईश्वर के शब्द थे। बाइबिल ईश्वर के वही लिखित शब्द है। ईसा मसीह पर विश्वास करने का अर्थ है उस पर विश्वास करना जो वह कहते हैं– दूसरे शब्दों में ईश्वर के शब्द पवित्र बाइबिल पर विश्वास करना।

इसलिए एक बार फिर चर्च क्या और क्यों है? चर्च ईश्वर के (इस दुनिया से) बुलाए गए, उत्पन्न किए गए बच्चे हैं। यह ईसा मसीह की संस्था है (1 कोरिंथियाइयों 12:27; इफीसियाइयों 1:23) यह आध्यात्मिक परमानंद है जो ''ईसा मसीह की दुल्हन'' होगी।– अमरत्व में इसके पुनर्जीवित होने के बाद। उसके बाद इसकी ईसा मसीह से शादी होगी! यह आध्यात्मिक मंदिर है जिसमें ईसा मसीह अपने दूसरे आर्विभाव में आएंगे (इफीसियाइयों 2:21)।

दरअसल, ईसा मसीह के स्वर्गारोह और महिमामंडित किए जाने तक चर्च की स्थापना नहीं हो सकती थी (जॉन 7:37–39)। लेकिन एक तरह से ईश्वर ने अब्राहम और प्राचीन विधान के पैगंबर– यहां तक कि संभवतः अबेल, एनोच और नोआ के साथ ही चर्च की नींव रखने के लिए कुछ को बुलाना प्रारंभ कर दिया था (इफीसियाइयों 2:20)।

और शैतान को जीत कर अपनी योग्यता साबित करने के फौरन बाद से ही यीशु ने अपने भावी अग्रदूत बुलाना प्रारंभ कर दिया था। पैगंबर के साथ मिल कर वे ईसा मसीह के अधीन चर्च की नीव रखने वाले थे जो खुद ही चर्च की असली नींव और उसके मुखिया हैं 1 कोरिंथियाइयों 3:11, इफीसियाइयों 5:23)।

औसत आदमी की किसी तरह कोई धारणा नहीं है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अंततः स्वयं को अरबों आध्यात्मिक ईश्वरीय सत्वों में उत्पन्न करके कितनी असाधारण, उच्चतम अलौकिक उपलब्धि प्राप्त की है।

ईश्वर की योजनाः एक अर्न पर एक कदम

ईश्वर जल्दी नहीं कर सकता था। इसके लिए एक प्रधान योजना की आवश्यकता थी, एक समय में जिसका एक चरण ही आगे बढ़ सकता था। इसके लिए धैर्य और दैवी स्र्राष्टा की ओर से कभी भी न विचलित होने वाले दृढ़ निश्चय की जरूरत थी!

इसे कुछ ही लोग समझते हैं!

मैं एक केवल 5 साल का था ईश्वर ने तभी मेरे दिल–दिमाग में उत्कट समझ की लालसा भर दी थी! सोलोमन ने बुद्धिमत्ता की कामना की थी और ईश्वर ने उसे कभी रहे किसी भी व्यक्ति से अधिक बुद्धिमत्ता दी।

तो फिर समझ की आवश्यक पूर्व शर्त क्या है? जो उसके आदेशों का पालन करते हैं उनमें अच्छी समझ होती है (साम 111:10)। एक कसौटी धर्मादेश है ईश्वर के सैबथ का पालन। मेरा धर्मांतरण इसी धर्मादेश के प्रतिरोध का नतीजा था। लेकिन जब दयालु ईश्वर ने मुझे पराजित कर दिया और उस मामले में मुझे अपने समक्ष आत्म समर्पण के लिए ले आया, उसने इसका भी उद्घाटन किया कि वार्षिक सैवथ और त्योहार मनाने की क्या आवश्यकता है। ये महान मास्टर योजना के सात प्रमुख चरणों की तस्वीर पेश करते हैं। (यह सच्चाई हमारी निःशुल्क पुस्तिका पागन हेलीडेज ऑर गाड्स होली डेज– व्हिच? (मूर्ति पूजकों के त्योहार या ईश्वर के पवित्र दिन कौन–से?) में स्पष्ट की गई है। इस और पवित्र बाइबिल के अन्य उद्घाटित ज्ञान के माध्यम से ईश्वर ने मुझे अपने महान लक्ष्य की जानकारी दी! और उस दिव्य लक्ष्य की पूर्ति में उनके चर्च की आवश्यक भूमिका की भी!

आदम के विद्रोह के बाद, धरती के सिंहासन पर अब भी शैतान के विराजमान होने के साथ केवल ईश्वर ही जान सकता था कि कैसे– क्रमशः सावधानी पूर्वक एक बार में एक कदम की प्रक्रिया अपनाई जानी चाहिए।

अबेल, इनोच और नोआ जैसे धर्मपरायण लोगों का अंततः ईश्वर के राज्य के सृजन में कुछ भूमिका निभाने के लिए उपयोग किया गया। लेकिन उस शास्वत ईश्वर ने उस चरम ईश्वरीय परिवार की आधारशिला रखने का काम कुलपिता अब्राहम से ही शूरू कर दिया था।

जैकब, जोसफ ने उस नींव के कुछ भाग का निर्माण किया। उसके बाद मूसा के माध्यम से ईश्वर ने इस्राईल कौम– ईश्वर की पहली धर्म संगति, चर्च को एकत्र किया। उस पुराने प्रसंविदा चर्च को ईश्वर की सरकार, पवित्र आत्मा नहीं दी गई थी! इस्राइलियों को भावी ईश्वरीय सत्व बनने के लिए नहीं उत्पन्न किया गया था। फिर भी इस्राईल ने ईश्वर के चरम कार्यक्रम में एक आवश्यक भूमिका निभाई।

इसके बावजूद उन वर्षों के दौरान ईश्वर ने अपने चर्च की नींव का हिस्सा बनने के लिए व्यक्तिगत पैगंबरों को बुलाना और उन्हें तैयार रखना जारी रखा।

चर्चः पहली फसल

और तब, चर्च क्या होने वाला था? जैसा कि ईश्वर का तीसरा पवित्र दिन (त्योहार) दर्शाता है, यह आत्मा में रूपांतरित नश्वर मानवीय व्यक्तियों–निर्मित ईश्वरीय व्यक्तियों– की पहली वास्तविक फसल प्रदान करने वाला था! एक बार फिर बता दें कि यह ईसा मसीह के अधीन मानवता का उद्धार करने और स्वयं को उत्पन्न करने के ईश्वर के प्रयोजन में सहायता के लिए प्रयुक्त होने वाला साधन है। बहरहाल, चर्च ईश्वर के उत्पन्न किए बच्चे हैं। लेकिन चर्च पहली जन्मी फसल होगा (हिब्रू 12:23) (ईसा मसीह अग्रगामी पथ प्रदर्शक) ईसा मसीह के सत्ता में आने और महिमामंडित होने पर!

अब्राहम से लेकर ईसा मसीह तक के वर्षों के दौरान ईश्वर ने ईश्वर के चर्च की प्रारंभिक सह– आधार शिला के रूप में शैतान की दुनिया से उत्पन्न किए और तैयार किए पैगंबर बुलाए! यीशु स्वयं मुख्य आधार हैं।

सांसारिक सेवा कार्य के 3½ साल उन्होंने के साथ प्रारंभ करने के लिए दूसरी सह–आधार शिला, अपने 12 अग्रदूत बुलाए, चुने और प्रशिक्षित किया।

अपने सांसारिक सेवा कार्य के दौरान यीशु ने ईश्वर के भावी राज्य की सार्वजनिक रूप से घोषणा की।

जैसे–जैसे आगे बढ़ते गए उन्होंने अपने अग्रदूतों को शिक्षा– प्रशिक्षण दिया। वह प्रायः नीति कथाओं में उनसे बातें करतें। और नीति कथाओं में क्यों? उनसे उस अर्थ को ढंकने, छिपाने के लिए (मत्ती 13:10–16) जो उनके चुने गए देवदूतों को समझने के लिए समझने के लिए दिया गया था। ईश्वर की एक समय पर एक कदम की योजना ने अभी तक दुनिया के बचाव का आह्वान क्यों नहीं किया इसका एक सबसे महत्वपूर्ण कारण था। ईश्वर ने जब यीशु दुनिया का उद्धार करने आए यीशु के अधीन, पहले राजा और धर्माधिकारी बनने के लिए

धर्मांतरण करने, बदलने के लिए चर्च का आह्वान किया (प्रकाशना 5:10)। नतीजतन चर्च के समक्ष बहुत सारे सत्य उद्घाटित हो गया। जिसे दुनिया का उद्धार करने में यीशु की मदद के लिए प्रशिक्षण दिया जा रहा था। इसके बावजूद इस दुनिया के चर्च नाटकीय रूप से इसके विरोधाभासी मत का प्रचार कर रहे हैं।

यीशु के सांसारिक सेवा कार्य का अंत

अपने सांसारिक सेवा कार्य के अंत तक में यीशु ने चर्च की स्थापना की तैयारी पूरी कर ली थी। उन्होंने वह काम पूरा कर लिया था जिसे करने के लिए वह मानव के रूप में आए थे। उसके बाद उन्होंने सलीब पर अपनी जान दे दी। उन्होंने हमारे पापों के लिए हमारे मानवीय अपराध अपने सर ले लिए।

बहरहाल, समझें कि ईसा ने मानवीय पापों में शैतान की प्राथमिक भागीदारी अपने ऊपर नहीं ली। शैतान अनंत काल तक अपने अपराध का दंड भरता रहेगा!

ईश्वर के चर्च की आधार शिला रखी जा चुकी थी। ईसा मसीह स्वयं नीव की प्रधान और मुख्य ईंट हैं – मुख्य आधार उनके अग्रदूतों ने पैगंबरों के साथ मिलकर शेष नींव का निर्माण किया।

देवदूत प्रारंभ करने के लिए झुंझला रहे थे– सुसमाचार का उपदेश देते हुए आगे बढ़ने के लिए लेकिन ईश्वर ने एक बार में एक कदम उठाते हुए बुद्धिमानी से धीरज संयम से का उपयोग किया इसलिए यीशु ने अपने अग्रदूतों प्रतीक्षा करने की चेतावनी दी। उन्होंने येरुशलम शहर में आदेश (लूकस 24:49) दिया, ''ऊपर जब तक तुम्हें ऊपर से धिकार न प्रदान किया जाए तुम लोग प्रतीक्षा करो।''

दस दिन बाद पेंटे कॉस्ट का वार्षिक दिन आ गया जिसका मूल नाम पहले फल था (नंबर 28:26)। उस दिन पवित्र आत्मा आई! उसी दिन चर्च की स्थापना हुई!

वह दिन ईश्वर के चर्च के लिए बिल्कुल पहले नवान्न के दिन का प्रतीक है। ईश्वर की दावत का दिन ईश्वर की आध्यात्मिक फसल का प्रतीक है। अंततः ईश्वर निर्मित ईश्वरीय सत्व के रूप में जन्म लेने वाले मनुष्यों के पहले आध्यात्मिक सत्य का बिलकुल पहला भाग चर्च है! यही कारण है कि प्राचीन पैगंबरों से लेकर वे भी जो ईसा मसीह की वापसी पर ईश्वर के राज्य में जन्म लेंगे, सभी ईश्वर के चर्च के अंग हैं। यहां तक कि प्राचीन विधान के समय के पैगंबर भी चर्च का अंग हैं (इफीसियायों 2:19–21)।

ईसा मसीह के गरिमा और सत्ता में आने पर सारे पैगंबर, देवदूत और चर्च के भातृ संघ को जिनमें पवित्र आत्मा बसती है– परिवर्तित किया जाएगा!

इस तरह समूचा चर्च उन पहले इनसानों से बना है जो अंततः ईश्वर के राज्य में दुबारा जन्म लेंगे। वे ईश्वरीय सत्व होंगे!

यह मानने वाले कितना छले गए हैं (प्रकाशना 12:9) कि पहले से ही उनका ''दूसरा जन्म हो चुका है।'' पाठक को चाहिए कि वे हमारी निःशुल्क पुस्तिका *जस्ट व्हाट डू यू मीन बॉर्न अगेन* (आपका आशय क्या है– दुबारा जन्मे?) के लिए अनुरोध करें।

मोक्ष अब केवल चंद लोगों के लिए

आगे बढ़ने से पहले समझ लें कि अभी तक में क्यों बहुत गिने–चुने लोगों को ही मुक्ति के लिए बुलाया गया है– क्यों समूची दुनिया ईश्वर से कटी हुई है– क्यों अभी तक दुनिया का न्याय निर्णय नहीं किया गया– क्यों उसे न तो ''उबारा गया है'' और न ''फेंका गया है''!

जब तक कि आदम का कोई बेटा उस मामले अपनी योग्यता साबित नहीं करता– जहां आदम नाकाम रहे थे– शैतान से उबर कर उसे परास्त नहीं करता– मानव के पापों का दंड न भरता और फिरौती देकर शैतान दुनिया को न छुड़ाता– कोई भी ईश्वर की सरकार की पुनः प्रतिष्ठा नहीं कर सकता था– किसी को भी शास्वत ईश्वरीय जीवन नहीं दिया जा सकता था!

ईश्वर के लक्ष्य को पूरा करने की परम प्रधान योजना स्वयं को उत्पन्न करने की योजना– आत्म अस्तित्वमान ''शब्द'' के मानव रक्त–मांस के बने आदम के बेटे के रूप में जन्म लेने की मांग करती थी। लेकिन वह योजना उसके ईश्वर के उत्पन्न बेटे के रूप में जन्म लेने की भी मांग करती थी!

मसीह और केवल वही शैतान को हरा कर उसे जीत सकता है और धरती के सिंहासन से शैतान को अपदस्थ करके अपनी योग्यता साबित कर सकता है! केवल उसीके माध्यम से आदम के बेटों का ईश्वर के साथ मेल–मिलाप हो सकता था, वे ईश्वर की आत्मा पा सकते थे, ईश्वर के बेटे हो सकते थे– ईश्वरीय सत्व हो सकते थे जिनके द्वारा ईश्वर अंततः स्वयं को उत्पन्न कर सकता था।

इतने महान लक्ष्य के लिए कितनी उत्कृष्ट प्रधान योजना! शास्वत ईश्वर कितना महान है जिसने इसकी अभिकल्पना की है!

इसलिए ईश्वर की यह असाधारण योजना जो इसीलिए अनिवार्य थी, मांग करती थी कि आदम के बेटों का अभी निर्णय न किया जाए! ईश्वर ने उन्हें उनकी युक्तियों के ऊपर छोड़ दिया– पूरी तरह यह जानते हुए कि वे जान–बूझकर स्वेच्छा से स्वतः शैतान के ''पाने'' के रास्ते पर चलेंगे।

लेकिन फिलहाल अंतिम रूप से उनका निर्णय नहीं होगा, लेकिन वे ''जैसा बोएंगे वैसा ही काटेंगे''। वे यह पाप मय जीवन जीएंगे, मरेंगे और 7,000 साल की महा–योजना के अंत में निर्णय के लिए ईश्वर एक विशेष पुनरुत्थान में उन सबको पुनर्जीवित करेगा। उनके पापों के लिए ईसा मसीह के प्रायश्चित कर चुकने और धरती पर ईसा मसीह और ईश्वर के राज्य के ईश्वर की सरकार की पुनःर्प्रतिष्ठा करने के बाद उन्हें प्रायश्चित के लिए, ईश्वर के साथ सामंजस्य के लिए अपनी स्वतंत्र पसंद से ईश्वरीय सत्व बनने के लिए बुलाया जा सकता है!

यही कारण है कि ईश्वर ने दुनिया को पूरी तरह से अपने–आपसे काट रखा है, यहां तक कि उनके जनक आदम ने भी स्वयं को, अपने मानव परिवार को उसके काट रखा था।

दुनिया के लिए रहस्य क्यों?

जैसा कि देवदूत पॉल रोमनों 11 में लिखने के लिए प्रेरित किए गए थेः मैं नहीं, बंधुओ, वह तुम हो जो इस रहस्य से अनजान रहोगे (और यह दुनिया के लिए एक रहस्य है)– इन रहस्यों के प्रति ''यह अज्ञान'' इस दुनिया में घटा है, ''ईसाई ब्रह्मविज्ञानियों'' के लिए भी। तब तक से लिए जब तक कि धरती पर ईश्वर का राज्य नहीं स्थापित हो जाता!

''क्योंकि'' पॉल अपनी बात जारी रखते हैं, ''जैसे तुम (ईसाइयों) ने अतीत में ईश्वर पर विश्वास नहीं किया है, इसके बावजूद उनकी अनास्था के माध्यम से तुमने अब दया प्राप्त कर ली हैः इसी तरह इन्होंने अभी तक विश्वास नहीं किया है, कि तुम्हारी दया के माध्यम से वे भी दया प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि ईश्वर ने अंततः उन सबको अविश्वास में बंद कर दिया है ताकि वह उन सब पर दया कर सके''!

और इस विंदु पर लेखने में पॉल चिल्ला उठते हैं ''ओ बुद्धिमत्ता और ईश्वर के ज्ञान, दोनों की! समृद्धियों की गहराई उसके निर्णय और पता लगाने के उसके रास्ते कितने अशोधनीय हैं!'' (रोमन 11:25, 30–32)।

सचमुच, देवदूत पॉल ने यह इस्राईल के संबंध में लिखा है लेकिन मैंने इसे आस्था न रखने वाली समूची मानवता पर लागू कर दिया है लेकिन यह सचमुच लागू करने योग्य है।

ईश्वर ने बुलाया और प्राचीन विधान के पैगंबरों को तैयार किया। उसने शैतान को परास्त करने के लिए आह्वान किया और चर्च तैयार किया है और आज भी करता है।– जबकि जो अभी अंधकार में हैं, अनाहूत और ईश्वर से कटे हुए हैं, उन्हें शैतान को परास्त नहीं करना था। क्यों?

चर्च कयों?

इसलिए कि हम ईश्वर के राज्य में ईसा मसीह के साथ, उनके अधीन, शासन करने की योग्यता साबित कर सकें। ताकि हम अंतिम आह्वान और दुनिया के मोक्ष का मार्ग प्रशस्थ कर सकें।

इस बिंदु पर मुझे सीधे ईसा मसीह के कथन के दो अनुच्छेदों को उद्घृत करने की अनुमति दें जो केवल चर्च पर लागू होते हैंः बीसवीं सदी के चर्च के प्रति यीशु कहते हैंः ''वह जो जीतता है, मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठने की अनुमति देता हूं, जैसे मैं जीतता हूं, और अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर विराजमान हूं'' (प्रकाशना 3:21)

उसके बाद फिर वह चर्च से कहते हैंः ''वह जो जीतता है और अंत तक मेरा काम जारी रखता है, मैं उसे राष्ट्रों पर अधिकार दूंगा और वह लौह दंड से उन पर राज करेगा...'' प्रकाशग्रंथ (2:26–27)

बाइबिल के उस परिच्छेद में यीशु ने स्पष्ट रूप से दर्शाया है कि इस समय इस दुनिया से कुछ लोगों को चर्च में क्यों बुलाया जाता है। इसलिए नहीं कि वह वह दुनिया को बचाने के प्रयास कर रहा हैं, और हम दुनिया का हिस्सा हैं। इसलिए भी नहीं कि हमारा उद्धार हो सकता है और यह उनके राज्य में ही किया जा सकता है बल्कि जैसा कि यीशु ने प्रकाशना 5:10 में कहा है, राजा और पुरोहित बनने और उस समय जब वह दुनिया के उद्धार का काम अपने हाथ में लेते हैं, उनके साथ और उनके अधीन राज करने के लिएं।

चर्च के लिए संपूर्ण धर्मांतरण आवश्यक

मैं बहुत जोर देकर यह बात नहीं दुहरा सकता कि अब जिन्हें चर्च में बुलाया जा रहा है महज और केवल उद्धार के लिए नहीं बुलाया जा रहा है। फिर भी वे राजा और पुरोहित बन सकें, सच्चे ईश्वरीय सत्व के रूप में दुनिया के उद्धार में यीशु की मदद कर सकें, इसके लिए जरूरी है कि जो चर्च में हैं, उनका सचमुच धर्मांतरण हुआ हो।

मैं इस तथ्य को बहुत स्पष्ट नहीं कर सकता। मुझे डर है कि चर्च के लोग भी पूरी तरह नहीं समझते कि धर्मांतरण क्या है।

धर्मांतरण मन में होता है और मनः शक्ति के इस प्रभाग को हम हृदय कहते हैं। मानव मन के वास्तविक गठन को समझे बिना इसे नहीं समझा जा सकता, जैसा कि इस पुस्तक के अध्याय 3 में स्पष्ट किया गया है। मनुष्य के भीतर की अंतर्आत्मा और मानव मन के वास्तविक गठन के ज्ञान का बाइबिल के जरिए उद्‌घाटन हुए बिना इसे कभी समझा नहीं जा सकता था।

जिस तरह मानव मन पशुओं के मस्तिष्क से अलग है उसी तरह आत्मा के जुड़ाव द्वारा धर्मांतरित व्यक्ति अधर्मांतरित व्यक्ति से अलग होता है।

मानव मन की क्षमता और निष्पादन पशुओं के मस्तिष्क से कितना अधिक है। उस अंतर की अनुभूति हमारे सामने यह स्पष्ट कर सकती है कि पवित्र आत्मा द्वारा संचालित धर्मांतरित मन और अधर्मांतरित व्यक्ति के मन में कितना अंतर होता है।

मनुष्य जब तक व्यक्ति प्रायश्चित नहीं करता वह पवित्र आत्मा नहीं प्राप्त करता। ईश्वर पश्चाप को स्वीकार करता है (ऐक्ट्स 11:18)। पवित्र आत्मा को प्राप्त करने की दूसरी शर्त है आस्था। न सिर्फ ईश्वर और ईसा मसीह में विश्वास करना, बल्कि चूंकि ईसा मसीह ईश्वर के परिवार के शब्द या प्रवक्ता हैं इसलिए वह जो कहते हैं उस पर विश्वास करना भी आस्था है।

प्रायश्चित का अर्थ होता है मन का बदलाव। शुद्ध दुःख सांसारिक पश्चाताप से बहुत गहरा होता है। और शुद्ध दुःख से पश्चाताप होता है। इसमें न सिर्फ पिछले पापों के लिए हार्दिक दुःख बल्कि आचरण, मन और जीवन की दिशा और उद्देश्य में संपूर्ण बदलाव शामिल होता है। वस्तुतः प्रायश्चित का संबंध अतीत के आचरणों से कम और भावी आचरणों से अधिक होता है। यीशु का खून अतीत के पापों का प्रायश्चित था। आप अतीत के पापों के लिए कुछ नहीं कर सकते। यीशु के रक्त ने अतीत के अपराधों का मूल्य चुका दिया है। इसने स्लेट को धोकर साफ कर दिया है।

धर्मांतरित व्यक्ति मन से पूरी तरह बदला हुआ या परिवर्तित मन होता है। एक धर्मांतरित मन जिसमें मानव मन के साथ ईश्वर का मन जुड़ा होता है। जैसा कि ईश्वर देवदूत पॉल के जरिए कहता है, ''इस मन को अपने मन के साथ होने दो, जो ईसा मसीह के मन में भी था (फिलिपियाइयों 2:5)। पवित्र आत्मा स्वस्थ मन की आत्मा है जो पूरी तरह परिवर्तित मन है। यह इच्छाओं, उद्देश्यों और अभिप्रायों में परिवर्तित होता है।

परंपरागत ईसाइयत की चूक

जिसे परंपरागत ईसाइयत कहा जाता है, उसमें ''उद्धार'' व्यक्ति को नए व्यक्ति में परिवर्तित नहीं करता। प्रायः पादरी और इजीलवादी लोगों को बताते हैं कि यदि उन्होंने ''ईसा को पा लिया है'' या ''ईसा को स्वीकार कर लिया है'' या यदि उन्होंने परमेश्वर को दिल दे दिया है तो वे उबार लिए गए हैं। उनका ''दुबारा जन्म हो चुका है''। यह तो वैसी ही बात हुई कि जैसे कोई रहस्यमय बटन दबाया नहीं कि व्यक्ति मृत्यु के फौरन बाद स्वर्ग पहुंच गया जिसे बहुत से लोग

मानते हैं कि वह वस्तुतः मृत्यु है ही नहीं। बाइबिल में ईश्वर इस तरह का कोई उपदेश नहीं देता। ईश्वर उद्‌घाटित करता है कि जैसे सभी आदम में मरेंगे उसी तरह मृतक के पुनरुत्थान द्वारा ईसा मसीह में 'सभी' जीवित किए जाएंगे। ईश्वर प्रकट करता है कि इस बीच मृतक पूरी तरह अचेत हैं।

प्राचीन इस्राईल में ईश्वर ने उन्हें अपने कानून का ज्ञान दिया लेकिन अपनी आत्मा नहीं दी। उनके मन रूपांतरित या परिवर्तित नहीं थे। वे अब भी ऐहिक थे। और स्वामिक मन ईश्वर के प्रति विद्रोही होता है (रोमनों 8:7) प्राचीन इस्राईल में कोई धर्मांतरण नहीं हुआ था, कोई उद्धार नहीं। एजाकिएल के सैतीसवें अध्याय में बताया गया है कि महान श्वेत सिंहासन के निर्णय में इस्राइली यदि चाहेंगे तो उन्हें ईश्वर की आत्मा कैसे मिलेगी।

एक बार ईश्वर की आत्मा प्राप्त कर लेना और उससे संचालित होना व्यक्ति का रूपांतरण है। वह मन के पुनर्नवीनीकरण से गुजरता है, और ईश्वर की वह आत्मा मानव आत्मा से जुड़ सकती है, सच्चे मोक्ष को पूरी तरह समझा नहीं जा सकता। एक ईसाई का गरिमा, आध्यात्मिक ज्ञान और शुद्ध चरित्र में विकसित, परिवर्धित होना अनिवार्य है।

पहले चर्च का आह्वान क्यों किया गया?

इस अवसर पर मुझे एक बार फिर यह स्पष्ट करने दें कि चर्च को ईश्वर के मोक्ष की पहली फसल क्यों कहा जाता है। अभी तक मुक्ति के लिए अनाहूत दुनिया की विशाल आबादी के खिलाफ मतभेद से काफी दूर यह मुक्ति के लिए शेष दुनिया के आह्वान के लिए ही है। मुझे एक बार फिर याद दिलाने दें कि अपने आपको उत्पन्न कने के लिए दुनिया के उद्धार की ईश्वर की, योजना के क्रम में एक निश्चित व्यवस्था है।

ईसा मसीह फलो में से पहले हैं। वह बहुत से भाइयों में से पहले हैं (। कोरिंथियाइयों 15:23; रोमन 8:29) बदलने, चरित्र में विकसित होने और अंततः ईसा मसीह के दूसरे आगमन पर ईश्वरीय सत्व के रूप में जन्म लेने के लिए चर्च आह्वान किया जाता है। उस समय ईसा मसीह के साथ और उनके अधीन राजा और पुरोहित बनने के लिए जब वह दुनिया के उद्धार का काम अपने हाथ में लेंगे?

तो एक तरह से चर्च ईसा मसीह के साथ सह–उद्धारक बनेगा। ईसा मसीह के दुनिया का उद्धार करने के लिए मूलतः दो चीजों की आवश्यकता थी। पहले उनके लिए, जो हम सबके स्रष्टा थे, सबके लिए मरने और इस तरह हम सबके बदले में पापों का मोल चुकाने की जरूरत थी। यह काम यीशु के सिवा कोई दूसरा नहीं कर सकता था।

लेकिन बहुत से लोग इसे अनुभव नहीं करते कि यीशु के रक्त से हमारा उद्धार नहीं किया गया है। आप रोमनों 5:10 में पढ़ेंगे कि यीशु की मृत्यु से पिता ईश्वर के साथ हमारा मेल–मिलाप हुआ है लेकिन हमारा उद्धार पुनरुत्थान द्वारा उनके जीवन से होगा। मैं यह परिच्छेद विशेष रूप से उस पर लिख रहा हूं जिसे ''ईस्टर रविवार'' कहा जाता है। आज के चर्च और इंजीलवादियों ने ईसा मसीह के पुनरुत्थान के बारे में कुछ नहीं कहा है जिनका उद्धार हो चुका है और उस पुनरुत्थान के बारे में भी नहीं जिससे लोगों का उद्धार किया जा सकता है।

केवल यीशु ही थे जो अतीत में हमारे पापों के भुगतान के लिए बलिदान कर सकते थे। लेकिन दुनिया को उनके पुनरुत्थान के बाद उनके जीवन के माध्यम से उद्धार की ओर अवश्य देखना चाहिए। चर्च ईसा मसीह की वाग्दत्ता दुल्हन है, जिसका ईश्वर के बेटे के साथ, जो चर्च में हैं, उसके पुनरुत्थान के बाद विवाह होगा। जब हम मृतकों के पुनरुत्थान को प्राप्त हो जाएंगे ईश्वर के बेटे की पत्नी और ईश्वर के परिवार के सदस्य के रूप में हम न सिर्फ ईसा के साथ उत्तराधिकारी और सह उत्तराधिकारी होंगे बल्कि एक तरह से सह उद्धारक भी होंगे।

सभी कौमों पर ईश्वर के राज्य के प्रतिष्ठापन में पुनरुत्थान में चर्च राजा और पुरोहित, के रूप में ईसा मसीह के अधीन शासक होंगे। लेकिन हम पुरोहित के रूप में उनके अधीन दुनिया के सहउद्धारक होंगे।

पहले फल आवश्यक क्यों है?

अब सवाल यह उठता है कि इस युग में मुक्ति पाने के लिए चर्च का आह्वान किया जाना आवश्यक क्यों था जबकि शेष दुनिया को आध्यात्मिक अंधकार और छल में छोड़ दिया गया था?

यीशु के हमारा उद्धारक और भावी राजा के रूप में अपनी योग्यता साबित कर पाने से पहले, उनके लिए यह आवश्यक था कि दूसरे आदम के रूप में वह करते जो करने में पहले आदम नाकाम थे। शैतान को जीतना और उसकी जगह ईश्वर की चेतना और सत्कार चुनना। यदि चर्च को उनके साथ उनके अधीन शासन करना है, यदि चर्च को पुरोहित और राजा होना और उनके अधीन दुनिया के उद्धार में उनकी मदद करनी है तो यह भी आवश्यक था कि जो चर्च में हैं वे शैतान का प्रतिरोध करके और उसे हरा कर अपनी योग्यता साबित करते।

दूसरों के व्यापक बहुमत के लिए उनके लिए मुक्ति का अवसर आने पर यह आवश्यक नहीं होगा। शैतान को दूर भगाए बिना उनकी मुक्ति नहीं होगी। इस तरह आप देखते हैं कि यह दूर–दूर तक बाकी की दुनिया के खिलाफ भेदभाव नहीं था। जब यीशु ने कहा, ''कोई व्यक्ति मुझ तक नहीं आ सकता जब तक कि पिता, जिसने मुझे भेजा है, उसे आकर्षित नहीं करता" जॉन 6:44)। यह आवश्यक था कि चर्च का आह्वान तब किया जाता जब प्रत्तेक सदस्य को शैतान की ओर से विमुख होना, उसका प्रतिरोध करना और उसे जीतना था। अन्यथा चर्च के हम लोग 1,000 वर्ष के दौरान ईश्वर के राज्य के राजा और पुरोहित जैसे असाधारण पदों के योग्य नहीं होंगे।

यह चर्च के क्यों–इसके महान उद्देश्य को स्पष्ट कर देता है।

क्या चर्च संगठित है? यदि हां तो कैसे?

लेकिन चर्च क्या है, इसका गठन कैसे होता है और यह काम कैसे करता है?

जब मैं ईश्वर के चर्च के बंधुओं में आया उस समय चर्च के नेताओं के बीच चर्च के संगठन की प्रकृति को लेकर सवाल थे। उस समय 1927 में चर्च का गठन अर्द्ध वार्षिक आम सम्मेलन के पैटर्न पर होता था। प्रत्तेक स्थानीय धर्मसंगति अर्द्धवार्षिक आम सम्मेलन में एक सदस्य भेज सकता था और इस तरह अधिकारियों के चयन में और चर्च के सिद्धांत और चर्च के नीति के सवाल पर उसके पास एक वोट होता था। स्थानीय धर्म संगति न्यूनतम पांच सदस्यों की हो सकती थी।

लेकिन चर्च के संगठन और सरकार के बीच विभाजन 1930 के आस–पास शुरू हुआ। 1933 तक में चर्च में सीधे दो फाड़ हो गया। दो नेताओं ने एक अलग चर्च का गठन कर लिया, उसके मुख्यालय स्टैनबरी, मिसोरी से अलग होकर सलेम, पश्चिम वर्जीनिया में उसका मुख्यालय खोल लिया। उन्होंने गठन की एक प्रक्रिया अपनाई जिसे गलत ढंग से ''बाइबिलीय गठन' कहा। इस नए संगठन में 12 लोग थे जिन्हें अग्रदूत कहा गया और ''बारह" का नाम दिया गया। सात व्यक्तियों को डेकन कार्यालय में नियुक्त किया गया था, कोषाध्यक्ष जिसका अध्यक्ष था जो धन संभालता था। ''सत्तर" या सत्तर पथप्रदर्शक अग्रज थे। इसे यहूदियों के प्रचीन सैन्हेड्रिन से नकल किया गया था। बहरहाल, विधिवत नियुक्त किए गए पादरियों की संख्या ''सत्तर" के आधे का आंकड़ा पूरा करने भर के लिए भी पर्याप्त नहीं थी।

रोमन कैथलिक चर्च धर्मतंत्रीय प्रथा पर संगठित है जिसमें पोप सर्वोच्च अधिकारी होता है, कार्डिनलों का एक कॉलेज पदानुक्रम में उसके बाद होता है। वेटिकन स्थित मुख्यालय में एक क्यूरिया के साथ आर्कबिशप, बिशप और पादरी होते हैं।

प्रेसवीटेरिएन चर्च जिसका गठन प्रेसवीटर या पादरियों से होता है जिसके हाथ में नियंत्रण होता है। कांग्रीगेशनल वाले चर्च शासितों की सहमति से सर्वोच्च अधिकार कांग्रीग्रेशन गवर्नमेंट को देते हैं।

और इसी तरह से चलता रहता है। शैतान की इस दुनिया के चर्च इनसान के बनाए प्रतिमानों के आधार पर संगठित होते हैं। लेकिन बाइबिल चर्च की सरकार के बारे में स्पष्ट निर्देश देती है। ईसा मसीह चर्च के प्रमुख हैं, ईश्वर के चर्च का विन्यास निस्संदेह पदानुक्रमी है। पिता, ईश्वर ईसा मसीह के ऊपर के प्रधान हैं––अकेले कानूनदाता और परमाधिकारी।

ईश्वर 1 कोरिंयियाइयों 12 में कार्य, कार्यालय, प्रशासन, और उनके अधिकारी बताता है जैसा कि ईश्वर ने अपने चर्च में प्रतिष्ठित किया था।

‘‘अब आध्यात्मिक उपहार के मामले में बंधुओ, मैं तुम लोगों को अज्ञानी नहीं रखूंगा...अब उपहार में विभिन्नताएं हैं, लेकिन आत्मा एक ही है। और प्रशासन में अंतर है लेकिन प्रभु एक ही है। और प्रचालन में अंतर है लेकिन वही ईश्वर है जो सब कुछ करता है...लेकिन यह सारे काम वही एक और एक ही आत्मा करती है, प्रत्येक आदमी को उसकी इच्छा के अनुसार अलग–अलग बांटते हुए। क्योंकि जैसे संस्था होती है और उसके बहुत से सदस्य होते हैं, और उस संख्या के सारे सदस्य उनके होने के बावजूद सभी एक ही संस्था होते हैं। इसी तरह ईसा मसीह भी हैं। क्योंकि एक आत्मा द्वारा हम सभी एक शरीर में बपतिस्मा पाते हैं, चाहे हम (चर्च में) यहूदी हों या गैर यहूदी, चाहे हम बंधे हो या मुक्त हों” (1 कोरिंथियाइयों 12:1, 4–6, 11–13)।

एक सरकार के साथ एक चर्च

विशेष रूप से ध्यान दें, चर्च केवल एक है। बहुत–से चर्च नहीं हैं। चर्च बंटा हुआ नहीं है। केवल एक चर्च है। कोई पितर और बहुत से पुत्री चर्च जो असहमति में बंटे हुए हैं। चर्च में अभी तक विभाजन, विच्छिन्नता नहीं है। वह चर्च ही है जिसे ईसा मसीह के आगमन पर उनके पुनरुत्थान पर उनसे शादी करनी है–असहमत चर्चों को नहीं– टूट कर छिन्न–भिन्न हो गए समूहों को नहीं! पितर चर्च और मतत्यागी बेटियां नहीं।

हम जैसे–जैसे आगे बैठेंगे यह बात और स्पष्ट हो जाएगी।

इसलिए इस पर भी ध्यान दें कि चर्च बहुत से अभियान चलाता है। एक चर्च में इन अभियानों के लिए विभिन्न प्रशासन या कार्यकारी विभाग होते हैं, प्रत्येक विभाग या अभियान का एक कार्यकारी प्रबंधक होता है (श्लोक 4–6)। याद रखें कि कोई कार्यकारी प्रशासक नीति, या प्रक्रिया या सिद्धांत नहीं तय करता। वह उसका प्रशासन करता है, उसे पूरा करता है, उसका निर्देशन करता है, जो ऊपर से पहले से तय होता है।

इस दुनिया में भी, संयुक्त राज्य में राष्ट्रपति कानून नहीं बनाता। वह कांग्रेस द्वारा प्राधिकृत नीतियों और कार्यों का प्रशासन करता है। चर्च में महज ऊपर से सौंपी निर्धारित नीतियों, प्रक्रियाओं और सिद्धांतों का पर्यवेक्षण, निर्देशन, निष्पादन करने के लिए प्रशासक नियुक्त किए जाते हैं।

एक अविभाजित चर्च पर श्लोक 20 में बल दिया गया है ''अब वे बहुत से सदस्य हैं लेकिन संस्था केवल एक है''– एक अविभाजित चर्च! ईश्वर एक से भी अधिक चरित्रों से बना है, फिर भी लेकिन ईश्वर एक ही है–याद रखें, ईश्वर दैवी ईश्वरीय परिवार है। जो चर्च में है वे ईश्वरीय परिवार के पहले से उत्पन्न सदस्य हैं। लेकिन अभी तक ईश्वरीय सत्व के रूप में में नहीं जन्में हैं! श्लोक 25 पर ध्यान दें: ''कि संस्था में कोई संघ भेद नहीं होगा; लेकिन सदस्यों को एक–दूसरे का समान रूप से ख्याल रखना चाहिए।''

इन बहुत से अभियानों का प्रबंध करने के लिए ईश्वर ने –सदस्यों के वोट ने नहीं, ''चर्च में कुछ लोगों को नियुक्त कर रखा है, पहले देवदूत, दूसरे पैगंबर, तीसरे अध्यापक।''

यै जैसा कि इफीसियाइयों 4:11 (मानक संशोधित संस्करण) में अधिक विस्तार से वर्णन किया गया है: ''और उसके उपहार यह थे कि कुछ को देवदूत, कुछ को पैगंबर कुछ को इंजीलवादी, कुछ को पेस्तर और अध्यापक होना चाहिए।''

देवदूत वह है जो जिसे ईशा मसीह के सुसमाचार के संदेश के साथ आगे भेजा गया था। अपने सिवा दूसरे व्यक्तियों और साधनों द्वारा उस संदेश की घोषणा की निगरानी सहित। इसके अलावा देवदूत को सभी स्थानीय कांग्रीगेशनों की या चर्चों की निगरानी भी सौंपी गई थी (I कोरिंथियाइयों 16:1)। देवदूत पॉल को मूर्तिपूजक दुनिया की निगरानी सौंपी गई थी। (II कोरिंथियाइयों 11:28)।

चर्च की नींव में प्रतिष्ठित पैगंबर पुराने विधान के हैं, जिसके लेखन का उपयोग नवविधान और सुसमाचार की शिक्षा और कामकाज के महत्वपूर्ण भाग के निर्माण में किया गया है। नवविधान के चर्च में किसी भी पैगंबर के प्रशासनिक, कार्यपालन या उपदेश कार्य का उल्लेख नहीं किया है।

इंजीलवादी अग्रणी पादरी थे जो जनता के बीच सुमाचार का उपदेश देते थे यहां तक कि स्थानीय चर्चों की स्थापना भी करते थे और अग्रदूत के अधीन कुछ चर्चों की निगरानी भी करते थे। इसलिए कोई इंजीलवादी अग्रदूत के अधीन कार्यकारी कार्य भी संभाल सकता है या आज काम कर सकता है। कोई इंजीलवादी स्थायी ही होगा यह जरूरी नहीं है। पेस्तर किसी स्थानीय चर्च के या स्थानीय चर्चों के आनुषांगिक समूह के स्थायी पेस्तर होते हैं। उसके बाद चर्च में अध्यापक रखे गए थे अनिवार्य रूप से उपदेशक नहीं। फिर भी सभी पादरियों और अध्यापकों को नवविधान के पाठों में गुरुजन कहा जाता है। इसलिए ईश्वर के चर्च में आज उपदेशक और गैर उपदेशक दोनों तरह के गुरुजन हैं। उपदेशक गुरुजन स्थानीय चर्चों के पेस्तर होते हैं। उसके बाद कुछ गुरुजन, गैर उपदेशक, आज स्थानीय चर्च के गुरुजन कहे जाते हैं।

मंदिर जिसमें ईशा मसीह आएंगे

अब चर्च के संगठन के बारे में और। चर्च ईसा मसीह का आध्यात्मिक संस्थान है। कोई धर्मनिरपेक्ष या सांसारिक संगठन, क्लब या संस्थान नहीं। फिर भी यह अत्यंत संगठित है।

ध्यान दें कि कितनी अच्छी तरह संगठित ''अब इसलिए तुम अजनवी और विदेशी नहीं हो, बल्कि साथी नागरिक, संतों के और ईश्वर के परिवार के साथ।''

ध्यान दें कि चर्च एक परिवार है, हालांकि ईश्वर भी दैवी परिवार है– ''ईश्वर का दैवी परिवार।''

जारीः ''और अग्रदूतों और पैगंबरों की नींव पर बने हो, ईसा मसीह स्वयं नींव के मुख्य पत्थर हैं, जिनमें समूची इमारत बनी है'' चर्च इमारत है–''अच्छी तरह आपस में जुड़ी हुई'' सुसंगठित सारे भाग आपस में जुड़े हुए और सामंजस्य और टीम भावना से काम करने वाले) ''प्रभु में एक पवित्र मंदिर विकसित होता है जिसमें तुम भी एक साथ मिल कर निर्मित हो आत्मा के जरिए ईश्वर के निवास

करने के लिए (इफीसियाइयों 2:19–22)। यह आगम स्पष्ट शब्दों में उस मंदिर का उद्घाटन करता है जिसमें अपने दूसरे आगमन पर विश्व पर शासन करने वाले महिमामंडित ईसा मसीह आएंगे। ईसा मसीह से पहले येरुशलम में भौतिक मंदिर की भविष्यवाणी करने वाला कोई धार्मिक लेख नहीं है। बहरहाल, इजेकिएल का चालीसवां अध्याय ईसा की वापसी के बाद एक मंदिर के निर्माण की बात करता है।

इस तरह चर्च का विकास एक पवित्र मंदिर में होना है, एक आध्यात्मिक मंदिर में जिसमें ईसा मसीह आएंगे उसी तरह जैसे वह पहली बार पत्थर, धातु और लकड़ी के बने भौतिक मंदिर में आए थे।

आगे ध्यान दें: ''प्रधान, यहां तक कि ईसा मसीहः जिनसे पूरा संस्थान अच्छी तरह से आपस में जुड़ा है"–संगठित ''और उससे सुसंहत जो प्रत्तेक जोड़ की आपूर्ति करता है, प्रभावी प्रत्येक अवयव के परिणाम में प्रभावी काम संस्था की वृद्धि करता है..." (इफीसियाइयों 4: 15–16)। सुसंहत का अर्थ है आपस में गुंथा हुआ, इतनी गहनता से जुड़ा हुआ जैसे वेल्ड किया गया हो। यह संगठित एकता समन्वय दर्शाती है! यह आदेश दिया गया है कि जो चर्च में हैं उन्हें इतना संगठित होना चाहिए कि ''वे सभी एक ही बात बोलें" (1 कोरिंयियाइयों 1:10)

प्राचीन विधान इस्राईल, पुराने विधान का चर्च भी दुनिया में एक राष्ट्र था–हालांकि दुनिया का नहीं जैसा कि ईश्वर ने इसे संगठित किया। इसकी सरकार पदानुक्रमी थी। यह धर्मतंत्रीय सरकार थी–शीर्ष से नीचे की ओर की सरकार ''लोकतंत्र'' से ठीक उल्टी।

चर्च धर्मतंत्रीय सरकार के अंतर्गत संगठित है। अपने विन्यास में पदानुक्रमी। सदस्य चर्च के पदाधिकारी नहीं तय करते। यहां तक कि चर्च के साधारण सदस्य भी ईश्वर तय करता है। (1 कोरिंथिइयों 12:18)।

यीशु ने स्पष्ट रूप से कहा था ''कोई भी आदमी मुझ तक नहीं आ सकता जब तक कि पिता, जिसने मुझे भेजा है, उसे लुभाता नहीं (जॉन 6:44)। दुनिया, विशेष रूप से आमंत्रित किए जाने के सिवा, ईश्वर से पूरी तरह कटी हुई है?

हमने यह सच्चाई ढंक रखी है कि ईश्वर ने मानवीय स्तर पर काम करने के लिए अधिकारी नियुक्त किए हैं। इसके बावजूद इस दुनिया के चर्चों में कुछ लोग मानते हैं कि चर्च की सरकार कौंग्रीगेशन–''लोकतंत्र''–द्वारा होती है–और खुद को 'कौंग्रीगेशनल'' कहते हैं। दूसरों ने खुद को प्रेस्बीटर या पादरियों की सरकार के रूप में संगठित कर रखा है और खुद को ''पादरी संघसत्तावादी'' या ''पेस्बीटर सत्तावादी'' कहते हैं। कुछ लूथर का अनुसरण करते हैं और स्वयं को ''लूथरवादी कहते हैं।

कुछ वेसली का अनुसरण करते थे जो नियम के पक्के थे और खुद को ''मेथडिस्ट'' कहते हैं। कुछ ने बपतिस्मा संबंधी ईश्वरीय सत्य को जान लिया और उस सिद्धांत के आधार पर अपने चर्च को ''बपतिस्मावादी'' कहते हैं। एक सारी दुनिया पर अपना वर्चस्व चाहता था इसलिए खुद को ''कैथोलिक'' कहा जिसका अर्थ होता है ''सार्वभौम''। यीशु ने जिस चर्च की स्थापना की उसका क्या नाम है?

चर्च का नाम

यीशु ने अपने चर्च के लिए प्रार्थना कीः ''....पवित्र पिता, अपने माध्यम से उनका नाम दो जिन्हें तुमने मुझे दिया है, ताकि वे एक रह सकें, जैसे कि हम हैं। जब मैं उनके साथ दुनिया में या मैंने उन्हें तुम्हारे नाम में रखा.... और अब मैं तुम्हारे पास आ गया हूं.... मैंने उन्हें तुम्हारे शब्द दिए हैं; और दुनिया ने उनसे नफरत की, क्योंकि वे दुनिया के नहीं हैं जैसे मैं भी दुनिया का नहीं हूं। मैं इसकी प्रार्थना नहीं करता कि तुम उन्हें दुनिया से निकाल दो बल्कि मैं फ्रार्थना करता हूं कि तुम्हें उनको बुरे (एक) से दूर रखना चाहिए। वे भी दुनिया के नहीं हैं जैसे मैं भी दुनिया का नहीं हूं। उन्हें अपने सत्य के माध्यम से पवित्र करोः तुम्हारा कथन सत्य है'' (जॉन 17:11–17)।

यीशु ने कहा कि उनके चर्च का नाम पिता–परमेश्वर के नाम पर रखा जाना है। नवविधान में इस एक *सच्चे* चर्च का नाम 12 बार ईश्वर का चर्च आया है! यह ईश्वर का चर्च है, और ईसा मसीह इसके मार्गदर्शक, पोषक, निर्देशक प्रमुख हैं!

पांच परिच्छेद जिनमें चर्च का असली नाम दिखाई देता है – चर्च का पूरा संस्थान – संपूर्ण चर्च का संकेत किया गया है। इस तरह समूचे चर्च के बारे में बोलते हुए, धरती पर इसके सभी व्यक्तिगत सदस्यों सहित, नाम है ''ईश्वर का चर्चा'' ये पांच परिच्छेद यहां दिए जा रहे हैं:

1) ऐक्ट्स 20:28 ''ईश्वर के चर्च के पोषण के लिए'' गुरुजनों को सलाह।

2) 1 कोरिंथियाइयों 10:32 किसी के साथ अपराध न करो, न तो यहूदियों के, न मूर्तिपूजकों के और न ईश्वर के चर्च के।''

3) 1 कोरिंथियाइयों 11:22 ''मैं.....तुम ईश्वर के चर्च से नफरत करते और उनको अपमानित करते हो जो विपन्न हैं?

4) 1 कोरिंथियाइयों 15:9 पॉल ने लिखा: ''क्योंकि मैंने ईश्वर के चर्च को उत्पीड़ित किया।''

5) गलातियाइयों 1:13 यह श्लोक अंतिम वाले को दुहराता है – ''मैंने ईश्वर के चर्च को उत्पीड़ित किया।''

जहां किसी विशेष स्थानीय कौंग्रीगेशन का उल्लेख किया गया है, सच्चे चर्च को ''ईश्वर का चर्च कहा गया है'' प्रायः स्थान या स्थिति के संदर्भ में। यहां चार और परिच्छेद हैं:

6) 1 कोरेंथियाइयों 1:2 ''ईश्वर का चर्च के कोरिंथ में हैं।''

7) 2 कोरेंथियाइयों 1:1 ''ईश्वर का चर्च जो कोरिंथ में है।"

8) 1 तिमथी 3:5 एक स्थानीय कौंग्रीगेशन में गुरुजनों के बारे में बातें करते हुए पॉल ने लिखा: ''क्योंकि यदि कोई अपने घर पर शासन करना नहीं जानता तो वह ईश्वर के चर्च का ध्यान कैसे रखेगा?

9) 1 तिमथी 3:15 मैं...... ईश्वर के घर में तरीके से पेश आओ, जो तीवित ईश्वर का चर्च है।'' यहां यह जीवित ईश्वर का चर्च है।

सामूहिक रूप से स्थानीय कौंग्रीगेशन की बात करते हुए, एक आम सभा के रूप में नहीं, बल्कि सभी कौंग्रीगेशनों के योग के रूप में बाइबिल में आया नाम ''ईश्वर का चर्च है''। यहां चर्च का नाम बताने वाले तीन अंतिम श्लोक दिए जा रहे हैं

10) 1 कोरिंथियाइयों 11:16......हमारे यहां इस तरह की कोई परंपरा नहीं है, न ईश्वर का चर्च ही।''

11) 1 थेसालोनियाइयों 2:14 ''क्योंकि तुम बंधुओ, ईश्वर के चर्च के अनुयायी बनो, जो जुड़ेय में ईसामसीह में हैं।''

12) 2 थेसालोनियाइयों 1:4 ''ताकि हम ईश्वर के चर्च में तुम में गौरावन्वित हों।''

इसके बावजूद कोई भी सच्चे अर्थों में ईश्वर का चर्च नहीं है, जब तक कि ईश्वर का चर्च, सिद्धांत, आचरण, संगठन, हर तरह से मूल बाइबिलीय प्रतिमान पर, ईसा मसीह के नेतृत्व में, फिर भी पिता, पवित्र आत्मा द्वारा समर्थित, से पिता ईश्वर का सत्य धारण करते हुए, ईश्वर की संपत्ति नहीं है और कुल मिलाकर दुनिया में ईसा मसीह के ईश्वर के राज्य के सुसमाचार की घोषणा के ईसा मसीह के समादेश को पूरा नहीं करता।

और इस तरह का केवल एक ही चर्च है!

और इसे विभाजित नहीं किया जा सकता। यह एक ही रहता है।

1 कोरिंथियाइयों 1 में देवदूत पॉल को यह व्यादेश देने के लिए प्रेरित किया गया है कि चर्च के सभी ''एक ही चीज बोलें।'' जिसमें विश्वास किया जाता, जो पढ़ाया जाता और जो उपदेश दिया जाता है उसमें कोई अंतर नहीं होना चाहिए।

परंपरागत ईसाइयत

लेकिन ''ईसाइयत'' की श्रेणी का लेबल लगे दूसरे बहुत से संगठित चर्चों के बारे में क्या है..... जिनमें से कुछ के लाखों सदस्य हैं। उन सबका प्रकाशना 17:5 में वर्णन किया गया हैः ''रहस्य, महान बेबीलोन, वेश्याओं की अम्मा, धरती की घृणित वस्तु।''

तो क्या वे बुरे हैं?

सचेतन रूप से या जानबूझ कर, अनिवार्य रूप से नहीं। मानवता की दुनिया ईश्वर से कटी रही है। शैतान अब भी धरती के सिंहासन पर विराजमान है, स्वयं ईश्वर के बाद सत्ता में! और सारी दुनिया शैतान द्वारा छली गई है। जो छले गए हैं उन्हें पता नहीं है कि वे छले गए हैं। यदि ऐसा होता तो वे छले न जाते! हो सकता है कि वे पूरी निष्ठा से हमेशा यही सोचते हों कि वह सही हैं!

क्या वे दोषी ठहराए जा चुके हैं। नहीं, किसी भी तरह से नहीं। उनका अभी तक निर्णय नहीं हुआ है। – न तो ''दोष सिद्ध'' है न ''दोष मुक्त''। शैतान की शक्ति और उसके छल की सीमा को बिरले ही पहचानते हैं!

वह शैतान है जो बुरा और पैशाचिक है। लेकिन वह अदृश्य सत्ता और अनदेखा बल और नश्वर मनुष्यों द्वारा अनचीन्हा है।

शैतान महान जालसाज है! वह ''प्रकाश के फरिश्ते जैसा प्रतीत होता है (II कोरिंथियाइयों 11:13–15)। और उसके अपने फर्जी चर्च हैं। शैतान ने उसके पादरियों को छल से यह विश्वास करा दिया कि वे ''धर्मपरायणता के'' और ईसा मसीह के पादरी हैं (2 कोरिंथियाइयों 11:15; मत्ती 24:5)।

''लेकिन मैं डरता हूं कि कहीं ऐसा न हो कि अपनी चालाकी से सांप ने हव्वा को धोखा दे दिया था, उसी तरह आपके मन में ईसा मसीह के प्रति जो निष्कपट प्रेम है वह भ्रष्ट न हो जाए। क्योंकि जब कोई आपके पास किसी ऐसे ईसा का प्रचार करने आता है, हमने जिसका प्रचार नहीं किया है, कोई दूसरा सुसमाचार लेकर आता है जिसे आपने स्वीकार नहीं किया है तो आप उससे अच्छी तरह सहमत हो सकते हैं क्योंकि ऐसे झूठे धर्मप्रचारक हैं, ऐसे प्रबंधक, कार्यकर्ता हैं जो ईसा मसीह के धर्म प्रचारकों का भेष बना कर घूमते हैं। और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि शैतान ने स्वयं प्रकाश के फरिश्ते का रूप धारण कर रखा है। इसलिए इसमें हैरत की कोई बड़ी बात नहीं कि उसके पादरियों ने भी धर्मपरायणता के पादरी का रूप धारण कर रखा हो; जिनका अंत उनके करनी जैसा ही होगा (2 कोरिंथियाइयों 11:3–4,13–15)।

ध्यान दें कि ये प्रवंचित लेकिन मिथ्या चर्च मान कर चलते हैं कि वे सच्चे चर्च हैं और उनके पुरोहितों ने ''धर्मपरायणता के पुरोहितों का रूप धारण कर रखा है'' – दूसरे शब्दों में वे ईसा मसीह के सच्चे पुरोहित जान पड़ते हैं। और वस्तुतः उनमें से बहुत–से पूरी तरह निष्ठावान हो सकते हैं लेकिन वे खुद ही प्रवंचना के

शिकार हो रहे हैं। फिर भी वे न ईसा मसीह के ईश्वर के राज्य के सच्चे सुसमाचार के बारे में जानते हैं और न कभी उसका उपदेश ही दिया है (मत्ती 24:14) और ईश्वर के चर्च के बारे में इस पुस्तक में जो लिखा गया है, वे उसे भी नहीं समझते!

आंशिक सत्य

बहुत से प्रोटेस्टैट संप्रदाय और कुछ व्यक्तिगत ''सेवा कार्य'' कुछ खास धार्मिक लेखों का उद्धरण देते हैं, विशेष रूप से ईसाइयों की जीवन शैली, आस्था, प्रेम इत्यादि के बारे में सही उपदेश देते हैं। लेकिन वे उन अनगिनत मौलिक लेखों की उपेक्षा कर देते हैं इस पुस्तक में जिनके हवाले दिए गए हैं। संभवतः शैतान चाहता है कि जो प्रबंधित हैं वह कुछ सच्चाइयां भी जानें।

लेकिन ये महत्वपूर्ण सच्चाईयों के मामले में गलत रुख अपनाते हैं। आमतौर पर उनके पास सही नाम नहीं होता ईश्वर का चर्च। या तो वे नहीं जानते या प्रचार नहीं करते कि ईश्वर का सत्य क्या है कि वे उसका प्रचार नहीं करते या फिर उन्हें ईशा के सुसमाचार का प्रचार ही नहीं करना है। उनके पास ईसा मसीह के नेतृत्व में अग्रदूतों, इंजीपेवादियों, पेस्तरों और गुरुजनों वाली ईश्वर की सरकार नहीं है। वे जानते ही नहीं कि मुक्ति क्या है। वे ईश्वर के उद्देश्य या उसकी योजना के बारे में भी नहीं जानते।

एक असली चर्च, जो बहुत उत्पीड़ित है और जिसका अस्तित्व बना हुआ है, उसके पास अनेक प्रमाण हैं जो साबित करते हैं कि यही मौलिक और सच्चा चर्च है। और इस चर्च ने भी 1933 तक, इस महत्वपूर्ण सत्यों में कई सत्य खो दिए थे. उस वर्ष से सच्चे चर्च में कम से कम 18 मूल और अनिवार्य सत्यों को पुनःप्रतिष्ठित किया गया है

मानव मन अकेले नहीं जान सकता

अभी तक मैं इसका स्पष्ट और संक्षिप्त स्पष्टीकरण नहीं दे सका हूं कि चर्च क्या और क्यों हैं।

और क्यों नहीं?

सामान्यतया स्वाभाविक रूप से लोग केवल मौलिक और सांसारिक चीजों के बारे में ही सोचते हैं। लोग इसे नहीं स्वीकार करते लेकिन उन्होंने खुद को ईश्वर से काट लिया है! मानव मन जब तक ईश्वर की पवित्र आत्मा नहीं प्राप्त करता, आध्यात्मिक रूप से नहीं सोच सकता—मानवीय समस्याओं, परेशानियों, बुराइयों या मानव अस्तित्व के उद्देश्य को नहीं समझ सकता।

लेकिन चर्च ईश्वर का चर्च है। और ईश्वर से संबंधित चीजें रहस्य हैं – स्वाभाविक सांसारिक मन की समझ में आने योग्य नहीं होतीं। इसलिए लोगों के पास किसी तरह की धारणा हो सकती है कि चर्च क्या है और क्यों है, लेकिन वह ईश्वरीय धारणा नहीं होती।

ईश्वर ने हमारे जमाने में अपने कथन, पवित्र बाइबिल के जरिए मनुष्य से संपर्क किया है। लेकिन बाइबिल का वास्तविक केंद्रीय अर्थ अध्यात्मिक है। और ईश्वरीय आत्मा के बिना प्राकृतिक मन आध्यात्मिक दृष्टि से नहीं सोच सकता या आध्यात्मिक ज्ञान को समझ नहीं सकता। इसे और भी रहस्य बनाने के लिए, एक बार फिर दुहराता है, बाइबिल चित्र पहेली जैसी है, जिसके हजारों भाग हैं। इसे समझने के लिए उन हिस्सों को सही ढंग से एक साथ अवश्य लगाया जाना चाहिए – ''समादेश पर समादेश, कतार पर कतार..... कुछ यहां, कुछ वहां'' (इसैया 28:9–10,13)। और इस आध्यात्मिक चित्र पहेली'' को सुलझाने के लिए मानव मन के साथ ईश्वर की आत्मा का जुड़ाव आवश्यक है। इसके बावजूद इसके लिए समय, अध्यवसाय और धीरज की आवश्यकता है। मैं पाठकों को संक्षेप में एक बार में ''चर्च क्या है और क्यों है'' का जवाब नहीं दे सका हूं। मैं रहस्य को पूरी तरह प्रकट करना चाहता हूं! तो फिर चर्च क्या है!

पहली ''फसल क्यों''

यह वह संस्था है जिसे ईश्वर ने सीधे शैतान की दुनिया से बुलाया है। यह ऐसी संस्था है जिसे बहुत ही विशेष प्रयोजन से बुलाया गया है – जब ईश्वर दुनिया के धर्मांतरण का काम अपने हाथ में लेता है उस समय पर शासक और शिक्षक बनने के लिए प्रशित होने के लिए– ईसा मसीह के साथ और उनके अधीन शासन करने और शिक्षा देने के लिए। उनका मनुष्य से वास्तविक ईश्वरीय सत्व, ईश्वर के परिवार का सदस्य बनना भी आवश्यक है। यही कारण है कि उन्हें ईश्वर की मुक्ति का पहला फल कहा जाता है (इफीसियाइयों 1:11 रोमनों 11:16; प्रकाशना 14:4)। पेंटिकॉस्ट का दिन मूलतः पहली फसल की दावत

कहा जाता था, जो ईश्वर के दुनिया के लिए मुक्ति के द्वार खोलने से पहले चर्च के आह्वान और उसे प्रशिक्षित किए जाने का चित्र प्रस्तुत करता है। हमें यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि अभी ईश्वर के शैतान की दुनिया के लिए जीवन के वृक्ष को खोलने का समय नहीं आया है। शैतान की दुनिया के लिए जीवन का वृक्ष खोलने की बजाय ईश्वर ने पूर्व नियतों को विशेष रूप से बुलाए जाने के लिए चुना है। ताकि उन्हें ईसा के अधीन ईश्वर के पूरी दुनिया के लिए जीवन का वृक्ष खोलने पर ईसा मसीह के अधीन वास्तविक ईश्वरीय सत्व के रूप राजा और शिक्षक के रूप में तैयार किया जा सके। यह वह समय होगा, जैसा कि जोएल 2:28 में कहा गया है, जब ईश्वर अंततः सारी मानवता में अपनी आत्मा टपकाएगा।

नवविधान का जो परिच्छेद गलत ढंग से ''अब मुक्ति का दिन है'' (11 कोरिंथियाई 6:2) का अर्थ देता है, वह इसैया 49:8 से उद्धृत है जहां यह ''मुक्ति का एक दिन'' है, मुक्ति का दिन नहीं। यूनानी पाठ में भी 'द' शब्द नहीं है। यह शब्द अनुवादकों ने घुसाया जिन्हें छल से यह मनवाया गया कि यही प्रत्येक की मुक्ति का इकलौता दिन है।

यह तथ्य कि चर्च का आह्वान महज और केवल मुक्ति के लिए नहीं किया जाता – उसे महत ''राज्य में बनाने के लिए'' नहीं किया जाता जैसा कि बहुतों ने कहा है, इस तथ्य की पौंड और टैलेंट्स की नीति कथाओं में स्पष्ट रूप से पुष्टि की गई है।

पौड्स की नीति कथा

पौड्स की नीति कथा (लूकस 19:11–27) में यीशु को ईश्वर का राज्य प्राप्त करने के लिए स्वर्ग में ईश्वर के सिंहासन पर जा रहे एक धनी युवा शासक के रूप में दर्शाया गया है जिन्होंने चर्च के प्रत्येक व्यक्ति को एक पौंड दिया जो ईश्वर की पवित्र आत्मा के एक अंश का प्रतिनिधित्व करता है। यह दर्शाता है कि हमें ईसाई जीवन के दौरान आत्मा में या ज्ञान की गरिमा में आवश्यक विकास करना चाहिए ईसा मसीह जब राज्य प्राप्त करने और राजमुकुट धारण करने के बाद लौटते हैं

तो वह चर्च के लोगों को हिसाब के लिए बुलाएंगे। जिन्होंने मिली हुई पवित्र आत्मा को (गरिमा और ज्ञान में विकास और परिवर्धन किया है) दस गुना किया होगा उन्हें दस शहरों का राज्य दिया जाएगा। जो आध्यात्मिक विकास और परिवर्धन के मामले में इसकी आधी योग्यता साबित करेगा उसे पुरस्कार स्वरूप पांच शहरों का राज्य दिया जाएगा। याद रखें कि हमें हमारे काम या आध्यात्मिक प्रगति के हिसाब से पुरस्कृत किया जाएगा लेकिन मोक्ष या मुक्ति निःशुल्क उपहार है। लेकिन उस आदमी का क्या होगा जो यह सोचता है कि बिना आध्यात्मिक विकास और प्रगति के ''उसने राज्य में यह बना लिया है'' ? उससे पवित्र आत्मा का दिया हुआ हिस्सा वापस ले लिया जाएगा – वह उस मुक्ति से वंचित हो जाएगा जिसके बारे में वह गलती से मान बैठा है कि यह तो उसे मिल ही चुकी है। वह राज्य में नहीं बना रह सकेगा! उसे केवल मुक्ति के लिए नहीं, उस समय राज्य में ईसा मसीह के अधीन राज करने, शिक्षा देने की योग्यता साबित करने के लिए बुलाया गया था जब ईश्वर सारी दुनिया के लिए मोक्ष का मार्ग खोलता है। यह ध्यान देने योग्य है कि जो शैतान की दुनिया में होंगे उनके लिए वह मुक्ति के द्वार नहीं खोलेगा. वह ईश्वर की दुनिया होगी – कल की दुनिया।

प्रतिभा की नीति कथा (मत्ती 25) भी इसी सत्य पर बल देती है।

बोने वाले की नीति कथा

(मैथ्यू 13:1–9) में बोने वाले और बीज की नीति कथाः लेकिन यीशु के शिष्यों ने इस नीति कथा को नहीं समझा। उन्होंने यीशु से पूछा कि वे नीति कथाओं में बातें क्यों करते हैं (श्लोक 10)। एक विशेष समादेश में दुनिया से बुलाए गए अपने शिष्यों से कहा, ''ईश्वर के राज्य के रहस्य आपको जानने के लिए बताए गए हैं लेकिन उन्हें नहीं बताए गए हैं। यह इसका एक और उदाहरण है कि ईश्वर मुक्ति और समझ के लिए दुनिया का आह्वान नहीं कर रहा है। यीशु ने अनाहूत दुनिया से अर्थ छिपाने के लिए नीति कथाओं में बात की (श्लोक 13)।

उन्होंने अपने आहूत शिष्यों को नीति कथा समझाई (श्लोक 18–23)। कुछ इस चर्च युग में जिनका आह्वान किया गया है, वे उपदेश दिए जाने पर ईश्वर के कथन को सुनते हैं लेकिन समझते नहीं। और उनके दिलों में जो बोया जाता है शैतान उन्हें पकड़ लेता है। जब उपदेश दिया जाता है तो कुछ लोग प्रसन्नता से सच्चाई को ग्रहण करते हैं लेकिन उनमें मन की गहराई और चरित्र का अभाव होता है; जब उत्पीड़न आता है तो वे गुस्सा हो जाते हैं और दूर चले जाते हैं। दूसरे लोग सुनते हैं और प्रारंभ में अनुक्रिया भी करते हैं लकिन आजीविका कमाने और सांसारिक सुखों में इस कदर उलझे होते हैं कि कोई फल नहीं देते–उसकी तरह जिसे एक पौंड मिला था लेकिन जिसने आध्यात्मिक चरित्र और ज्ञान के मामले में कोई प्रगति नहीं की। लेकिन दुनिया से बुलाए गए दूसरे बहुत से लोगों ने 100 गुना, 60 गुना 30 गुना आध्यात्मिक फल दिए। ईश्वर की मुक्त अनुकंपा उनका उद्धार कर देती है लेकिन ईश्वर के राज्य के अगले जीवन में उन्हें उनके कामों के आधार पर पुरस्कार दिया या जिम्मेदारी और अधिकार के पद दिए जाएंगे।

इसका आशय है कि उनके धारण किए फलों के आधार पर। और फल धारण करने का अर्थ होता है सामान्य से अधिक बाइबिल का पाठ, प्रार्थना, चर्च में आना या स्वेच्छा से चर्च के काम करना। इसका अर्थ है ''आत्मा का फल'' जैसा कि गलातियों 5:22–23 में स्पष्ट किया गया है–दूसरों के प्रति अधिक प्यार जताना हर्ष में विकसित होना जो हर्षातिरेक है, अपने परिवार, पड़ोसियों और सब के साथ शांति से रहना, धीरज बढ़ाना, दूसरों के प्रति अधिक दयालु और सज्जन होना, अच्छाई और आस्था इसके साथ–साथ विनम्रता और संयम।

इस तरह चर्च वह संस्था है ईसा मसीह के साथ और उनके अधीन ईश्वर की सरकार की पुनर्स्थापना के लिए तैयार करने के लिए जिसे शैतान की दुनिया से बुलाया जाता है। यह तब होगा जब शैतान को अपदस्थ कर दिया गया होगा। यह वह समय होगा जब सभी जीवितों को प्रायश्चित और ईश्वर की पवित्र आत्मा द्वारा शास्वत जीवन के लिए बुलाया जाएगा। ईसा मसीह के साथ अमर चर्च राज करेगा और शैतान के वर्तमान शासन की जगह ईसा मसीह का शासन होगा।

इस तरह चर्च बुलाए गए लोगों की वह संस्था है जो पुनरुत्थान के समय ईश्वर की फसल कटाई के पहले फल का निर्माण करेंगे। वह फसल कटाई भौतिक रक्त–मांस की फसल कटाई होगी – भौतिक पदार्थों से बने मनुष्य दैवी ईश्वरीय सत्व में परिवर्तित हो जाएंगे – उनमें जिनमें ईश्वर ने सचमुच स्वयं को उत्पन्न किया है!

चर्च आज भी सांसारिक

बुद्धिमत्ता में ईश्वर इतना धीमे क्यों चला है – एक बार में एक कदम? कम ही लोग अनुभव करते हैं कि ईश्वर का प्रयोजन कितना महान है! इतने वर्षों तक पाप करने, मानव जीवन के ईश्वर से कटे होने, यहां तक कि प्रारंभिक धर्मांतरण करने वालों को ईश्वर की पवित्र आत्मा के दिए जाने के बावजूद चर्च के लोग प्रारंभिक रूप से ''ईसा मसीह में बच्चे'' होते हैं – जितने आध्यात्मिक उससे कहीं अधिक सांसारिक होते हैं।

और यही कारण है कि ईश्वर ने चर्च में अपनी सरकार स्थापित की है। यही कारण है कि ईश्वर के चर्च की सरकार लोकतांत्रिक की बजाय धर्मतंत्रीय है। यही कारण है कि ईश्वर ने अपने चर्च में सरकार के स्तर तय किए हैं – अग्रदूत, इंजीलवादी, पेस्तर, एल्डर, उपदेश देने वाले और उपदेश न देने वाले दोनों, जब तक हम (चर्च के लोग) आस्था और ईश्वर के बेटे के ज्ञान की एकता में रहते है, ईसा मसीह के कद की परिपूर्णता की माप में (इफीसियाइयों 4:13)। यह बपतिस्मा के बाद ''राज्य में बनाए गए'' होने का मामला नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक विकास और ज्ञान और धर्मपरायण चरित्र के विकास का मामला है। यही कारण है कि यह विन्यास में पदानुक्रमी सरकार है। ऊपर, ईश्वर से नीचे। नीचे से ऊपर की नहीं। अन्यथा जो नीचे धरातल पर होंगे वे ईश्वर पर राज करेंगे!

यही वह सरकार है जिससे ईसा मसीह सहस्राब्दी के प्रारंभ से सभी राष्ट्रों पर राज करेंगे!

और यही कारण है कि शैतान ने चतुराई से ईश्वर के चर्च के बागियों को प्रभावित करके उन्हें ईश्वर के चर्च असंतुष्ट बनाया है और उनमें कड़वाहट भर दी है। नतीजतन कुछ लोग चर्च से बाहर चले गए हैं।

इस दुनिया के चर्च – ''परंपरागत ईसाइयत'' ईश्वर की सरकार की बात ही नहीं करते। वे ईसा मसीह को भावी विश्व शासक के रूप में प्रस्तुत ही नहीं करते। वे यीशु के भावी शासक के रूप में आने का उपदेश ही नहीं देते – वे बस उन्हें उद्धारक बताते हैं? वे बाइबिल के उन लेखों को नजरअंदाज कर देते हैं, अस्वीकार कर देते हैं जो यीशु के राजा होने, उनके ईश्वर के राज्य में शासन करने के लिए आने, आगे उनकी सरकार की बातें करते हैं। और कहने का आशय यह कि वे अपने उद्देश्यों से ईसा के सुसमाचार के संदेश को निकाल देते हैं! वे उपदेश हैं कि ईसा की पाने को साथ ही व्यक्ति का उद्धा हो जाता है!

मैं एक बार फिर दुहराता हूं कि जिन व्यक्तियों को ईश्वर बुलाता और अपने चर्च से जोड़ता है, प्रारंभिक, धर्मांतरण पर वे दूर–दूर तक राष्ट्रों पर शासन करने का अधिकार दिए जाने योग्य नहीं होते!

उसे ''ईसा का बच्चा'' कहा जाता है, यदि वह प्रायश्चित करता है और अपने इस प्रारंभिक मानव जीवन में सचमुच परिवर्तित हुआ है तो उसे वस्तुतः ईश्वर की पवित्र आत्मा का अंश मिला है। वस्तुतः रोमनों 8:16 में हम पढ़ते हैं: ''ईश्वर की आत्मा हमारी आत्मा के साथ स्वयं इसका साक्षी है कि हम ईश्वर के बेटे हैं।'' लेकिन शहरों और कौमों पर राज्य करने और जो धर्मांतरण करते हैं उन्हें शिक्षा देने के योग्य होने से पहले हमें आध्यात्मिक रूप से विकास करने की जरूरत है।

जैसा कि अग्रदूत पॉल ने पहली शताब्दी के उन लोगों से कहा था, जो चर्च में थे और आध्यात्मिक रूप से विकसित नहीं हो रहे थे: ''कि तुम काहिल मत बनो, बल्कि उनका अनुसरण करो जिन्होंने आस्था और धीरज से विरासत में वादे पाए। क्योंकि ईश्वर ने जब अब्राहम से वादा किया, और क्योंकि वह अपने से किसी महान व्यक्ति की कसम नहीं खा सकता था, उसने अपनी शपथ ली और कहा सुनिश्चित रूप से आशीर्वाद देते हुए मैं तुम्हें आशीर्वाद दूंगा, और वृद्धि करते हुए मैं तुम्हारी वृद्धि करूंगा (हिब्रू 6:12–14)।

हम हालांकि अभी जन्में नहीं है लेकिन ईश्वर के जाए बेटे हैं। प्रत्यक्ष रूप से तुलना करें तो किसी गर्भवती मां के गर्भ का भ्रूण, जन्मा नहीं होता फिर भी अपने माता–पिता की संतान होता है। इसलिए मैंने, सरसरी तौर पर टिप्पणी की है कि गर्भपात हत्या है!

गलतियों के अध्याय 4 के श्लोक 22 के प्रारंभ में दो प्रसंविदाओ – सिनाय पर्वत पर इस्राईल कौम के साथ की गई प्रसंविदा और ईसा मसीह की वापसी पर जाने वाली नई प्रसंविदा के बारे में एक अन्योक्ति है. बहरहाल, चर्च के पुरोहित ''नव विधान के सक्षम पुरोहित है'' (2 कोरिंथियाइयों 3:6)।

चर्च नव विधान का अंग और उसके अंतिम निर्माण की पूर्व शर्त है। दो प्रसंविदाओं की उस अन्योक्ति में चर्च को ''हम सभी को,'' जो चर्च में हैं, ''मां'' कहा गया है।

इसलिए प्रत्यक्ष तुलना पर ध्यान दें। ईश्वर मनुष्यों के माध्यम से स्वयं को उत्पन्न करता है। उसने हमें आत्मजनन की शक्ति प्रदान की है और मानव प्रजनन ठीक ईश्वर के आध्यात्मिक प्रजनन जैसा है।

मानव प्रजनन आध्यात्मिक मुक्ति का चित्र कैसे प्रस्तुत करता है?

अब देखिए और समझिए कि कैसे मानव प्रजनन आध्यात्मिक मुक्ति को प्रतिबिंबित करता है।

सारा मानव जीवन एक छोटे–से अंडे से उत्पन्न होता है, जिसे डिंव कहा जाता है। यह मानव मां के शरीर में उत्पन्न होता है, यह डिंब किसी सूई की नोक जितना बड़े होता है। इसे काफी आवर्धित करके देखा जा सकता है कि उसमें एक नाभिक होता है। लेकिन इस डिंब का जीवन बहुत छोटा होता है। कुछ डॉक्टर और वैज्ञानिक मानते हैं कि यदि यह किसी पुरुष के शुक्राणु से निषेचित न हो तो इसका जीवन महज 24 घंटे का होता है।

लेकिन मानव पिता के शरीर में उत्पन्न होने वाला शुक्राणु इसे मानव जीवन दे सकता है। शुक्राणु मानव शरीर की सबसे छोटी कोशिका होती है – डिंब की

माप के लगभग पांचवें हिस्से का। शुक्राणु किसी डिंब में प्रवेश करने पर डिंब के नाभिक तक पहुंच जाता है और उससे जुड़ जाता है। यह डिंब को भौतिक मानव जीवन प्रदान करता है। लेकिन अभी यह जनमा मानव नहीं है। अभी मानव जीवन को केवल अस्त्वि मिला है। लेकिन पहले चार महीने तक इसे भ्रूण कहा जाता है उसके बाद जन्म तक गर्भ कहा जाता है। यह मानव जीवन अत्यल्प आकार किसी सूई की नोंक के आकार से प्रारंभ होता है और इसे उत्पन्न करने वाला शुक्राणु मानव शरीर की सबसे छोटी कोशिका होता है!

एक बार अस्तिव में आ जाने के बाद मां के माध्यम से भौतिक भोजन देकर इसे पोसना आवश्यक होता है। इस भौतिक पोषण से यह विकसित होता जाता है – और नौ महीने बाद जन्म लेने के लिए पर्याप्त बड़ा हो जाने तक बढ़ता जाता है। यह जैसे–जैसे बढ़ता है, इसके शारीरिक अंग और स्वभाव बनते जाते हैं। जल्द ही मेरु दंड बन जाता है। उसके बाद धीरे–धीरे शरीर, सिर, पैर, बाहें। अंत में सिर पर बाल उगने लगते हैं। हाथ–पैरों की उंगलियों के नाखून विकसित हो जाते हैं। अंततः मुखाकृति तैयार हो जाती है। नौ महीने में औसत सामान्य गर्भ का वजन लगभग छह से आठ पौंड हो जाता है, और वह भ्रूण जन्म लेने के लिए तैयार हो जाता है।

मनुष्य को उसके मानव पिता द्वारा उत्पन्न करना पड़ता है। ईश्वरीय आत्मा द्वारा दुबारा जन्म लेने के लिए व्यक्ति को पहले आध्यात्मिक पिता–सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा उत्पन्न किया जाना चाहिए।

आश्चर्यजनक तुलना

अब देखिए कि इनसान का अस्तित्व में आना गर्भावस्था और जन्म किस तरह आश्चर्यजनक रूप से बिलकुल आद्यात्मिक मुक्ति जैसा है – ईश्वर से उत्पन्न – ईश्वर के राज्य, उस ईश्वरीय परिवार में शास्वत जीवन दिए जाने जैसा जिसमें हम जन्म ले सकते हैं!

प्रत्येक वयस्क मनुष्य किसी 'अंडे' या ''डिंब'' जैसा होता है। इस आध्यात्मिक डिंब में एक नाभिक होता है जिसमें उसकी मानव आत्मा रहती है।

इस आध्यात्मिक ''डिंब'' का अपना जीवन शास्वत जीवन की तुलना में बहुत छोटा होता है, लगभग 70 साल का। लेकिन इसमें पवित्र आत्मा के प्रवेश से इसे अमर आध्यात्मिक जीवन मिल सकता है – जो पिता ईश्वर से आती है. ईश्वरीय की दैवी आत्मा मानव के नाभिक, यानी उसकी आत्मा से जुड़ता है, जो मानव की आत्मा और मन होता है और हमें दैवी प्रकृति भी प्रदान करती है (2 पीटर 1:4)। इससे पहले तक हमने केवल मानवीय, सांसारिक या ऐहिक गुण ही रहते हैं।

जैसे मानव शुक्राणु मानव शरीर की सबसे छोटी कोशिका होता है, उसी तरह बहुत से नवोत्पन्न ईसाई ईश्वर की पवित्र आत्मा और चरित्र के बहुत सूक्ष्म अंश से जीवन प्रारंभ करते हैं। बहुत से अब भी 99.44 प्रतिशत तक सांसारिक जीव हो सकते हैं। स्पष्ट है कि कोरिंथ स्थित ईश्वर के चर्च के बहुत से लोग ऐसे ही थे। (1 कोरिंथियाइयों 3:1–3)। अग्रदूत पॉल ने कहा था कि उन्हें अभी आध्यात्मिक दूध पिला कर पालना है – अभी वे वयस्क आध्यात्मिक ''भोजन'' नहीं खा सकते। निश्चित रूप से अबी दुबारा जन्में नहीं हैं।

जिस तरह पुरुष का शुक्राणु डिंब के नाभिक तक पहुंच जाता है और उससे जुड़ जाता है उसी तरह ईश्वर की आत्मा मानव मन और मन तक पहुंच कर उससे जुड़ जाती है!

जैसा कि पहले ही स्पष्ट किया गया है मानव के भीतर भी एक आत्मा होती है। यह मानव आत्मा मस्तिष्क के साथ जुड़ कर मानव चेतना का निर्माण करती है। ईश्वर की आत्मा मानव आत्मा से जुडी है और इसका साक्षी बनती है कि अब हम ईश्वर के बच्च`हैं (रोमनोंः 8:16)। और ईश्वर की पवित्र आत्मा हमारे मन में स्थित मानव आत्मा के साथ जुड़ कर हमारे मन को आध्यात्मिक ज्ञान को समझने की शक्ति प्रदान रहती है (1 कोरिंथियाइयों 2:11) जिसे ऐहिक मन नहीं समझ सकता।

अब ईश्वर की आत्मा के माध्यम से हमारे भीतर शास्वत जीवन विद्यमान है। इसी तरह मानव भ्रूण वस्तुतः मानव जीवन था अभी अविकसित था। लेकिन हम आमर आत्मिक सत्व नहीं हैं – अभी ईश्वर जन्य नहीं है – जैसे मानव डिंब अभी

मानव पितर जन्य नहीं था – अभी भौतिक उत्तराधिकारी और अधिकारी नहीं; बल्कि भौतिक वारिस था (रोमनोंः 8:17)। लेकिन यदि हममें ईश्वर की पवित्र आत्मा का वास है तो पुनरुत्थान के समय ईश्वर हमारे भीतर बसने वाली अपनी आत्मा से हमारी नश्वर काया को अमरत्व ''प्रदान करती है'' (रोमनः 8:11; 1 कोरिंथियाइयों 15:49–53)।

अब हम देखते हैं कि यह आश्चर्यजनक अन्योक्ति किस तरह आगे भी जारी रहती है!

अभी तक हम जन्में ईश्वरीय सत्व नहीं हैं। अभी हम आत्मा से नहीं, बल्कि भौतिक पदार्थ से बने है। अभी दैवी जीवन महज उत्पन्न हुआ है। आध्यात्मिक अर्थों में यह दैवी चरित्र इतनी कम मात्रा में प्रारंभ होता है कि इसके अधिकांश भाग का कोई प्रमाण संदिग्ध जान पड़ता है सिवा उस आध्यात्मिक रूमानियत के आनंदातिरेक के जो हम धर्मांतरण के प्रथम प्रेम के समय बिखेरते हैं। लेकिन जहां तक आद्यात्मिक ज्ञान और विकसित आध्यात्मिक चरित्र का सवाल है अभी उसका अधिकांश भाग अभी अस्तित्व में नहीं आया है।

आध्यात्मिक भ्रूण

इस तरह एक बार आध्यात्मिक रूप से उत्पनन हो जाने पर हम आध्यात्मिक भ्रूण होते हैं. अब हमें आध्यात्मिक भोजन देकर पाला–पोसा जाना चाहिए। यीशु ने कहा था कि मनुष्य केवल रोटी (भौतिक भोजन) से नहीं बल्कि ईश्वर के प्रत्येक शब्द (आध्यात्मिक भोजन) से जिंदा रहेगा! इसे हम बाइबिल से पीते हैं। लेकिन हम यह आध्यात्मिक ज्ञान और चरित्र को प्रार्थना के माध्यम से व्यक्तगित, घनिष्ट और सतत संपर्क और चर्च में ईश्वर के बच्चों के साथ ईसाई भाई–चारे के माध्यम से भी पीते हैं। और चर्च द्वारा प्रदान की गई सतत शिक्षा से भी।

भौतिक भ्रूण और गर्भ को मां के माध्यम से भौतिक पोषण दिया जाता है। ईश्वर के चर्च को येरूशलम कहा जाता है ''जो हम सबकी मां है'' (गलाती 4:26)।

बिलकुल समांतर तुलना देखिए। चर्च अपने सदस्यों की आध्यात्मिक मां है।

ईश्वर ने अपने बुलाए और चुने हुए पुरोहितों को अपने चर्च में आम आदमी का पालन–पोषण करने के लिए रखा है – ''संतों के परिष्कार के लिए, सेवाकार्य के लिए, ईसा की संस्था (चर्च) के ज्ञानवर्धन के लिए हम सबकी आस्था की एकता और ईश्वर के बेटे का ज्ञान प्राप्त करने, उत्कृष्ट मानव बनने, ईसा मसीह की संपूर्णता के पैमाने पर पूर्णता प्राप्त करने तक।'' (इफीसियाइयों 4:11–13)।

ईसा मसीह के सच्चे पुरोहितों (और वे आज कितने कम हो गए) हैं। का दायित्व है कि वे उत्पन्न किए गए लेकिन अभी तक अजन्मे संतों को मिथ्या सिद्धांतों, मिथ्या पुरोहितों से बचाएं।

मानव मां अजन्मे बच्चे को अपने शरीर के उस भाग में रखती है जहां वह उसे भौतिक क्षति से सबसे सुरक्षित रख सकती है। अपने अजन्मे बच्चे का पोषण करने के साथ–साथ उसकी रक्षा करना भी उसके काम का हिस्सा है! इसी तरह चर्च ईसा मसीह के पुरोहितों, के माध्यम से अपने अजन्मे सदस्यों को निर्देश, शिक्षा, परामर्श और सलाह देता है और उन्हें आध्यात्मिक क्षति से बचाता है! आध्यात्मिक मुक्ति के मानव प्रजनन की तस्वीर का सादृश्य अद्भुत है!

इसी अन्योक्ति को आगे बढ़ाते हैं. जैसे जन्म लेने के लिए भौतिक गर्भ का पर्याप्त बढ़ना आवश्यक है, उसी तरह उत्पन्न ईसाई को ईश्वर के राज्य में जन्म लेने के लिए गरिमा और ईसा मसीह के ज्ञान (2 मीटर 3:18) में अवश्य विकसित होना चाहिए, अवश्य जीतना चाहिए, अपने जीवन, काम, आध्यात्मिक चरित्र में अवश्य विकसित होना चाहिए!

और जैसे भौतिक गर्भ में धीरे–धीरे एक–एक अंग, मुखाकृति, स्वभाव विकसित होते हैं उसी तरह उत्पन्न ईसाइयों को क्रमिक रूप से लागातार आध्यात्मिक गुण विकसित करने चाहिए प्रेम, आस्था, धैर्य, सज्जनता, संयम – विकसित करने चाहिए। उसे ईश्वर के कथन के अनुसार जीना और काम करना चाहिए – उसे दैवी गुण विकसित करने चाहिए!

अंततः अमरत्व!

उसके बाद ईश्वर के नियत समय में – हालांकि इस बीच व्यक्ति मर सकता है – ई सा मसीह के आगमन पर पुनरुत्थान के माध्यम से या तात्कालिक रूपांतरण के

माध्यम से वह ईश्वर के राज्य में ईश्वर से जन्म लेगा क्योंकि वह राज्य ईश्वर का है! अब वह मिट्टी के तत्वों से बना भौतिक मनुष्य नहीं बल्कि आत्मा से बना है क्योंकि ईश्वर भी एक आत्मा है (जॉन 4:24)।

ईश्वर का सत्य कितना असाधारण है!

इसके बावजूद अपने कायरतापूर्ण छल से शैतान दुनिया को छला है – मानवता को इस ओर से अंधेरे में रखा है कि यीशु ने जिस राज्य की घोषणा की थी वह राज्य ईश्वर ही है – और यह भी कि हम आध्यात्मिक व्यक्तियों के रूप में जन्म ले सकते हैं – उस दैवी परिवार के रूप में – ईश्वर के राज्य के अंग के रूप में!

ईश्वर का सत्य कितना मूल्यवान है! ईश्वर ने भौतिक ढंग से अपने सत्य को प्रतिबिंबित करने और हमें लगातार मुक्ति की अपनी असाधारण योजना से अवगत रखने के लिए प्रजनन को रूपांकित है!

चर्च में मौजूद ईसाइयों की आध्यात्मिक मां के रूप में, ईश्वर ने जिन्हें बुलाया है, जिन्हें ईश्वर ने चर्च से जोड़ा है, उनमें पवित्र, धर्मपरायण और पूरी तरह आदर्श ईश्वरीय चरित्र विकसित करना चर्च का काम है।

याद रखें कि ईश्वर के बुलाए और आकर्षित किए बिना कोई भी ईसा मसीह के पास नहीं आ सकता (जॉन 6:44)। नव धर्मांतरित सदस्यों का मानव इंजीलवादियों के ''विक्रय कला'' द्वारा आध्यात्मिक धर्मांतरण नहीं किया जाता – रूपांतरित किए जाने की चर्चा नहीं की जाती – उच्चाधिकार प्राप्त इंजीलवादियों की वक्तृता या भावप्रवणता या इंजीलवादी जेहाद में भावनात्मक वेदी आह्वानों से लेकर '' मैं जैसा हूं, मैं आता हूं'' की गिरजों की गायक मंडली के दुःखमय राग तक से भावनात्मक रूप से दबाव नहीं डाला जाता।

आप नवविधान में कोई उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए उस तरह के प्राचीन तर्ज के सुसमाचार'' के आधुनिक उपदेश या उपयोग नहीं पा सकते। इसके बावजूद लोग गलत ढंग से यह मान कर चलते हैं कि यही वह रास्ता है जिसे ईसा मसीह अपनाना चाहते थे– जिसे यीशु ने शुरू किया।

यीशु ''आत्मा का उद्धार करने वाले जिहाद'' के रूप में नहीं आए थे उस समय की शैतान की दुनिया के सभी लोगों के उद्धार प्रयास करने के लिए। वह ईश्वर द्वारा पूर्व निर्धारित और विशेष रूप से बुलाए गए, आकर्षित लोगों को शैतान की दुनिया से बुलाने आए थे। यीशु के कहा था कि कल शैतान की दुनिया की जगह लेने वाली ईश्वर की दुनिया में राजा और शिक्षक बनने के लिए ईश्वर द्वारा विशेष रूप से बुलाए शैतान की दुनिया के दूसरों लोगों का मुक्ति के लिए उनके पास आना नामुमकिन है। यीशु ने किसी से ''उन्हें अपना दिल देने की याचना या बिनती कभी नहीं की। सेमारिया में जैकब के कुएं पर यीशु ने एक औरत से आत्मा के बारे में ''जीवित पानी'' के अर्थों में चर्चा की थी।

उस औरत ने यीशु से कहा, ''श्रीमान यह पानी मुझे दे दें ताकि मुझे प्यास न लगे।'' यहां एक अधर्मांतरित औरत ने सीधे मुक्ति और आत्मा के उपहार की याचना की थी। लेकिन यीशु ने उसे उसके पाप गिनाए और कहा कि उसे उनके लिए प्राश्चित करना होगा! उन्होंने यह नहीं कहा, कि ''तुम मेरे पास आओ, तुम जैसी भी हो, अपने पापों के साथ।''

ईश्वर, पिता के आकर्षित किए बिना कोई भी यीशु के पास नहीं आ सकता! सबने पाप किए हैं। पाप ईश्वर, पिता के खिलाफ हैं। पहले पापों के लिए प्रायश्चित किया जाना चाहिए, उनसे विमुख होना चाहिए! यह अपराध के पश्चाताप से कहीं अधिक है। यह पाप की ओर से विमुख होने, के लिए पर्याप्त खेद करने का मामला है। यह रखने ईसा आस्था रखने पर ईश्वर के साथ व्यक्ति का मेल करता है। वह पिता ईश्वर ही है जो चर्च से जोड़ता है वैसे ही जैसे उद्धार के लिए आह्वान करता है (ऐक्ट्स 2:47)। वह ईश्वर ही है जो चर्च के सदस्य तय करता है। (। कोरिंथियाइयों 12:18)– भावनात्मक वेदी आह्वान में इंजीलवादी की भावनात्मक वक्तृता नहीं!

ईश्वर चर्च में व्यक्तिगत सदस्य स्थापित करता है ताकि उनमें उसका पवित्र, धर्मपरायण आदर्श चरित्र विकसित हो सके। और क्यों? ईश्वर की सरकार के साथ समूचे ब्रह्मांड के नियंत्रण और शासन के लिए ईश्वर के राज्य (परिवार) में ईश्वरीय सत्व बनने के लिए!

लेकिन सदस्यों की अध्यात्मिक मां के रूप में चर्च वे आध्यात्मिक चरित्र कैसे विकसित करता है?

यह हमें चर्च के वास्तविक उद्देश्य तक ले आता है।

यह हमें इसका बोध करता है कि व्यक्ति चर्च से बाहर रह कर कैसे दुबारा जन्म नहीं ले सकता।

चर्च का वास्तविक उद्देश्य

अब सबसे महत्वपूर्ण सवाल–चर्च का असली प्रयोजन क्या है? ईश्वर ने ईसा मसीह से चर्च की स्थापना क्यों कराई?

चर्च धर्मांतरित मानवों की मां है। वे अभी अजन्में भ्रूण और गर्भ हैं हालांकि ईश्वर की पवित्र आत्मा द्वारा उत्पन्न होने के नाते वे पहले से ही ईश्वर की संतानें हैं।

चर्च ईश्वर का अवयवी आध्यात्मिक संस्थान है जिसे भावी ईश्वरीय सत्वों– ईश्वर पिता के बेटों को आध्यात्मिक भोजन और प्रशिक्षण देने, और आध्यात्मिक धर्म परायण चरित्र विकसित करने के लिए संगठित किया जाएगा!

उस प्रशिक्षण, ईश्वरीय चरित्र के विकास के लिए ईश्वर ने चर्च को दुहरा दायित्व सौंपा है।

1) ''तुम सारी दुनिया में जाओ'' और सुसमाचार– ईश्वर के भावी राज्य के संदेश की घोषणा करो। अब सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि चर्च का असली उद्देश्य क्या है।

2) ''मेरी भेड़ों को चारा खिलाओ।''

लेकिन ''भेड़ों'' को चारा खिलाने में, उनमें ईश्वर के आध्यात्मिक गुण विकसित करने में ईश्वर ने उन्हें समर्थन करने, सहायता देने की उनकी भूमिका सौंपी है– महान समादेशः ''तुम सारी दुनिया में जाओ।''

पहला और महान समादेश अग्रदूतों को दिया गया था। कुछ छोटे स्तर पर इंजीलवादियों का संदेश आगे ले जाने में उपयोग किया गया था। दूसरे नेता– नियुक्त पुरोहित– स्थावर थे। फिर भी चर्च के स्थानीय पेस्तर अपने क्षेत्र में इंजीलवादी की भूमिका निभा सकते हैं।– लेकिन आत्मा के उद्धारक की जिहादी भूमिका नहीं, एक साक्षी के रूप में ईश्वर के भाषणों द्वारा भावी राज्य (सच्चे सुमाचार) के ईश्वर के राज्य की घोषणा और प्रचार करने की भूमिका!

यह समूचा महान समादेश– आगामी राज्य के शुभ समाचार का प्रचार और ''भेड़ों को चारा खिलाने'' का समादेश चर्च का साझा प्रशासन और कार्य है।

दुनिया में शुभसमाचार (सुसमाचार) के प्रचार में साधारण सदस्यों की व्यक्तिगत भूमिका होती है। कैसे? घर से निकलकर पड़ोस में या दुनिया में स्वयं ईसा मसीह के संदेश के प्रचार करके नहीं। यह काम मुख्य रूप से धर्मप्रचारक करते हैं, कुछ हद तक इंजीलवादी करते हैं और उससे भी छोटे स्तर पर स्थानीय क्षेत्रों में स्थानीय पेस्तर करते हैं। (स्थानीय पेस्तर का मुख्य दायित्व स्थानीय चर्च की निगरानी और उसमें उपदेश देना होता है।)

लेकिन चर्च का समूचा प्रचालन एक संपूर्ण इकाई होता है जो विभिन्न प्रचालनों और प्रशासनों में संगठित होता है। (1 कोरिंथियाइयों 12:5–6)।

साधारण सदस्य की भूमिका

उदाहरण के लिए सुसमाचार के संदेश को पूरी दुनिया तक ले जाने में व्यक्तिगत स्थानीय सदस्य की क्या भूमिका होती है? यह काम मुख्य रूप से और प्रत्यक्ष रूप से अग्रदूत करता है। बीसवीं सदी के इस उत्तरार्द्ध में यह काम रेडियो, टेलीविजन और प्रिंट माध्यम से भी होता है!

पहली शताब्दी में यह व्यक्तिगत प्रचार से होता था। तो फिर व्यक्तिगत साधारण सदस्य की क्या भूमिका होती है?

बहुत अधिक! साधारण सदस्यों की इस वृहत्तर संस्था के बिना अग्रदूत कुछ नहीं कर सकता!

बाइबिल के एक उदाहरण पर ध्यान दें। पीटर और जॉन येरूशलम के एक मंदिर में संदेश का प्रचार कर रहे थे। पीटर ने एक चमत्कार दिखाया था और बड़ी भीड़ जुट गई थी। नतीजतन पीटर और जॉन को रातों–रात कारागार में डाल दिया गया और बुरी तरह धमकाया गया। उनका जीवन खतरे में था। वे बुरी तरह घबरा गए थे।

छूटने पर वे तुरंत सामान्य बिरादरान के पास गए। (ऐक्ट्स 4:23)। उन्हें बिरादरान के समर्थन, सहायता और प्रोत्साहन की जरूरत थी। उन्होंने भक्तिभाव से प्रार्थना की!

पीटर और जॉन को साधारण सदस्यों की इस निष्ठा, समर्थन और प्रार्थना की सख्त जरूरत थी। वे मिलकर सचमुच एक टोली थे!

एक हालिया आधुनिक उदाहरण देखिए।

अमरीका के सबसे अधिक आबादी वाले राज्य कैलिफोर्निया के महाधिवक्ता ने अचानक पेसाडोना, कैलिफोर्निया स्थित ईश्वर के चर्च के मुख्यालय पर जबर्दस्त सशस्त्र हमला कर दिया था। उन्होंने अमरीका के संविधान का उल्लंघन करते हुए दावा किया था कि चर्च की सारी संपत्ति और सारा माल–मत्ता राज्य का है और एक अदालत ने गुप्त रूप से चर्च पर कब्जा लेने और जीवित ईश्वर के चर्च को चलाने के लिए एक प्राप्तकर्ता नियुक्त किया है!

लेकिन जब प्राप्तकर्ता अपने कर्मचारियों और शेरिफों के साथ प्रशासन और मुख्यालय की दूसरी इमारतों में प्रवेश करने वाला था इमारतों में बच्चों और शिशुओं के साथ लगभग 5,000 साधारण सदस्यों की भीड़ जमा हो गई और प्रवर्धित और सतत पूजा–अर्चना करने लगी। दरवाजे बंद कर दिए गए।

सशस्त्र अधिकारीं दरवाजा तोड़ने और इस व्यापक और व्यवस्थित पूजा–अर्चना में खलल डालने का साहस न कर सके। तीन दिन बाद उन्होंने हार मान ली। प्राप्तकता ने, जो गैर ईसाई आस्था का पूर्व न्यायाधीश था, इस्तीफा दे दिया। दीवानी मुकद्मा ''धरा का धरा'' रह गया। और चर्च का प्रचालन जारी रहा! ऊपरी सुनवाई अदालत ने फैसला दिया कि यह कानूनी मामला निराधार है और इसे शुरू ही नहीं किया जाना चाहिए था।

लेखक, ईसा मसीह का अग्रदूत जोर देकर कह सकता है कि अग्रदूत, इंजीलवादी पेस्तर और एल्डर साधारण सदस्यों के निष्ठावान समर्थन, सतत प्रोत्साहन के बिना ईश्वर का काम नहीं कर सकते। और सामान्य सदस्य अग्रदूतों,

इंजीलवादियों, पेस्तरों और एल्डरों के प्रचालनों के बिना अपने अंदर ईश्वर की पवित्र धर्मपरायणता और उत्कृष्ट चरित्र विकसित, निर्मित नहीं कर सकते। ईश्वर ने अपने चर्च में इन जिन अलग–अलग सदस्यों को नियुक्त किया है वे परस्पर निर्भर हैं। वे किसी भी धर्मनिरपेक्ष– सांसारिक संगठन से अलग हैं।

खास तौर पर यह परस्पर निर्भरता किस तरह काम करती है?

ईश्वर ने आधुनिक तरीके उपलब्ध कराए हैं

सामान्यतया, चर्च के समूचे प्रचालन में बींसवी सदी के इस उत्तरार्द्ध में धन खर्च होता है। अपने व्यादेश के निष्पादन के लिए चर्च के पास ऐसी सुविधाएं और विधियां उपलब्ध हैं जो पहली सदी में नहीं उपलब्ध थीं। दसांश कर और चर्च के साधारण सदस्यों के उदारता पूर्ण दान के बिना आज की दुनिया में चर्च अपने व्यादेश पूरा नहीं कर सकता। सभी सदस्यों के भक्तिभाव से और प्रभावोत्पादक ढंग से लगातार प्रार्थना किए बिना काम पूरा नहीं किया जा सकता।

साधारण सदस्यों और स्थानीय स्तर पर जो उनके ऊपर के सतत प्रोत्साहन के बिना, मुख्यालय से काम करने वाले हम जैसे लोग उत्पीड़नों, विरोधों, परीक्षणों और कुंठाओं के अंतर्गत हौसला नहीं बढ़ा सकते थे। इसके विपरीत साधारण सदस्यों को भी उतनी ही शिद्दत से मुख्यालयों और स्थानीय पेस्तरों की ओर से प्रोत्साहन, शिक्षा, परामर्श और नेतृत्व की आवश्यकता होती है।

पहले का उदाहरण लें। मुझे प्रायः बड़ी संख्या में कार्ड मिलते हैं – जो अक्सर खूबसूरती से अलंकृत या सजे हुए सैकड़ों स्थानीय चर्चों के दस्तखत किए कार्ड आते हैं, निष्ठा, समर्थन और सहायता का आश्वासन देते हुए। दुनिया भर में फैले साधारण सदस्य पूरी तरह समझ नहीं सकते कि मसीह ने जिस व्यक्ति को यह विश्वव्यापी महान गतिविधि, ईश्वर के चर्च के संचालन के लिए चुना है, इनसे उसे कितना प्रोत्साहन और प्रेरणा मिलती है! धरती के सभी हिस्सों के हजारों लोगों की सतत प्रार्थनाएं, उनका लगातार ईश्वर से मुहर लगाना इस महान कार्य में दिशा और पर्यवेक्षण में अध्ययव्यवसाय के लिए विश्वास और आस्था प्रदान करता है।

विशेष रूप से आज का ईश्वर का चर्च कैसे संगठित है – आधुनिक बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में यह कैसे काम करता है!

ईसा मसीह का सुसमाचार – ईश्वर का राज्य रेडियो, टेलिविजन और व्यापक प्रसार वाली पत्रिका द प्लेन ट्रुथ के जरिये अधिक गतिशील शक्ति से दुनिया भर में जाता है। यह अनूठी पत्रिका सात भाषाओं में हर महीने जिसकी सत्तर लाख प्रतियां बिकती हैं, पूरी तरह रंगीन है. वह प्रभावी और रोचक ढंग से ईसा के सुसमाचार को वहन करती है। उसके बाद अनुरोध करने पर लाखों पुस्तिकाएं और पूरी किताबें मुफ्त में भेजी जाती हैं। अग्रणी अखबारों *द न्यू यार्क टाइम्स, द वाल स्ट्रीट जर्नल, लॉस एंजेल्स टाइम्स सन फ्रांसिस्को कॉनिकल* और दूसरे दैनिक अखबारों में पूरे–पूरे पृष्ठ के गतिशील संदेशों के अभियान विज्ञापन के रूप में छपा। *लंदन टाइम्स* में काफी बड़ी जगह का उपयोग किया गया।

उसके बाद चर्च के स्थानीय सदस्यों और सेवा कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए पेस्टर जनरल की 14 पे 20 पृष्ठ की अनुलेखित रिपोर्ट की हर हफ्ते मुख्यालय से सारे पादरियों को मेल की जाती है। एक टैबलॉयड पाक्षिक अखबार *द वर्ल्ड वाइड न्यूज* सभी सदस्यों के पास जाता है। सुसमाचार दुनिया भर के सभी सदस्यों, पादरियों और आसन्न सदस्य कहकर्मियों के पास भेजा जाता है।

और अंत में ईसा के अग्रदूत हर महीने एक सारे सदस्यों और सहकर्मियों के पास अभिलेखित सहकर्मी पत्र भेज कर काम में होने वाली प्रगति, वर्तमान गतिविधियों और आवश्यकताओं की सूचना दी जाती है।

और हमें एक अत्यंत महत्वपूर्ण विभाग की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, बाइबिल पत्राचार कोर्स की, जिसे नामांकन पर साधारण और जनता के पास मुफ्त में भेज कर उन्हें बाइबिल द्वारा शामिल किए जाने वाले विषयों पर गहराई से मासिक पाठ दिया जाता है।

लेखक द्वारा लगभग पूरी दुनिया की यात्रा करके राजाओं, सम्राटों, राष्ट्रपतियों, प्रधानमंत्रियों और उनके अधीनस्थ नेताओं तक व्यक्तिगत रूप से ईसा का संदेश पहुंचाना संभवतः उल्लेखनीय होगा।

यह सब सुसंगठित कार्य हैं जो चर्च के उद्देश्य को पूरा करते हैं 1) दुनिया के समक्ष ईश्वर के भावी राज्य की घोषणा करना और 2) और जन सामान्य का पोषण करना।

वह ''अकेले चलने वाला''– ''व्यक्तिगत ईसाई'' जो ईसा मसीह के बताए मार्ग, उनके चर्च के माध्यम से उनके रास्ते के बजाय दूसरे मार्ग से राज्य में पहुंचना चाहता है, उसे ईसा मसीह के साथ उनके राज्य में राज करने, हुकूमत करने के लिए ईसा मसीह के तरीके का प्रशिक्षण नहीं मिला होता!

''व्यक्तिगत ईसाई''– पूर्व सदस्य

''निजी'' या ''व्यक्तिगत'' ईसाइयों का क्या है, जो कहते हैं, ''मैं चर्च का हिस्सा नहीं बनना चाहता– मैं सीधे और अकेले ईसा मसीह के साथ अपनी मुक्ति तलाशना चाहता हूं।''

उत्तर यह हैः ईश्वर ने स्वयं ही वह योजना और विधि तैयार की है जिससे उत्पन्न होने के बाद मानव जन्मे ईश्वरीय सत्व के दैवी कार्मिक बनने का प्रशिक्षण पा सकता है और तैयार हो सकता है जो ईश्वर के राज्य का निर्माण करेंगे!

ईश्वर का राज्य ईश्वरीय परिवार होगा– ईश्वरीय सत्वों का अति संगठित और उच्च प्रशिक्षण प्राप्त परिवार। चर्च ईश्वर का विशेष स्कूल है जिसमें उसके चुने हुए और अपने चर्च में बुलाए लोगों को प्रशिक्षण दिया जाता है– उस राज्य के अपने हिस्से में राज करने और शिक्षा देने के लिए राजा और पुरोहित बनने के लिए। चर्च में इस तरह का प्रशिक्षण पाने वाले ही राजा और पुरोहित बनेंगे।

जो व्यक्ति कहता है, ''मैं चर्च से बाहर अपनी मुक्ति अकेले तलाशूंगा वह पूरी तरह छला हुआ है। इस समय शैतान की दुनिया के लोगों के लिए मुक्ति के द्वार

नहीं खुले हैं। जिन्हें आज बुलाया गया है, मैं जोर देकर कहता हूं कि उन्हें महज मुक्ति के लिए नहीं बुलाया गया है। उन्हें एक विशेष प्रशिक्षण के लिए बुलाया गया है जो प्रशिक्षण केवल ईश्वर के चर्च में ही मिलता है।

चर्च का गठन पूरी तरह मिल–जुल कर काम करने के लिए पारस्परिक सामूहिक कार्य और सहयोग के ईश्वरीय प्रतिमान पर किया गया है। वे ईश्वरीय परिवार बन जाएंगे क्योंकि यह ईसा मसीह के दूसरे आगमन के समय मौजूद होंगे। याद रखें कि ईश्वर ही वह ईश्वरीय परिवार है!

शैतान की दुनिया से एक अन्योक्ति कीजिए। कोई फुटबाल खिलाड़ी कहता हैः मैं सारे खेल खेलना चाहता हूं लेकिन मैं अकेले प्रशिक्षण लूंगा। मैं खेल शुरू होने तक टीम का हिस्सा नहीं बनना चाहता।'' क्या कोच अभ्यास के मौसम में सामूहिक कार्य का प्रशिक्षण लिए बिना खेलों में उसे टीम का हिस्सा बनने की अनुमति देगा? ईश्वर भी उस व्यक्ति को पुनरुत्थान के समय अपने परिवार में नहीं आने देगा जो अभी, आध्यात्मिक ''प्रशिक्षण के मौसम'' में, उसका, यानी चर्च का हिस्सा बनने से इनकार कर देता है।

चर्च के प्रारंभ में अग्रदूत बनने के लिए चुने गए लोगों से यीशु ने चर्च के बारे में बताते हुए कहा थाः

''मैं अंगूर की लता हूं तुम लोग शाखाएं हो।'' जो दूसरी शाखाओं से नहीं जुड़े हैं, सारी शाखाएं मूल लता से जुड़ी हैं, वे चर्च का हिस्सा नहीं हैं, और पिता ईश्वर उन्हें मृत टहनियों की तरह दूर फेंक देगा!

उसका क्या जो ईसा मसीह के आध्यात्मिक संस्थान, चर्च में रहा है और किसी कारण (विभाजन, विद्रोह या चर्च की सरकार के विरोध के कारण) वश बाहर कर दिया गया है? चर्च गर्भवती मां की तरह है। यदि गर्भपात हो जाता है तो मानव भ्रूण से जीवन पूरी तरह अलग हो जाता है। लेकिन संभवतः इस अन्योक्ति

में एक अंतर है। कोई मनुष्य जो बाहर चला जाता है या ईश्वर के चर्च से निकाल दिया जाता है, प्रायश्चित करने, दुबारा आस्था रखने से संस्था में वापस ले लिया जाता है।

दुनिया के चर्चों का क्या है?

दूसरे चर्चों या धर्मों के लाखों–लाख लोगों का क्या?

शैतान महान जालसाज है। उन धर्मों और चर्चों में शैतान के अपने चर्च, अपने धर्म और अपने पुरोहित हैं। (II कोरिंथियाइयों 11:13–15) परंपरागत स्थापित ''ईसाई'' चर्चों के लाखों लोगों का क्या है? प्रकाशना में 12 अध्यायों में सच्चे चर्च का चित्र ''छोटे–से उत्पीड़ित समूह'' के रूप मे उकेरा गया है, जिनमें से बहुतों को अपनी आस्था के कारण शहीद होना पड़ा, मौत के घाट उतार दिया गया, उत्पीड़न से बचने के लिए सुरक्षित जगहों पर भागना पड़ा। अध्याय 17 में ''मां'' महान बेबीलोन, वेश्याओं, धरती के घृणित कर्मों की मां के नेतृत्व वाले बड़े, राजनीतिक और सांसारिक रूप से सशक्त चर्चों का जिक्र आया है। (श्लोक 5)। दूसरे शब्दों में प्राचीन ''बेबीलोनियाई रहस्य'' के धर्म जिनसे निकले पुत्री चर्चों ने विरोध किया। राजनीतिक दृष्टि से महान यह चर्च संतों का उत्पीड़क था (श्लोक 6)। अध्याय 13 में उकेरे गए चित्र में यह छद्म चर्च, राजनीतिक दृष्टि से महान, एक जानवर के आर–पार पैर फैलाकर बैठता है, नाग दैत्य की शक्ति से शासन करने वाली सरकार की तरह (प्रकाशना 12:9) जो शैतान, पिशाच है।

यह बीभत्स है, लेकिन ईश्वर के कथन में इसका स्पष्ट वर्णन किया गया है!

जो इस तरह के चर्चों में हैं, जो दुबारा जन्मे ईसाई होने का दावा करते हैं, उनका क्या है? वे छल के शिकार हैं! वे हमेशा इतने ही निष्ठावान हो सकते हैं। वे नहीं जानते कि वे छले गए हैं और अपनी आस्थाओं में गलत हैं। लेकिन अभी उनका निर्णय नहीं किया जा रहा है! उन्हें न तो दोषी मानकर आग की झील में डाला गया है और न उनका ''उद्धार'' ही हुआ है। वे सारी दुनिया में हैं, शैतान के छल द्वारा नियंत्रित, ईश्वर से कटे हुए हैं!

यह दुहराया ही जाना चाहिए कि यदि वे ईसा मसीह के आने और शैतान को अपदस्थ किए जाने के बाद भी जिंदा रहेंगे तो अपनी आंखें ईश्वर के सत्य की खुली रखेंगे या उससे पहले मर जाएंगे तो पुनर्जीवित किए जाएंगे और महान श्वेत सिंहासन के फैसले में सत्य और उद्धार के लिए बुलाए जाएंगे (प्रकाशना 20:11–12)।

एक बार फिर पाठक से मुफ्त पुस्तिका *''जस्ट व्हाट डू यू मीन बॉर्न अगेन?''* पढ़ने का अनुरोध किया जाता है।

हां, सारी दुनिया छली गई है। लेकिन ईश्वर धन्य है! शैतान को जल्द ही दुनिया से हटा दिया जाएगा आश्चर्यजनक सत्य के प्रति आंखे खोल दी जाएंगी और अंततः प्रत्येक व्यक्ति को जो कभी भी रहा है, उद्धार और शास्वत जीवन के लिए बुलाया जाएगा! लेकिन बुलाए जाने पर प्रत्येक व्यक्ति को अपना फैसला करना होगा। दुख की बात यह है कि कुछ लोग प्रायश्चित नहीं करेंगे, विश्वास नहीं करेंगे और उबारे नहीं जाएंगे। यह पुस्तक जोरदार ढंग से सार्वभौम मुक्ति का उपदेश नहीं दे रही है। कुछ लोग अंततः आग की झील में नष्ट होने वाले हैं।

इस बीच यहां नीचे ईश्वर के शानदार उद्देश्य का, ईश्वर की असाधारण योजना के अनुसार एक समय पर एक कदम का पूरी तरह अध्ययन अवश्य किया जाना चाहिए!

उपदेश और विश्वास

अब हमें ईश्वर के चर्च की शिक्षा और आवस्था का संक्षेप में वर्णन अवश्य करना चाहिए।

स्वाभावित है कि यह सीधे–सीधे चर्च के उद्देश्य से संबंधित है– ईश्वर की भावी दुनिया में जब ईश्वर सभी मानवों के लिए जीवन का वृक्ष (उद्धार और अमरत्व) खोलेगा, राजा और पुरोहित बनने के लिए किए जाने के लिए शैतान की वर्तमान दुनिया से शिष्य (छात्र और शिक्षार्थी) बुलाए जाने से संबंधित है।

लेकिन सैद्धांतिक रूप से याद रखें कि चर्च किसलिए बुलाया जाता है– राज्य, सरकार और ईश्वर के चरित्र पुनर्स्थापना की मदद के लिए। क्या दूर किया गया था? ईश्वर का कानून, उसकी सरकार की नींव और ईश्वर के चरित्र और दैवी जीवन का सार।

दूसरे शब्दों में मुख्य सवाल है पाप का सवाल। पाप ईश्वर के आध्यात्मिक कानून का उल्लंघन है (I जॉन 3:4)। शैतान ने इस दुनिया के चर्चों के साथ छल करके उसे यकीन दिलाया है कि ईश्वर का कानून रद्द कर दिया गया था, कि यीशु ने मनुष्य की जगह उसके पापों का मोल चुकाने की बजाय कानून का उल्लंघन करने के लिए इसे मिटा दिया। इसे कील से ''सूली पर ठोंक कर।''

प्रोटेस्टैरों द्वारा प्रयुक्त कथन ''कानून को उनकी सूली पर कील से ठोंकना।'' यह शैतान की शिक्षा है कि सूली पर चढ़ाए जा कर यीशु ने कानून को समाप्त कर दिया, इस तरह मानवों के लिए दंड मुक्त होकर पाप करना संभव बना दिया। वस्तुतः हमारे पापों के धारक ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाया गया था, जिन्होंने हमारे पापों को अपने ऊपर ले लिया था, दंड मुक्त होकर पाप करने के लिए नहीं बल्कि हमारी जगह मृत्यु दंड पाने के लिए, हमें दंड मुक्त करने के लिए।

इसलिए मूल शिक्षा, ईश्वर के सच्चे चर्च की आस्था और सिद्धांत धर्मपरायणता और ईश्वर के कानून के पालन पर आधारित है। वह कानून प्रेम है। लेकिन यह मानवीय प्रेम नहीं है। मानवीय प्रेम मानव की आत्मकेंद्रियता से ऊपर नहीं उठ सकता। वह ईश्वर का प्रेम ही होना चाहिए— पवित्र आत्मा द्वारा हमारे दिलों में प्रसारित (रोमनोंः 5:5)। प्राचीन इस्राईल, दरअसल, ईश्वर के कानून का पालन नहीं कर सका वे ईश्वर के कानून का अक्षरसः पालन कर सकते थे और चूंकि प्रेम कानून के पालन की शर्त है और उनके पास केवल आत्म केंद्रित मानवीय प्रेम था वे आत्मा के अनुसार कानून का पालन कर सकते थे— क्योंकि उन्हें अभी तक पवित्र आत्मा नहीं दी गई थी।

इसलिए इस मूल शिक्षा में पवित्र आत्मा के सभी फल निहित हैं।— प्रेम, खुशी, शांति धैर्य, सज्जनता, अच्छाई, आस्था, विनम्रता, संयम इत्यादि। ईश्वर के सच्चे चर्च की शिक्षा बस पवित्र बाइबिल के प्रत्येक शब्द को जीने की शिक्षा है।

पहले इनसान, आदम ने अपने लिए गलत में से सही का चुनाव स्वयं करने का फैसला किया— अपनी शिक्षा, आस्था और जीवन शैली तय करने का फैसला।

दुनिया 6,000 साल तक उसी रास्ते पर चली। बाइबिल के माध्यम से ईश्वर जिस रास्ते से जीवन जीने का शिक्षा देता है उस रास्ते से जीवन जीने के लिए दुनिया से चर्च का आह्वान किया जाता है।

चर्च का संक्षिप्त इतिहास

अंत में हम 31 ईस्वी में चर्च की स्थापना से आज तक के चर्च के इतिहास पर आते हैं।

चर्च का प्रारंभ 31 ईस्वी के जून में नवान्न के त्योहार के दिन हुआ था जिसे पेंटिकोस्ट कहा जाता है। येरूशलम में जमा 120 सदस्यों पर एक चमत्कारिक प्रदर्शन के साथ स्वर्ग से पवित्र आत्मा उतरी जैसा उससे पहले कभी नहीं हुआ था और तब से कभी नहीं हुआ।

सभी 120 ''एकमत'' के थे। अचानक ''वहां स्वर्ग से एक आवाज आई, जैसे कोई जोरदार हवा चल रही हो'' (ऐक्ट्स 2:2)। क्या आप कभी किसी बवंडर या तूफान में फंसे हैं? मैं फंसा हूं। हवा बहुत जोर की आवाज पैदा कर सकती है। यह आवाज ''वे जिस घर में बैठे थे उस पूरे घर में'' फैल गई। उसके बाद ''उनमें विभाजित जिह्वाएं प्रकट हुईं, जैसे लपलपाती आग की जिह्वाएं हों, और वह उन सबके ऊपर बैठीं। और वे सभी पवित्र (आत्मा) से भर गए, और दूसरी जुबानों (भाषाओं) में बातें करने लगे, जैसे आत्मा उनसे बोली थीं।

इस तरह का अलौकिक प्रदर्शन उससे पहले कभी नहीं हुआ था और उसके बाद से भी नहीं हुआ। फिर भी स्वयं को पेंटिकॉस्ट कहने वाले आधुनिक संप्रदाय इस तरह के अनुभव के दुहराने का दावा करते हैं। लेकिन उनकी बैठकों में स्वर्ग से इस तरह की कोई आवाज नहीं आई। उनके सिरों पर धधकती आग की विभाजित जिह्वाएं नहीं बैठीं। कुछ एक तरह से अनाप–शनाप बोल उठे थे, समझा जाता है कि कोई विदेशी भाषाएं थीं लेकिन स्पष्ट रूप से उस तरह का कुछ नहीं हुआ जैसा 31 ईस्वी के पेंटेकॉस्ट के दिन हुआ था। ध्यान दीजिए कि चर्च के प्रारंभ के दिन किस तरह की भाषाएं बोली गई थीं। उन 120 के अलावा कई

देशों के अलग–अलग भाषाएं बोलने वाले बहुत से लोग उपस्थित थे। विशेष रूप से इन अजनवियों पर ध्यान दें, ''प्रत्येक व्यक्ति ने उन्हें (उन 120 को) अपनी–अपनी भाषा में बोलते सुना। और वे सभी विस्मित, अचंभित थे और एक दूसरे से कह रहे थे। देखो, क्या ये सभी वही नहीं है जो गलिलियाई बोलते हैं? और कैसे हम प्रत्येक व्यक्ति को अपनी–अपनी भाषा में सुन रहे हैं, जहां हम पैदा हुए थे'' अब ध्यान दें। प्रत्येक आदमी ने, यानी हर व्यक्ति ने उन 120 लोगों में से सबको अपनी–अपनी मातृ भाषाओं बोलते सुना। यूनानियों ने सभी 120 लोगों को यूनानी बोलते सुना।

पार्थियाइयों ने उन्हीं 120 लोगों को पार्थियाई मेडीखाइयों की भाषा बोलते सुना। मेडीयाइयों ने उन 120 लोगों को मेडीयाइयों की भाषा बोलते सुना। उन्होंने जो कहा जा रहा था उसे समझा। उन्हें संदेश मिल गया!

आज ''पेंटिकॉस्ट की बैठकों में कोई व्यक्ति ऐसी भाषा में अनाप–शनाप बक सकता है जिसे बैठक में उपस्थित दूसरे लोग नहीं समझते (। कोरिंथियाई 14:28)। यह कहता है कि यदि कोई विदेशी भाषा में बोलता है तो वहां कोई दुभाषिया अवश्य होना चाहिए ताकि दूसरे उसकी बात समझ सकें। ''लेकिन यदि कोई दुभाषिया न हो तो उसे चर्च में शांत रहने दें; और उसे अपने–आपसे और ईश्वर से बातें करने दें। श्लोक 33 में कहा गया है कि ईश्वर संभ्रम का लेखक नहीं है। श्लोक 19 में ईश्वर यह कह कर ''भाषाओं'' का अमहात्म दर्शाता हैः फिर भी मैं किसी विदेशी भाषा में दस हजार शब्द बोलने की जगह चर्च में अपनी समझ से पांच शब्द बोलना अधिक पसंद करूंगा जिन्हें अपनी आवाज में दूसरों को भी समझा सकूं।

जब मैं जापान में या किसी दूसरे देश में स्रोताओं के समझ बोलता हूं, मैं हमेशा अपने साथ एक दुभाषिया रखता हूं जो उस देश की भाषा में मेरी बात का अर्थ बताता है। मेरे संदेश के प्रत्येक शब्द को उनकी भाषा में बताता है। जब मैं इस तरह की भाषा में बोलता हूं तो मैं समझ से बोलता हूं और लोगों तक संदेश पहुंच जाता है।

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा

यह आधुनिक ''पेंटिकॉस्ट'' आंदोलन पूरी तरह भ्रांति पर आधारित है और पवित्र आत्मा के या अधिक सटीक अर्थों में पवित्र आत्मा द्वारा बपतिस्मा के सही अर्थ के

मामले में शैतान के छल का नतीजा है। ईसा मसीह ने अग्रदूत पॉल के माध्यम से कहा था कि एक आत्मा द्वारा हम सभी का एक शरीर (चर्च) में बपतिस्मा हो जाता है (1कोरिंथियाई 12:13)। बपतिस्मा शब्द का अर्थ होता है डुबकी या जिमज्जन।

''पेंटिकॉस्ट'' लोग भ्रमवश सोचते हैं कि व्यक्ति जब यीशु को अपने व्यक्तिगत उद्धारक के रूप में पा लेता है तो उसका उद्धार हो जाता है। वे ''भाषाएं'' बोलने को आत्मा के बपतिस्माकरण का प्रमाण मानते हैं, शक्ति के अनुवर्ती अनुप्रमाणन के रूप में जिसका व्यावहारिक अर्थ भावनात्मक रूप से और प्रायः शेखी से बोलना होता है।

जो पहले से ही छल का शिकार हो चुके हैं उपर्युक्त स्पष्टीकरण से वे लोग नहीं बदलेंगे। लेकिन आशा है कि यह दूसरे लोगों को इस नकली भावनात्मक ''आध्यात्मिकता'' द्वारा भ्रमित होने से रोकेगा।

ईसा मसीह के बारे में आज का परंपरागत सुसमाचार मानता है कि महज ''ईसा मसीह में विश्वास करने'', यानी व्यक्तिगत उद्धारक के रूप में ईसा मसीह को स्वीकार करने का आशय है कि व्यक्ति का उद्धार हो जाता है। इसके बावजूद मारकुस 7:7–9 दर्शाता है कि बहुत–से लोग यीशु को पूजने भी जाते हैं लेकिन उनका पूजना व्यर्थ है क्योंकि वे ईश्वर के समादेशों का पालन नहीं करते, विशेष रूप से सैबथ का बल्कि, उन लोगों की परंपराओं का अनुसरण करते हैं जिसके जरिए शैतान ने सारी दुनिया को छला है।

जॉन 8:30–44 में उन यहूदियों को जो ''ईसा मसीह पर विश्वास करते थे ''लेकिन जो ईसा मसीह में विश्वास नहीं करते थे या उनके समादेशों का पालन नहीं करते थे, यीशु ने उनके पिता, शैतान का बेटा कहा था। 1 जॉन 2:4 में दर्शाया गया है कि जो उद्धारक के रूप में ईसा मसीह को जानने का दावा करता है, लेकिन उनके समादेशों का पालन नहीं करता, वह झूठा है और उसमें सच्चाई नहीं है।

पेंटिकॉस्ट के असली दिन, दूसरे देशों से आए लगभग तीन हजार यहूदियों को उसी दिन सच्चे मन से प्रायश्चित करने और ईसा मसीह में और उनके कथन में विश्वास करने पर बपतिस्मा दिया गया था। एक–दो दिन बाद मंदिर के दरवाजों पर ही पीटर के आजीवन विकलांग को चंगा कर देने के बाद और 2000 लोगों को धर्मदीक्षा (बपतिस्मा) दी गई। नया विशाव चर्च बड़ा हो गया, न सिर्फ योग द्वारा, जिसे ईश्वर ने अपने चर्च में जोड़ा था, बल्कि गुणन द्वारा।

लेकिन यह परिघटनात्मक वृद्धि जारी रहने वाली नहीं थी, इस तरह की आश्चर्यजनक दर से नहीं ही। याद रखें कि चर्च में मौजूद इन लोगों को ईश्वर ने शैतान की दुनिया से विशेष रूप से बुलाया था। शैतान इस दुनिया के सिंहासन पर विराजमान था। अपनी सत्ता बचाने और मानव जाति का उद्धार करने की ईश्वर की योजना को अस्त–व्यस्त करने के लिए नृशंसता से लड़ा। शैतान ने बालक ईसा मसीह को मारने की योजना बनाई।

शैतान ने 30 साल की उम्र में यीशु को लुभाने और उन्हें आयोग्य साबित करने का दुस्साहसिक निश्चय किया। शैतान ने हार नहीं मानी और न आज ही मानी है। अब उसने चर्च को नष्ट करन और नष्ट न कर सके तो कम से कम उसकी नकल तैयार करने का निश्चय किया ताकि अपनी दुनिया को छल से नकली ईसाइयत की ओर ले जा सके।

बिलकुल प्रारंभ में शैतान ने यीशु को पूर्व घोषित मसीहा मानने से इनकार करने के लिए यहूदियों को उकसाया। प्रारंभ में चर्च लगभग पूरी तरह यहूदी था। अधर्मांतरित यहूदियों ने मूसा के कानून के सांसारिक कर्म कांडों और पशु बलियों को जारी रखने की लड़ाई लड़ी।

बहुत जल्द ही जब ईश्वर के चर्च के सदस्यों की संख्या गुणित अनुपात में बढ़ रही थी (ऐक्ट्स 6:1) चर्च के खिलाफ एक महान उत्पीड़न छुआ (ऐक्ट्स 8:1)। अग्रदूतों को छोड़ कर सारे सदस्य जुदेय और समारिया के पार तक भाग गए।

मिथ्या सुसमाचार का प्रचार

जल्द ही इसे लेकर जबर्दस्त विवाद चल पड़ा कि जिस सुसमाचार का प्रचार किया जाना है वह ईसा मसीह का सुसमाचार (जो ईसा मसीह का सुसमाचार या ईश्वर के राज्य के बारे में सुसमाचार था) है या उन्हें ईसा मसीह के बारे में सुमाचार का उपदेश देना चाहिए ईसा मसीह को महज उद्धारक मानते हुए जैसे–जैसे ईसा मसीह के सत्य से धर्म त्याग जोर पकड़ता गया, अधिकांश चर्च

उद्धारक के रूप में ईसा के अलग और नकली सुसमाचार का उपदेश देते हुए लेकिन पाप ईश्वर के कानून का उल्लंघन है, और ईश्वर के राज्य के सुसमाचार, शैतान को हटाए जाने और अंत में सारी मानवता के लिए, जो न्याय निर्णय के समय प्राश्चित करेगी, विश्वास करेगी और ईश्वर के बेटों के रूप में– वास्तविक ईश्वरीय सत्व के रूप में शास्वत जीवन प्राप्त करेगी, मोक्ष का द्वार खोलने संबंधी, समाचारों को पूरी तरह से निकालते हुए एक फर्जी सुसमाचार की ओर मुड़ने लगे।

अग्रदूत पॉल ने II कोरिंथियाइयों 11:3 में लिखाः ''लेकिन मुझे डर है कि सांप ने जैसे अपनी चातुरी से हौवा को छला था कहीं उसी तरह आपके (उनके जो उस प्रारंभिक चर्च में थे) मन में ईसा के प्रति जो सच्ची भक्ति है उसे खत्म न कर दे। क्योंकि कोई किसी दूसरे यीशु के उपदेश देता है जिसका हमने उपदेश नहीं दिया है, या यदि आप कोई ऐसी आत्मा स्वीकार करते हैं जिसे आपने स्वीकार नहीं किया था या कोई दूसरे सुसमाचार का उपदेश देता है जिसे आपने स्वीकार नहीं किया है तो आप उससे सहमत हो सकते हैं।''

उसके बाद पॉल अपनी बात जारी रखते हैं और छद्म प्रचारकों का वर्णन करते हैं जैसा कि पहले ही कहा गया है कि वे उस समय आ रहे थे और ईसा मसीह के सुसमाचार को बदल रहे थे।

उसके बाद हम गलातियों 1:6–7 की ओर मुड़ते हैं। पॉल ने लिखाः ''मुझे आश्चर्य होता है कि आप इतनी जल्दी उससे अलग होकर दूसरे सुसमाचार की ओर आकर्षित हो गए जिसने आपको ईसा मसीह के अनुग्रह में बुलाया था (आपको चर्च का सदस्य बनने के लिए बुलाया जाना आवश्यक होता है– जिन्हें बुलाया जाता है उनके सिवा कोई भी ईसा मसीह के पास नहीं आ सकता): जबकि वह दूसरा सुसमाचार नहीं है; बल्कि कोई ऐसी चीज है जो आपको कष्ट दे सकती है और ईसा के सुसमाचार को विकृत कर देगी।'' ईसा मसीह का सुसमाचार ईश्वर के आने वाले राज्य के बारे में संदेश था। वे वैसे भी दूसरे सुसमाचार की ओर मुड़ रहे थे।

फर्जी को ईसाइयत कहा गया

सच्चे चर्च के इतिहास पर पहले ही पर्दा पड़ चुका था। इसे आप ऐक्ट्स की किताब में पढ़ चुके हैं लेकिन यह इससे खास आगे नहीं जाती लेकिन पर्दा उठता जान पड़ता है। और हम लगभग 150 ईस्वी में हमें थोड़ा सा इतिहास मिलना शुरू होता है वहां हम एक चर्च पाते हैं जो अपने–आप को ईसाई कहता है। लेकिन यह पूरी तरह से अलग चर्च है उतना ही अलग जितना रात से दिन होता है, ऊपर से नीचे होता है, या काले से सफेद होता है। लेकिन यह खुद को ईसाई करता था।

अब हम इतिहास की एक किताब, *द डिक्लाइन ऐंड फाल आफ रोमन एंपायर* (रोमन साम्राज्य का ह्रास और पतन) के खंड 1 अध्याय 15 से उद्धरण देते हैं: ''चर्च संबंधी इतिहास पर उपलब्ध अत्यल्प और संदिग्ध सामग्रियां कभी–कभी चर्च के पहले युग पर छाए काले बादलों को तितर–वितर करने में हमें सक्षम बनाती हैं। मैंने इसे प्रायः ''लुप्त सदी'' कहा है क्योंकि उस समय उस चर्च का इतिहास खो गया था।

विद्वान और चर्च के इतिहासकार मानते हैं कि 50 ईस्वी और 150 ईस्वी के बीच की प्रारंभिक ईसाई चर्च की घटनाएं महज अमूर्त रूप–रेखा में देखी जा सकती हैं जैसे घने धुंध के पार से देखी जा रही हों।

जाने–माने अंग्रेज विद्वान सैमुएल जी–ग्रीन ने *''ए हैंड बुक ऑफ चर्च हिस्ट्री''* में लिखाः नवविधान कैनन के बंद होने और येरूशलम के नष्ट होने के बाद के तीस साल सच पूछिए तो चर्च के इतिहास के सबसे अंधकारमय वर्ष हैं। जब हम दूसरी सदी में उभर कर सामने आते हैं तो हम काफी हद तक एक बदली दुनिया में होते हैं।

लेक्चर्स ऑन इक्लेसिएस्टिकल हिस्टरि (चर्च संबंधी इतिहास पर व्याख्यान) में *विलियम फिट्ज्जेराल्ड* ने लिखाः संक्रमण के इस युग पर जिसके फौरन बाद वह युग आता है जिसे देवदूत संबंधी युग कहा जाता है, घने काले बादल छाए हैं. ....''

द कोर्स ऑफ क्रिश्चियन हिस्टरि (ईसाई इतिहास का दौर) में विलियम जे. मैक ग्लोथलिन ने लिखाः ''लेकिन चर्च स्वयं संक्रमण की प्रक्रिया में था और जैसे–जैसे यह आगे बढ़ता गया और इस युग के अंत में कई मामलों में वह देवदूतीय ईसाइयत से बिलकुल अलग था।''

हिस्टरि ऑफ क्रिश्चियन चर्च (ईसाई चर्च का इतिहास) में फिलिप स्चाफ ने लिखाः ''पहली सदी के शेष तीस साल रहस्यमय अंधकार में शामिल हैं, और केवल जॉन के लेखन से प्रदीप्त हैं। यह चर्च के इतिहास का वह युग है जिसके बारे में हम सबसे कम जानते हैं और जिसके बारे में सबसे अधिक जानना चाहेंगे।''

लेकिन यदि हम इस धुंध के पार बारीकी से देखें तो हम देखना प्रारंभ कर सकते हैं क्या हो रहा था।

ईसा मसीह ने जिस दुनिया में चर्च की स्थापना की वह रोमन साम्राज्य की दुनिया थी– कभी हुआ सबसे महान और सबसे सशक्त साम्राज्य। यह ब्रितानिया से लेकर आधुनिक तुर्की की सुदूरवर्ती सीमाओं तक फैला हुआ था जिसमें विभिन्न पृष्ठभूमियों और संस्कृतियों के लोग एक शासन व्यवस्था में रहते थे।

रोम का शासक हाथ मजबूत था लेकिन उसकी प्रजा को रोमन कानूनों की परिधि के भीतर काफी आजादी हासिल थी। अलबत्ता सारे नागरिक और विजित लोग भी रोमन सम्राट को पर्याप्त आदर देते थे उन्हें अपनी धार्मिक आस्थाओं पर आचरण करने और अपने पूर्वजों के देवताओं को पूजने की भी अनुमति थी।

पेंटिकॉस्ट के दिन के बाद देवदूतों ने ईसा मसीह के निर्देश का पालन करते हुए दुनिया भर में ईश्वर के साम्राज्य के सुसमाचार का उपदेश देना प्रारंभ किया। जब ईसाइयत जुदेय से उत्तर के मूर्तिपूजक देशों तक पहुंच गई तो उसकी बेबीलोन, फारस और मिस्र तक के मूर्ति पूजकों से मुठभेड़ टकराव शुरू हो गए।

अग्रदूत मिमोन मेगस के संपर्क में आए, जो एक संप्रदाय का आत्मघोषित नेता था जिसकी जड़ें प्रचीन बेबीलोन के रहस्यमय धर्म में गड़ी थीं।

प्रारंभिक चर्च में अपने लिए प्रभावशाली पद जुटाने की सिमोन मेगस की साजिश को पीटर ने नाकाम कर दिया (ऐक्ट्स 8)। लेकिन जल्द ही दूसरे छद्म अध्यापकों ने उसका अनुसरण किया।

अपने शुरुआती धर्म संदेशों में पॉल ने मिस्र और गलतिया के नवजात चर्चों को चेताया कि वे एक दूसरे सुसमाचार, ईसा मसीह और उनके संदेश के बारे में मलत धारणा के बाद परे रख दिए जाने के खतरे में हैं।

ईसा मसीह का सुसमाचार पतला होता जा रहा था क्योंकि बेबीलोन और पर्शिया से काफी प्रभावित छद्म उपदेशों के साथ मिथ्या अध्यापक लगातार कौंग्रीगेशनों में घुस रहे थे।

पहली सदी के बीतने के साथ मूल अग्रदूतों ने सदस्यों को निष्ठावान रहने के लिए प्रोत्साहित किया। यीशु के भाई जूद ने आस्था के लिए प्रयास करने के लिए सदस्यता की मांग की, जिसे एक बार उबारा गया था (जूद 3)।

अग्रदूत जॉन ने विरादरियों को छद्म सिद्धांत लेकर आने वालों से कोई संबंध न रखने की चेतावनी दी (II जॉन 10)।

बहुत से लोग जो खुद को ईसाई कहते थे, उनका सही अर्थों में धर्मांतरण नहीं हुआ था। लेकिन इस पूरे दौर में उन तमाम लोगों को जो खुद को ईसाई कहते थे, रोमन अधिकारियों की ओर से कॉफी यातनाएं सहनी पड़ीं क्योंकि उन्होंने सम्राट की पूजा करने से इनकार कार दिया था।

पागल नेरो ने 64 ईस्वी में रोम के जलाए जाने का आरोप ईसाइयों पर लगा दिया और बर्बरता से उनका उत्पीड़न किया। हजारों लोग शहीद हो गए।

उसके कुछ ही दिनों बाद फिलिस्तीन के यहूदियों ने रोमन अधिकारियों के खिलाफ बगावत कर दी। उस बगावत को दबा दिया गया और 70 ईस्वी में येरूशलम की नेश्तनाबूत कर दिया गया।

छोटी–सी तादाद में ईसाई भाग कर पेला के सुरक्षा में पहाड़ों पर चले गए।

सात चर्च युग

प्रकाशना ईसा की पहली सदी के अंत में एशिया माइनर मे मौजूद सात चर्चों में सात संदेशों का अभिलेखन करता है। ईफेसस, स्मीर्ना, पर्गमस, थायाट्रिया, सार्डिस, फिलाडेल्फिया और लोओडीसिया के ये चर्च प्राचीन रोमन साम्राज्य के डाक मार्गों में से एक पर थे।

घुड़ सवार उसी रास्ते से चल कर एक शहर से दूसरे शहर तक संदेश ले जाते थे। सातों चर्चों को भेजे गए संदेशों में प्रोत्साहन और संशोधन के शब्द थे और वे इस समय के प्रत्येक कौंग्रीगेशन का प्रभावी स्वभाव दर्शाते हैं।

ये संदेश इन छोटे कस्बों के चर्चों की अपेक्षा बड़े स्रोता वर्ग के लिए थे। उनमें सिलसिलेवार कई उल्लेखनीय भविष्यवाणियां की गई थीं जिनके माध्यम से 31 ईस्वी में पहले पेंटिकास्ट से इसकी शुरुआत से लेकर ईसा के दूसरे आगमन तक के सच्चे चर्च के भविष्य की रूप–रेखा खींची गई थी। जैसे डाक मार्ग से वह संदेश इफेसस से लाओडीसिया तक चला गया उसी तरह ईश्वरीय सत्य युगों–युगों तक चलता चला जाएगा।

यह रिले दौड़ जैसा है जिसमें बैटन एक धावक से दूसरे धावक तक पहुंचता है, हर घावक अपने हिस्से की दौड़ लगताा है जब तक कि अंतिम रेखा नहीं आ जाती।

दूसरी सदी के शुरुआती दशकों के दौरान किसी समय बैटन इफीसियाई युग से उन लोगों के हाथ पहुंचा जिन्हें ईश्वर ने अपने स्मींना युग के चर्च के लिए बुलाया था।

शक्तिहीन, प्रायः प्रताड़ित और अपधर्म कह कर खारिज किए गए वे लोग दुनिया की नजरों से ओझल हो गए। उनकी जगह पिछली सदी से एक चर्च उभरकर सामने आया जिसकी लोकप्रियता लगातार बढ़ रही थी लेकिन जो लगातार ईसा के सुसमाचार से दूर होता जा रहा था।

रोमनों के शासन काल में अलग–अलग समयों पर चौथी सदी तक, कांस्टैंटाइन के उस युग के भ्रष्ट चर्च को सम्राज्य का अधिकारिक धर्म मानने तक उत्पीड़न जारी रहा।

लेकिन उसने जिस चर्च को स्वीकार किया वह ईसा द्वारा स्थापित चर्च से बहुत अलग था। उन्होंने अपने अग्रदूतों को जो सिद्धांत और उपदेश दिए थे उन्हें एक ऐसे चर्च के छल–छद्मों, उत्सवों, रहस्यों और अनुष्ठानों के नीचे दबा दिया गया था जिसने स्वयं को ईसा मसीह के नाम पर बुलाया था। यह निश्चित रूप से बेबीलोनियाई रहस्य का धर्म था जिसने गरिमा के सिद्धांत को स्वीकार कर लिया था लेकिन उसे अनुज्ञापत्र में तब्दील कर रहा था। दूसरे शब्दों में यह पुराना मूर्तिपूजक बेबीलोनियाई रहस्य का धर्म था जिसने ''ईसाइयत'' का नया लबादा ओढ़ लिया था।

कांटेस्टाइन के एक बार उन्हें मान लेने के बाद चर्च ने दुनिया भर में अपना संदेश पहुंचाने में नवीनीकृत ऊर्जा झोंक दी। ईसा के बारे में एक संदेश लेकर रोमन साम्राज्य भर में उपदेशक और आचार्य भेजे गए। हजारों– हो सकता है कि लाखों लोगों ने वह संदेश सुना और उस पर विश्वास किया। लेकिन वह ईसा का दिया सुसमाचार ईश्वर के भावी राज्य की भविष्यवाणी करने वाला सुसमाचार नहीं था।

सम्राट ने मिथ्या चर्च के सिद्धांत के पक्ष में निर्णय दिया

उन सदियों के दौरान जब सुसमाचार को दबाया गया सच्चे चर्च का क्या हुआ? सम्राट कांस्टैंटाइन 337 ईस्वी में मरा, ईसा को सूली पर चढ़ाए जाने के महज 300 साल बाद। उसने उस चर्च को अपना वरदहस्त प्रदान किया था जो ईसा द्वारा स्थापित चर्च होने का दावा भरता था।

अब जबकि वे दमन के भय से मुक्त हो गए थे, जो उत्पीड़ित थे वही उत्पीड़क बन गए। सच्चे चर्च के जिन लोगों ने उनके सिद्धांत से असहमत होने का साहस किया उन्हें दंडनीय अपधर्मी करार दे दिया गया।

लगभग 365 ईस्वी में लाओडीसिया की कैथोलिक काउंसिल ने अपने सबसे प्रसिद्ध संदेश पत्रों में से एक संदेस पत्र लिखाः ईसाइयों को सैबथ पर आराम कर यहूदी नहीं बनना चाहिए बल्कि उस दिन का काम करना चाहिए, ईश्वर के दिन का सम्मान करते हुए। लेकिन यदि कोई यहूदीकारक पाया जाए तो उसे ईसाइयत से वहिष्कृत कर दिया जाए।'' यह वस्तुतः उत्पीड़न और/या मृत्यु का फरमान था। छद्म चर्च सच्चे आस्तिकों को स्वयं मृत्युदंड नहीं देता था बल्कि उनको मौत के घाट उतारने के कारण पैदा करता था (प्रकाशना 13:15)। 365 ईस्वी का यह निर्णय निश्चित रूप से दर्शाता है कि सैबथ का पालन करने वाले सच्चे ईसाई मौजूद थे।

अपनी आस्था पर आचरण के लिए वांछित धामिक स्वतंत्रता की तलाश में स्मीर्ना युग के बचे–खुचे थोड़े से ईसाई एक बार फिर भाग गए।

उन्होंने थोड़े से ही अभिलेख छोड़े थे। कभी–कभी वे इतिहास की पाद टिप्पणियों के रूप में दिखाई पड़ते हैं। अपधर्मियों के रूप में अस्वीकृत, तिरस्कृत और दुश्मनों द्वारा खदेड़े गए। लेकिन उनका सबसे बड़ा प्रमाण आया स्वयं यीशु के यहां से, स्मीर्ना के चर्च की उनकी प्रशंसा के शब्दों में। ''मैं आपके काम, आपकी पीड़ा और गरीबी को जानता हूं... आप जो भुगतने वाले हैं उनमें से किसी चीज से न डरें... मृत्यु तक निष्ठावान बने रहें और मैं आपको जीवन का ताज पहनाऊंगा (प्रकाशना 2:9–10, संशोधित अधिकृत संस्करण)।

और इस तरह बेटन स्मीर्ना के ईसाइयों से वर्गामोस युग के हाथ में पहुंचा।

इन्हें इतिहास के सबसे कठिन दौर में चर्च का बोझ उठाने के लिए बुलाया गया था– अंधकार युग में।

महान सार्वभौम चर्च की शक्ति और प्रभाव दूर–दूर तक फैल गया जो ईश्वर के सत्य से चिपके थे उन्हें और भी दूर बीहड़ों मे खदेड़ कर।

लेकिन वे कभी भी उत्पीड़न और मृत्यु की पहुंच से दूर नहीं थे।

और इस तरह बहुत थोड़े से पर्गोमॉस ईसाई ही निष्ठावान रह सके।

यीशु के अपने चर्च की स्थापना के एक हजार साल बाद पर्गोमॉस युग के बचे–खुचे अशक्त लोगों ने बैटन दूसरों के हवाले कर दिया।

दक्षिणी फ्रांस और उत्तरी इटली की आल्प्स की घाटी भर में प्रायश्चित के उपदेश के साथ जोरदार ढंग से थायाटिरेन युग प्रारंभ हुआ। बहुतों ने सुना और धर्मांतरण किया।

धार्मिक अधिकारियों ने इस चुनौती का तत्परता से जवाब दिया।

सच्चे चर्च के नेताओं को गिरफ्तार किया गया और कुछ को मौत के घाट उतार दिया गया।

अपने नेताओं में से पहले नेता की मृत्यु के बाद चर्च अस्थाई रूप से पतन का शिकार हो गया लेकिन पीटर वाल्डो के ऊर्जस्वी नेतृत्व में एक बार फिर उभर कर सामने आया। बारहवीं शताब्दी में कई वर्षों तक ये वाल्डेंशियाई आल्प्स की घाटी में फले–फूले– आपने पास के सत्य का उपदेश देते हुए। पुस्तिकाएं और लेख लिखे गए और उनकी हस्तलिखित प्रतियां तैयार की गईं। यह छापाखानों के अस्तित्व में आने से पहले की बात है।

थायाटिराई युग के बारे में यीशु ने जैसी कि भविष्यवाणी की थी, वे आस्थावान थे और उन्होंने कठिन परिश्रम किया। परवर्ती काल के उनके काम प्रारंभिक कार्यों के मुकाबले कहीं अधिक बड़े थे।

लेकिन एक बार फिर उत्पीड़न शुरू हुआ क्योंकि शांतिपूर्ण घाटियों में जिन्होंने कभी ईश्वर के कार्य के लिए सुरक्षित स्वर्ग प्रदान किया था, पूरे जोर–शोर से जांच–पड़ताल शुरू हो गई।

जो बचे रह गए थे उनमें से बहुतों ने अपने आस–पास की दुनिया के रंग–ढंग अपना लिए।

अब योरप में जहां–तहां छिटके हुए बहुत से समूह थे जो स्वयं को ईसाई कहते थे।

इस बीच दुनिया बदल रही थी। छपाई का आविष्कार हो चुका था– और ज्ञान बढ़ने लगा था। प्रोटेस्टैंट सुधारवाद ने रोम के चर्च का एकाधिकार तोड़ दिया।

मध्य युग में जब समूचे योरप में धार्मिक युद्ध फैल गए तो बहुत से शरणार्थी उन शांत घाटियों में जो ईश्वर के काम के लिए सुरक्षित स्वर्ग थीं, पूरे जोर–शोर से जांच–पड़ताल शुरू होने के साथ अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित और सहिष्णु इंग्लैंड भाग गए। उनमें सच्चे चर्च के सदस्य भी थे। वे अपने साथ अपने सिद्धांत और आस्थाएं, विशेष कर सैबथ का ज्ञान ले आए थे।

रविवार मनाने वाले कट्टरपंथियों ने प्रतिरोध किया। लेकिन विरोध के बढ़ते ज्वार के बावजूद सत्रहवीं सदी के प्रारंभ में इंग्लैंड में सैबथ मनाने वाले बहुत–से छोटे–छोटे कौंग्रीगेशन अस्तित्व में आ गए थे। यीशु अपने चर्च के पांचवें युग सार्डिस में उदित हो रहे थे।

प्रोटेस्टैंट इंग्लैंड बड़ी तेजी से सैबथ मनाने वालों सहित राजधर्म विरोधियों के प्रति असहिष्णु होता जा रहा था।

इंग्लैंड में चर्च तितर–बितर हो गया। लेकिन सागर के पार लोगों ने एक नई दुनिया का आविष्कार शुरू कर दिया था।

लंदन के सैबथ मनाने वाले चर्च का एक सदस्य स्टीफेन ममफोर्ड 1664 में इंग्लैंड से न्यूपोर्ट, रोडे द्वीप के लिए रवाना हुआ। रोडे द्वीप अमरीकी उपनिवेशों में सबसे छोटा था। उसकी स्थापना मसाचुसेट्स के कट्टरपंथियों के उत्पीड़न से डर कर भागे एक बपतिस्मावादी रोजर विलियम्स ने की थी।

रोडे द्वीप दुनिया की पहली जगह थी जहां के संविधान के मूलभूत सिद्धांत के रूप में धर्म की आजादी गई थी। किसी को भी सैबथ का पालन न करते देख कर ममफोर्ड और उनकी पत्नी न्यूपोर्ट के बपतिस्मावादी चर्च के सदस्य बन गईं। उन्होंने धर्मदीक्षा नहीं ली और चुपचाप अपनी आस्था बनाए रखी। रविवार मनाने वाले कौंग्रीग्रेशन के बहुत से सदस्य राजी हो गए कि उन्हें भी सैबथ का पालन करना चाहिए।

वे सैबथ मनाने वाले अमरीका के पहले कौंग्रीगेशन बने।

पहले–पहल वे निजी घरों में मिलते थे। न्यूपोर्ट के ऐतिहासिक संग्रहालय में उनकी अभिलेख पुस्तिका आज भी सुरक्षित है जिसमें उनके नाम, उनके चंदों, उनके पुरोहिताभिषेक संस्कार तक के अभिलेख शामिल हैं।

उन्होंने 1800 के प्रारंभिक वर्षों में जो साधारण लेकिन लालित्यपूर्ण सभागार बनवाया था वह भी संरक्षित है। उनकी आस्था में दूसरे भी उनके साथ जुड़ गए क्योंकि नई दुनिया में ईश्वर अपने काम के लिए और लोगों को बुलाने लगा था।

दूसरा कौंग्रीगेशन होप्किंटन में स्थापित हुआ था। यह जल्द ही कई सौ लोगों का फूलता–फलता चर्च बन गया। एक पुल उस जगह की शिनाख्त बना हुआ है जहां कभी उनका सभागार स्थित था। यहां पॉकातुक नदी के किनारे कई हजार लोगों को बपतिस्मा दिया गया था। उसके बाद आध्यात्मिक पतन शुरू हुआ।

अट्ठारहवीं सदी के मध्य में विलियम मिलर के उपदेश के फलस्वरूप सैबथ रखने वाले एक विशाल कौंग्रीगेशन का उदय हुआ। 1831 से 1849 के बीच मध्य पश्चि अमरीका भर में इस तरह के कौंग्रीगेशन पाए जा सकते थे।

बैटल क्रीक, मिशिगन में 1860 में कई हजार लोगों को एलेन जी. व्हाइट की आस्थाओं को स्वीकार करने के लिए राजी किया गया।

वे सही नाम ईश्वर के चर्च से हट गए। सच्चे सुसमाचार, ईश्वर के राज्य की जगह उन्होंने एलेन जी. व्हाइट का सिद्धांत अपना लिया जिसे शट–डोर–पालिसी कहा गया, ''खोजी निर्णय'', ''2,300 दिन का एक सिद्धांत'' और ''भविष्यवाणी की आत्मा'', चर्च की पैगंबर के रूप में श्रीमती व्हाइट की शिनाख्त करते हुए, जो चर्च के सिद्धांत तय करती थीं।

उन्होंने सेवेंथ–डे ऐडवेंटिस्ट नाम रखा, उसी नाम से वे आज भी जाने जाते हैं। लेकिन ईश्वर के सच्चे चर्च के जो लोग बचे रह गए थे उन्होंने इन उपदेशों और सिद्धांतों को मानने से माना कर दिया और कुछ खास सच्चाइयों को बरकरार रखा जो पिछली सदी में नजरअंदाज हो गई थीं।

वे अपना मुख्यालय मेरिओन, आयोवा और उसके बाद स्टैनबेरी मिसूरी ले गए। एक पत्रिका बाइबिल ऐडवोकेट प्रकाशित की गई। उसका प्रभाव कुछ फलदायक रहा– राष्ट्र भर में छोटे–छोटे कौंग्रीगेशन उग आए।

और इस तरह उन्नीसवीं शताब्दी में किसी समय ओरेगॉन की शांतिपूर्ण विलामेट घाटी में ईश्वर के सच्चे चर्च की स्थापना हुई।

वे औपचारिक शिक्षा रहित किसान थे। उनके पास उनको प्रशिक्षण देने, मार्गदर्शन करने के लिए प्रशिक्षित पादरियों का अभाव था। लेकिन उनके पास ईश्वर के चर्च का नाम था और वे निष्ठा पूर्वक सैबथ दिवस का पालन करते थे।

ईश्वर का चर्च पेंटिकॉस्ट के दिन से अशांत शताब्दियों को पार करता काफी दूर निकल आया है।

यह कमजोर और प्रभावहीन था। वर्षों के उत्पीड़न और समझौतों ने उस पर गहरा प्रभाव डाला था। बहुत सारा सत्य विलुप्त हो गया था। लेकिन वे अपने रास्ते पर टिके रहे।

विलामेट घाटी में उन्होंने इंतजार किया अब एक बार फिर बैटन बदलने का समय आ गया था। उन लोगों के हाथों में सौंपने का समय जिन्हें ईश्वर अंतिम समय का अपना काम करने के लिए बुलाने वाला है।

चर्च में ईश्वरीय सत्य की पुनर्स्थापना

वर्ष 1931 से, चर्च की स्थापना से ठीक 1900 साल (समय चक्रों की एक शताब्दी) बाद ईश्वर के सच्चे मूल चर्च के एक छोटे–से अवशेष ने फिलाडेल्फिया युग के रूप में नया जीवन पाना प्रारंभ किया। यह ''अंत के समय'' तक आ पहुंचा था। इसमें एक नई आध्यात्मिक जीवंतता भरी गई। यीशु की मत्ती 24:14 की भविष्यवाणी के पूरा होने का समय आ चुका था – ''राज्य का यह सुसमाचार सभी राष्ट्रों में साक्ष्य के लिए दुनिया भर (प्रचारित) में होगा। उसके बाद अंत आ जाएगा।'' इतना महत्वपूर्ण सत्य जो लुप्त हो गया था, धीरे–धीरे प्रकट हुआ और उसका प्रचार किया गया।

इस फिलाडेल्फिया युग का वर्णन प्रकाशना 3 में श्लोक 7 से 13 तक में किया गया है। इस समय तक आध्यात्मिक रूप से सार्डिस युग मर रहा था (प्रकाशना 3:1–6) और ईसा का सुसमाचार फैलाने में अक्षम हो गया था। दरअसल, अब तक में वे उस सुसमाचार का असली अर्थ खो चुके थे। वे जानते थे कि वे ईसा मसीह के दूसरे आगमन के करीब पहुंच गए हैं। लेकिन इसके सिवा कि ईसा मसीह राज करेंगे उन्हें इसका ज्ञान नहीं था कि हजार वर्ष की सहस्राब्दी के दौरान क्या होगा।

ईश्वर के सच्चे चर्च के फिलाडेल्फिया युग के बारे में हम पढ़ते हैं ''चर्च के एंजेल (देवदूत) के प्रति...'' ऐंजेल शब्द यूनानी भाषा के शब्द ''एग्गेलॉस'' का अनुवाद है जिसका अर्थ है संदेशवाहक या एजेंट जरूरी नहीं कि यह हमेशा रूहानी फरिश्ते का ही उल्लेख करे बल्कि यह मानव एजेंटों का भी उल्लेख कर सकता है। यह संभव है कि ईश्वर का द्वैत का सिद्धांत यहां भी लागू होता हो।

यह वास्तविक आत्मा से बने देवदूत पर भी लागू हो सकता है जिसे कुल मिलाकर चर्च के इस युग का एजेंट या सहायक नियुक्त किया गया हो। या यह उस मानवीय एजेंट पर भी लागू हो सकता है जिसे ईश्वर ने चर्च के इस युग का नेतृत्व करने के लिए पैदा किया हो।

साथ ही साथ, श्लोक 7–13 पर द्वैत का एक और सिद्धांत लागू हो सकता है। यह कुल मिला कर इस युग के चर्च पर लागू हो सकता है या उस मानव नेता पर भी लागू हो सकता है, जिसे ईश्वर ने अपने चर्च के इस युग के लिए पैदा किया है।

श्लोक 8 के साथ जारी रखें: ''मैं तुम्हारे काम जानता हूं: देखा मैंने तुम्हारे सामने एक खुला दरवाजा रखा है, और कोई भी इसे बंद नहीं कर सकता, क्योंकि तुममें थोड़ी शक्ति है और तुमने मेरा वचन निभाया है और मेरे नाम से इनकार नहीं किया है।''

चर्च के इस युग को फल देना था। इस युग या इसके मानव नेता के समक्ष ईश्वर ने एक खुला दरवाजा रखा था। II कोरिंथियाइयों 2:12 में और ऐक्ट्स 14:27 में इसका ब्योरा दर्ज है कि दूसरे देशों में सुसमाचार का उपदेश देने जाने के लिए ईसा मसीह ने कैसे पॉल के लिए दरवाजा खोला। इस चर्च और/या इसके नेता में लेकिन शक्ति बहुत कम थी। दोनों में से किसी भी शैतान की दुनिया में महान या बड़ा कद नहीं था। लेकिन इस युग के लोग ईश्वर के कथन के प्रति निष्ठावान थे। हालांकि यीशु ने व्यक्तिगत रूप से मूल देवदूतों को सुसमाचार का जो मूल सत्य प्रदान किया था उसका काफी हिस्सा लुप्त हो गया, लेकिन उसे बाइबिल के माध्यम से ईश्वर के इस युग के चर्च के लिए अक्षुण्ण रखा गया था जो इसका पालन करने में निष्ठावान थे।

मलाची 3:1–5 और 4:5–6 में प्रकट किया गया है कि ईश्वर ईसा मसीह के आगमन से कुछ ही पहले एलिजा के अधिकार और आत्मा में किसी को उत्पन्न करेंगा। मत्ती 17:11 में यीशु ने कहा: बपतिस्मावादी जॉन ने अपना अभियान पूरा करने के बाद भी ''सचमुच भविष्यवाणी का यह एजिला पहले आएगा और सारी चीजों को पुनर्स्थापित करेगा।'' हालांकि यह स्पष्ट रूप से प्रकट किया गया है कि एलिजा की शक्ति और आत्मा में बपतिस्मावादी जॉन आया था लेकिन उसने किसी चीज को पुनर्स्थापित नहीं किया। ईसा मसीह के दूसरे आगमन से कुछ ही पहले उत्पन्न किए जाने वाले मानव नेता को ईसा के आगमन का मार्ग प्रशस्थ

करना था– चर्च तैयार करना था और उस सत्य को पुनः स्थापित करना था जो पिछले चर्च युगों में लुप्त हो गए थे। और मत्ती 24:14 की भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए इस नेता और/या चर्च के फिलाडेल्फिया युग के लिए एक द्वार खोला जाना थाः ''राज्य का यह सुसमाचार सभी राष्ट्रों में साक्ष्य के लिए दुनिया भर में (प्रचारित) होगा और उसके बाद अंत आ जाएगा।''

यह ऐसे समय में होगा जब मानव जाति के इतिहास में पहली बार, व्यापक विनाश के हथियार तैयार होंगे जो धरती से सारी मानवता को खत्म कर सकेंगे (मत्तीः 24:21–22)। इसे ईसा मसीह के दूसरे आगमन से भी ठीक पहले होना था। (श्लोक 29–30)।

ये भविष्यवाणियां अब निश्चित रूप से पूरी हो चुकी हैं। सच्चा सुसमाचार पुनःस्थापित हो चुका है और धरती के सभी राष्ट्रों में सत्ता में आ चुका है. चर्च आत्मा समर्थित एक नया जीवन पा चुका है।

सारे प्रोद्योगिक विकास और सुविधाएं अमल में लाई जा रही हैं।

यूजीन, ओरेगांव में सबसे कम शक्ति वाले स्टेशन के साथ प्रारंभ करके पहले रेडियो का उपयोग किया गया। उसके बाद छापा खाने का। इसकी शुरूआत एक पुरानी नीवोस्टाइल से किया गया जो मेमियोग्राफ की पूर्वज थी। उसके बाद छापा खाने का उपयोग किया गया। 1945 में द्वतीय विश्व युद्ध के बाद टेलीविजन का प्रारंभ हुआ। चर्च ने 1955 की गर्मी में टेलीवीजन का उपयोग किया 1900वर्षों में पहली बार अंततः सच्चे सुमाचार की घोषणा की गई और धरती के सभी रास्ट्रों में उसका प्रकाशन हुआ चर्च काफी विकसित हो गया है। पहले 25वर्षों में चर्च 30 प्रतिशत की दर से बढ़ा।

पहले अग्रदूत आज के काम के आकार और विस्तार को देख कर दंग रह जाते। ईश्वर ने अपने अंतिम काम के लिए जो साधन, जो संचार जो प्रोद्योगिकी

आधुनिक संसाधन दिए हैं उन लोगों को आश्चर्यजनक लगेंगे जिन्हें 2,000 साल पहले सुसमाचार को दुनिया भर में पहुंचाने का काम सौंपा गया था।

लेकिन कुछ चीजें आश्चर्यजनक नहीं होंगी—सैबथ और पवित्र दिन, नाम ईश्वर का चर्च और राज्य का सुमाचार इन्हें वे पहचान लेंगे जो ईसा के समय से अंत के समय तक युगों से चले आ रहे हैं और समय के अंत तक रहेंगे।

7

परमेश्वर के राज्य के रहस्य

वस्तुतः ''परमेश्वर के राज्य'' से आपका आशय क्या है? यह भी एक अनसुलझा रहस्य है, न केवल दुनिया के सभी लोगों के लिए, बल्कि दुनिया भर के चर्चों, ब्रह्मविज्ञानियों और ''बाइबिल के विद्वानो'' के लिए भी।

वस्तुतः वह रहस्य इससे संबद्ध रहस्य, ईसा मसीह के सुसमाचार से जुड़ा हुआ है।

''ईसा मसीह का सुसमाचार'' वस्तुतः क्या है, इसे लेकर चर्चों में मतभेद क्यों है? 31 ईस्वी में चर्च की स्थापना के बाद के प्रारंभिक बीस या तीस वर्षों के दौरान ''ईसा मसीह का सुसमाचार क्या है'', इस प्रश्न को लेकर एक हिंसक विवाद उठ खड़ा हुआ। उसके बाद के सौ वर्षों में नव विधान चर्च का सारा इतिहास नष्ट कर दिया गया। इसे ''चर्च के इतिहास के लोप की सदी'' कहा गया है। लगभग दूसरी सदी के मध्य में जब

पर्दा उठा तो पूरी तरह से एक अलग किस्म के चर्च का उदय हुआ लेकिन वह मुख्य रूप से ईसा मसीह के सुसमाचार का नहीं बल्कि ईसा मसीह के बारे में अपने सुसमाचार का उपदेश दे रहा था। ईसा मसीह एक संदेश के साथ परमेश्वर के भेजे दूत थे, और वह संदेश था परमेश्वर का राज्य। ईसा मसीह का संदेश ईसोपदेश था – ईसा मसीह का सुसमाचार। 1953 के पहले सप्ताह तक दुनिया के सामने इसकी घोषणा नहीं की गई, जब लगभग 1,900 वर्षों – काल चक्रों की एक शताब्दी – में पहली बार योरप में दुनिया के सबसे सशक्त रेडियो स्टेशन, रेडियो लक्जेंबर्ग से इसका प्रसारण किया गया।

ऐसा लगता है कि आज सभी चर्चों ने ईसा मसीह के सुसमाचार को खो दिया है। वे मुख्य रूप से ईसा मसीह के बारे में अपने सुसमाचार का उपदेश देते हैं।

ईसा मसीह परमेश्वर के राज्य के बारे में उपदेश देते हुए आए। फिर भी कुछ ही लोग हैं जो आज परमेश्वर के राज्य के बारे में उपदेश देते हैं। क्योंकि यह क्या है, इसके बारे में वे सारा ज्ञान खो चुके हैं! लेकिन क्या, परमेश्वर के सच्चे चर्च को छोड़ कर, आज कोई भी परमेश्वर के राज्य के सच्चे सुसमाचार की घोषणा करता है?

एक प्रमुख इंजीलवादी ने एक रेडियो के दुनिया भर के श्रोताओं से कहा कि आज परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार हमारे लिए नहीं है। कुछ संप्रदाय अनुग्रह के सुसमाचार का दावा करते हैं। कुछ मुक्ति के सुसमाचार का तो अधिकतर ईसा मसीह के बारे में सुसमाचार का, कुछ सामाजिक सुसमाचार का। कुछ मन के विज्ञान या धार्मिक विज्ञान का दावा करते हैं।

इनमें से कोई भी सही नहीं है!

कुछ चर्च दावा करते है कि उनका विशेष संप्रदाय, या ''कुल मिला कर ईसाइयत'' परमेश्वर के राज्य का गठन करती है. एक प्रमुख टेलीविजन इंजीलवादी ने कहा, ''परमेश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर है''। कुछ ने ल्यूक 17:21 को उद्धृत किया हैः ''परमेश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर है''। आंशिक संसोधन के अलावा संसोधित मानक संस्करण, मोफत का और दूसरों के अनुवाद सभी दर्शाते हैं कि इसे ''तुम्हारे बीच में'' के अर्थों में लिया जाना चाहिए – यानी ईसा मसीह उनके बीच में थे. वह परमेश्वर के भावी राज्य के राजा हैं, डेनियल 7 में और दूसरी जगहों पर बाइबिल राजा और राज्य का एक–दूसरे के लिए उपयोग करती है, यानी राजा वह राज्य होता है या उस राज्य का प्रतिनिधित्व करता है जिस पर वह शासन करता है।

एक भी सही नहीं है! क्या कोई चीज इससे अधिक अविश्वसनीय लग सकती है? हां, इस दुनिया की संकल्पना में पली–बढ़ी किसी प्रतिभा के लिए वस्तुतः एक चीज इससे अधिक अविश्वसनीय है! और वह है सचमुच परमेश्वर का राज्य क्या है, इसके बारे में स्पष्ट सत्य!

यह सत्य केवल आश्चर्यजनक नहीं है – यह दहला देने वाला – हतप्रभ कर देने वाला सत्य है! यह महान रहस्य है इसके बावजूद यह सचमुच शुभ समाचार है – मानवीय चेतना में कभी भी आया सबसे गौरवपूर्ण शुभ समाचार!

मसीह के सुसमाचार

ईसा मसीह का एक और केवल एक सुसमाचार क्या है? दुनिया यह नहीं जानती! 19 सदी तक इसका उपदेश नहीं दिया गया, उतना ही आश्चर्यजनक जितना प्रतीत हो सकता है। अपनी बाइबिल में देखें। बिलकुल शुरुआत से इसे देखें!

''ईसा मसीह के सुसमाचार का प्रारंभ'' आप मत्ती 1:1 में पढ़ेंगे। अब जबकि जॉन को जेल में डाल दिया गया था, यीशु गालिली में आए परमेश्वर के राज्य का उपदेश देते और और यह कहते हुए, ''समय पूरा हो चुका है और परमेश्वर का राज्य हाथ में हैः तुम पश्चाताप करो, और सुसमाचार में विश्वास करो'' (मत्ती 1:14-15)।।

मोक्ष के लिए उस सुसमाचार पर विश्वास करना आवश्यक है! और आप यह जानें बिना इस पर कैसे विश्वास कर सकते हैं कि यह क्या है? और 1900 वर्षों तक दुनिया नहीं जानती थी। सुसमाचार को दबा दिया गया था और उसे यीशु के बारे में इनसान के सुसमाचार से प्रतिस्थापित कर दिया गया था।

यीशु परमेश्वर के राज्य के बारे में सुसमाचार का उपदेश देते हुए हर जगह गए। उन्होंने दृष्टांत देकर परमेश्वर के राज्य के बारे में बताया। उन्होंने उपदेश देते हुए सत्तर आदमी भेजे और उन्हें परमेश्वर के राज्य के बारे में उपदेश देने का निर्देश दिया (ल्यूक 10:9)।

उन्होंने केवल ईश्वर के राज्य का उपदेश देने के लिए अग्रदूत भेजे, जिन पर ईश्वर के चर्च की स्थापना की गई थी (ल्यूक 9:1–2)। पुनरुत्थान के बाद स्वार्गारोहण से पहले यीशु ने अपने शिष्यों को ईश्वर के राज्य का उद्देश्य दिया (ऐक्ट्स 1:3)।

यह विस्मयकारी है कि दुनिया ने इसका ज्ञान खो दिया कि यह क्या है।

देवदूत पॉल ने परमेश्वर के राज्य का उपदेश दिया (ऐक्ट्स 19:8; 20:25; 28:23, 31)। और सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने पॉल के जरिए किसी दूसरे सुसमाचार का उपदेश देने वाले किसी इनसान या देवदूत के लिए दुहरा अभिशाप घोषित किया! (गालातियों के नाम 1:8–9)

फिर इतने सारे लोग इतने सारे दूसरे सुसमाचारों का उपदेश देने का साहस कैसे करते हैं? परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार ऐसी चीज है, मोक्ष पाने के लिए आपको जिसे अवश्य समझना और मानना चाहिए! ईसा मसीह ने इस तरह कहा! बेहतर होता कि तुमने पता किया होता कि यह क्या है!

वही सुसमाचार–परमेश्वर का राज्य– इस अध्याय की विषय वस्तु है। यह चर्च का रहस्य वाले अध्याय के बाद है क्योंकि परमेश्वर का राज्य चर्च का अनुवर्ती है। याद रखें, परमेश्वर के राज्य के बारे में सिखाने और उस राज्य में शासन करने के लिए तैयार करने के लिए ''बाहर के लोगों'' का आह्वान करना चर्च का उद्देश्य है।

डेनियल जानता था!

क्या आपने लोगों को परमेश्वर के राज्य. के बारे में कुछ इस तरह की बातें करते नहीं सुना हैः ''विश्व शांति, सहिष्णुता और भातृवत प्रेम की स्थापना के लिए हर जगह ईसाइयों के मिल–जुल कर काम करने से इनसानों के दिलों में अंततः परमेश्वर का राज्य स्थापित हो जाएगा।!

चूंकि उन्होंने 1,900 साल पहले ईसा के सुसमाचार को खारिज कर दिया था। दुनिया को उसकी जगह किसी और चीज का समर्थन करना ही था। उन्हें किसी नकली सुसमाचार की खोज करनी ही थी! इस तरह हमने परमेश्वर के राज्य के बारे में घिसी–पिटी बात कहते सुना है कि यह मानव हृदय का एक सुंदर भाव है, जो इसे घटाकर वायवीय, काल्पनिक शून्य बना देता है! कुछ दूसरे लोगों ने मिथ्यानिरूपण किया है कि ''चर्च'' ही परमेश्वर का राज्य है, और कुछ लोगों ने इसे सहस्राब्दी कह कर भ्रम पैदा किया। हमारी सदी में तो कुछ लोगों ने दावा किया कि ब्रितानवी साम्राज्य ही परमेश्वर का राज्य है। लेकिन अब कोई भी यह दावा नहीं करता। भला यह दुनिया कैसे छली जा सकती है?

पैगंबर डेनियल, जो ईसा से छह सौ साल पहले हुए थे, जानते थे कि परमेश्वर का राज्य एक वास्तविक राज्य है– धरती के लोगों पर राज करने वाली सरकार।

ईसा मसीह इसके बारे में अतिरिक्त जानकारी ले आए जो संभवतः डेनियल को मालूम नहीं थी। फिर भी डेनियल जानते थे कि धरती पर परमेश्वर का वास्तविक, यथार्थ राज्य स्थापित होने वाला है।

डेनियल उन चार असाधारण बुद्धिमान और प्रतिभाशाली यहूदी युवकों में से एक थे जो यहूदियों की कैद में थे। इन चार लोगों को बेबीलोनियाई सरकार में विशेष दायित्वों के प्रशिक्षण के लिए चाल्डियाई साम्राज्य के सम्राट नेबुचेडनेजर के राजमहल में रखा गया था। डेनियल पैगंबर थे जिन्हें ईश्वरादेश और स्वप्न में विशेष बोध प्रदान किया गया था। (डेनियल 1:17)।

नेबुचेडनेजर दुनिया का पहला वास्तविक शासक था। उसने जुदाह कौम सहित विशाल साम्राज्य जीत रखा था। इस सम्राट को एक इतना प्रभावशाली स्वप्न आया था कि उसने उसे परेशान कर रखा था – उसे जबर्दस्त चिंता में डाल दिया था। उसने अपने बाजीगरों, ज्योतिषियों और जादूगरों से मांग की कि वे उसे बताएं कि उसने सपने में क्या देखा और उसका आशय क्या है। वे नहीं बता सके। उसके बाद डेनियल को सम्राट के सामने पेश किया गया।

डेनियल ने कहा कि उनमें स्वप्नों की व्याख्या करने की क्षमता चाल्डियाई बाजीगरों से अधिक नहीं है ''लेकिन'' उन्होंने कहा, स्वर्ग में एक परमेश्वर है जो सम्राट नेबुचेडनेजर को रहस्य बताता है और बताता है कि आने वाले दिनों में क्या होगा (डेनियल 2:28)।

दुनिया पर राज करने वाले इस मानव सम्राट के समक्ष यह प्रकट करना परमेश्वर का पहला उद्देश्य था कि स्वर्ग में एक परमेश्वर है – कि परमेश्वर सभी कौमों, सरकारों और राजाओं पर राज करने वाला सर्वोच्च शासक है – कि परमेश्वर ब्रह्मांड पर राज करता है!

वह परमेश्वर ही था जिसने सुदर्शन लुसिफर को धरती के राजसिंहासन पर बैठाया है, और लुसिफर जो शैतान, दानव बन गया है, सिर्फ इसलिए धरती के सिंहासन पर विराजमान है कि परमेश्वर उसे विराजमान रहने की अनुमति देता है, और तभी तक विराजमान है जब तक कि वह परमेश्वर शैतान को हटा कर उस राजगद्दी पर बैठने की लिए ईसा मसीह को नहीं भेजता। यह चाल्डियाई सम्राट केवल मूर्ति पूजकों के कई असुर देवताओं को जानता था। वह सच्चे जीवित सर्वशक्तिमान परमेश्वर के बारे में कुछ नहीं जानता था। आज की कौमों और शासकों की तरह वह भी नहीं जानता था कि ईश्वर सजीव, वास्तविक, सक्रिय, नियंत्रक और शासक सत्ता है जो सही अर्थों में न केवल उस सबको नियंत्रित करता है जो इस धरती पर है बल्कि संपूर्ण ब्रह्मांड को संचालित करता है!

इस सपने का सारा उद्देश्य ईश्वर के राज्य की सच्चाई को प्रकट करना था। ऐन उस चीज को प्रकट करना जो ईसा समीह का एक और केवल एक सुसमाचार है। और दूसरा, आने वाले दिनों में जो होने वाला है, दरअसल अगले दो दशकों में – यानी बीसवीं सदी के अंतिम उत्तरार्द्ध में – उसे उद्घाटित करना – आज के हम लोगों के लिए लिखे में सुरक्षित रखना!

आज हमारे लिए!

यह 2,500 साल पहले के लोगों के लिए शुष्क, नीरस और निर्जीव लेखन नहीं है. यह हमारे समय के लिए जीवित है – खबर है! यह आज हमारे लिए अग्रिम समाचार है। इसके घटित होने से पहले की खबर – अगले कुछ ही वर्षों में बिलकुल आपके जीवन काल में निश्चित रूप से धरती के समूचे इतिहास की सबसे बड़ी घटना की अग्रिम खबर!

यह सच्चा सुसमाचार है! यही वह सुसमाचार है यीशु ने जिसका उपदेश दिया था! यह आज आपके और मेरे लिए अभीप्सित है! यह महत्वपूर्ण है कि आप इसे समझें!

अपनी बाइबिल में पढ़ें डेनियल 2, श्लोक 28 से 35 तक। अपने सपने में इस सम्राट ने एक विशाल प्रतिमा देखी इनसान की बनाई कभी की किसी मूर्ति या प्रतिमा से बड़ी–यह इतनी विशाल थी कि सपने में भी डरावनी थी। इसका सर शुद्ध सोने का था, और इसकी छाती और बाहें चांदी की थीं, – ईश्वर की सरकार – यह सत्य कि ईश्वर शासन करता है पेडू और जांधें पीतल की और पैर ठोस लोहे के और पांव लोहे और मिट्टी के मिश्रण के।

समय का एक तत्व भी उसमें विद्यमान था। नेबुचेड्नेजर एक आलौकिक पत्थर के स्वर्ग से आकर प्रतिमा के पैर पर गिर कर उसे कुचल देने तक उसे देखता रहा था। उसके बाद पूरी प्रतिमा टूट कर छोटे–छोटे टुकड़ों में बिखर गई, और वस्तुतः हवा के साथ उड़ गई– अंतर्ध्यान हो गई! उसके बाद वह पत्थर चमत्कारिक ढंग से फैलाने लगा और बड़ी तेजी से एक एक विशाल पर्वत बन गया– इतना विशाल कि उसने पूरी धरती को ढंक लिया!

इसका आशय क्या था? क्या इसका कोई अर्थ था? हां, क्योंकि यह परमेश्वर का किया था। सामान्य सपनों से अलग यह, नेबुचेड्नेजर को ईश्वर की संप्रभुता का संदेश देने के लिए परमेश्वर का दिखाया सपना था और यह आज के हम लोगों के समक्ष सच्चे सुसमाचार के महत्वपूर्ण तथ्यों को प्रकट करने के लिए परमेश्वर के लिखे शब्दों का हिस्सा है!

''यही वह सपना है,'' डेनियल ने कहा (श्लोक 36), ''और हम सम्राट के समक्ष इसका आशय स्पष्ट करेंगे।''

तब यह परमेश्वर की व्याख्या है। निश्चित रूप से यह हर्बर्ट डब्ल्यू आर्म्सट्रांग की व्याख्या नहीं है। इनसानों को कभी भी बाइबिल की व्याख्या नहीं करनी चाहिए। बाइबिल हमें परमेश्वर की अपनी व्याख्या प्रदान करती है! यहां प्रस्तुत है वह व्याख्याः

''तुम, हे सम्राट, राजाओं के राजा हो'' – वह दुनिया के साम्राज्य का पहला विश्व सम्राट था! ''....क्योंकि स्वर्ग के परमेश्वर ने तुम्हें एक साम्राज्य, अधिकार, शक्ति और गरिमा प्रदान की है।'' परमेश्वर दुनिया के इस मानवीय तनाशाह के समक्ष सबके ऊपर, सर्वोच्च शासक के रूप में स्वयं को प्रकट कर रहा था।

इस चाल्डेनियाई सम्राट की ही तरह आज के लोग ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर को एक शासक– उस सर्वोच्च सत्ता के रूप में नहीं लेते जो सरकारों के मुखिया की हैसियत से नियंत्रण करता है। शास्वत सत्ता स्वयं को डेनियल के माध्यम से नेबुचेड्नेजर पर प्रकट कर रहा था और आज बाइबिल के जरिये आप पर और मुझ पर संप्रभु, शक्तिमान, नियामक परमेश्वर के रूप में प्रकट कर रहा है जिसकी आज्ञा का पालन किया जाना है!

''तुम,'' डेनियल ने अपनी बात जारी रखते हुए इस मानवी सम्राट से कहा, ''सोने का यह सिर हो। और तुम्हारे बाद तुमसे अवर एक दूसरे राज्य का उदय होगा, और उसके बाद पीतल का एक तीसरा राज्य आएगा जो सारी धरती पर राज करेगा'' (श्लोक 37—39)।

राज्य क्या है?

सूचना! यह राज्यों की बात करती है। यह राज्यों का उल्लेख करती है जो धरती के लोगों पर शासन करते हैं. यह सरकारों की यह बात करती है! यह ''इनसानों के दिल में उठने वाली'' वायवीय भावनाओं की बात नहीं करती। यह चर्चों की बात नहीं करती। यह उस तरह की सरकारों की बात है जो यहां धरती के लोगों की कौमों पर शासन करतीं और अधिपत्य रखती हैं। यह सुस्पष्ट है, यहां कोई भ्रांति नहीं है कि राज्य शब्द का आशय क्या है।

व्याख्या में कोई भ्रांति नहीं है। परमेश्वर पैगंबर डेनियल के माध्यम से अपने —आपको व्यक्त करता है। विशालकाय धातु प्रतिमा ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सरकारों—वास्तविक यथार्थ राज्यों का प्रतिनिधित्व किया था।

उसने दुनिया पर हुकूमत करने वाली सरकारों के उत्तराधिकार का प्रतिनिधित्व किया था। पहले सोने का सिर था। वह नेबुचेड्नेजर और चाल्डियाई साम्राज्य के उसके राज का प्रतिनिधित्व था। उसके बाद, काल क्रम में आगे चलकर एक दूसरा आने वाला था, और फिर तीसरा राज्य ''जो सारी धरती पर राज करेगा''— विश्व साम्राज्य!

उसके बाद श्लोक 40 में लोहे का पैर एक चौथे विश्व साम्राज्य का प्रतिनिधित्व करता है। उसे सख्त होना है जैसे लोहा सख्त होता है— अपने पूर्ववर्तियों से सशक्त सेना। इसके बावजूद जैसे चांदी सोने से कम मूल्यवान होती है, पीतल चांदी से, लोहा पीतल से, हालांकि इनमें से प्रत्येक धातु अधिक कठोर अधिक मजबूत होती है, इसी तरह अनुक्रामी राज्य क्रमशः नैतिक और अध्यात्मिक दृष्टि से बदतर होते जाएंगे। दो पैरों का आशय था कि चौथा साम्राज्य विभाजित हो जाएगा।

चेल्डियाई साम्राज्य के बाद और भी बड़ा फारसी साम्राज्य आया, उसके बाद यूनानी– मेसीडोनियाई, और चौथा रोमन साम्राज्य। यह विभाजित था जिसकी राजधानियां रोम और कॉस्टैंटिनोपोल में थीं।

अब श्लोक 44! इसे पढ़ें! अपनी बाइबिल उठाएं। अपनी आंखों से अपनी बाइबिल में देखें। यहां सादा जुबान में परमेश्वर का राज्य क्या है, इसके बारे में परमेश्वर की व्याख्या दी गई है:

''और इन राजाओं के समय में.....''– यहां लोहे और भंगुर मिट्टी की दस उंगलियों की बात की गई है। डेनियन 7, और प्रकाशना ग्रंथ 13 और 17 की भविष्यवाणी को जोड़ कर ऐन आपकी आंखों के सामने नए संयुक्त योरोपीय राज्य का उल्लेख किया गया है! प्रकाशन 17:12 स्पष्ट विवरण देता है कि यह दस राजाओं या राज्यों का संघ होगा। (प्रकाशना 17:8) जो पुराने रोमन साम्राज्य का पुनरुद्धार करेगा।

इसलिए ध्यानपूर्वक समय सीमा चिह्नित करें! ''इन राजाओं के समय में'' – इन दस राष्ट्रों या राष्ट्रों के समूह के दिनों में क्या होगा जो हमारे जमाने में थोड़े समय के लिए रोमन साम्राज्य का पुनरुद्धार करेंगे।

''स्वर्ग का परमेश्वर एक ऐसे राज्य की स्थापना करेगा जो कभी नष्ट नहीं किया जो सकेगा.... लेकिन यह टूट कर चकनाचूर हो जाएगा और इन सारे राज्यों को समाहित कर लेगा और हमेशा बना रहेगा''!

हां, हमारे जमाने में!

अब यहां हमने चार सार्वभौम सर्वकालिक विश्व साम्राज्य का वर्णन किया है– केवल चार का जिनका कभी अस्तित्व रहा है! प्रकाशना 13 और 17 दर्शाते हैं कि मूल रोमन साम्राज्य के पतन के बाद दस पुनरुत्थान होंगे– जिनमें से सात पर गैर यहूदी चर्च का राज होगा प्राचीन बेबीलोन की ''बेटी''– ऐसे चर्च का जो ईसाई होने का दावा करता है, लेकिन वस्तुतः जिसे परमेश्वर ने महान बेबीलोन का रहस्य का नाम दिया था या अधिक स्पष्ट शब्दों में कहें तो बेबीलोनियाई रहस्य!

इनमें से छह आए और चले गए। सातवें का अब दस योरपीय समूहों या राष्ट्रों द्वारा रोमन साम्राज्य के अंतिम, सुनिश्चित, अल्पकालिक पुनरुत्थान का गठन कर रहा है। डेनियल 2 में इनको लोहे और मिट्टी की दस उंगलियों के रूप में व्यक्त किया गया है।

उनके समय में— और वे बहुत कम समय तक रहेंगे, संभवतः दो से साढ़े तीन वर्षों, से अधिक नहीं— स्वर्ग का परमेश्वर एक ऐसे राज्य की स्थापना करेगा जो कभी नष्ट नहीं होगा।

उसके बाद यह परमेश्वर का राज्य होगा!

प्रकाशना 17 से तुलना करें। यहां एक चर्च का चित्र बना है। किसी छोटे चर्च का नहीं— एक विशाल चर्च का। उसने ''बहुत से सागरों'' पर राज किया जिनका श्लोक 15 में अलग—अलग भाषाएं बोलने वाले विभिन्न राष्ट्रों के रूप में वर्णन किया गया है। उसे परमेश्वर के चर्च के रूप में प्रस्तुत किया गया है— जो बाइबिल (इफीशियाइयों 5:23; प्रकाशना 19:7; मत्ती 25:1-10; इत्यादि) कहती है, ईसा मसीह की वाग्दत्ता ''दुल्हन'' है जिसका ईसा के पुनरागमन के समय उनके साथ अध्यात्मिक विवाह होगा।

लेकिन उसने व्यभिचार किया है। कैसे? इस दुनिया की मानवीय सरकारों के साथ प्रत्यक्ष राजनीतिनक गठबंधन करके! वह रोमन साम्राज्य के इन सभी सातों पुनरुद्धारों पर ''बैठी'' (प्रकाशन 17:3)— जिन्हें ''पवित्र रोमन साम्राज्य'' कहा जाता है। उसने मानवीय राज्यों पर शासन किया— एक सामान्य कानून और अपने जार ''पति''पर शासन करने वाली अविवाहिता ''पत्नी'' के रूप में— पूरी तरह एक अप्राकृतिक और अधर्मी संबंध।

इसलिए उसे ''जानवर के इस अंतिम सिर'' पर— रोमन साम्राज्य के इस अंतिम पुनरुत्थान पर ष्बैठनाष् है। यह चर्च और राज्य का संगठन होगा। इसे टिके रहना है, लेकिन बहुत कम समय के लिए। इसे यीशु के पुनरागमन पर उनसे लड़ना है! वही इसका अंत होगा।

अब हम इसे उत्थान के क्रम में देखते हैं। (योरपीय साझा बाजार के सदस्य संभवतः वही दस नहीं हैं जो पवित्र रोमन साम्राज्य का पुनरुद्धार करेंगे)। इसलिए हम ईसा मसीह के आगमन के करीब हैं! हम इस दुनिया के अंत के बिलकुल करीब हैं!

सभी कौमों पर राज करने वाले हैं यीशु

जब यीशु आते हैं, वह राजाधिराज के रूप में, सारी दुनिया पर राज करने आ रहे हैं (प्रकाशना 19:11–16), और उनका राज्य– परमेश्वर का राज्य– डेनियल ने कहा– इन सभी सांसारिक राज्यों को खत्म कर देने वाला है।

प्रकाशना 11:15 इसे इन शब्दों में व्यक्त करता हैः ''इस दुनिया के राज्य हमारे भगवान और उसके यीशु के राज्य बनने वाले हैं और वह हमेशा–हमेशा के लिए राज करेंगे!''

यही परमेश्वर का राज्य है। यह वर्तमान सरकारों का अंत है– हां, संयुक्त राज्य और ब्रितानवी कौमों के भी। उसके बाद वे समूची धरती के राजाधिराज प्रभु ईसा मसीह के राज्य बन जाएंगे।

इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि परमेश्वर का राज्य एक वास्तविक राज्य है। यहां तक कि चाल्डियाई साम्राज्य भी एक राज्य था– यहां तक कि रोमन साम्राज्य भी राज्य था– इसलिए परमेश्वर का राज्य एक सरकार है। यह दुनिया भर के राष्ट्रों की सरकारों को अपने अधीन कर लेने वाला है।

ईसा मसीह राजा– एक शासक बनने के लिए जनमे थे!

जब वह अपने जीवन के लिए पिलेट के समक्ष सुनवाई के लिए खड़े हुए, पिलेट ने उनसे कहा, तो तुम राजा हो? यीशु ने जवाब दिया, आप ही कहते हैं कि मैं राजा हूं। इसी उद्देश्य से तो मेरा जन्म हुआ था, और इसी मकसद से मैं इस दुनिया में आया हूं। लेकिन यीशु ने पिलेट से यह भी कहाः ''मेरा राज्य इस दुनिया का नहीं है''– (जॉन 18:37, 36)। कितने हैरत की बात है, कितनी बड़ी त्रासदी है कि आज चर्च में होने वाली प्रार्थनाओं और सुसमाचार के उपदेशों में आदमी यीशु के दुनिया में आने की बात अगर सुनता भी है तो कभी–कभार ही सुनता है। सांसारिक राज्य और शैतान की शक्ति (एफीसियाइयों 6:12) आज दुनिया पर राज कर रही है। ईसा मसीह के पुनरागमन पर शैतान की यही सांसारिक सरकारें नष्ट की जाएंगी और ईसा मसीह द्वारा प्रतिस्थापित होंगी। यीशु का राज्य कल की दुनिया है!

देवदूत ने ईसा मसीह के जन्म से पहले मेरी, उनकी मां से जो कहा था, क्या आपने उसे पढ़ा है? यीशु ने पिलेट से कहा कि वह राजा बनने के लिए पैदा हुए हैं। परमेश्वर के दूत ने मेरी से कहाः ''तुम अपनी कोख में गर्भ धारण करोगी और एक बेटा जनोगी और उसे यीशु नाम दोगी। वह महान होगा और सर्वोच्च का बेटा कहा जाएगा, और परमपिता परमेश्वर उसे उसके पिता डेविड की राजगद्दी देगा और वह हमेशा के लिए जैकब के घर पर राज करेगा और उसका राज्य वहीं खत्म नहीं होगा (ल्यूक 1:31—33)।

इस दुनिया के चर्चों ने भला इन आगमों का कभी उल्लेख क्यों नहीं किया। लाखों लोग सारी जिंदगी चर्चों में जाते रहे और यीशु के राजा बनने या परमेश्वर का राज्य आने संबंधी इन आगमों के बारे में कभी कुछ नहीं सुना।

ये आगम आपको स्पष्ट रूप से बताते हैं कि परमेश्वर परम शासक है। वे आपको सबसे आसान भाषा में बताते हैं कि यीशु का जन्म राजा बनने के लिए हुआ था— कि वह सारी कौमों पर राज करने वाले हैं— कि उनका राज्य चिरंतन रूप से शासन करेगा।

लेकिन यह सब परमेश्वर के राज्य के बारे में विलक्षण, विस्मयकारी, सचमुच स्तब्धकारी सत्य का अंग है।

ईश्वर का राज्य धरती भर के लोगों और कौमों पर राज करेगा। लेकिन इसके बावजूद ये नश्वर लोग और कौमें राज्य नहीं होंगी, ईश्वर के राज्य के अधीन भी नहीं होंगी, वे केवल इससे शासित होंगी!

आदर्श राज कैसे आएगा!

लेकिन आइए अब स्पष्ट हो लिया जाए।

आइए देखें कि कल का आदर्श राज कैसे आएगा। याद रखें कि यह अद्भुत विश्व राज्य अचानक नहीं आ जाएगा।

शीघ्र आने वाली इन घटनाओं के प्रत्येक बड़े चरण बाइबिल की भविष्यवाणियों में हमारी आंखों के सामने खुली पड़े हैं। वही यीशु जो 1900 साल से भी अधिक पहले पवित्र घरती की पहाड़ियों और घाटियों में और यूरेशलम की गलियों में चले थे, एक बार फिर आ रहे हैं। उन्होंने कहा था कि वह फिर आएंगे। जब उन्हें सूली पर चढ़ाए जाने के तीन दिन और तीन रात के बाद परमेश्वर ने मृतक से जिंदा किया (मत्ती 12:40, ऐक्ट्स 2:32; I कोरिंथियाइयों 15:3-4)। वह उठ कर परमेश्वर के सिंहासन, ब्रह्मांड की सरकार के मुख्यालय में आसीन हो गए (ऐक्ट्स 1:9-11; हिब्रू 1:3, 8:1, 10:12 प्रकाशना 3:21)।

वह दृष्टांत कथा के अभिजात व्यक्ति हैं जो ''देश के लिए'' परमेश्वर के सिंहासन पर गए– सभी कौमों के राजाधिराज के रूप में अभिशिक्त होने के लिए, और उसके बाद धरती पर वापस आने वाले हैं (ल्यूक 19:12-27)।

एक बार फिर, वह सभी चीजों के प्रत्यानयन तक के लिए स्वर्ग में हैं (ऐक्ट्स 3:19-21)। प्रत्यानयन का अर्थ है पुरानी स्थिति या अवस्था में पुनर्स्थापना। इस मामले में धरती पर परमेश्वर के राज्य की पुनर्स्थापना। इस मामले में धरती पर परमेश्वर के राज्य की पुनर्स्थापना, और इस तरह विश्वशांति और आदर्श स्थितियों की पुनर्स्थापना।

दुनिया की वर्तमान कलहें, तीखे होते युद्ध और टकराव चरम पर पहुंच कर इतना बड़ा वैश्विक संकट बन जाएंगे कि परमेश्वर के बीच–बचाव के बिना किसी भी इनसान को जीवित नहीं बचाया जा सकेगा (मत्ती 24:22)। इसके बिलकुल से चरम पर पहुंच जाने पर जब विलंब होने पर धरती से जीवन का नामोनिशान मिट जाएगा, ईसा मसीह वापस लौटेंगे। इस बार वह दैवी परमेश्वर के रूप में आएंगे। वह ब्रहमांड के नियंता, स्रष्टा की सारी शक्ति और गरिमा के साथ आ रहे हैं। (मत्ती 24:30 25:31)। वह ''एक लौह दंड'' के साथ दुनिया की महा सरकार की स्थापना और सभी कौमों पर राज करने के लिए (प्रकाशना 19:15; 12:5)। ''राजाधिराज और भगवानों के भगवान'' के रूप में आ रहे हैं (प्रकाशना 19:16)। तथा कथित ईसाई चर्च यीशु के आगमन और उनके धरती पर राज करने संबंधी इन सभी आगमों को निकाल क्यों देते हैं। यीशु का असली सुसमाचार परमेश्वर के राज्य से संबंधित था, तब वह धरती पर जिसकी स्थापना करेंगे। चर्च के लाखों सदस्यों ने इन आगमों या ईसा मसीह के वास्तविक सुसमाचर के बारे में कभी नहीं सुना।

इसके बारे में सोचिए। मानव जाति को जीवित रखने के लिए, बढ़ते युद्धों, व्यापक नाभिकीय विनाश, मानव पीड़ा को रोकने, मानव जाति के लिए शांति, प्रचुर कल्याण, प्रसन्नता, खुशी का अग्रदूत बनने के लिए सारी भव्यता, अलौकिक शक्ति और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की महिमा के साथ गौरवान्वित ईसा मसीह का आगमन। लेकिन क्या कौमें उनका स्वागत करेंगी?

विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक अब खुलेआम कहते हैं कि सारी सैन्यशक्ति का नियंत्रण करने वाली सारी दुनिया पर शासन करने वाली एक चरम सत्ता ही धरती पर जिंदा रहने की एक मात्र उम्मीद बची है। वे स्वीकार करते हैं कि इनसान के लिए यह काम कर पाना असंभव है। ईसा मसीह हमें वही प्रदान करने आ रहे हैं।

लेकिन क्या उनका स्वागत किया जाएगा?

एक अग्रणी साप्ताहिक समाचार पत्र ने इनसान की इकलौती उम्मीद का निम्नलिखित आश्चर्यजनक मूल्यांकन प्रस्तुत कियाः लेख में कहा गया था कि सुव्यवस्थित और स्थायी दुनिया की एक समय की अमरीकियों की आशावादी आस लुप्त होती जा रही है। लगभग दस खरब डालर का खर्च स्थायित्व प्रदान करने में नाकाम रहा है। इसके विपरीत हालात और भी बदतर हुए हैं। यह मूल्यांकन संकेत करता है कि अधिकारियों के बीच प्रभावी यह दृष्टिकोण स्वीकृति प्राप्त कर रहा है कि तनाव और वैश्विक समस्याएं इस कदर गहराती जा रही हैं कि ''किसी दूसरी जगह के किसी मजबूत हाथ के सिवा उनका समाधान नहीं किया जा सकता।''

''किसी जगह का मजबूत हाथ।'' सर्वशक्तिमान परमेश्वर किसी जगह से मानवता की रक्षा के लिए एक अत्यंत सशक्त हाथ भेजने वाला है!

अवांछनीय ईसा मसीह!

लेकिन क्या मानवता खुशी से चीत्कार करेगी, और हर्षोन्माद और उत्साह से भर कर उनका स्वागत करेगी? क्या परंपरागत ईसाइयत के चर्च के चर्च करेंगे?

नहीं करेगे वे? चूंकि शैतान के पुरोहितों (II कोरिंथियाई 11:13–15) ने उनके साथ छल किया है इसलिए वे यही मानेंगे कि वह ईसा समीह के विरोधी हैं। चर्च और कौमें उनके आगमन पर नाराज होंगी (प्रकाशना 11:15 के साथ 11:18) और सैन्य शक्तियां वस्तुतः उन्हें नष्ट करने के लिए उनसे लड़ेंगी (प्रकाशना 17:14)!

कौमें आगामी त्रितीय विश्व युद्ध की अंतिम लड़ाई लड़ रही होंगी, और युद्ध का केंद्र येरुशलम होगा (जेचारिया 14:1-2) और तब ईसा मसीह लौटेंगे। अलौकिक शक्ति से वह उन कौमों के खलिाफ लड़ेंगे जो उनके खिलाफ लड़ेंगी। (श्लोक 3)। वह उन्हें पूरी तरह हरा देंगे (प्रकाशना 17:14)! उस दिन उनके पैर ओलाइलीज पर्वत पर जमे होंगे, येरुशलम के पूरब में थोड़ी ही दूरी पर (जेचारिया 14:4)।

आत्म समर्पण कैसे करेंगी कौमें

जब सर्वशक्ति मान गौरवान्वित ईसा मसीह पहले–पहले दुबारा आएंगे, कौमें नाराज होंगी। येरूशलम में जमा सैन्य शक्तियां उनसे लड़ने के प्रयास करेंगी! मैंने कहा ''प्रयास करेंगी'' लेकिन उससे कहीं अधिक शक्तिशाली सेनाएं ईसा मसीह के पीछे–पीछे स्वर्ग से आएंगी सभी पवित्र देवदूत होंगे (प्रकाशना 19:14,मत्ती में तसदीक 25:31)।

जानना चाहते हैं कि उस लड़ाई और उन आक्रामक मानव सेनाओं का क्या होगा?

प्रकाशना 17 में आज के उभरते संयुक्त योरपीय राज्य–पुनर्स्थापित रोमन साम्राज्य की सेनाओं का उल्लेख श्लोक 14 में किया गया है ''ये मेनने (यीशु) से युद्ध करेंगे, और मेनना उन्हें परास्त कर देगा क्योंकि वह मालिकों का मालिक राजाधिराज है....''

लेकिन वह उन्हें कैसे परास्त करेंगे? हमें इसका विवरण जेचारिया के चौदहवें अध्याय में मिलता है।

और वह ताऊन होगा परमेश्वर जिससे उन सभी लोगों (सेनाओं) को परास्त कर देगा जिन्होंने येरूशलम के खलिाफ लड़ाई लड़ी है उनका मांस खत्म हो जाएगा, जबकि वे अपने पैरों पर खड़े रहेंगे और उनकी आंखें उनके नेत्र कोटरों में गल जाएंगी और उनकी जुबान उनके मुंह में सड़ जाएगी। उनकी हड्डियों को छोड़ कर उनके मांस का यह विगलन तात्कालिक रूप से होगा जबकि वे अपने पैरों पर खड़े होंगे (जेचारिया 14:12)।

संभवतः संशोधित मानक संस्करण और भी स्पष्ट वर्णन करता हैः ''और वह ताऊन होगा परमेश्वर जिससे उन लोगों पर प्रहार करेगा जिन्होंने येरूशलम के खिलाफ युद्ध किया था। उनकी आंखें उनके नेत्र कोटरों में सड़ जाएंगी और उनके मुंह में उनकी जुबान गल जाएंगी।''

उनकी हड्डियों से अलग होकर उनके मांस की यह सड़न तात्कालिक रूप से होगी जबकि वे अपने पैरों पर खड़े रहेंगे।

ईसा के खिलाफ लड़ने वाली सेनाओं के खिलाफ कैसा देवी प्रतिशोध! उस दैवी शक्ति का कैसा प्रदर्शन जिससे वह सभी कौमौं पर राज करेंगे! परमेश्वर के कानून और परमेश्वर के नियम के खिलाफ बगावत को अवश्य दबाया जाना चाहिए और उसे तेजी से दबाया जाएगा।

क्या आप अनुभव कर सकते हैं कि मानवता पर जो दुर्भाग्य और अमंगल आए हैं, वे ईश्वरीय कानून के उल्लंघन का नतीजा थे?

यदि कभी किसी व्यक्ति का सच्चे परमेश्वर के सिवा कोई और परमेश्वर न रहा होता यदि सभी बच्चों का पालन–पोषण अपने माता–पिता का आदर, सम्मान करने और उनका आज्ञापालन करने के लिए हुआ होता, और सभी माता–पिताओं ने अपने बच्चों का लालन–पालन ईश्वर के रास्ते पर किया होता यदि किसी ने कभी अपने दिल में हत्या का भाव न आने दिया होता, यदि कोई युद्ध न होता, इनसानों के हाथों इनसानों की कोई हत्या न हुई होती, यदि सभी शादियों को प्रसन्न रखा जाता और विवाह से पहले या उसके बाद यौनशुचिता का उल्लंघन न होता यदि सभी दूसरों की भलाई और कल्याण की इतनी चिंता करते कि कोई चोरी न करता, और हम सारे ताले, चाबियां और तिजोरियां झटक पाते, यदि प्रत्तेक व्यक्ति सच बोलता तो हर व्यक्ति के शब्द अच्छे होते, हर व्यक्ति इमानदार होता यदि किसी भी व्यक्ति ने कोई ऐसी चीज न छिपाई होती जो व्यायसंगत ढंग से उसकी नहीं थी बल्कि दूसरों के कल्याण के प्रति इतना खुल कर चिंतित होता कि वह सचमुच मानता कि देना पाने की अपेक्षा अधिक सौभाग्य की बात है तो हमारी दुनिया कितनी खुश होती! इस तरह की दुनिया में सभी परमेश्वर से प्यार करते, उसे पूजते सभी

अपने पूरे मन से, दिल से और शक्ति से ईश्वर से प्यार करते और उसकी पूजा करते, सभी दूसरों के कल्याण की उतनी ही चिंता करते जितनी अपनी चिंता करते हैं तो कोई तलाक न होता, कोई घर न टूटता, कोई बाल कदाचार, कोई अपराध, कोई जेल या कैदखाने न होते, शांतिपूर्ण निर्देश और सबके लिए सार्वजनिक सेवा के रूप में निगरानी के सिवा कोई पुलिस न होती, कोई युद्ध, कोई सैन्य प्रतिष्ठान न होते।

लेकिन इससे आगे बढ़ कर ईश्वर ने कुछ भौतिक नियम बनाए हैं जो हमारे शरीर और मन में काम करते हैं, साथ ही साथ कुछ आध्यात्मिक नियम भी। कोई बीमारी, खराब स्वास्थ्य, पीड़ा या कष्ट न होता। इसके विपरीत ऊर्जस्वी अच्छा स्वास्थ्य होता है, जीवन में सक्रिय रुचि से भरा हुआ अच्छा ऊर्जस्वी स्वास्थ्य रचनात्मक कार्यों में उत्साहपूर्ण रुचि जीवन में प्रसन्नता और खुशी ले आती। सफाई, सक्रिय गतिविधि, वास्तविक प्रगति होती, कोई मलिन बस्ती न होती, धरती पर कोई पतनशील पिछड़ी जातियां और क्षेत्र न होते।

पुनर्जीवित संत

जिस तरह पुनर्जीवित यीशु बादलों में से होकर स्वर्ग चले गए उसी तरह बादलों में से धरती पर भी लौटेंगे (ऐक्ट्स 1:9-11; मत्ती 24:30) जिस तरह वह लौट रहे हैं (थेसालोनियाइयों, 4:14-17), उसी तरह यीशु के लिए मरे वे लोग जिन्होंने परमेश्वर की आत्मा पाई थी और उससे संचालित हुए थे, (रोमन 8:11, 14)– विराट पुनरुत्थान में उठ खड़े होंगे और अमर कर दिए जाएंगे–पिछले गैगंबरों सहित (ल्यूक 13:28)। जिनके पास परमेश्वर की आत्मा है और उस समय जीवित होंगे, उन्हें तत्काल नश्वर से अनश्वर बना दिया जाएगा (1 कोरिंथियाइयों, 15:50–54 और जिन्हें पुनर्जीवित किया गया है वे उनके साथ मिल कर अवतरित हो रहे गरिमामय ईसा मसीह से बादलों में मिलने के लिए उठ खड़े होंगे (1 येस. 4:17)।

वे उनके साथ होंगे, जहां वह हैं, हमेशा–हमेशा के लिए (जान 14:3)। वे उनके साथ बादलों से निकल कर नीचे आएंगे, और उनके साथ खड़े होंगे, इसलिए उस दिन वे ओलिबीज पर्वत पर होंगे (जेचारिया 14:4-5)।

ये परिवर्तित, धर्मांतरित और अब अमर बना दिए गए संत उसके बाद ईसा मसीह के अधीन कौमों पर राज करेंगे–नश्वरों की कौमों पर (डेनियल 7:22; प्रकाशना 2:26–27, 3:21)।

अंत में शैतान को हटा दिया गया

धरती के समूचे इतिहास की यह सबसे गौरवशाली घटना बादलों में ढंके गौरवान्वित सर्वशक्तिमान ईसा मसीह का धरती पर अलौकिक भव्य अवरतण–काफी देर से सही लेकिन शैतान के दुर्बोध, पाखंड़ी अदृश्य शासन का अंत कर देगा।

राजाधिराज, मालिकों के मालिक के रूप में सर्वोच्च गरिमा में ईसा मसीह का अवतरण प्रकाशना 19 में वर्णन किया गया है। लेकिन धरती पर शांति, प्रसन्नता और खुशी आने से पहले और कौन–कौन सी महान घटनाएं घट सकती हैं? धरती के सिंहासन से शैतान को हटाना होगा।

लेकिन प्रकाशना 20:1-3 में अग्रिम समाचार दर्ज हैः और मैंने देखा कि स्वर्ग से एक फरिश्ता आया है जिसके पास नरक की चाबी और हाथ में एक बड़ी–सी जंजीर है। और उसने उस पुराने सांप को पकड़ लिया जो दुष्ट है, शैतान है और उसे हजार वर्षों के लिए बांध दिया और नरक में फेंक दिया, और उसे बंद कर दिया, और उस पर मुहर लगा दी ताकि वह राष्ट्रों को और न छल सके, जब तक कि हजार साल पूरे न हो जाएं और उसके बाद उसे छोटी–सी अवधि के लिए खोला जाना चाहिए।

6,000 वर्षों तक शैतान द्वारा नियंत्रित, छले गए और भ्रमित इनसान के दिन खत्म हो जाएंगे।

शैतान अब मानव आत्मा में हवा के माध्यम से प्रसारण नहीं कर सकेगा। अब असंदेही मानव मन में अपनी शैतानी प्रकृति भरने में सक्षम नहीं होगा – हमें दिग्भ्रमित करके जिसे ''मानव प्रकृति'' का नाम दिया गया है।

मानव प्रकृति तुरंत लुप्त नहीं होती

लेकिन इसका आशय यह नहीं कि मानव मन से अर्जित शैतानी रवैया तुरंत लुप्त हो जाएगा। लाखों–करोड़ों

लोगों ने यह रवैया अपनाया होगा। और हालांकि शैतान को तब उसे प्रसारित करने से रोक दिया गया होगा लेकिन जिसे आदत के रूप में अंगीकार कर लिया गया है वह अविलंब नहीं निकाला जा सकेगा।

इसके वावजूद परमेश्वर ने हम इनसानों को स्वतंत्र नश्वर एजेंट बनाया है। उसने हमें अपने मन पर नियंत्रण प्रदान किया है, सिवा इसके कि हम शैतान के छल पूर्ण अनिष्टकर आकर्षक से अंधे हो सकते हैं।

लेकिन अब धरती के नश्वर इनसान छले नहीं जाएंगे! अब सर्वशक्तिमान यीशु और उनके अधीन शासन करने वाले अनश्वर संत उन पटलों को हटाना प्रारंभ करेंगे जिन्होंने मानव चेतना को अंधा बना रखा है।

इसलिए मैं कहता हूं कि पूरी तरह आदर्श राज्य तत्काल नहीं आ सकता। लाखों–करोड़ों लोग अभी भी दंभ, वासना, और लालच का बागी रवैया अपनाएंगे लेकिन ईसा मसीह का आगमन पुनर्शिक्षा, प्रक्रिया प्रारंभ करेगा छली गई चेतना को जगाने, मन को छल से मुक्त करने, और उन्हें स्वैच्छिक पश्चाताप की ओर लाने की प्रक्रिया प्रारंभ करेगा।

ईसा मसीह के दायित्व संभालने और शैतान के निर्वासन के समय से परमेश्वर का कानून और शास्वत के शब्द जिओन से आगे बढ़ेंगे और समूची धरती पर फैल जाएंगे। (सैमुअल 2:3)।

परमेश्वर ने आदम को परमेश्वर से दूर रहने की 6,000 साल की जो सजा दी थी वह खत्म हो जाएगी। ईसा मसीह धरती के सारे नश्वरों को पश्चाताप और मोक्ष के लिए बुलाना प्रारंभ करेंगे! परमेश्वर की पवित्र आत्मा येरूशलम से बाहर फैल जाएगी (जेचारिया 14:8)।

ईश्वर की क्या लीला है? एक नए दिन की सुबह होगी। जल्द ही शांति आ जाएगी। इनसान ''पाने'' के रास्ते से ''देने'' के रास्ते की ओर मुड़ जाएंगे। परमेश्वर के प्रेम के रास्ते की ओर।

अब धरती पर एक नई सभ्यता अपनी पकड़ बनाएगी!

लेकिन तब से कल किस तरह की दुनिया विकसित होगी? इसैयाह 2:2 - 4 और मिकाह 4:1 - 3 में कहा गया हैरू ष्और अंतिम दिनों में यह होगा कि परमेश्वर के घर का पर्वत पर्वतों के शिखर पर स्थापित होगा और पहाड़ियों के ऊपर प्रतिष्ठित होगा और सारी कौमें इसकी ओर उमड़ती चली आएंगी।

और बहुत से लोग जाएंगे और कहेंगे आओ, और चलो भगवान के पर्वत पर चला जाए, जैकब के परमेश्वर के घर और वह हमें अपने रास्तों के बारे में बताएगा, और हम उसके रास्ते पर चलेंगे क्योंकि कानून और येरूशलम के यीशु के शब्द जिओन से बहुत आगे तक जाएंगे। और वह कौमों का फैसला करेंगे और बहुत–सी कौमों की भर्त्सना करेंगेः और वे अपनी तलवारें पीट कर फाल और अपने बरछे पीट कर कुदालें बना लेंगे। कौमें कौमों के खिलाफ तलवारें नहीं उठाएंगी और न वे आगे से युद्ध ही सीखेंगी।

इसके बारे में सोचें! कोई युद्ध नहीं। इनसान या जानवरों का कोई भय नहीं। अंततः विश्व शांति। किसी चीज को वह शांति लानी होगी। परमेश्वर का कानून, घोषित ईसाइयत जिसकी शिक्षा देती है, समाप्त कर दिया गया था, वह जेरूशलम से बाहर जाएगा और धरती इसी तरह परमेश्वर के रास्ते के ज्ञान से भर जाएगी जैसे सागर पानी से भरे हैं।

यहां तक कि जंगली जीव भी पालतू हो जाएंगे और शांति से रहेंगे।

''भेड़िये भी मेमनों के साथ रहेंगे और तेंदुए बच्चों के साथ सोएंगे और गाय के बछड़े और शेर शावक एक साथ रहेंगे और छोटा–सा बच्चा उनको हांकेगा। गाय और भालू चरेंगे और उनके बच्चे एक साथ लेटेंगे और शेर बैल की तरह पुआल खाएगा। स्तन्य मोचित बच्चा ऐस्प सर्प की बांबी पर खेलेगा और कॉकैट्रिस की मांद पर हाथ रखेगा। मेरे पवित्र पर्वत पर उन्हें न तो आघात लगेगा और न नष्ट होंगेः क्योंकि धरती उसी तरह यीशु के ज्ञान से परिपूर्ण होगी जैसे सागर पानी से भरे होते हैं (इसैया 11:6 - 9)।

अब बदली परिस्थितियों की कल्पना करें!

अब हल हो चुकी समस्याएं देखें!

अब उस दुनिया की झांकी देखें जिसमें कोई अशिक्षा, कोई गरीबी, कोई अकाल और भुखमरी नहीं है, उस दुनिया में झांकें जिसमें तेजी से अपराध घट रहे

हैं, लोग ईमानदारी, यौनशुचिता, मानवीय दया, और प्रसन्नता सीखते हैं—शांति संपन्नता और प्रचुर कल्याण की दुनिया।

साधित जनसंख्या विस्फोट

परमेश्वर असाधारण आदर्श राज्य के युग में बहुत—से सुधारों की भविष्यवाणी करता है। वह कहता है कि इस धरती पर जल्द ही सुधार शुरू होंगे।

क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? मानवजाति के समक्ष खड़ी अनेक समस्याओं के समाधान की दिशा में लंबे डग भरती दुनिया।

आज की सबसे बड़ी और सबसे खौफनाक समस्या, जनसंख्या विस्फोट की समस्या है। सभी कौमों की बढ़ती जनसंख्या तेजी से उसका भरण—पोषण करने की दुनिया की सामर्थ्य का अतिक्रमण कर रही है।

और दुनिया के आबादी में सबसे अधिक वृद्धि वाले हिस्सों में गरीबी, अशिक्षा, रोग और अंधविश्वास वाली विपन्न कौमें हैं। याद रखें कि धरती की सतह का दस प्रतिशत से अधिक हिस्सा भी जोतने या कृषि योग्य नहीं है। और आज संयुक्त राष्ट्र के हालिया आंकड़े दर्शाते हैं कि लगभग 34 वर्षों की अल्प अवधि में दुनिया की आबादी दोगुनी हो जाएगी।

लोगों का दैनिक अपशकुनी दबाव सचमुच आज की दुर्बोध समस्या है।

लेकिन परमेश्वर के पास हल है। और वह कितना आसान है। बस अधिकांश धरती को कृषि योग्य बना दें। नंगी, हिमाच्छादित, और चट्टानी पहाड़ों को कम करो, कुछ गहरी, बंजर रेगिस्तानी घाटियों को ऊंचा करो, दुनिया के मौसम के प्रतिमान बदलो। सारे रेगिस्तान को हरा और ऊर्वर बनाओ। कालाहारी रेगिस्तान लेक याद की घाटी और अफ्रीका के सहारा, एशिया के गोबी मरुस्थल, और महान अमरीकी रेगिस्तानों जैसी धरती के विशाल टुकड़ों को खोल दें।

मंगोलिया, साइबेरिया, सऊदी अरब और पश्चिमी संयुक्त राज्य के अधिकांश भाग के विशाल बंजरों को हरा—भरा बनाएं। गहरे हिमाच्छादित हिस्सों और हिमापोढ़ों , स्थायी रूप से तुषार से ढंकी रहने वाली भूमि, और अंटार्कटिका के विशाल और असीम विस्तार से टुंड्रा, उत्तरी अमरीका, ग्रीन लैंड, उत्तरी योरप और साइबेरिया की बर्फ पिघला दें खौफनाक पामीर नॉट, हिमालय, ऐटलस, टारस, पिरेनीज, रॉकी सिएरा और हिंदूकुश के विशाल पहाड़ी भूभाग को समतल करें। ऐंडीज की विशाल ढलानों, को और धरती के दूसरे भयावह, उन्नत और वस्तुतः न रहने योग्य दूसरे पहाड़ों को समतल कर दो।

उसके बाद सही संतुलन में सम्यक वर्षा कराओ, सही मौसम में।

और फिर क्या होता है?

अकस्मात् लाखों एकड़ अविश्वसनीयरूप से ऊर्वर, उत्पादक, उत्कृष्ट कृषि योग्य भूमि उपलब्ध हो जाती है—वह महज आविष्कार और पथ प्रदर्शन की प्रतीक्षा कर रही है।

असंभव?

इनसान के हाथों—निश्चित रूप से।

लेकिन देखें परमेश्वर क्या वादे करता है। अपने कीड़े—मकोड़ों और इस्राईल के अपने लोगों समेत डरो, जैकब, मैं तुम्हारी मदद करूंगा, कहता है भगवान, तुम्हारा उद्धारक, इस्राईल का यीशू!

''देखो, मैं तुम्हारे लिए एक नया धारदार दांतेदार गहाई उपकरण बनाऊंगा तुम पहाड़ों को पीटोगे, और पीट—पीट कर उन्हें छोटा कर दोगे और पहाड़ों को भूंसा बना दोगे। तुम उन्हें पंखे से हवा करोगे, और हवा उन्हें दूर उड़ा ले जाएगी, और चक्रवात उन्हें विखेर देगा तुम ईसा मसीह को प्रसन्न करोगे और इस्राईल के भगवान को गौरवान्वित करोगे।

जब गरीब और जरूरतमंद पानी तलाशें और कहीं पानी न हो, और उनकी जुबानें प्यास से सूख रही हो मैं, भगवान उनकी आर्त पुकार सुनूंगा। मैं इस्राईल का यीशू उनका परित्याग नहीं करूंगा। मैं ऊंची जगहों, और पहाड़ों और घाटियों के बीच में नदियां बहाऊंगा मैं बीहड़ों को पानी के तालाब और सूखी जमीन को पानी के झरने बना दूंगा।

''मैं बीहड़ों में देवदारू, कीकर, और मेंहदी और तैल वृक्ष लगा दूंगा। मैं रेगिस्तान में एक साथ देवदारू, और चीड़, और बावस (सरू) के वृक्ष लगा दूंगा ताकि लोग देखें और जानें, और विचार करें और समझें कि यह यीशु ने किया है, और इस्राईल के प्रभु ने इसे सिरजा है।'' (इसैया 41:14 - 20)।

शुद्ध पानी उर्वर मरुस्थल

क्या आप इस तरह के आश्चर्यजनक दृश्य की कल्पना कर सकते हैं? रेगिस्तान के हरा–भरा ऊर्वर, वृक्षों–झाड़ियों बुलबुले छोड़ते झरनों, सोतों के उद्यान की धरती बनने, पहाड़ों के नीचा और निवास योग्य हो जाने की।

ध्यान दे कि परमेश्वर ने बाइबिल में कई जगहों पर इन स्थितियों का वर्णन कैसे किया है।

''उसके बाद पंगु आदमी लाल हरिण की तरह कुलांचे भरेगा, और गूंगे की जुबान गाएंगी: क्योंकि बीहड़ों में पानी के सोते फूट उठेंगे, और मरुस्थलों में नाले बहने लगेंगे। और झुलसी हुई धरती तालाब बन जाएगी, और प्यासी धरती पानी का झरना, सर्व नागदैव्यों स्यारों, के आवास में, जहां हर कोई लेटा होगा, सरपत, नरकुल, बेंत जैसे घासें होंगी''। (इसैया 35:6-7)।

इसैया का पूरा अध्याय 35 पढ़ें।

परमेश्वर कहता है: बंजर और निर्जन जगहें अपने लिए प्रसन्न होंगी रेगिस्तान आनंद मनाएंगे और गुलाब की तरह खिल उठेंगे। वह प्रचुरता से पुष्पित होगा और आह्लाद से मग्न होगा.....(श्लोक 1-2)।

कुछ साल पहले बास्कर फील्ड और लॉस ऐंजेलेस, कैलीफोर्निया के बीच की पहाड़ियों के बीच की संकरी नदी घाटी में एक हल्ला सा भूकंप आया था। एक छोटी–सी सैरगाह के मालिकान, जो आज तकरीबन पूरी तरह उपेक्षित हैं, और इलाके के सूखे की वजह से लगभग हमेशा वीरान रहता है, उस सैरगाह को बंद करके कही और जाने की सोच रहे थे।

अचानक उन सूखी, बंजर पहाड़ियों में किरकिराहट पैदा करने वाला, विक्षोभ पैदा करने वाला भूकंप आ गया। उनके पैरों के नीचे धरती के हिचकोले खाने, कराहने के कुछ ही देर बाद उन्हें एक हल्की–सी गड़गड़ाहट की आवाज सुनाई पड़ी। वे भाग कर धूल भरी, सूखी घाटी की तलहटी में गए जो उनकी संपत्ति के

पास से होकर गुजरती थी और यह देख कर दंग रहे कि घाटी में तेजी से पानी बह रहा है। जैसे–जैसे खाड़ी थिराती गई उन्हें पता चला कि पानी बिल्कुल साफ और स्वस्छ है–मीठा और पीने योग्य जिसे पीकर आदमी तरो–ताजा हो जाए।

कहना न होगा कि उनका कारोबार दुबारा चल निकला।

जाने कैसे भूकंप ने जमीन के नीचे के किसी जल स्रोत को खोल दिया था और वह उनकी संपत्ति के पास से होकर झरने की शक्ल में बहने लगा था।

इस धरती के विस्तृत बंजरों के बारे में सोचें। क्या यह अविश्वसनीय लगता है कि परमेश्वर उन्हें गुलाब की तरह खिला हुआ बना सकता है? उसे ऐसा क्यों करना चाहिए?

पहाड़ बनाए गए थे। महान शक्तियों ने विराट उत्प्रेक्षण किया या धरती के नीचे भूपटल में विशाल दरारें या दरकनें पैदा कीं। ग्रेनाइट के विशाल पिंड उठ कर आसमान में चले गए–धरती अपने इतिहास के सबसे बड़े भूकंपों के हमलों से लरजने लगी। पर्वत बनाए गए थे–वे अपने आप नहीं बने थे।

सर्वशक्ति मान परमेश्वर, जिसने पहाड़ और पर्वत बनाए (एमोस 4:13; साल्म्स 90:2), उनमें सुधार लाएगा–इस धरती की सतह को नया रूप–नया आकार देगा।

उन बड़े भूकंपों के बार में पढ़ें जो अभी आने हैं और धरती की सतह के अधिकांश भाग को सुधार देंगे (देखें प्रकाशना 16:18; जेचारिया 14:4) परमेश्वर कहता है, ''पर्वत उन पर कापते हैं और पहाड़ियां पिघल जाती हैं....'' (नाहुम 1:15)।

सागर के नीचे की उद्धृत जमीन

आदमी जानता है कि दुनिया की बहुत सारी संपदा सागर के नीचे दबी है। तेल, सोना, चांदी और दर्जनों खनिज – ये सारी चीजें आज अप्राप्य हैं, विशाल महासागरों के नीचे, अनदेखी पड़ी हैं। यही नहीं, सागर के पानी में काफी मात्रा में सोना है और दुनिया की सोने की अधिकांश आपूर्ति सागर के नीचे दबी पड़ी है।

धरती के बहुत से क्षेत्र ज्वारीय लहरों की कार्रवाई से बर्बाद हैं – फेनिल तरंगों के अनवरत थपेड़ों से अतिरिक्त जमीनें छीजती जाती हैं। योरप के लो लैंड प्रदेश, विशेष रूप से हॉलेंड, का बड़ा हिस्सा सागर से निकाली गई जमीन से बना है।

कल्पना कीजिए कि यदि धरती के कुछ सागरों का आकार कमे हो जाए तो लाखों एकड़ जमीन उपलब्ध हो जाएगी। और परमेश्वर कहता है कि वे सिमटेंगे! इस पर ध्यान दें। और परमेश्वर मिस्री सागर की जुबान पूरी तरह बंद कर देगाय और अपनी शक्तिशाली हवाओ के साथ वह नदियों के ऊपर अपने हाथ हिलाएगा और सात नदियों को तितर–बितर कर देगा और इनसानों को सूखे पैर चलने का अवसर देगा (इसैया 11:15)।

अविश्वसनीय लगता है लेकिन यह सच है!

जब ईसामसीह इस धरती के महान शासक बनेंगे वह महानशक्ति का उपयोग करेंगे। जॉन ने फरिश्तों को धरती पर राज करने आ रहे ईसामसीह की प्रसंसा करते देखा।

उन्होंने कहाः हम आपको धन्यवाद देते हैं, हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर, हे मालिक, जो था, है और आने वाला है, क्योंकि आपने अपनी महान शक्तियां अपने अंदर समा ली हैं, और राज किया है (प्रकाशना 11:17)।

सच्चे स्वास्थ्य के बारे में सही शिक्षा का साझा बल, और पश्चाताप करने पर सभी बीमारियों के चंगा हो जाने, का अर्थ होगा संपूर्ण आदर्श स्वास्थ्य।

ध्यान दें परमेश्वर इसका वर्णन किस तरह करता है।

''लेकिन वहां गरिमामय परमेश्वर हमारे भीतर चौड़ी नदियों और स्रोतों वाली एक जगह होगा जिसमें से पतवार वाली नौकाएं नहीं जाएंगी और न सजे–धजे जहाज ही उनसे होकर गुजरेंगे। क्योंकि परमेश्वर ही हमारा न्यायाधीश हमारा कानून प्रदाता है, परमेश्वर हमारा राजा है, वह हमें बचा लेगा।''

''और लोग यह नहीं कहेंगे कि मैं बीमार हूं: उसके भीतर रहने वाले लोगों को उनके अपराध के लिए क्षमा कर दिया जाएगा!'' (इसैया 33:21–22;24)।

यह उत्कृष्ट वादा सुनिएः ''तुम कमजोर हाथों को मजबूत करो, और दुर्बल घुटनों को बलिष्ठ बनाओ। जो दिल से कातर हैं उनसे कहो कि मजबूत बनो, डरो नहींः ''देखो! तुम्हारा परमेश्वर प्रतिशोध के साथ आएगा। यहां तक कि परमेश्वर प्रतिदान देगा। वह आएगा और तुम्हारी रक्षा करेगा। तब अंधों की आंखें, और बहरों के कान खुल जाएंगे। तब पगुं व्यक्ति लाल हरिणों की तरह कुलांचे भरेंगे, और गूंगों की जुबानें गाएंगी....'' (इसैया) परमेश्वर दया और प्रेम के अपने नियमों के पालन के पुरस्कारों का वर्णन करता है। सूचना इसैया 58:8 पर गौर कीजिएः तब सुबह की तरह अचानक तुम्हारी रोशनी फूट पड़ेगी और तेजी से तुम्हारा स्वास्थ्य निखर आएगा....''

स्वास्थ्य में प्रसन्नता

अच्छे स्वास्थ्य की स्थितियों और धरती पर जिन बहुत–सी चीजों की पुनर्प्रतिष्ठा करनी है, उनका वर्णन करते हुए परमेश्वर कहता है, चूंकि मैं तुममें स्वास्थ्य की पुनर्प्रतिष्ठा करूंगा, और मैं तुम्हारी चोटों को भर दूंगा... (जेचारिया 30:17)।

''इसलिए वे आएंगे और जिओन के शिखर से गाएंगे, एक साथ मिल कर और गेहूं के लिए और मदिरा के लिए, और तेल के लिए, और समूह के अल्पवयस्कों और रेवड़ के लिए परमेश्वर की उदारता की ओर प्रवाहित होंगे। और उनकी आत्मा किसी सींचे हुए उद्यान की तरह होगी और अब उन्हें किसी चीज का कोई दुःख नहीं होगा।''

''और उसके बाद कुआंरियां नृत्य में झूमेंगी, नौजवान और बूढ़े, दोनों मिल करय क्योंकि मैं उनके शोक को खुशी में बदल दूंगा और उन्हें सांत्वना दूंगा और उन्हें उनके दुःख से निकाल कर आनंद मनाने योग्य बनाऊंगा। और मैं पुजारियों की आत्माओं को मोटापे से संतुष्ट करूंगा और मेरे लोग मेरी उदारता से संतुष्ट होंगे, कहता है (शास्वत)'' (जेचारिया 31:12 - 14)।

और क्यों न पाएं अच्छा स्वास्थ्य?

और हमें भला यह क्यों मानना चाहिए कि स्वास्थ्य की ऐसी संपूर्ण अवस्था और खुशी पाना असंभव है? तथाकथित ईसाई चर्च इन आगमों की उपेक्षा क्यों करते हैं? इसकी बजाय वे सुस्ती में, आसानी से और बिना किसी उपलब्धि के स्वर्ग जाने का उपदेश देते हैं।

स्वास्थ्य के नियमों के पालन के कुछ उपहार भी हैं – परमेश्वर गारंटी देता है कि स्वास्थ्य अच्छा होगा बीमारी और रोग तीसरी–चौथी पीढ़ी में अतीत की चीज हो जाएंगे।

ध्यान दें कि परेश्वर ने अपने लोगों के लिए किस चीज का वचन दिया हैः यदि तुम कर्तव्यनिष्ठा से अपने मालिक अपने परमेश्वर की बातें सुनते हो, उसके आदेशों का पालन करने के लिए जो मैंने आज के दिन दिए हैं.... तो तुम्हें ये सारे उपहार मिलेंगे, और एकाएक तुम्हें घेर लेंगे, यदि तुम अपने मालिक, अपने परमेश्वर की बातें सुनोगे।

''तुम शहर में और खेत में प्रसन्न रहोगे। तुम अपने शरीर के और मिट्टी के, और अपने मवेशियों के, अपनी गायों के, और अपनी भेड़ों के रेवड़े के फल से संपन्न होंगे तुम्हारी टोकरी और तुम्हारा भंडारघर समृद्ध रहेगा'' (विधि विररण 28:1 - 5)।

परमेश्वर यह भी दर्शाता है कि जातियां अपने–अपने देश लौट रही हैं और उन्हें फिर से आबाद कर रही हैं। वह उन्हें कारण बताएगा जैकब के वंशज अपनी जड़ों में लौट आएंः इस्राईल का मुंह फलों से भर देगा (इसैया 27:6)।

परमेश्वर कहता है कि बंजरों का पुनर्निर्माण किया जाएगा।

''क्योंकि देखो! मैं तुम्हारे लिए हूं, और मैं तुम्हें बदल दूंगा और तुम जोते और बोए जाओगेः और मैं तुम्हारे ऊपर इनसानों की संख्या कई गुना बढ़ा दूंगा, इस्राईल के सारे मकान, यहां तक कि सारे इनसानः शहर बसाए जाएंगे, और बंजरों का पुनर्निर्माण किया जाएगा। और मैं तुम्हारे ऊपर इनसानों और जानवरों की संख्या कई गुना बढ़ा दूंगा और वे बढ़ेंगे और फलेंगेः और मैं तुम्हारे पुराने प्रतिष्ठानों के बाद तुम्हें बताऊंगा...(इजाकिएल 36:9 - 11)।

इजाकिएल 36 का पूरा अध्याय पढ़ें। परमेश्वर कहता हैः श्मैं तुम्हारे शबर में रहने के भी कारण पैदा करूंगा, और बंजरों का पुनर्निर्माण किया जाएगा...यह जमीन जो निर्जन थी स्वर्गोद्यान जैसी बन गई है। और बंजर, निर्जन और.... शहरों के गिर्द बाड़ लग गई है और वे आबाद हो गए हैं (श्लोक 33, 35)।

और दूसरी कौमों का क्या?

ध्यान दें: उस दिन मिस्र के बाहर (मिस्र आज भी एक राष्ट्रों के रूप में विद्यमान है) असीरिया तक के लिए एक राजमार्ग होगा (जिसके अधिकांश लोग सदियों पहले उत्तर मध्य योरप–आधुनिक जर्मनी चले गए थे), और असीरियाई लौटकर मिस्र आएंगे, और मिस्री असीरिया जाएंगे और मिस्री असीरियाइयों के साथ आराधना करेंगे। उस दिन मिस्र और असीरिया के साथ इस्राईल तीसरा होगा, यहां तक कि धरती के बीच में एक उपहार: जिसे मेजबानों का मालिक यह कहते हुए आर्शीवाद देगा, मिस्र कौम समृद्ध हो, असीरिया, मेरे हाथ का काम, और इस्राईल मेरी उत्तराधिकार (इसैया 19:23-25)।

पूर्ण शिक्षा

सोचिए की यह आगे कि दिशा में कितना प्रगतिशील कदम होता कि दुनिया भर की सारी कौमें, हर जगह एक ही भाषा बोलतीं, पढ़तीं और लिखतीं।

लेकिन आज दुनाय का बड़ा इलाका ऐसा है जिसके पास कोई लिखित भाषा ही नहीं है। लाखों–लाख लोग अशिक्षित हैं – लिख या पढ़ नहीं सकते, यहां तक कि अपना नाम भी।

वापस आने के बाद यीशु एक बार यह दुनिया जीत लें वह संपूर्ण साक्षरता का युग लाएंगे, संपूर्ण, शिक्षा और दुनिया को एक, नई, शुद्ध भाषा देंगे।

इस अकेले विषय के वर्णन के लिए अलग से एक पुस्तक की जरूरत है। समूची धरती की समूची शिक्षा प्रणाली बदल जाएगी। आज सारी भाषाएं दूषित हैं। वे शाब्दिक अर्थों में विधर्मी, अश्लील शब्दों से भरी हैं अंधविश्वास–अपसंज्ञाएं–नियमों के अपवाद–अनूठे मुहावरे।

परमेश्वर कहता है: क्योंकि तब मैं लोगों को एक शुद्ध भाषा दूंगा जिसमें सभी प्रभु का नाम ले सकेंगे एक सहमति से उसकी उपासना करने के लिए (जेफानिया 3:9)।

अच्छे साहित्य, अच्छे संगीत और अनुकृत प्रयासों, भाषाई कठिनाइयों के कारण होने वाली गलतफहमियों और अनुवाद के हजारों दुसाध्य घंटों से बचने के प्रयास के नए युग के बारे में सोचें। वह भी क्या युग होगा जब सारी दुनिया सच्चे अर्थों में शिक्षित होगी—और एक ही भाषा बोलेगी।

आर्थिक ढांचे का क्या है?

परमेश्वर दर्शाता है कि येरुशलम धरती की वित्तीय और अध्यात्मिक राजधानी होगा।

स्रष्टा नव निर्मित शहर के बारे में कहता है ''तब तुम देखोगे, और एक साथ भागोगे, और तुम्हारा हृदय डर जाएगा और फूल उठेगा क्योंकि सागर की निपुणता (धरती के सोने और चांदी के भंडार मुख्यतः सागर में हैं) तुम्हारी और परिवर्तित कर दिया जाएगा, गैर यहूदियों की शक्तियां (धन और लाभ) तुममें आ जाएंगी इसैया 60:5)।

लेकिन जैसा कि हमने पढ़ा है, सर्वशक्तिमान परमेश्वर कहता है कि वह बहुत सी ऐसी जगहों को जो आज सागर के पानी में डूबी हैं उठा देगा, कि वह बहुत सी अतिरिक्त जमीन उपलब्ध कराएगा। वैज्ञानिक जानते हैं कि धरती का बहुत सारा कच्चा माल सागर के नीचे की पर्तों में दबा है।

परमेश्वर कहता है कि धरती पर ईसा मसीह के शासन काल में यह विशाल संपदा उपयोग के लिए उपलब्ध होगी।

परमेश्वर कहता है कि धरती की संपदा जेरुशलम में केंद्रित होगी, और यह भी कि विशाल पुनर्निर्माण कार्यक्रम, पुनर्वास प्रक्रियाएं और शुरू होने वाले नए युग के प्रवर्तन का उसी संपदा से समर्थन किया जाएगा।

''...फिर भी थोड़ी सी अवधि के लिए मैं एक बार स्वर्ग, और धरती, और सागर और सूखी जमीन को हिला दूंगा और मैं घर की चांदी मेरी है, सोना मेरा है, कहता है मेहमानों का भगवान'' हग्गाई 2:6–8)। लेकिन परमेश्वर का महान खजाना सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए होगा। सोने की कोई ईंटें नहीं होंगी किसी भूमिगत तहखाने में रखी हुई – पूरी तरह बेकार सिवा उनके आशय के चोरी या डकैती का कोई डर नहीं। बल्कि उस मुख्य इमारत, उस मंदिर के विस्मयजनक रूप से सुंदर अलंकरण के रूप में, जिसमें ईसा मसीह रहेंगे।

एक निश्चित मानक तय किया जाएगा और मूल्य कभी नहीं बदलेंगे। दूसरों की क्षमता पर कोई सट्टेबाजी या जुएबाजी नहीं होगी।

अब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के श्रम और क्षमता में निवेश करके कभी धनवान नहीं बनेगा। अब कोई पूंजी बाजार, विश्व बैंक, वित्तीय केंद्र, बीमा कंपनियां, बंधक रखने वाली कंपनियां, कर्जदाता एजेंसियां, नियत समय पर भुगतान नहीं होंगे।

परमेश्वर की बहुलता वाली सरकार के राज में लोग सिर्फ वही खरीदेंगे जिनकी उन्हें जरूरत होगी, जो वे उसे खरीद सकते होंगे, जब उनके पास उसके भुगतान के लिए नगदी होगी। कोई व्याज नहीं, और आगे से कोई कर नहीं।

दशमांश प्रणाली

लेकिन दशमांश प्रणाली सार्वभौम होगी।

आज की सरकारें उत्तराधिकार करों, आयकरों, गुप्त करों, संघीय, प्रांतीय, काउंटी, स्कूल परिषद और नगर कारों में 40,50 और 90 प्रतिशत तक की मांग करती हैं।

लेकिन परमेश्वर को केवल दस प्रतिशत चाहिए। और उस दस प्रतिशत से पूरी धरती की समूची सरकार का वित्तीय पोषण, शैक्षणिक और अध्यात्मिक नेतृत्व किया जाएगा।

''क्या कोई व्यक्ति परमेश्वर को लूटेगा? फिर भी तुमने मुझे लूटा है। लेकिन तुम कहते हो कि हमने तुम्हें कहां लूटा है? (और परमेश्वर जवाब देता है), दशमांश और चढ़ावों में। तुम्हें एक अभिशाप से अभिशापित किया गया हैः क्योंकि तुमने मुझे लूटा है, यहां तक कि इस पूरे राष्ट्र ने। तुम सारे दशमांस गोदाम में ले आओ, कि मेरे घर में गोश्त रह सके, और एतद् द्वारा अब मेरे समक्ष साबित करो, कहता है मेहमानों का परमेश्वर, यदि मैं तुम्हारे लिए स्वर्ग की खिड़कियां नहीं खोलूंगा, और तुम पर अनुग्रह की बरसात नहीं करूंगा तो इसे प्राप्त करने के लिए पर्याप्त जगह नहीं होगी (मालची 3:8 - 10)। यह आज के लिए की गई भविष्यवाणी है।

और वह कितनी बड़ी भेंट होगी। कोई वित्तीय बोझ नहीं होगा जो आज के अधिकतर लोगों के लिए अभिशाप बने हैं। ईश्वर कहता है कि वित्तीय अनुग्रह इस समय की व्यवस्था होंगे।

पौधों, भंडारों और उत्पादन प्रकल्पों से चोरी, लूट, दुर्घटनाओं, मौसमी नुकसान, जंग, सड़न, और ह्रास निकाल दीजिए। उसके बाद कितना कम माल बिकेगा और कितना अधिक मुनाफा होगा?

मौसम के प्रतिमान

सरकारी मूल्य नियंत्रण और बाजारों के माल से अटे होने के कारण किसानों को होने वाले नुकसान से मौसमी समस्याओं, को निकाल दीजिए कीड़े–मकोड़े से होने वाली क्षति, शीर्णता और फफूंद को निकाल दीजिए तो देखिए उनके जीवन में कितनी समृद्धि आ जाती है?

परमेश्वर यह सारी चीजें करेगा।

हमारा परमेश्वर खरबपति दिव्य पिता है। ''सोना मेरा है'' वह कहता है (हग्गाई 2:8)।

और परमेश्वर चाहता है कि उसका प्रत्येक बेटा सचमुच समृद्ध हो।

''देखो! मैं सारी चीजों से ऊपर चाहता हूं कि तुम समृद्ध और स्वस्थ होओ... '' (III जॉन 2। ईसा मसीह ने कहा, ''मैं आया हूं कि उनके पास जीवन हो और अधिक प्रचुरता से हो'' (जॉन 10:10)।

परमेश्वर प्रत्येक की जीवन में पूर्णता और प्रचुरता चाहता है।

लेकिन भौतिक ''सफलताओं'' पर गौर कीजिए जिसके बारे में आप जानते हैं। वे कितने खुश हैं? जैसा कि दुनिया के सबसे धनवान व्यक्तियों में से एक जे पॉल गेट्टी ने कहा है, ''मैं बस एक सुखी शादी के लिए लाखों–करोड़ों की आपनी सारी दौलत छोड़ सकता हूं!''

परमेश्वर के राज्य में आदेशों का पालन होगा। वे वाणिज्य, व्यापार, वित्त, दुनिया के समूचे आर्थिक ढांचे के नियंत्रण का मानक बनेंगे। और सब कुछ देने के आधार पर होगा। ईसा ने कहाः ''दो और तुम्हें दिया जाएगा दबा–दबा कर

और हिला–हिला कर भरी हुई, ऊपर उठी हुई, पूरी की पूरी माप तुम्हारी गोदी में डाल दी जाएगी क्योंकि जिस माप से तुम मापते हो, उसीसे तुम्हारे लिए भी मापा जाएगा'' (ल्यूक 6:38)।

इस धरती पर परमेश्वर के नियम में देने के मानक का उपयोग किया जाएगा– लोभ, गुप्त समझौते, ज्यादा पाने की भाग–दौड़, चालाकी, प्रच्छन्न, गुप्त, अश्लीलता, भ्रामकता, छल–कपट, झूठ, चालाकी से नहीं जो आज के व्यापार जगत में आम है।

लेकिन जब परमेश्वर अपने शक्ति प्रदर्शन से बागी इनसानों के मन बदलेगा– जब वह आपने वादे को पूरा करेगाः ''जब मैं रहूंगा'', परमेश्वर कहता है, ''प्रत्येक घुटना मेरे आगे झुकेगा, और प्रत्येक जुबान परमात्मा के आगे प्रायश्चित करेगी'' (रोमन 14:11) जब वह इनसान की दंभी आत्मा का घमंड तोड़ता है– तब इनसान देने पर सहमत बना दिया जाएगा।

परमेश्वर जब तक इनसान की अहंमन्य आत्मा को नहीं तोड़ेगा (इसैयाह 2:10 -12,17) धरती के लोग समूची अर्थव्यवस्था के देने के उत्कृष्ट, प्रेममय, उदार, ईमानदार मानकों को स्वीकार नहीं करेंगे।

इस धरती पर जो स्थितियां हावी होंगी उन आश्चर्यजनक परिस्थितियों का वर्णन शुरू करने के लिए एक मोटी किताब की आवश्यकता होगी– और अंततः वही विजयी होंगी जब मानव हृदय का घमंड चूर कर दिया जाएगा, उसका मानस बदल दिया जाएगा– उसे बिलकुल परमेश्वर की प्रकृति प्रदान कर दी जाएगी। (2 पीटर 1:4)।

कभी कोई किराएदारों को भाड़े पर और पट्टे पर देने के लिए जो उसका भुगतान करने में उसकी मदद करेंगे, ऐसी इमारत नहीं बना सकेगा जिसका खर्च वह बहन नहीं कर सकता होगा और जिसकी उसे जरूरत नहीं होगी। परमेश्वर कहता है कि व्याज पर या ''सूदखोरी'' पर धन उधार देना पाप है।

प्रत्येक पचास वर्ष पर सारे निजी और सार्वजनिक कर्जे पूरी तरह रद्द कर दिए जाएंगे।

स्वस्थ विश्व अर्थव्यवस्था

चूंकि सरकार की कमान परमेश्वर के दैवी परिवार के हाथ में होगी और आंशिक रूप से उसका संचालन उस महान सत्ताधारी परिवार के नियंत्रण में रहने वाले मानवीय नेता करेंगे, और चूंकि दूसरे बड़े ब्यूरो की निगरानी के लिए बड़े ब्यूरो

नहीं होंगे, जो दूसरे ब्यूरोज की प्रच्छन्न रूप से निगरानी करते हैं। इसलिए कोई सैन्य प्रतिष्ठान, कोई ''खुफिया'' एजेंसियां या इंटरपोल के सदस्य नहीं होगें। कोई विशाल राजनीतिक ब्लॉक, इंजारेदारियां, संगठन, विशालकाय खर्चीली सरकारें नहीं होंगी– कोई विदेशी मदद नहीं। ''चाहने वालों'' (मित्रों) को खरीदने के लिए व्यर्थ मे अरबों–खरबों खर्च नहीं करने होंगे (एजाकिएल 23:9, 22; लैमेंटेशन्स 1:2, 19; एजाकिएल, 16 अध्याय) जो आगे चल कर आपसे मुंह मोड़ लेते हैं और विदीर्ण कर देते हैं. उद्योग, विज्ञान और खगोल प्रोद्योगिकी, स्कूलों और शोध संस्थानों को कोई सशर्त अनुदान नहीं।

वह दुनिया कैसी होगी?

कल की दुनिया की सरकार की संरचना

अब बस इस पर ध्यान दें कि अगले हजार साल तक नई वैश्विक सरकार कैसे काम करेगी। वह तथाकथित लोकतंत्र नहीं होगा। यह समाजवाद नहीं होगा। यह साम्यवाद या फासीवाद भी नहीं होगा। यह मानव राजतंत्र या कुलीनतंत्र या धनिक तंत्र भी नहीं होगा। यह इनसान पर इनसान की सरकार नहीं होगी। इनसान ने स्वयं पर शासन की चरम अक्षमता साबित कर दी है।

यह दैवी सरकार होगी– ईशतंत्र– इनसानों के ऊपर राज करने वाली परमेश्वर की सरकार। यह औंधी सरकार नहीं होगी। जनता को कोई मताधिकार नहीं होगा। यह जनता की या जनता द्वारा सरकार नहीं होगी– लेकिन यह लोगों के लिए सरकार होगी। यह सरकार ऊपर (सर्वशक्तिमान परमेश्वर) से नीचे को होगी। यह अपने रूप में यह पदानुक्रमी होगी।

कोई चुनाव प्रचार नहीं होंगे। चुनाव प्रचार के लिए चंदा उगाही के प्रीति भोज नहीं होंगे। कोई गंदी राजनीतिक प्रचार मुहिम नहीं होगी जिसमें प्रत्येक उम्मीदवार सत्ता के लोभ में अपने प्रतिस्पर्धियों को बदनाम करके, भला–बुरा कह कर, बदनाम करके खुद को सबसे आगे, सबसे उपयुक्त रोशनी में रखने की कोशिश करता है। सत्ता लोलुपता की कीचड़ उछालू मुहिमों में कोई समय बर्बाद नहीं किया जाएगा।

किसी भी आदमी को कोई सरकारी पद नहीं दिया जाएगा। परमेश्वर के राज्य में सरकारी सेवा में सभी दैवी आत्मा की सत्ताएं होंगी– परमेश्वर का परिवार।

सारे पदाधिकारी नियुक्त और दैवी आत्मा की सत्ताएं होंगी– परमेश्वर का परिवार। सारे पदाधिकारी नियुक्त और दैवी ईसा मसीह द्वारा नियुक्त होंगे, जो इनसानों के दिलों, उनके आंतरिक चरित्र, उनकी क्षमताओं या क्षमताओं के अभाव को पढ़ते और जानते हैं। आप इसैया 11:2–5 में दूसरों के चरित्र में ईसा मसीह की अंतर्दृष्टि का वर्णन पाएंगे।

इस पर ध्यान दें: ''और परमेश्वर की आत्मा उन पर आश्रय लेगी, बुद्धिमत्ता और समझदारी की आत्मा, परामर्श और शक्ति की आत्मा, ज्ञान और परमेश्वर के भय की आत्मा, और उन्हें द्रुत समझवाला बनाएगी..... और वह अपनी आंखों के देखे के आधार पर फैसले नहीं करेंगे, और न अपने कानों सुनी अफवाह के आधार पर निंदा करेंगे: बल्कि वह नीतिपरायणता से गरीबों का न्याय करेंगे, और धरती के विनम्रों के लिए न्यायनीति से भर्त्सना करेंगे...।'' (इसैया 11:2–4)।

याद रखें, परमेश्वर एक सर्वोच्च है जो प्रेम है– जो देता है– जो शासितों के प्रति चरम चिंता के साथ शासन करता है। वह लोगों की अधिकतम भलाई के लिए शासन करेगा। दायित्व और अधिकार के सभी पदों पर सबसे योग्य, सबसे धर्म परायण, सबसे उपयुक्त लोगों की नियुक्ति की जाएगी।

उसके बाद धरती पर दो तरह के प्राणी रहेंगे– मानव जाति जो दैवी बनाए गए लोगों द्वारा शासित होंगे। कुछ पुनर्जीवित संत दस नगरों पर और कुछ पांच नगरों पर शासन करेंगे (लूकस 19:17–19)।

इसके बारे मे सोचें– राजनीतिक मुहिमों पर धन का कोई अपव्यय नहीं है। झगड़े और नफरत के साथ राजनीतिक पार्टियों का विभाजन नहीं। राजनीतिक पार्टियां नहीं!

नया प्रसंविदा क्या है?

संक्षेप में, नए प्रसंविदा में, जिसे लागू करने के लिए ईसा मसीह आ रहे हैं, हम धरती पर जो देखेंगे वह है प्रसन्नता, शांति, प्रचुरता और सबके लिए न्याय।

क्या आपने कभी पढ़ा है कि इस नए प्रसंविदा में क्या है? क्या आपको लगता है कि यह परमेश्वर के कानून को परे रखेगा? इसका ठीक उल्टा। ''क्योंकि यही प्रसंविदा है जिसे स्थापित करने के लिए ईसा मसीह आ रहे हैं आप हिब्रू 8:10 में पढ़ेंगे.... मैं अपने कानून उनके मन में रख दूंगा और उन्हें उनके दिलों में लिख दूंगा....''

जब परमेश्वर के कानून हमारे दिलों में होंगे, जब हम परमेश्वर के रास्तों से प्यार करेंगे, और दिल से उनके अनुरूप जीना चाहेंगे तो मानव प्रकृति को वशीकरण के अंतर्गत रख दिया जाएगा– लोग उस तरीके से जीना चाहेंगे जिससे शांति, प्रसन्नता, प्रचुरता आह्लादपूर्ण कल्याण ले आएंगे!

लेकिन याद रखें– ईसा की वापसी के बाद धरती पर बचे और उसके बाद उनके द्वारा शासित मानवों में और उनमें जिन्हें पुनर्जीवित किया गया है या अमरत्व प्रदान किया गया है, फिर भी मानव प्रकृति बनी रहेगी। वे अब भी अपरिवर्तित रहेंगे।

दो कार्यप्रक्रियाएं

लेकिन ईसा मसीह और परमेश्वर का नियामक राज्य, उसके बाद नियंत्रक परिवार के रूप मे स्थापित, दो मूल कार्य प्रक्रियाओं के जरिए आगामी आदर्श राज्य ले आएगा।

1) सारे अपराध और संगठित विद्रोह को बल प्रयोग से परास्त कर दिया जाएगा– दैवी अलौकिक बल।

2) ईसा मसीह उसके बाद पुनःशिक्षित करने और बचाने या अध्यात्मिक रूप से मतपरिवर्तन करने का काम अपने हाथ में लेंगे।

ध्यान दीजिए कि बल पूर्वक समाजिक–धार्मिक परंपराएं बदली जाएंगी।

परमेश्वर ने सात वार्षिक उत्सव और पवित्र दिन दिए हैं, जिनके मनाए जाने के वह निर्देश देता है। उनमें महान और महत्वपूर्ण अर्थ समाहित हैं। वे मानवता के लिए अंजाम दी जाने वाली मास्टर योजनाओं का चित्र प्रस्तुत करते थे। वे हमेशा के लिए स्थापित किए गए थे। हमारे लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए

यीशु उन्हें मानते थे। देवदूत उन्हें मानते थे। (ऐक्ट्स 18:21; 20:6, 16; 1 कोरियियाई 5:8; 16:8)। सच्चा मौलिक चर्च, मत परिवर्तित गैर यहूदियों समेत, उन्हें मानता था।

वे परमेश्वर का मार्ग थे– अपने लोगों के लिए परमेश्वर की परंपरा। लेकिन लोगों ने परमेश्वर के मार्गों और परंपराओं को छोड़ दिया और मूर्ति पूजक धर्मों के राज्यों और परंपराओं की ओर मुड़ गए। लोगों ने वह किया जो उन्हें अच्छा लगा। और चूंकि इस दुनिया में इनसानों की चेतना परमेश्वर के प्रति शत्रुता पूर्ण थी (रोमनों 8:7) इसलिए परमेश्वर के मार्ग के प्रतिकूल आचरण हावी हैं। इनसानों को जो रास्ते सही जान पड़ते हैं वे रास्ते शांति, प्रसन्नता और प्रचुर जीवन निर्वाह लाने वाले मार्ग के विपरीत है। यही गलत रास्ते आज लोगों को सही लगते हैं! हम अनुभव करते हैं कि इन शब्दों को पढ़ने वाले अधिकतर लोगों को वे गलत नहीं, सही ही जान पड़ेंगे।

लेकिन क्या हम अनुभव कर सकते हैं कि ''एक ऐसा रास्ता भी है जो इनसानों को उचित लगता है लेकिन उनका अंत मृत्यु के मार्ग में होता है"? (सूक्ति 14:12)। और यदि आप सूक्ति 16:25 देखें तो पाएंगे कि वही चीज दुहराई गई है: "एक रास्ता ऐसा है जो व्यक्ति को सही लगता है लेकिन उनका अंत मृत्यु का मार्ग होता है।"

परमेश्वर मूसा के माध्यम से कहता है: ''तुम वह काम नहीं करोगे जो यहां हम आज करते हैं, प्रत्येक व्यक्ति वह जाहे जो भी हो, अपनी नजरों में सही होता है" (विधि विवरण 12:8)। और दुबारा '' अपने मन की बात सुनो ताकि तुम उन (मूर्ति पूजकों) का अनुसरण करने के लोभ में न फंसो......और तुम उनके देवताओं के पीछे चल कर यह सवाल न करो कि ये कौमें अपने देवताओं को कैसे पूजती हैं।" (विधि विवरण 12:30–31)।

आज कथित ईसाई दुनिया परमेश्वर के पवित्र दिनों (पुण्योत्वों) को खारिज करती है; जो उसके लिए पुण्य हैं, लेकिन जिनसे छली गई "ईसाइयत" नफरत करती है। इसके बजाय वे मूर्ति पूजकों के दिनों–क्रिस्मस, नए साल का दिन, ईस्टर और दूसरे पुण्य दिवस मनाते हैं ''जिनसे परमेश्वर नफरत करता है"!

बहुत से लोग जानते हैं और स्वीकार करते हैं कि ये बुतपरस्त हैं लेकिन वे तर्क देते हैं, ''हम बुतपरस्तों के देवताओं की पूजा करने के लिए ये पुण्य दिवस नहीं मनाते, हम ईसा मसीह और सच्चे परमेश्वर की उपासना में इन परंपराओं पर अमल करते हैं।''

''लोगों को यही रास्ता'' सही जान पड़ता है''। हो सकता है कि उनका आशय गलत न हो। वे छले हुए हैं। छला हुआ व्यक्ति नहीं जानता कि वह गलत है। वह समझता है कि वह सही है। वह उतना ही सत्यनिष्ठ हो सकता है जितने सत्यनिष्ठ वे लोग होते हैं जिन्होंने परमेश्वर का रास्ता पा लिया है और उसके आदेशों का पालन करते हैं। फिर भी परमेश्वर कहता है कि वह उस तरह के अनुष्ठान या पूजा स्वीकार नहीं करेगा। यह उसके लिए घृणास्पद है और वह ''इससे नफरत करता है।''

लेकिन जो प्रवंचित हैं, परमेश्वर उस दिन अपने सत्य के प्रति उनकी आंखें खोलेगा जिस दिन यीशु जिंदा बची तमाम कौमों पर राज करने के लिए वापस आएंगे।

सभी परमेश्वर के उत्सव मनाएंगे

परमेश्वर के आदेशों और रास्तों के मामले में लोग और अंधेर में नहीं रहने पाएंगे, और छले नहीं जाएंगे। तब वह अपने रिवाजों के प्रति आज्ञाकारिता लागू करेगा जेचारियाह के चौदहवें अध्याय पर वापस जाएं।

''और ऐसा होगा कि येरूशलम के खिलाफ आने वाली बची कौमों में से हर कोई (यानी वे जो अलौकिक शक्ति से नष्ट की गई सेनाओं में नहीं थे) सालों साल राजा, मेजबानों के प्रभु की उपासना करेगा और मंदिर के उत्सव मनाएगा ''(श्लोक 16)।

तंबू रूपी उपासना मंडप का उत्सव उन सात वार्षिक उत्सवों में से एक है प्रभु ने अपने लोगों को जिसे मनाने का आदेश दिया था। उन्होंने परमेश्वर के उत्सवों को नकार दिया और मूर्ति पूजकों के उत्सवों की ओर मुड़ गए। एजरा और नेहेमिया के बाद यहूदियों ने उन्हें मनाया। लेकिन छद्म ईसाई पादरियों ने सिखाया कि परमेश्वर के उत्सव ''आज हमारे लिए नहीं, मूसा की पुरानी प्रणाली का अंग थे।'' पादरी समुदाय ने लोगों के साथ छल किया और उन्हें दुराग्रही बनाया। लोगों को यह मानने के लिए छला गया कि क्रिसमस, नए साल का दिन, ईस्टर वगैरह यीशु के विहित दिन हैं।

लेकिन परमेश्वर के मार्गों को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए यीशु धरती पर आ रहे हैं। जो उद्धतता से परमेश्वर के दिनों का पालन नहीं करेंगे–जो क्षतिकारी अवज्ञा से उनका उपहास करते हैं – ईसा की वापसी पर वही उनका पालन करेंगे। ध्यान दें कि धर्मग्रंथ क्या कहता हैः

''और यह होगा कि धरती के सभी परिवारों के जो लोग येरूशलम में राजा मेजबानों के परमेश्वर की उपासना करने नहीं आएंगे(गैर यहूदी कौमों सहित) उनके यहां कोई बारिश नहीं होगी। और यदि मिस्र का परिवार ऊपर नहीं जाता और नहीं आता तो उसके यहां कोई बारिश नहीं होगी। वहां ताऊन आएगा, जिसके जरिए परमेश्वर उन विधर्मियों को गला देगा जो टेबर्नेकल का उत्सव मनाने नहीं आएंगे। यह मिस्र की सजा होगी और उन सभी कौमों की यही सजा होगी जो टेबर्नेकल का उत्सव मनाने नहीं आएंगे। (जेचारिया 14:17–19)।

ये पैरे हमें उस तरीके के बारे में बताते हैं यीशु जिनसे ''लौहदंड के साथ शासन'' करेंगे–इसके बारे में कि सारी दुनिया की कौमों को अपने सही रास्ते पर लाने के लिए वह अलौकिक शक्तियों का उपयोग कैसे करेंगे। उन रास्तों पर जो वास्तविक अनुग्रह का कारण होते हैं।

उत्कृष्ट सरकार

हां, यीशु बहुत जल्दी ही इस दुनिया में वापस आने वाले हैं। वह सत्ता और गरिमा में वापस आ रहे हैं। वह सभी कौमों पर राज करने आ रहे हैं।

लेकिन वह अकेले यह शासन, पर्यवेक्षक करने वाले नहीं हैं। वह वैश्विक सरकार का गठन करने आ रहे हैं। यह अत्यंत संगठित सरकार होगी। अधिकार के बहुत से पद होंगे।

अब समय आ गया है कि हम सरकार के उस उत्कृष्ट ढांचे की यांत्रिकी का वर्णन करने के लिए रुकें।

पहली बात तो यह कि यह मानवी सरकार नहीं–परमेश्वर की सरकार है। आदमी इसे अब भी स्वीकार नहीं करेगा, लेकिन उसने 6,000 साल की अक्षम, घपलेबाज, अपव्ययी कोशिशों से दिखा दिया है कि नश्वर आदमी अपने संचालन में पूरी तरह अक्षम है।

जहां तक इनसान के शासन करने और सरकार चलाने की योग्यता का सवाल है, ईश्वर आज के सरकारी अधिकारियों के बारे में कहता हैः ''कोई भी न्याय का आह्वान नहीं करता और न कोई सच्चाई का वचन ही देता है। वे दर्प में विश्वास करते हैं और झूठ बोलते हैं वे बुराई के बारे में सोचते हैं और असमानता ले आते हैं।..... उनके पैर बुराई की ओर भागते हैं; और वे निर्दोषों का खून बहाने के लिए उतावले रहते हैं; उसके विचार असमानता के विचार होते हैं; बर्बादी और ध्वंस उनके रास्ते हैं। शांति का रास्ता वे जानते ही नहीं; और उनकी चेष्टाओं में कोई विवेक नहीं होता। उन्होंने खुद को कुमार्ग बना दिया है जो कोई भी उन पर जाएगा शांति को नहीं जानेगा।''

उसके बाद इस मानवीय कुशासन के अधीन रहने वाले लोग कहते हैंः ''इसलिए हमसे विवेक बहुत दूर है, हमें न तो न्याय मिलता है, हम प्रकाश (नागरिक व्यक्तिगत, राष्ट्रीय और वैश्विक समस्याओं के समाधान) की प्रतीक्षा करते हैं लेकिन देखते हैं अंधकार, कामना करते हैं प्रकाश की लेकिन चलते हैं अंधेरे में! अंधे की तरह हम दीवार टटोलते हैं, और हम ऐसे टटोलते हैं जैसे कि हमारी आंखें ही न हों। हम भरी दोपहरी में ऐसे लड़खड़ाते हैं जैसे रात में लड़खड़ाते हैं. हम मुर्दों की तरह निर्जन जगहों में हैं'' (इसैया 59:4, 7–10)।

उसके बाद उसी अध्याय में हमारे समय के बारे में भविष्यवाणी करते हुए अंतिम समाधान दिया गया हैः '' और उद्धारक जिओन में आएगा.....'' (श्लोक 20) और बात जारी रखते हुए कहता हैः ''उठो, चमको क्योंकि तुम्हारी रोशनी आ चुकी है और परमेश्वर की महिमा तुम पर उदय हुई है (इसैया 60:1)

न्याय की, शांति की इस दुनिया की तमाम समस्याओं के सही समाधान की इकलौती आस सत्ता में आ रही है और ईसा मसीह की गरिमा विश्व सरकार का गठन करेगी। सही सरकार। परमेश्वर की सरकार!

इस परिच्छेद और कई दूसरे परिच्छेदों में परमेश्वर अपने शब्दों में मानव जाति को दिखाता है कि मानव ने खुद को और अपने जैसे मानवों का नियंत्रण करने में कितनी बुरी तरह असहाय साबित किया है। 6000 साल के इनसानी अनुभव ने दुनिया को आत्महत्या के कगार पर ला खड़ा किया है।

इस तरह दूसरे शब्दों में परमेश्वर की 7,000 वर्ष की योजना में से 6000 वर्ष शैतान को अपनी ओर से दुनिया को छलने के लिए अपनी ओर से पूरा प्रयास करने की अनुमति देने के लिए रखे गए थे। उसके बाद के 1,000 वर्षों (एक हजार सहस्राब्दी दिवस) के दौरान शैतान को छलने का कोई काम करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। इसे दूसरे ढंग से रखें, परमेश्वर ने छह सहस्राब्दी दिवस मनुष्य को अध्यात्मिक पाप करने की अनुमति देने के लिए रखे थे, उसके बाद का एक सहस्राब्दी दिवस परमेश्वर के बलात् शासन के अधीन अध्यात्मिक अवकाश दिवस है।

प्रारंभ से नियोजित सरकार

अब आता है एक उत्कृष्ट सत्य।

अब हम परमेश्वर की उत्कृष्ट सरकार की उत्कृष्ट योजना, तैयारी और संगठन की उद्घाटित अंतदृष्टि पर आते हैं।

उसमें कोई अक्षम, और स्वार्थी और महत्वाकांक्षी राजनीतिज्ञ नहीं होंगे जो इस दुनिया के प्रपंचपूर्ण तरीकों से सरकारी सत्ता के गले तक अपने प्रच्छन्न हाथ पहुंचाने के फिराक में रहते हैं। आज लोगों से एसे व्यक्ति को वोट देकर सत्ता में भेजने के लिए कहा जाता है जिनके बारे में वे बहुत काम जानते हैं–ऐसे व्यक्तियों को जिनकी विशेषताओं को गलत ढंग से पेश किया जाता है। जल्द ही आने वाली परमेश्वर की सरकार में अधिकार के पदों पर प्रतिष्ठित प्रत्तेक अधिकारी जांचा–परखा, प्रशिक्षित, अनुभवी और परमेश्वर के गुणों के आधार पर योग्य होगा। यह तथ्य इसका निर्देशन करता है कि चर्च का उद्देश्य और उसकी आवश्यकता क्या है। चर्च का काम केवल ''पहली फसल के लाभों'' को शुद्ध करना नहीं है। केवल उनके लिए मोझ लाना नहीं है जो दुनिया भर से बुलाए गए हैं, और चर्च में आए हैं– बल्कि उन्हें उस राज्य के नेतृत्व की इन पदों के शिक्षा देना और प्रशिक्षित करना भी उनका काम है जिसमें सभी जीवितों के लिए मोझ उपलब्ध होगा।

परमेश्वर ने पहले से ही योजना बना रखी है लेकिन केवल धरती पर राज करने वाली अपनी सरकार के लिए ही नहीं। उसने आदम से प्रभावी ढंग से कहा थाः ''जाओ, अपनी मानवीय सरकारों की योजना बनाओ, अपनी कल्पना से अपने भगवान और धर्म पैदा करो; अपने निजी ज्ञान और शैक्षणिक प्रतिष्ठान विकसित करो। सामाजिक व्यवस्था की अपनी योजना बनाओ। (एक शब्द में अपनी निजी मानव सभ्यता का गठन करो)।''

लेकिन 6000 साल के लिए मनुष्य को परमेश्वर से अलग–थलग रहने का आदेश देकर उसने विशेष सेवा के लिए अपनी पसंद के लोगों को बुलाने और संपर्क का विशेषाधिकार सुरक्षित रखा जिनका वह अपने उद्देश्य से जैसे चाहे उपयोग कर सकता है। इनसान के इस समय के दौरान परमेश्वर ने अपनी सहस्राब्दीय सभ्यता की तैयारी कर रखी है उसके सभी चरणों की – शासकीय, शैक्षणिक, धार्मिक –अपनी पूरी सभ्यता की।

इस सबकी शुरूआत अब्राहम से हुई।

उसके समय में वह धरती पर इकलौता व्यक्ति था जो दृढ़ चरित्रवान था और साथ–परमेश्वर के निर्देशों और नियमों के प्रति। वह आदमी अब्राहम था।

ईश्वर ने अब्राहम के साथ अपनी आने वाली दुनिया के शीर्षस्थ पदों के लिए लोगों को प्रशिक्षित करना शुरू किया। अब्राहम सबसे ''विकसित'' सभ्यता में जिंदा थे–सबसे विकसित और, जैसा कि लोग सोचते थे, सबसे वांछित जगह पर।

परमेश्वर ने अब्राहम (उस समय जिनका नाम अब्राम था) से कहा, ''तुम अपने देश से, और अपने परिवार और अपने पिता के घर से बाहर ऐसे देश में जाओ जो मैं तुम्हें दिखाऊंगा'' (जेनेसिसः 12:1)।

कोई तर्क नहीं। अब्राहम ने यह नहीं कहा, ''लेकिन क्यों? मुझे इस सभ्यता के सारे सुख क्यो छोड़ देने चाहिए–अपने रिश्तेदारों और मित्रों को भी क्यों छोड़ देना चाहिए?” अब्राहम ने न तो आपत्ति की और न विलंब ही।

यह स्पष्ट रूप से लिखा गया है, ''इस तरह निकल पड़ा....'' (श्लोक 4)।

अब्राहम की कड़ी परीक्षा ली गई। लेकिन उसके मरने के बाद परमेश्वर ने कहा, ''अब्राहम ने मेरे कथन का पालन किया और मेरा सौंपा काम पूरा किया, मेरे आदेश, मेरी संविधि (सरकार के) और मेरे कानूनों का पालन किया'' (जेनेसिस 26:5)।

अब्राहम को परमेश्वर की सरकार के उच्च्य पद के लिए तैयार किया जा रहा था। जो अब जल्द ही दुनिया पर राज करने वाली है। वह परमेश्वर की सरकार की संविधि और कानूनों में विश्वास करते थे और परमेश्वर की सरकार के प्रति निष्ठावान और आज्ञाकारी थे।

अब्राहम को ऐसे वचन दिए गए थे जिन पर यीशु के माध्यम से हर व्यक्ति का मोझ निर्भर है। उन्हें निष्ठावानों का (मानवीय) पिता कहा जाता है (गलातियाइयों 3:7)। गलातिया के गैर यहूदियों के लिए देवदूत पॉल ने लिखा, था, ''यदि तुम यीशु के हो जाते हो तो वादे के मुताबिक तुम अब्राहम के बीज और उत्तराधिकारी हो" (गलातियाइयों 3:29)। श्लोक 16 में उन्होंने कहाः ''अब अब्राहम और उसके बीज (उत्तराधिकारी–ईसा मसीह) के लिए वादे लिए गए थे...."

परमेश्वर अपने राज्य के लिए तैयारियां प्रारंभ कर रहा था–अब्राहम के साथ परमेश्वर की सभ्यता में पदों के लिए चोटी के कर्मचारी तैयार कर रहा था। जब अब्राहम ने खुद को आज्ञाकारी साबित कर दिया परमेश्वर ने उनके श्रम को साधुवाद दिया और उन्हें धम के बुद्धिमत्तापूर्ण प्रबंधन और इनसानों की महान सेना के निर्देशन का प्रशिक्षण दिया।

इसाक का पालन–पोषण परमेश्वर से डरने, उसका आज्ञापालन करने वाले अब्राहम ने परमेश्वर के मार्ग पर परमेश्वर की सरकार के प्रति आज्ञाकारिता के लिए किया। उन्हें भी आज्ञापालन, करने, दूसरों का संचालन करने और उन पर शासन करने का प्रशिक्षण दिया गया था।

इस समृद्ध आनुवंशिकता के साथ जन्मे जैकब को उसी रास्ते के अनुसरण की शिक्षा दी गई थी जिनकी शिक्षा अब्राहम और इसाक को मिली थी। उन्हें भी आज्ञापालन, और दूसरों के संचालन और उन पर शासन करने का प्रशिक्षण मिला था। हालांकि उनके ससुर ने उनके साथ छल किया, और उन्हें नीचा दिखाया, फिर भी जैकब धनी हो गए। वह इब्राहम, इसाक और दूसरे सभी मनुष्यों की तरह मनुष्य थे। उन्होंने गलतियां कीं लेकिन वह उनसे उबर गए। उन्होंने पश्चाताप किया। वह परमेश्वर के साथ सहमत हुए। उन्होंने कभी हार नहीं मानी? उन्होंने नेतृत्व के गुण और स्वभाव विकसित किए। वह दस महानतम कौमों के जनक बने जो जल्द ही दुनिया में आने वाली हैं।

सरकार के संगठन का प्रतिमान

परमेश्वर ने हमें बहुत से शब्दों में सटीक रूप से यह नहीं बताया है कि उनकी आगामी दुनिया की महा सरकार का गठन कैसे होगा। फिर भी उसने हमें उसका सामान्य प्रतिमान दिया है।

उसने हमें विशेष रूप से बताया है कि 14 उच्च कार्यकारी (ईसा मसीह सहित) उसमें कहां फिट होंगे। उनमें से हम सरकारी ढांचे के बारे में काफी निष्कर्ष निकाल सकते हैं। जिस चीज का स्पष्ट रूप से उद्‌घाटन किया गया है आगामी सरकार के ढांचे के बारे में उससे सशक्त संकेत मिल जाते हैं।

हम जानते हैं कि यह परमेश्वर की सरकार होगी। सर्वशक्तिमान परमेश्वर–यीशु का पिता परम कानूनदाता और ईसा मसीह के और जो कुछ भी है, उस सब के ऊपर का मुखिया है। हम जानते हैं कि यीशु राजाधिराज, और मालिकों के भी मालिक होंगे–राज्य और चर्च, दोनों के ऊपर जो उनके माध्यम से जुड़े होंगे।

हम जानते हैं कि प्राचीन इस्राईल के सम्राट डेविड (विवरण आगे दिया गया है) इस्राईल की बारह कौमों के असली वंशजों के बनी बारह महान कौमों के राजा होंगे। हम जानते हैं कि बारह के बारहो देवदूत राजा होंगे, जिनमें से प्रत्तेक ईस्राइल की जातियों से उद्धभूत महान राष्ट्रों में से एक की गद्दी पर आसीन होगा।

हम जानते हैं कि यह सरकार अधोमुखी होगी। एक निश्चित अधिकार श्रृंखला होगी। कोई भी जनता द्वारा नहीं चुना जाएगा। नश्वर इनसानों ने साबित कर दिया है कि वे योग्यताओं को परखना नहीं जानते; और अंतःचेतना, हृदय, अभिप्राय, और लोगों की क्षमताओं को नहीं जानते। सभी दैवी शक्ति द्वारा ऊपर से नियुक्त किए जाएंगे। सरकारी पदों पर आसीन सभी पुनजीर्वित अनश्वर होंगे परमेश्वर से जन्मे–रक्त–मांस से बने मानव नहीं होंगे।

इसे मन में रख कर इस ज्ञान के साथ कि अब्राहम (मानवीय), उन सबके पिता जो ईसा के हैं, और मोक्ष के उत्तराधिकारी हैं यह स्पष्ट हो जाता है कि अब्राहम को परमेश्वर के राज्य में डेविड से बड़ा पद दिया जाएगा–और यह भी कि वह इस्राईल और गैर यहूदियों, दोनों के ऊपर होंगे। वह गैर यहूदी धर्मांतरितों और इस्राईलियों के भी ''पिता'' हैं।

उसके बाद फिर, बाइबिल बार–बार ''अब्राहम, इसाक और जैकब' का मुहावरा इस्तेमाल करती है, उन्हें एक टोली के रूप में समूह बद्ध करके और एक साथ ''पिताओं" कह कर। क्योंकि वादे दुहराए गए हैं," और इसाक और जैकब के लिए जिनका नाम बदल कर इस्राईल कर दिया गया था।

स्पष्ट रूप से जिसका उद्घाटन किया गया है. तब वह संकेत देता है कि परमेश्वर की आगामी वैश्विक सरकार में अब्राहम, इसाक और जैकब सबसे ऊपरी पायदान की टोली के रूप में काम करेंगे, जिसमें अब्राहम टोली के अध्यक्ष होंगे, ईसा मसीह के नीचे दूसरे नंबर पर यीशु ने स्वयं ही निश्चित रूप से कहा था कि अब्राहम, इसाक और जैकब इस गौरवशाली और गरिमामय राज्य में होंगे (लूकस 13:28)।

जोसफ ने एक बहुत ही विशेष ढंग से स्वयं को योग्य साबित किया, लेकिन हम कुछ देर बाद उनकी चर्चा करेंगे।

चर्च और राज्य दोनों

एक और सिद्धांत परमेश्वर के शब्दों में स्पष्ट किया गया हैः चर्च और राज्य यीशु के अधीन होंगे। सभी कौमों पर सिर्फ एक सरकार होगी एक चर्च होगा–एक परमेश्वर–एक धर्म एक शिक्षा पद्धति, एक सामाजिक व्यवस्था। और जैसा कि परमेश्वर के मूल प्रतिमान में इस्राईल में था, उसी तरह वे सभी संगठित होंगे।

बारह मूल शिष्यों में से तीन आदमी–पीटर, जेम्स और जॉन को परमेश्वर के राज्य को दृश्य में देखने का विशेषाधिकार प्राप्त था (मंत्ती 17:9)। इस दर्शन में यीशु, जो वस्तुतः व्यक्तिगत रूप से उनके साथ थे–रूपांतरित हो गए– गौरवान्वित ईसा मसीह के रूप में दिखने लगे। उनका मुख मंडल दमक उठा, सूरज की तरह चमकने लगा, उनके कपड़े प्रकाश की तरह श्वेत हो गए। इस दर्शन में उनके साथ दो लोग और दिखाई पड़े इसमें–राज्य की एक झलक दिखाई पड़ी–और वे मूसा और एलिजा थे। उस दर्शन में ये दोनों ईसा मसीह के साथ और उनके अधीन चर्च और राज्य का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, जैसा कि वे परमेश्वर के राज्य में होंगे। मानव जीवन में मूसा और एलिजा दोनों ने खुद को परमेश्वर के राज्य में बहुत ऊंचे पद के योग्य साबित किया था। मूसा ऐसे व्यक्ति थे जिनके माध्यम से यीशु

ने इस्राईली कौम के लिए कानून और संनिधि प्रदान किए हां, वह प्राचीन विधान के परमेश्वर थे जैसा कि बहुत से आगमों से सिद्ध होता है। मूसा को फराओ (मिस्र के राजा) के बेटे के रूप में प्रशिक्षित किया गया था। उनका प्रशिक्षण और अनुभव गैर यहूदियों और साथ–ही–साथ इस्राईली बच्चों जैसा था।

सभी दूसरों के ऊपर एलिजा को आगम में पैगंबर के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिन्होंने सच्चे परमेश्वर की आराधना और उसके आदेशों के पालन को पुनः प्रतिष्ठित किया। जब एलिजा ने राजा अहाब और बोल और अशेरा (ईस्टर) के पैगंबरों को माउंट कार्मेल पर ''समूचे इस्राईल'' (I राजाओं 18:19–21) के जमा होने का आदेश दिया तो उन्होंने कहाः ''तुम कितने दिनों तक दुविधा में थे? यदि प्रभु ही परमेश्वर है, तो उसका अनुसरण करोः लेकिन यदि बोल है तो उसका अनुसरण करो**....**(श्लोक 21)। और जब एलिजा की 18–सेकंड की प्रार्थना पर (श्लोक 36–37), रहस्यमय ढंग से स्वर्ग से आग गिर पड़ी और एलिजाह की बलि को जलाने लगी तो लोग मुंह के बल जा गिरे, और कहा,'' ''प्रभु, वह परमेश्वर हैः प्रभु वह परमेश्वर है'' (श्लोक 39)।

रूपांतरण के दृश्य (मत्ती 16:27 से 17:9 तक) ने देवदूतों, पीटर, जेम्स और जॉन को ईसामसीह के अपने राज्य में आगमन का पूर्वावलोकन कराया–जैसा कि वह आएंगे। इस तरह संकेत दिया गया है कि मूसा और एलिजा ईसा मसीह के अधीन राज्य या कौमी विश्व सरकार (मूसा के अधीन) और चर्च या धार्मिक गतिविधियों (एलिजा के अधीन) के मुखिया हैं।

ये दो व्यक्ति, ''पिताओं'' अब्राहम और इसाक और इस्राईल की तरह पुनर्जीवित करके सत्ता और महिमा में अमर बना दिए जाएंगे। निश्चित रूप से हमें संकेत दिया गया है कि राजाधिराज के रूप में यीशु और यीशु की शीर्षस्थ टोली–''पिताओं'' के अधीन मूसा कुल मिलाकर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सरकार का गठन करेंगे; और एलिजा सारे चर्च, धार्मिक और शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन करेंगे।

वस्तुतः सुसमाचार और धार्मिक घटनाक्रम महज अध्यात्मिक शिक्षा हैं। और यह महत्वपूर्ण है कि एलिजा ने तीन स्कूलों या कॉलेजों की अध्यक्षता की थी जो मूर्तिपूजकों की शिक्षा से भ्रष्ट दुनिया में परमेश्वर की सच्चाई की शिक्षा देते थे (II किंग्ज 2:3, 5; 4:38—बेथल, जेरिको और गिलगल)।

कौमी स्तर पर

अब हम परमेश्वर की आगामी सरकार के संगठन के बारे में और भी व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करते हैं।

शुद्ध रूप से कौमी स्तर पर इफ्रेम और मनासेह (जोसेफ से उत्पन्न) जातियों से उत्पन्न कौमें दुनिया की दो अग्रणी कौमें बन जाएंगी (जेरेमिया 30:16-18; 31:4-11, 18-20; इसैया 14:1-2; विधि विवरण 28:13)।

लेकिन उनके बाद इस्राईल की दूसरी जातियों से उत्पन्न कौमें होंगी। और उनके बाद, लेकिन फिर भी समृद्ध और प्रचुर उपहारों से परिपूर्ण, गैर यहूदी कौमें होंगी। पुनर्जीवित और सत्ता और गौरव में अमर किए गए सम्राट डेविड मूसा के अधीन इस्राईल की सभी 12 कौमों के राजा होंगे (जेरेमिया 30:9; एजाकिएल 34:23—24; 37:24—25)। बारह मूल देवदूतों में से प्रत्तेक डेविड के अधीन इन दस अति समृद्ध कौमों में से एक का राजा होगा (मत्ती 19:28)।

देवदूतों के अधीन जिनमें से प्रत्येक अब किसी महान कौम का राजा है, जिलों, राज्यों, काउंटी शायरों, काउंटियों या प्रांतों और दूसरे शहरों के शासक होंगे।

लेकिन प्रत्तेक मामले में ये राजा और शासक पुनर्जीवित अनश्वर होंगे, परमेश्वर के राज्य (परिवार) में आत्मा सत्व होंगे— रक्त और मांस के बने नश्वर नहीं) और प्रत्येक मामले में वे ऐसे लोग होंगे जिन्होंने न केवल धर्मांतरण से खुद को योग्य साबित किया है बल्कि विजय प्राप्त करके, अध्यात्मिक चरित्र का विकास करके, परमेश्वर के कानून और सरकार द्वार संचालित होने में विकास करने के साथ शासन करना सीख कर खुद को योग्य साबित किया है।

(लूकस 19:11–27)। और वृतांतों (मत्ती 25:14–30) की नीतिकथाएं इसे बिलकुल स्पष्ट कर देती हैं। जो व्यक्ति अपनी आध्यात्मिक क्षमताओं को दस गुना बढ़ा लेता है उसे दस शहरों पर राज्य करने वाले के रूप में दर्शाया गया है। जो व्यक्ति परमेश्वर के स्वभाव और क्षमताओं का आधा स्वभाव और क्षमता भी विकसित कर लेता है उसे पांच शहरों का शासन दिया गया है। किंवदंतियों की नीतिकथाएं भी यही दर्शाती हैं। लेकिन हमारा आकलन इस आधार पर भी किया जाता है कि हमें जो करना है हम उसे कितनी अच्छी तरह करते हैं। अर्थात अपेक्षाकृत कम क्षमता वालों को उनकी क्षमता के अनुसार उनकी प्रेरणा, लगाव, अध्यवसाय और प्रयत्न के आधार पर आंका जाएगा। प्राकृतिक क्षमता और आध्यात्मिक उपहार के रूप में जिन्हें जितना अधिक दिया गया है उनसे उतना ही अधिक की अपेक्षा की जाएगी। परमेश्वर के राज्य में कम क्षमता वालों के लिए भी महान क्षमता वालों जिनती ही संभावना है बशर्ते कि वे कड़ी मेहनत करें।

लेकिन तमाम गैर यहूदी कौमों का क्या होगा? उन पर शासन करने के लिए शीर्ष पद किसे दिया जाएगा?

सिद्धांतों और उद्घाटित मुख्य कार्यभारों के अनुसार इस बात के मजबूत संकेत दिए गए हैं लेकिन स्पष्ट, विशिष्ट कथन नहीं हैं, कि सीधे ईसा मसीह के अधीन सम्राट डेनियल को उन सब का राजा बनाया जाएगा। परमेश्वर ने दुनिया के एकदम पहले विश्व साम्राज्य में उच्च स्तरीय सरकारी अधिकारी के रूप में प्रशिक्षण के लिए किस पैगंबर, किस ईश्वर भक्त मानव को भेजा था? दुनिया के पहले विश्वर साम्राज्य में काम करते हुए भी किस व्यक्ति ने परमेश्वर के प्रति, परमेश्वर के आराधना के प्रति और परमेश्वर के कानून की प्रति आज्ञाकारिता साबित की?

क्यों, बेशक वह पैगैंबर डेनियल थे।

पहली नजर में व्यक्ति सोच सकता है कि यीशु देवदूत पॉल को मूसा के अधीन सभी गैर यहूदी कौमों का शासक बनाएंगे। और पॉल वे सचमुच खुद को गैर यहूदियों पर उच्च पद पर आसीन होने योग्य साबित किया था।

लेकिन डेनियल पहली विश्व सरकार में राजा के दैनिक संपर्क में रहते थे। और हालांकि वह इनसानी सरकार थी डेनियल ने खुद को परमेश्वर और परमेश्वर के कानून के प्रति निष्ठावान साबित किया। वह सम्राट नेबुचेड्नेजर और उनके निकटवर्ती उत्तराधिकारियों को दिव्य ज्ञान दिया करते थे कि वह परमेश्वर है जो सारे राज्यों पर राज्य करता है। डेनियल ने सम्राट के पौष्टिक और सुस्वादु भोजन से इनकार कर दिया –उन चीजों समेत जो परमेश्वर के स्वास्थ्य संबंधी नियमों के अनुसार दूषित थे। वह दिन में तीन बार परमेश्वर की पूजा करते थे चाहे उसका आशय शेर की मांद में फेंक दिया जाना ही क्यों न होता। वह शेरों से बचाव और उद्धार के लिए परमेश्वर पर विश्वास करते थे। उन्होंने कौमों की सरकारों के मामलात और प्रशासन का ज्ञान और बुद्धिमत्ता हासिल की।

जब परमेश्वर ने पैगंबर एजाकिएल के माध्यम से दुनिया में कभी हए तीन सबसे सत्यनिष्ठ व्यक्तियों के नाम गिनाए तो उनमें से एक नाम उनका भी था। और दूसरे दो नाम थे नोआ और जॉब (एजाकिएल 14:14, 20)। और यह स्पष्ट है कि परमेश्वर नोआ और जॉब को बहुत बड़े पद देगा। इसके बारे में और चर्चा बाद में।

परमेश्वर ने अपने शब्दों में डेनियल को आश्वासन दिया था कि वह पुनरुत्थान के समय परमेश्वर के राज्य में (डेनियल 12:13) होंगे।

चलते–चलते इस पर विचार करने की रोचक संभावना है कि चाल्डियाई साम्राज्य की सेवा में डेनियल के तीन सहकर्मी शेड्राच, मेशाच और आबेदीन सीथे डेनियल के नीचे और उनके साथ एक टीम के रूप में काम कर सकते हैं। और तीन ''पिता'' सीधे यीशु के नीचे और उनके साथ एक टोली के रूप में काम कर सकते हैं। दरअसल, ऐसी कई टीमें हैं जो संभावित टोली जान पड़ती हैं।

लेकिन पॉल का क्या? बारह मूल देवदूतों को इस्राईल के खोए घर पर भेजा गया था और पॉल गैर यहूदियों के पास भेजे गए देवदूत थे। यही कुंजी है। खुद यीशु ने कहा था कि प्रत्तेक देवदूत इस्राईल की कौमों में से एक का राजा होगा। यह सोचा भी नही जा सकता कि पॉल एक से अधिक यहूदी कौम के ऊपर नहीं होंगे। निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पॉल क्षमता और उपलब्धि के मामले में बारह देवदूतों में से किसी से भी ऊंचे थे। और दूसरी बात यह कि कोई भी गैर यहूदी कौम इस्राईल जितनी महान नहीं हो सकती। तब संकेत यह मिलता है कि पॉल को सभी गैर यहूदी कौमों के ऊपर का मुकाम दिया जाएगा लेकिन डेनियल के अधीन।

निश्चित ही ईसा मसीह द्वारा प्रत्येक गैर यहूदी कौम पर राजा नियुक्त किए जाएंगे। और उनके अधीन जिलों के शासक और नगरों के शासक होंगे। इनमें से किसी की भी शिनाख्त के बारे में कोई संकेत नहीं है। सिवा उन धर्मप्रचारकों और इंजीलवादियों के जिन्होंने सीधे पॉल के अधीन और उनके साथ काम किया था– बर्नाबास, सिवास, तिमथी, टाइटस, लूकस, मार्क, फिलेमन इत्यादि को निस्संदेह महत्वपूर्ण पद दिए जाएंगे। और उन दूसरे संतों का क्या होगा जिन्होंने उसी उषा काल– चर्च की पहली लाली के वर्षों के दौरान, जब उसके सदस्यों की संख्या नव धर्मांतरितों में पहले–पहल बढ़ी? और तब से लेकर अब तक में धर्मांतरण करने वालों का क्या होगा? हम यहां सिर्फ उसी का उल्लेख कर सकते हैं जिसका परमेश्वर के किए उद्‌घाटनों से स्पष्ट संकेत मिलता है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर

रास्ष्ट्रीय स्तर पर कौमों और कौमों के समूहों पर उद्‌घाटित और संकेतित सरकारी दायित्वों के अलावा विज्ञान और सामाजिक कार्यों के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खड़े महत्व के पद होंगे। और इसके कुछ संकेत भी हैं कि वे अभियान क्या होंगे और यह भी कि संभाव्य नहीं तो शक्य व्यक्ति कौन हो सकते हैं।

पहले–पहल जब नोओ जिंदा थे तब से हम नोआ पर एक नजर डालते हैं। नोआ के जमाने में हिंसा और दुनिया के हालात में अव्यवस्था का मुख्य कारण नस्ली नफरत अंतरनस्ली विवाह, नस्लों के एकीकरण और सम्मिश्रण के मानव के प्रयासों से उत्पन्न हिंसा थी, जो परमेश्वर के कानून के प्रतिकूल है। परमेश्वर ने प्रारंभ में ही कौमों और नस्लों के लिए सीमा रेखा खींच दी थी (विधिविवरण 32:8–9; ऐक्ट्स 17:26) लेकिन इनसानों ने उन देशों में रहने से इनकार कर दिया, परमेश्वर ने उन्हें जो देश सौंपे थे। वही उस भ्रष्टाचार और हिंसा का कारण था जिसने उस दुनिया को खत्म कर दिया। 100 साल तक नोआ ने लोगों को परमेश्वर के रास्ते का उपदेश दिया–लेकिन उन्होंने नहीं सुना।

उस समय भी, आज की तरह, उस दुनिया ने जनसंख्या विस्फोट का सामना किया था। यह तब हुआ था जब इनसान प्रत्यक्ष रूप से पहले–पहल धरती पर अपनी जनसंख्या बढ़ानी शुरू की थी। (जेनेसिस 6:1)। यीशु ने हमारे आज के इस दौर के बारे में कहाः ‘‘लेकिन जैसा नोए (नोआ) का जमाना था, आने वाले इनसानों का जमाना भी वैसा ही होगा। (मत्ती 24:37) या जैसा लूक्स 17:26 में कहा गया हैः ‘‘जैसा नोए के जमाने में था, इनसान के बेटों के समय में भी वैसा ही होगा।’’ यानी, ईसा मसीह की वापसी के समय से ठीक पहले के दिन। आज नस्ली युद्ध, नस्ली घृणा, नस्ली दंगे और नस्ली समस्याएं दुनिया की सबसे बड़ी सामाजिक समस्याओं में से एक हैं।

नोआ ने महज अपने जीवन काल में लोगों को उपदेश दिए। लेकिन पुनर्जीवित, सत्ता और गरिमा में अमर किए गए नोआ को नस्ल संबंधी परमेश्वर के रास्तों को लागू कराने का काम सौंपा जाएगा।

यह स्पष्ट जान पड़ता है कि नोआ परमेश्वर द्वारा कौमों के सर्वोत्तम हित, प्रसन्नता, सबसे मूल्यवान सीमाओं के भीतर कौमों के पुनरवस्थापन की बड़ी परियोजना के मुखिया होंगे। यह एक जबर्दस्त अभियान होगा। इसके लिए सभी कौमों और नस्लों को हटाने के लिए अनावश्यक शक्ति से प्रबलित बड़े और विशाल प्रतिष्ठान की आवश्यकता होगी। इस बार जातियां और कौमें वहां जाएंगी जहां परमेश्वर ने उनके लिए योजना बना रखी है। और कोई गुस्ताखी बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

कैसा विरोधाभाष है। लोगों को सुख और शांति से रहने और प्रचुर और आनंदमय जीवन पाने के लिए विवश किया जा रहा है!

ऊपर हमने कहा था कि हम इस्राईल के बेटे और अब्राहम के पड़पोते जोसेफ पर दुबारा लौटेंगे।

जोसेफ उस जमाने के धरती के सबसे महान राष्ट्र—मिस्र के खाद्य प्रशासक बने। जोसफ ''समृद्धि'' के पर्याय थे। ''और प्रभु जोसफ के साथ था, और वह संपन्न व्यक्ति थे; और...... उन्होंने संपन्न होने के लिए जो कुछ किया परमेश्वर ने सब कुछ उनके हाथ में बनाया। (जेनेसिस 39:2–3)। उन्हें दुनिया के महानतम राष्ट्र के फराओ के लिए वास्तविक शासक बनाया गया था। लेकिन वह अर्थव्यवस्था, समृद्धि के काम के विशेषज्ञ थे। और उन्होंने जो किया परमेश्वर के रास्ते पर किया।

इसलिए यह स्पष्ठ जान पड़ता है कि जोसफ को दुनिया की अर्थव्यवस्था का निदेशक बनाया जाएगा। उसकी कृषि, उसके उद्योग, उसकी प्राद्योगिकी और उसके वाणिज्य के साथ–साथ उसके धन और उसकी मौद्रिक प्रणाली के। ये प्रणालियां अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होंगी, प्रत्तेक राष्ट्र में एक ही।

निस्संदेह जोसफ अपने साथ और अपने अधीन उत्कृष्ट बनाए गए अनश्वरों का एक विशाल और उत्कृष्ट संगठन विकसित करेंगे। यह ऐसा प्रशासन होगा जो अकाल, भूख, गरीबी मिटा देगा। गरीबी की मारी कोई भी झुग्गी–झोंपड़ियां नहीं होंगी। सार्वभौम समृद्धि होगी!

एक और विशाल विश्व व्यापी, अंतरराष्ट्रीय परियोजना होगी बंजर जगहों के पुनर्निर्माण और यीशु जिस दुनिया का सृजन करेंगे उसके लिए उन्हें महान और विशाल इमारतों की आवश्यकता होगी, उन इमारतों के निर्माण की परियोजना।

''और वे पुराने बंजरों का निर्माण करेंगे, वे पुराने वीरानों को आबाद करेंगे और वे निर्जन शहरों की मरम्मत करेंगे, कई पीढ़ियों के वीरानों की '' (इसैया 61:4)।

जोब पूरब के सबसे धनी और महान व्यक्ति (जोब 1:3) और जाने–माने भवन निर्माता थे। (जोब 3:13–14 की जॉब 38:4–6 में परमेश्वर की चुनौती से तुलना करें)। वह इतने ईमानदार और इतने श्रेष्ठ थे कि परमेश्वर ने शैतान को चुनौती दी कि वह उसके चरित्र में खोट निकाल कर दिखाए। दरअसल उनके जीवन में एक भयावह पाप था—आत्म धर्माभिमान या अहमन्यता। लेकिन परमेश्वर ने उनसे पश्चाताप कराया (देखें जोब, अध्याय 38–42)। आत्म संयम की ऐसी शक्ति वाला व्यक्ति को जो अपने दम पर इतना आत्माभिमानी हो सकता था, विनम्र, परमेश्वर की आत्मा से परिपूर्ण, परमेश्वर पर भरोसा करने वाला बनाए जाने के बाद विशाल, विस्मयकारी विश्वपरियोजनाओं के अभियंता के रूप में कभी रहा कोई व्यक्ति उसकी बराबरी नहीं कर सकता था।

इसलिए इसके प्रबल संकेत मिलते हैं कि जोब विश्वव्यापी शहरी पुनर्नवीनकरण, बंजर जगहों और ध्वस्त शहरों के पुनर्निर्माण, उस तरह नहीं जैसे वे आज हैं, बल्कि परमेश्वर के पैटर्न; के मुताबिक पुननिर्माण के निदेशक होंगे; विशाल अभियांत्रिकी परियोजनाओं, जैसे बांध और बिजली घरों या उस किसी भी चीज के सत्ताधारी ईसामसीह जिनको आदेश देंगे।

एक और व्यक्ति के इस विशाल प्रशासन में चोटी का सहायक होने के संकेत लिए गए हैं। वह हैं जेरूब्बाबेल (हग्गाई और जेचारियाः 4)।

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की नई महान विश्व सभ्यता के लिए इतना ही । अब हम व्यक्तिगत स्तर पर कल की दुनिया पर आते हैं–चर्च–धर्म–शिक्षा प्रणाली।

शिक्षा और धर्म कल

ईसामसीह जब स्रष्टा परमेश्वर की परम सत्ता और गरिमा के साथ वापस आ रहे हैं, इस बार वह दुनिया को अध्यात्मिक रूप से बचाने आ रहे हैं।

जब वह येरूशलम में महिमा के सिंहासन पर बैठते हैं उस समय रक्त–मांस की बनी दुनिया भर की नश्वर मानव कौमें उनके सामने होंगी। वह ''बकरियों में से भेंड़ों को'' अलग करने से प्रारंभ करेंगे। भेड़ों को अपने दाएं खड़ा करेंगे। ''तब राजा अपनी दाई तरफ के लोगों से कहेंगे, ''मेरे पिता के कृपापात्रों, आओ उस राज्य के अधिकारी बनो जो संसार के प्रारंभ से तुम्हारे लिए बनाया गया था'' (मत्ती 25:34)।

जो धर्मांतरित हैं वे उत्तराधिकारी हैं। हम यीशु के आगमन पर उत्तराधिकार में राज्य पाएंगे। ईसा मसीह में मृतकों को पुनर्जीवित किया जाएगा, पहले उठते हुए—अनश्वर आत्मा में परिवर्तित हम जो तब यीशु में जिंदा हैं तत्काल अमर आत्मा में बदल दिए जाएंगे, और अवतरित हो रहे यीशु से हवा में मिलने के लिए पुनर्जीवितों द्वारा पकड़ लिए जाएंगे।

उसके बाद हम अमरता द्वारा धरती के नश्वर इनसानों से अलग कर दिए जाएंगे।

वहां से यीशु जहां कहीं भी जाएंगे, हम हमेशा उनके साथ रहेंगे? तब हम कहां होंगे? उसी दिन उनके पैर ओलिवीज पर्वत पर होंगे (जेचारिया 14:4)।

इसके बाद वह भेड़ों (जो पश्चाताप करते, आस्था रखते और उसकी पवित्र आत्मा को स्वीकार करते हैं) को बकरियों (वे जो बगावत करते हैं) से अलग करता है। यह पृथक्करण— परमेश्वर के राज्य के लिए धर्मांतरितों को शिक्षित करना— धरती पर यीशु के राज्य की हजार साल की पूरी अवधि भर जारी रहेगा।

ईसा मसीह सभी कौमों को एक नई और शुद्ध भाषा देंगे। ''क्योंकि तब मैं लोगों को शुद्ध भाषा दूंगा जिसमें वे परमेश्वर का नाम ले सकेंगे, एक सहमति से उसकी आराधना करने के लिए'' (जेचारिया 3:9)।

परमेश्वर की शुद्ध सच्चाई सभी लोगों के बीच प्रचारित की जाएगी। अब कोई भी छला नहीं जाएगा। लेकिन ''दुनिया परमेश्वर के ज्ञान से भरी होगी जैसे सागर पानी से भरा होता है'' (इसैया 11:9)।

ईसा मसीह डेविड के पिता। ''जेस की जड़ हैं'', तब क्या गैर यहूदी यीशु को तलाशेंगे (इसैया 11:10)। यीशु समूचे इस्राईल के बचाव में अपने हाथ लगाएंगे (श्लोक 11)। (रोमनों 11:25—26 भी देखें)।

लेकिन विश्व इजीलवाद के इन सब कामों, दुनिया (कुल मिला कर, जरूरी नहीं कि सभी व्यक्तियों बल्कि बहुसंख्य आबादी) को आध्यात्मिक रूप से बचाने के कामों के साथ—साथ दुनिया को पुनः शिक्षित करना होगा।

लौट कर आए गरिमामय ईसा मसीह के सामने जो समस्याएं होंगी उनमें से एक बड़ी समस्या उन लोगों को पुनः शिक्षित करने की होगी जो शिक्षित समझे जाते हैं। ये प्रतिभाएं— और वे वस्तुतः दुनिया की सबसे बेहतरीन प्रतिभाएं हैं— गलत शिक्षा से इस कदर विकृत हो गई हैं कि जब तक वे पहले गलतियों को भुला नहीं देंगी सच्चाई को स्वीकार करने में अक्षम होंगी। और मजबूती से मन में बैठी गलतियों को भुला पाना, प्रस्थान रेखा से प्रारंभ करके दुबारा नई सच्चाई सीखने के मुकाबले कम से कम दस गुना अधिक कठिन होता है।

वस्तुतः उन्हें सच्चाई के बोध से सही अर्थों में शिक्षित होने में इस दुनिया के अशिक्षितों की अपेक्षा अधिक समय लग सकता है।

ईश्वर के प्रेरित शब्द, पवित्र बाइबिल ज्ञान का आधार है। लेकिन उन्हें इस सच्ची आधार शिला को पूर्वग्रह पूर्ण अवज्ञा से लेने का प्रशिक्षण दिया गया है।

हां, सचमुच, दुनिया को शिक्षित और पुनः शिक्षित करने का काम वह सबसे महत्वपूर्ण काम होगा जिसका सामना करना पड़ेगा। लोग आज झूठे और छलने वाले मूल्यों का पालन करते हैं। उनकी समूची सोच का पुनरानुकूलन करना होगा— दिशा बदलनी होगी।

मुख्यालय का चर्च

हमने देखा है कि हजार साल की यह अवधि प्रारंभ होने के बाद धरती उसी तरह सच्चे ज्ञान से भरी होगी जैसे सागर पानी से भरे हैं (इसैया 11:9)। यह कैसे होगा?

पैगंबर मिकाह इसका आंशिक उत्तर देते हैं। लेकिन अंतिम दिनों में ऐसा होगा कि प्रभु के घर का पर्वत पर्वतों की चोटी पर स्थापित होगा, और यह पहाड़ियों के ऊपर प्रतिष्ठित होगा; लोग इसकी तरफ खिंचते चले आएंगे (मिकाह 4:1)।

यह भविष्यवाणी एक बड़ी कौम के प्रतीक के रूप में पहाड़ के रूपक का उपयोग करती है, और पहाड़ियों को छोटी कौमों के प्रतीक के रूप में। दूसरे शब्दों में परमेश्वर का राज्य, पुनर्जीवित अनश्वरों का राज्य बड़ी कौमों के ऊपर पूर्ण अधिकार में स्थापित होगा और यह छोटी कौमों के ऊपर प्रतिष्ठित होगा। और लोग परमेश्वर के राज्य की तरफ खिंचते चले आएंगे। अब आगे जारीः

''और बहुत से पहाड़ आएंगे और कहेंगे, आओ, और चलो प्रभु के पर्वत पर, और जैकब के परमेश्वर के घर चला जाए; और वह हमें अपने तौर–तरीके सिखाएगा; और हम उसके बताए रास्तों पर चलेंगे क्योंकि कानून जिओन (चर्च) से आगे और परमेश्वर के शब्द येरूशलम से आगे तक जाएंगे। और वह (यीशु) बहुत सी कौमों के बीच न्याय करेंगे और दूर तक की सशक्त कौमों को फटकार लगाएंगे और वे अपनी तलवारें पीट कर फालें और अपने नेजे पीट कर कुदालें बना लेंगे; कौमें दूसरी कौमों के खिलाफ तलवार नहीं उठाएंगी और न वे आगे से युद्ध नहीं सीखेंगी'' (श्लोक 2–3)।

यह ज्ञान– यह शिक्षा– यहां तक कि परमेश्वर के राज्य का ज्ञान भीं– दुनिया की नई राजधानी, चर्च से और येरूशलम से दूर तक जाएगा।

स्वयं ईसा मसीह येरूशलम से राज करेंगे। ईसा मसीह के साथ, एलिजाह के सीधे निर्देशन में, ऐसा संकेत किया गया है, ईसा मसीह के चुने हुए अनश्वर वहां रह कर मुख्यालय के चर्च का गठन करेंगे। प्रकाशना 3:12 संकेत करता है कि ''फिलाडेल्फिया युग'' के लोग उस मुख्यालय चर्च के स्तंभ होंगे।

अगला, इस सबसे महत्वपूर्ण मुख्यालय चर्च के संगठन में, सीधे एलिजा के अधीन और उनके साथ काम करने वालों में ऐसा लगता है, पुनर्जीवित बपतिस्मादाता जॉन होंगे। वह ''(एलिजाह) की आत्मा और सामर्थ्य में'' आया (लूकस 1:17)। उसके बार में जीसस ने कहा, ''मैं तुमसे सच कहता हूं जो नारी की कोख से जन्मे हैं, उनमें से कोई भी बपतिस्मादाता जॉन से अधिक ऊंचा नहीं उठा है....'' (मत्ती 11:11)। वही एलिजाह है जिसके आने की भविष्यवाणई खई गई है (11:7–11)।

यीशु ने कहा कि कभी रहा कोई व्यक्ति बपतिस्मादाता जॉन से महान नहीं था। फिर भी, पुनर्जीवित राज्य का सबसे छोटा भी उससे बड़ा होगा (मत्ती 11:11)। यह स्पष्ट है कि बपतिस्मा दाता जॉन को बहुत ऊंचे पद पर रखा जाएगा। ऐसा तर्कसंगत प्रतीत होता है कि उन्हें इलिजाह के साथ या ठीक उनके नीचे रखा जाएगा।

हमारे दिनों में आने वाले हैं एलिजा

एक बार फिर ईश्वर के द्वैत के सिद्धांत को याद कीजिए। यह स्पष्ट है कि बपतिस्मादाता जॉन को बहुत ऊंचे पर आसीन किया जाएगा। जैसा कि यीशु ने मैथ्यू में कहा था, मालची 3:1 की भविष्यवाणी एक तरह से बपतिस्मादाता जॉन पर लागू होती हैः लेकिन यदि आप श्लोक 5 से पढ़ना जारी रखेंगे तो बिल्कुल स्पष्ट हो जाएगा कि यह भविष्यवाणी दुबारा ईसा के आने से पहले रास्ता तैयार करने वाले व्यक्ति की बात करती है। बपतिस्मादाता जॉन देहधारी मानव की तरह येरुशलम स्थित उनके भौतिक मंदिर और जुदाह के लौकिक लोगों में ईसा के पहले आगमन के समय जोर्डन नदी के भौतिक निर्जन बीहड़ों में ऊंची आवाज में चीख कर उनके लिए रास्ता बना रहे थे इस सुसमाचार की अग्रिम घोषणा करते हुए कि भविष्य में परमेश्वर का राज्य स्थापित होगा। लेकिन उनकी दूसरे आगमन से पहले भी एक संदेशवाहक रास्ता तैयार करने वाला था एलिजा जिसके प्ररूप हैं। वस्तुतः परमेश्वर के राज्य की स्थापना के लिए गौरवान्वित अध्यात्मिक राजाधिराज प्रभुओं के प्रभु के परमेश्वर की परम सत्ता और गरिमा के साथ अपने मंदिर, चर्च (इफीसियाइयों के नाम 2:21) आने के लिए मार्ग प्रशस्थ करने के लिए धार्मिक अस्तव्यस्तता के विश्वव्यापी आध्यात्मिक बीहड़ में चीखती एक आवाज।

इसके अलावा, मैथ्यू 17:1-8 में पीटर, जेम्स और जॉन ने परमेश्वर के राज्य में मूसा, एलियास और गौरवान्वित यीशु के दर्शन किए। उसके बाद श्लोक 10 में शिष्यों'' ने यीशु से पूछा, ''तो फिर आगम क्यों कहते हैं कि पहले एलियास (एलिजाह) को अवश्य आना चाहिए?'' याद रखें कि बपतिस्मादाता जॉन अपना पौरोहित्य समाप्त कर चुके थे और यीशु अपना पौरोहित्य को प्रारंभ करते उससे पहले ही उन्हें बंदी बना लिया गया था। जिस समय शिष्यों ने यह प्रश्न पूछा था बपतिस्मादाता जॉन आ चुका था और उसे मृत्युदंड दिया जा चुके थे। फिर भी यीशु ने भविष्य के बारे में बताते हुए जवाब दिया ''(एलिजाह) सचमुच पहले आएंगे और सभी चीजों का पुनरुद्धार करेंगे'' (श्लोक 11)।

संभवतः यह बपतिस्मादाता जॉन का उल्लेख नहीं हो सकता। बपतिस्मादाता जॉन ने किसी चीज को संवारा नहीं लेकिन उसने मानव देह धारी के रूप में ईसा के पहले आगमन की पूर्व तैयारी के रूप में पश्चाताप करने के लिए लोगों का आह्वान किया।

नव विधान चर्च के पहले कुछ वर्षों में यीशु के असली सुसमाचार को दबाया गया और चालाकी से उसकी जगह मिथ्या सुसमाचार का प्रचार किया गया – यीशु का सुसमाचार; (परमेश्वर का राज्य) नहीं, बल्कि इनसान का झूठा सुसमाचार, यीशु के बारे में जिसने अपने पिता के आदेशों को दरकिनार कर दिया।

मलाची 4:5–6 भी चर्च युग के बिलकुल अंत में एलिजाह के आगमन का चित्र उकेरता है – एक ऐसे समय में जब – यदि अंतिम समय के इस संदेश की घोषणा न की गई तो गरिमामय यीशु आएंगे और दुनिया को संपूर्ण विनाश का दंड दे देंगे। (इस श्लोक में *अभिशाप* शब्द हिब्रू के अनुवाद से आया है, जो मोफत के अनुवाद में *संपूर्ण विनाश* का अर्थ देता है।)

कल की दुनिया में शिक्षा

ईसा मसीह की अपनी वैश्विक राजधानी येरूशलम स्थित इस मुख्यालयी चर्च को निस्संदेह दुनिया की नई शिक्षा प्रणाली के प्रशासन का काम दिया जाएगा

इस बात के भी संकेत हैं कि एलिजा के अधीन और सीधे ईसा मसीह के निर्देशन में इस मुख्यालयी चर्च से आध्यात्मिक सत्य–सच्चे सुसमाचार के, आध्यात्मिक रूपांतरण के–दुनिया भर में जारी किए जाएंगे।

ईसा मसीह दुबारा जिस मुख्य उद्देश्य से दुनिया में वापस आ रहे हैं वह उद्देश्य है मानवता में आध्यात्मिक रूप से ईश्वरीय चरित्र का विकास और दुनिया का उद्धार। अधिकांश धार्मिक व्यक्ति, पुरोहित और इंजीलवादी (रूढ़िवादी) मानते हैं कि अब इस बार बस मोक्ष का दिन है। वे जिस श्लोक पर विश्वास करते हैं वह गलत अनुवाद है (II कोरिथियाइयों 6:2)। इसे पढ़ा जाना चाहिए: ''मोक्ष का एक दिन'', ''मोक्ष का दिन'' नहीं (इसैया 49:8 से उद्घृत जहां यह ''मोक्ष का एक दिन'' नहीं है)। यदि यीशु दुनिया को बचाने की कोशिश कर रहे होते तो उन्होंने उसे बचा लिया होता। इसे ''बचाया'' नहीं गया है। ईश्वर सैकड़ों अलग–अलग धर्मशास्त्रीय धारणाओं में विभाजित, संभ्रमित, असहमत धार्मिक संगठनों के बेबीलोन को अपने उकरण के रूप में उपयोग नहीं करता।

स्वयं ईसा मसीह की प्रत्यक्ष और व्यक्तिगत देख–रेख में पुनर्जीवित अमर आत्माओं से बने इस मुख्यालयी चर्च से दुनिया में असली इंजीलवाद का प्रबंध किया जाएगा।

उस सहस्राब्दीय मुख्यालय में एक चीज नहीं होगी, यह तय करने के लिए बौद्धिक विद्वानों की सैद्धांतिक कमेटी कि ईसा मसीह के उपदेश सच्चे सिद्धांत हैं।

येरुशलम स्थित पहली शताब्दी के चर्च में इस तरह की कोई कमेटी नहीं थी। सारे उपदेश देवदूतों के माध्यम से यीशु ने दिए थे। और एकाध बार चर्च ने पैगंबर के जरिये देवदूतों से संपर्क किया था (जिसमें से आज ईश्वर के चर्च में कोई नहीं हैं क्योंकि हमारे समय के लिए बाइबिल संपूर्ण है)। आज का ईश्वर का चर्च पहली शताब्दी की तरह अपने उपदेश एक देवदूत के माध्यम से जीवित ईसा मसीह से प्राप्त करता है, जैसे 31 ईस्वी में लेता था।

इस मुख्यालयी चर्च से एक और बड़े सांगठनिक काम का संचालन होगा– दुनिया भर के स्थानीय चर्चों के निर्देश का काम काम। इन चर्चों में वे लोग होंगे जिन्होने अपने जीवन काल में धर्मांतरण कर लिया था– ईश्वर की आत्मा को प्राप्त करके ईश्वरोत्पन्न हो गए थे, लेकिन फिर भी नश्वर थे।

ज्ञान और विजय में सहस्राब्दीय विकास

धर्मांतरित इसाइयों को जिस तरह आज विजय प्राप्त करने और आध्यात्मिक प्रगति और विकास (II पीटर 3:18), का जीवन अवश्य जीना चाहिए उन्हें उसी तरह सह्राब्दी में भी जीना होगा। उसके बाद वे सुख से रहेंगे और उन्हें शैतान पर विजय नहीं प्राप्त करना होगा। लेकिन उन्हें अपने भीतर की समस्त सहज स्वाभाविक बुरी मानसिक प्रेरमाओं, प्रलोभनों में फंसने की आदतों पर विजय प्राप्त करना होगा।

एक मात्र चर्च, एक धर्म, एक आस्था के साथ प्रत्येक शहर में चर्च की बहुत–सी धर्म संगतियां होंगी। जब की ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत सी धर्मसंगतियां फैली होंगी। क्षेत्रों में जिला अधीक्षक और पेस्तर, ऐल्डर, डीकन और स्त्री डीकन होंगी। यह सब एक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि दुनिया कितनी संगठित होगी।

यह दर्शाता है कि धरती पर एक परम वैश्विक सरकार का गठन कैसे हो सकता है और कैसे होगा

इस वर्तमान समय के चर्च का उद्देश्य धरती पर ईसा मसीह के 1,000 साल के इस उत्कृष्ट शासन के प्रारंभ में सभी पदों के योग्य व्यक्ति प्रदान करने के लिए अध्यात्मिक ज्ञान, शिक्षा और दैवी चरित्र का प्रशिक्षण देने के लिए ईश्वर का प्रशिक्षण स्कूल या अध्यापकों का कालेज प्रदान करना है। धरती पर ईसा मसीह के एक सहस्राब्दी के शासन काल में अंत में कयामत का दिन आएगा।

मैंने इस पुस्तक में उल्लेख किया है कि आदम के पहले पाप के समय ईश्वर में यीशु, दूसरे आदम के शैतान को धरती की गद्दी में हटा कर उसकी जगह आसीन होने और सभी कौमों पर राज करने के लिए आने तक के लिए जीवन के वृक्ष को मानव से दूर कर दिया गया था, जो ईश्वर की पवित्र आत्मा के ईश्वरीय वरदान का प्रतीक और अनश्वर ईश्वरीय जीवन के जन्म का प्रतीक है।

इस बीच हमने इसकी चर्चा की है कि कैसे पैगंबर ईश्वर के चर्च की प्राक् नींव थे। और देवदूत पीटर ने उल्लेख (I पीटर 4:17) किया है कि न्याय चर्च के साथ शुरू हुआ था। ईश्वर ने अपने चर्चयुग में यीशु के माध्यम से जिन्हें आने के लिए बुलाया था, वे यहां रहे हैं और उनके जीवन में उनका निर्णय हो चुका है। लेकिन फैसला अभी तक धरती पर नहीं आया है।

क्या इसका अर्थ यह कि दुनिया पाप करने के लिए आजाद है? नहीं, कदापि नहीं, परमेश्वर लोगों को पाप करने की अनुमति देता लेकिन अभी तक उनके पापों का निर्णय नहीं हुआ है।

सहस्राब्दी के बाद

धरती पर यीशु और चर्च के सहस्राब्दीय शासन के बाद धरती पर ईश्वर के न्याय का समय आएगा। लेकिन पकड़े जाने और किसी न्यायाधीश के सामने न्याय के लिए लाए जाने तक अभी उनका न्याय निर्णय नहीं हुआ है या उसकी दोषी नहीं ठहराया गया है।

अंतिम फैसले के समय, जब ईसा मसीह न्यायाधीश के आसन पर बैठ होंगे हर उस इनसान को फिर से जिंदा किया जाएगा जो कभी इस दुनिया में रहा है (20:11–12) वे तब अपने पहले जीवन में किए अपने पापों का व्योरा देंगे।

यीशु के दूसरे आगमन पर ईसा मसीह में मरों को पुनर्जीवित करके अनश्वर ईश्वरीय जीवन प्रदान किया जाएगा यदि वे मर चुके होंगे और जो अभी जिंदा हैं और ईसा मसीह के आगमन पर उनमें हैं और उनकी पवित्र आत्मा द्वारा संचालित हैं, उन्हें तुरंत अमर ईश्वरीय जीवन में बदल दिया जाएगा। वे ईसा मसीह के अधीन हजार वर्षों के दौरान राज करेंगे और अध्यापन करेंगे। लेकिन सभी लोग जो मर चुके हैं, सहस्राब्दी के अंत तक जिंदा नहीं होंगे (प्रकाशना 20:5)।

एजाकिएल का अध्याय 37 भी कयामत के समय पुनरुज्जीवन दर्शाता है। अध्याय 37 ''सूखी हड्डियों'' की भविष्यवाणी का अध्याय है। बाइबिल स्वयं ही श्लोक 11 में इन सूखी हड्डियों का यह कह कर खुलासा करती है कि ये ''सूखी हड्डियां इस्राईल का घर'' हैं। ''देखो, वे कहते हैं कि हमारी हड्डियां सूख गई हैं, और हमारी उम्मीद खत्म हो गई है....'' जैसे भविष्यवाणी कहती है: ''उसने एक बार फिर मुझसे इन हड्डियों, के बारे में भविष्यवाणी की, और उनसे कहो, ओ सूखी हड्डियों! ईश्वर के वचन सुनो। इस तरह ईश्वर इन हड्डियो से कहता है: देखो मैं तुम्हारे भीतर सांसों का संचार करूंगा, और तुम जी उठोगी: और मैं तुम्हारे ऊपर स्नायु बिछा दूंगा और तुम्हारे ऊपर मांस ला दूंगा, और तुम्हें त्वचा से ढंक दूंगा, और तुम जी जाओगी। और तुम जान जाओगी कि मैं ईश्वर हूं'' (श्लोक 4–6)।

इसके बाद यह भविष्वाणी न्याय के महान श्वेत सिंहासन के बारे में बताती है जब इस्राईल का पूरा घर, जिसने ईश्वर के खिलाफ इतने बड़े पाप किए, पुनर्जीवित किया जाएगा।

भविष्यवाणी जारी रहती हैः इस तरह मैंने भविष्यवाणी की जैसा कि मुझे आदेश दिया गया था, और जैसे ही मैंने भविष्यवाणी की एक आवाज सुनाई पड़ी और मैंने एक हलचल देखी, और हड्डियां आस–पास आ गईं, हड्डी के पास हड्डी। और जब मैंने नजर उठाई देखा! स्नायु और पेशियां आ गईं और त्वचा ने उन्हें से ढंक लियाः लेकिन उनकी सांसें नहीं चल रही थीं। उसके बाद उसने मुझे कहा, हवा से कहो, कहो मानव पुत्र और हवा से कहो, इस तरह कहता है मालिक ईश्वर चारों हवाओं से आओ, ओ श्वास, और इन पड़े हुओं को सांस दो ताकि वे जी जाएं।

इस तरह मैंने वैसी ही भविष्यवाणी की जैसा कि उसने मुझे आदेश दिया, और उनमें सांस आई और वे जी गए, और अपने पैरों पर उठ खड़े हुए, एक बढ़ती विशाल सेना (श्लोक 7–10)। यह नश्वर जीवन में फिर से जीवित किए जाने का चित्र प्रस्तुत करता है श्वास के साथ हवा लेकर जीवित, जैसे कि वे अपने मूल जीवन में थे। आशय यह कि नश्वर जीवन अभी तक रूपांतरित नहीं है। उसके बाद ईश्वर कहता हैः ''देखो, ओ मेरे लोगों, मैं तुम्हारी कब्रें खोलूंगा और तुम लोगों के बाहर आने का कारण बनूंगा और तुम्हें इस्राईल की धरती पर ले आऊंगा।'' यह न्याय के महान श्वेत सिंहासन में पुनर्जीवन है। सभी प्राचीन इस्राइलियों को ऐन उसी रूप में जैसे वे अपने पहले जीवन में थे, नश्वर पुनर्जीवित कर दिया जाता है. उसके बाद क्या? ''और तुम जान जाओगे कि मैं ईश्वर हूं, जब मैंने तुम्हारी कब्रें खोल दी हैं, ओ मेरे लोग, और तुम्हें तुम्हारी कब्रों से बाहर निकाल दिया है। और तुममें अपनी आत्मा रख दूंगा और तुम जीवित हो जाओगे, और मैं तुम्हें तुम्हारे अपने देश में भेज दूंगाः तब तुम जानोगे, कि मैने, ईश्वर ने तुमसे बात की थी, और यह किया था, कहता है प्रभु'' (श्लोक 13,14)।

दूसरे शब्दों में, सहस्राब्दी के बाद न्याय के महान श्वेत सिंहासन में, पुराने विधान के इस्राईल को पुनर्जीवित किया जाएगा, उसके बाद वे ''ईश्वर को जान जाएंगे''। उन्हें ईश्वन का ज्ञान प्राप्त होगा। उसके बाद पुनर्जीवित यह पढ़ेंगेः ''और वहां तुम्हें अपने रास्ते याद आएंगे और अपनी सारी करनी याद आएगी, जिसमें तुम दूषित हो गए थे; और तुमने जो बुराइयां की हैं उनके लिए तुम स्वयं अपनी नजर में अपने–आप से घृणा करोगे। और तुम जानोगे कि मैं ईश्वर हूं। जब मैंने तुम्हारे साथ अपने नाम की खातिर तुम्हें गढ़ा है, तुम्हारे बुरे रास्तों के अनुसार नहीं, न तुम्हारी भ्रष्ट करतूतों के ही अनुसार ही, हे इस्राईल के घर, कहता है मालिक ईश्वर। (एजाकिएल 20:43–44)।

इसके बाद इस पश्चाताप पर एजाकिएल 37:14 में दुबारा गौर करें ''और तुममें अपनी आत्मा रख दूंगा और तुम जी जाओगे और तुम्हें तुम्हारे अपने देश में रख दूंगाः उसके बाद तुम जान जाओगे कि ईश्वर ने इसे कहा था, और इसे किया था, कहता है ईश्वर।''

इस तरह न्याय के महान श्वेत सिंहासन में वे जानेंगे कि यीशु, उद्धरक यीशु आए थे और उनके लिए मरे थे। और अपने पश्चाताप पर वे पवित्र आत्मा को प्राप्त करेंगे और इसके साथ मुक्ति और शास्वत जीवन प्राप्त करेंगे।

और जो कभी थे, पहले से अनिर्णीत, न केवल इस्राईल बल्कि सारी कौमें, नश्वर जीवन पुनर्जीवित कर दी जाएंगी, शीरीरिक रूप से जैसे वे अपने पहले जीवन में मृत्यु तक थीं। इस निर्णय में जो नश्वर होंगे, उनका व्योरा दिया जाएगा और उनका निर्णय किया जाएगा। इन महानश्वेत सिंहासन के निर्णय के बारे में यीशु ने कहाः ''इस पीढ़ी के साथ निनेवे के लोग इस निर्णय में उठ खड़े होंगे, और इसकी भर्त्सना करेंगेः उन्होंने जोनास के उपदेश पर पश्चाताप किया था; और देखो, कोई जोनास से बड़ा यहां है। इन निर्णय में इस पीढ़ी के साथ दक्षिण की रानी उठेगी और इसकी निंदा करेगीः क्योंकि वह धरती के सबसे आखिरी छोर से सोलोमन की बुद्धिमत्ता सुनने आई थी, और देखो, सोलोमन से बड़ा कोई है।'' (मत्ती 12:41—42; और लूकस 11:31—32 भी)। और यह भीः ''लेकिन मैं तुमसे कहता हूं कि सोडोम के लिए वह दिन उस शहर की अपेक्षा अधिक सहनीय होगा.... लेकिन निर्णय का दिन तुम्हारी अपेक्षा टायर और सिडोन के लिए अधिक सह्य होगा'' (लूकस 10:12,14)। दंड भी होंगे। जिन्होंने कम पाप किए हैं उन्हें कुछ कोड़े मारे जाएंगे लेकिन जिन्होंने ईश्वर की इच्छा जानते हुए भी अधिक पाप किए हैं उन्हें बहुत से कोड़े मारे जाएंगे (लूकस 12:47—48)।

लेकिन अंतिम निर्णय में पाप का दंड मृत्यु होगा। चूंकि सबने पाप किए हैं इसलिए सबका न्याय किया जाएगा और सबको दोषी ठहरा कर दंड दिया जाएगा। लेकिन वे जान जाएंगे कि यीशु ने उनके बदले उनके पापों का दंड भोगा है। और कार्यों द्वारा प्रदर्शित पश्चाताप में, उन्हें जीवन या अमर किए जाने के बीच चुनाव करने का एक मौका दिया जाएगा।

कर्ता ईश्वर कितना दयालु है, जो हम पर भी उतनी दी दया करता है जितनी ऊपर के स्वर्ग पर। और वह हमारे पापों को हमसे उतना ही दूर करने में सक्षम है उत्तर से दक्षिण जितना दूर होता है। साम 103:12)।

लेकिन बहुत है! बहुत अधिक'!

अविश्वसनीय मानव क्षमता

हिब्रुओं की किताब में हम पढ़ते हैंः ''क्योंकि उसने (ईश्वर) आनेवाली दुनिया में हम जिसकी बात कर रहे हैं, देवदूतों के लिए दासता नहीं रखी है।'' (हिब्रू 2:5)। यहां इस प्रसंग का विषय ''आने वाली दुनिया'' है।

लेकिन धरती केवल एक है। लेकिन बाइबिल तीन दुनिया की बात करती है– धरती पर युगों या सभ्यताओं की– ''वह दुनिया जो तब थी'' (प्रलय से पहले की आदम से नोआ तक की दुनिया); यह वर्तमान बुरी दुनिया (नोआ के समय के जल प्रलय से अभी आने वाली दुनिया); और 'आगामी दुनिया'' (जो तब शुरू होगी जब यीशु आएंगे और परमेश्वर के राज्य की स्थापना करेंगे)।

यह श्लोक देवदूतों की चर्चा इस तरह करता है जैसे दुनिया देवदूतों के अधीन हो; दरअसल, हिब्रू की इस पुस्तक के बिलकुल प्रारंभ में – इसके पहले अध्याय में यीशु और देवदूतों, और मानवों के साथ देवदूतों के संबंधों की बात कही गई है। इसकी व्याख्या इस पुस्तक के दूसरे अध्याय में की गई है।

लेकिन ध्यान रखें कि यहां सामान्य विषय या संदर्भ ''आने वाली दुनिया है, हम जिसकी चर्चा कर रहे हैं''– यह वर्तमान युग नहीं, जो तेजी से अपने अंत की ओर *अग्रसर है*! श्लोक 6 में जारीः ''लेकिन एक निश्चित जगह पर व्यक्ति यह कहते हुए गवाही देता है....'' उसके बाद साम के पहले छह श्लोकों का उद्धरण आता है।

इस साल्म में डेविड स्पष्ट रूप से यह दिखाना जारी रखता है कि ईश्वर ने ठोस धरती; धरती के पर्यावरण या हवा, और सागर को इनसानों के अधीन रखा है। लेकिन अब हिब्रू पुस्तक के लेखक को डेविड के भविष्य कथन को विस्तार देने कुछ बिलकुल अलग जोड़ने की प्रेरणा – कुछ ऐसी चीजें जो आने वाली दुनिया में होने वाली हैं!

यह मानव जाति के लिए ईश्वर के उद्देश्य का उद्घाटित ज्ञान– इनसान की अविश्वसनीय, विस्मयजनक क्षमता कल्पना शक्ति को डांवाडोल करने लगती है। विज्ञान इसके बारे में कुछ नहीं जानता। किसी भी धर्म में इसका उद्घाटन नहीं किया है– जहां तक मैं जानता हूं और उच्च शिक्षा निश्चित रूप से इससे पूरी तरह अज्ञान है।

इसके बावजूद– यह वह है जिसके बारे में ईश्वर कहता है कि उसने इसे उन लोगों के लिए बनाया है जो उससे प्यार करते हैं (I कोरिंथियाइयों 2:9–10)।

मैंने पहले ही कहा है कि ईश्वर ने हमारे पहले पितरों को आवश्यक ज्ञान दिया था लेकिन उसने जो कहा था उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया! कोई 4000 साल बाद ईसा मसीह, दूसरे आदम स्वर्ग के हमारे पिता ईश्वर के यहां के एक संदेश के साथ धरती पर प्रकट हुए– उसी आवश्यक ज्ञान का उद्घाटन करते हुए– लेकिन चंद लोगों ने– एक सौ बीस लोगों ने उस पर विश्वास किया– हालांकि बहुतों ने ''उस पर विश्वास करने'' का दावा किया (जैसा कि जॉन 8:30–31, 37–38, 40, 45–46) में कहा गया है।

आज का विज्ञान, धर्म और शिक्षा आज भी उस पर विश्वास नहीं करती जो उसने कहा था।

लेकिन अब आइए देखें कि हिब्रू के इस शुरुआती पृष्ठ पर क्या कहा गया है जहां हिब्रू साम का हवाला देकर छोड़ देते हैं: ''तुमने सभी चीजों को उसके (इनसान के) अधीन उसके पैरों के नीचे रख दी हैं। क्योंकि उसने (ईश्वर) ने सब कुछ उसके (इनसान के) अधीन रख दिया है, उसने (ईश्वर ने) ऐसी कोई चीज नहीं छोड़ी है जो उसके अधीन न हो'' (हिब्रू 2:8)।

क्या यह संभव है कि ईश्वर जो कहता है (सभी चीजें) उसका आशय वही हो? *कोई भी चीज उससे परे नहीं रखी गई हैं?*

पहले अध्याय में बाइबिल का मोफत का अनुवाद यूनानी शब्द ''सभी चीजों'' का अनुवाद ''ब्रहमांड'' के रूप में प्रस्तुत करता है (श्लोक 8)।

दूसरे शब्दों में उनके लिए जो वह मानने के इच्छुक हैं जो ईश्वर कहता है, वह कहता है कि उसने आज्ञाप्तिदी है कि समूचा ब्रह्मांड– उसकी सारी आकाश गंगाओं, अनगिनत सूर्यों और ग्रहों के साथ सब कुछ–इसनान के अधीन रखे जाएंगे।

लेकिन पल भर रुकें! इससे पहले कि आप अविश्वास करें उसी आठवें श्लोक के ये अगले शब्द पढ़ें: लेकिन हम देखते हैं अभी सारी चीजें (अनंत ब्रह्मांड) उसके (इनसान के) अधीन नहीं रखी गई हैं। याद रखें (श्लोक 5) यह ''आने वाली दुनिया'' की बात करती है– आज की दुनिया की नहीं। लेकिन आज हम क्या देखते हैं? ''लेकिन हम यीशु को देखते हैं जिन्हें देवदूतों से थोड़ा नीचे (या थोड़ा नीचे होने का साथ–साथ थोड़ा कम) बनाया गया है, मृत्यु की यातना सहने, गरिमा और सम्मान से अभिषिक्त होने के लिए।'' ईसा मसीह को छोड़कर किसी भी व्यक्ति को अभी तक गरिमा और सम्मान से अभिषिक्त नहीं किया गया है।''

लेकिन देखें कि यीशु कैसे गरिमा और सम्मान से पहले से ही अभिषिक्त हैं। जारी: ''क्योंकि वह बने जिनके लिए सभी चीजें (समूचा ब्रह्मांड) हैं और जिनके द्वारा सभी चीजें हैं, बहुत–से बेटों को गरिमा में लाना, उनकी मुक्ति के कप्तान को यातनाओं द्वारा संपूर्ण बनाना.... जिसके कारण वह (यीशु) उन्हें बंधु कहने में शर्माते नहीं (श्लोक 10–11)

दूसरे शब्दों में ईश्वर की आत्मा रखने वाले ईसाई ईसा मसीह के साथ उस सबके साझा वारिश हैं जिसे ईसा मसीह पहले से ही विरासत में पा चुके हैं। आज वह गरिमा में हैं! वह समूचा ब्रह्मांड विरासत में पा चुके हैं। वह अपनी शक्ति से इसका भरण–पोषण करते हैं। ईश्वर की पवित्र आत्मा रखने वाला इनसान यदि उसने धर्मांतरण किया है, (रोमनों 8:9) अब केवल उत्तराधिकारी है, अभी तक वह धारक नहीं है।

लेकिन अब देखिए कि कैसे ईसा गरिमा और सम्मान से अभिषिक्त हो चुके हैं– और स्वामित्व पा चुके हैं– पहले से ही उत्तराधिकार पा चुके हैं। हिब्रू के अध्याय 1 से प्रारंभ करें:

''ईश्वर... ने इन अंतिम दिनों में अपने बेटे के जरिये हमसे बात की है, जिसे उसने सभी चीजों (समूचे ब्रह्मांड) का उत्तराधिकारी नियुक्त किया है, जिसके द्वारा उसने दुनिया भी बनाई है; जो उसकी गरिमा का तेज है, और उसके व्यक्तित्व की

हूबहू छवि है और उसके कथन की शक्ति से सारी चीजों (समूचे ब्रह्मांड) की रक्षा करता है....'' (हिब्रू 1:1-3)।

जीवित ईसा अपनी अनंत दैवी शक्तियों से समूचे ब्रह्मांड का भरण–पोषण करते हैं। यह परिच्छेद देवदूतों पर उनकी श्रेष्ठता का प्रदर्शन जारी रखता है– वह ईश्वर के उत्पन्न किए, जन्मे पुत्र हैं– देवदूत महज व्यक्तिगत रूप से सर्जित सत्व हैं। देवदूत अब प्रशासन करने वाली (आत्माएं) हैं, हमारी सेवा कर रहे हैं– हमारी जो अभी देवदूतों से निचले स्तर के हैं– लेकिन जो मोक्ष के उत्तराधिकारी हैं, जब हम ईसा मसीह की तरह, ईश्वर के जन्में बेटे हो जाएंगे (हिब्रू 1:4–14)।

बाह्य अंतरिक्ष– ग्रह अब मृत हैं

रोमनों के आठवें अध्याय में जिन चीजों का उद्घाटन किया गया है अब उनको एक साथ लाएं। यहां यह यीशु को ईश्वर का बेटा कहती हैः ''मैं.... कि वह बहुत से भाइयों में पहलौठी के बेटे हो सकते हैं (रोमनों 8:29) ईश्वर की पवित्र आत्मा रखने वाले इनसान ईश्वर के उत्तराधिकारी हैं और यीशु के साथ साझा उत्तराधिकारी हैं– उस यीशु के जो मृतक से पुनर्जीवित होकर सभी इनसानों में से अकेले ईश्वर के पुत्र के रूप में पैदा हुए हैं (रोमनों 1:4)। वह मानव परिवारों में पहले हैं जो ईश्वर के परिवार में जन्मे हैं– ईश्वर के राज्य में। वह हमारे अग्रदूत हैं जो पहले जा चुके हैं। हम परम सत्ता और गरिमा के रूप में ईसा की वापसी पर न्यायों के पुनरुत्थान के समय उनका अनुसरण करेंगे।

रोमनों के इस आठवें अध्याय का श्लोक 9 कहता है कि यदि हमारे भीतर ईश्वर की आत्मा है तो हम उसके जाए बेटे हैं– लेकिन यदि हममें उसकी आत्मा नहीं है तो हम उसके कोई नहीं हैं– सिरे से ईसाई नहीं हैं। लेकिन श्लोक 11 कहता है कि यदि हमारे भीतर ईश्वर की पवित्र आत्मा उग रही है और हमारा नेतृत्व कर रही है तो हमें उसकी आत्मा के द्वारा मृतक से जीवित किया जाएगा (या यदि यीशु के आगमन के समय हम जीवित रहते हैं तो हमें नश्वर से अमर कर दिया जाएगा)।

अब जारी रखें: उन सब के लिए जो ईश्वर की आत्मा द्वारा संचालित हैं वे सभी ईश्वर के बेटे हैं..... वह परम आत्मा हमारी आत्मा की साक्षी हैं। कि हम ईश्वर के बच्चे हैं। और यदि बच्चे हैं तो उत्तराधिकारी हैं; और एक साथ गौरवान्वित भी। क्योंकि मेरा मानना है कि आज की दुनिया की यातनाओं की उस गरिमा से कोई तुलना नहीं है जिसका हमारे भीतर उद्‌घाटन होगा....'' (रोमनों 8:14–18)।

संशोधित मानक संस्करण पढ़ना जारी रखें: ''क्योंकि सृष्टि उत्सुकता से प्रतीक्षा करती है, लालसा करती है ईश्वर के बेटों के उद्‌घाटन की क्योंकि सृष्टि (सारे सूर्य, ग्रह, तारे, चंद्रमा) अपनी इच्छा से नहीं बल्कि उसकी इच्छा से असारता के अधीन की गई थी जिसने इन्हें आस के अधीन किया। क्योंकि स्वयं सृष्टि को क्षय के बंधन से मुक्त कर दिया जाएगा और ईश्वर के बच्चों की स्वर्णिम स्वतंत्रता प्राप्त करेगी। हम जानते हैं कि सारी सृष्टि (तारे, सूर्य, और चंद्रमा अब जो क्षय और् असारता में हैं) अभी तक मिल कर कड़ी मेहनत से कराहती रही है; और न केवल सृष्टि हम स्वयं (हम आत्मा–जन्य इनसान) जिनके पास आत्मा के पहले फल हैं (वे चंद लोग जिन्हें अभी मुक्ति के लिए बुलाया जाता है– ''पहले फल'') अंदर से कराह रहे हैं क्योंकि हम बेटों के रूप में (जन्म) पाने के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं (श्लोक 19–23)।

ज्ञान का कैसा विस्मयकारी, आश्चर्यजनक उद्‌घाटन!

इससे अधिक विस्मयकारी, आश्चर्यजनक, आंखें खोलने वाला परिच्छेद लिखा ही नहीं जा सकता।

यह इस कदर विस्मयकारी ढंग से उद्‌घाटक है कि सरसरी तौर पर पढ़ते जाने पर यह पूरी तरह समझ में नहीं आता।

मैंने पहले रोमनों के अध्याय 8 श्लोक 29 का यह कहते हुए उद्धरण दिया था कि ईसा समीह बहुत से भाइयों में से पहले थे। हिब्रू 1 में हम देखते हैं कि ईसा मसीह, मृतक के पुनरुत्थान से उत्पन्न गौरवान्वित हो चुके पहले मानव हैं और अब समूचे ब्रह्मांड का पालन करते हैं। वह हमारे अग्रदूत हैं जो आगे निकल चुके हैं। सत्ता और गरिमा के साथ धरती पर उनकी वापसी के समय पुनरुत्थान द्वारा उनका जन्म होगा जिन्होंने धर्मांतरण कर लिया है और ईश्वर की पवित्र आत्मा को प्राप्त किया है। उसके बाद समूचे ब्रह्मांड को उनके अधीन कर दिया जाएगा।

और उसके बाद रोमनों 8 से यदि हम ईश्वर की पवित्र आत्मा द्वारा संचालित होते हैं तो हमारा उत्थान करके हमें आत्मा का बना दिया जाएगा और ईश्वर के परिवार में अमरत्व प्रदान किया जाएगा जैसे ईसा मसीह 31 ईस्वी में अपने पुनरुत्थान के समय थे।

अब एक बार फिर श्लोक 19 से: ''क्योंकि सृष्टि उत्सुक लालसा से ईश्वर के बेटों के उद्घाटन की प्रतीक्षा करती है (संशोधित मानक संस्करण)। यह पुनरुत्थान के समय के बाद होगा जब जो मानव हैं वे पुनरुत्थान द्वारा या नश्वर मानव से अमर आत्मा में तात्कालिक परिवर्तन से ईश्वर के बेटे बन जाएंगे।

आश्चर्यजनक? सारा ब्रह्मांड नया हो जाएगा

अब कृपया समझिए– सारे ब्रह्मांड को ईश्वर के इन बेटों के वास्तविक जन्म और प्रकट होने की ईश्वर के परिवार में जन्म लेने की उत्सुक लालसा से प्रतीक्षा क्यों करनी चाहिए निम्नलिखित श्लोक ग्रहों से भरे एक ब्रह्मांड को क्षय और निस्सारता में दर्शाते हैं– इसके बावजूद ऐसा लगता है कि जैसे अब इस मृत अवस्था में भी उन्हें आस के अधीन रखा गया है! ''क्योंकि स्वयं सृष्टि (जीवन के भरण–पोषण में अक्षम ब्रह्मांड) को क्षय के बंधन से मुक्त कर दिया जाएगा और ईश्वर के बच्चों की गरिमामय मुक्ति प्राप्त करेगा।''

सारे ग्रह क्षय के बंधन में कैसे आते हैं? निश्चित रूप से ईश्वर ने उन्हें इस तरह नहीं बनाया था!

क्षय अपक्षय और अपघटन के कारण पिछली अक्षत अवस्था से हुई दशा या अवस्था को व्यक्त करता है। तब ईश्वर ने इन ग्रहों को अक्षय अवस्था में बनाया था।

लेकिन किसी कारण वश अपक्षय शुरू हो गया। ''क्षय के इस बंधन'' का कारण तब क्या रहा हो सकता है।?

लेकिन किसी चीज ने उनमें ह्रास शुरू किया! ईश्वर के सृजन के बारे में हम ईश्वर के उद्घाटित कथन में जो कुछ भी पढ़ते हैं वह प्रत्येक चीज दर्शाती है कि उसका सृजन संपूर्ण रहा है। धरती को पहली बार गरिमामय सौंदर्य के आदर्श सृजन के रूप में सिरजा गया था।

हम देखते हैं कि मानव के सृजन से पहले धरती पर फरिश्ते रहते थे। देवदूत जो दुष्टता या अराजकता के आने तक अनिंद्य थे, धरती की पूरी सतह को क्षय, अस्त–व्यस्तता और खोखलेपन की अवस्था में पहुंचाने का कारण बने, जैसा कि अध्याय 2 में कहा गया है।

क्या पूरे ब्रह्मांड की रचना उसके दूसरे असंख्य ग्रहों के साथ, जीवन के भरण–पोषण के अंतिम लक्ष्य से की गई थी? हमें ईश्वर के कथन में स्पष्ट रूप से नहीं बताया गया है कि ऐसा था या नहीं, लेकिन हमें जो बताया गया है वह इसे तथ्य पर अतिरिक्त प्रकाश डालता है कि ईश्वर ने इनसान को बनाने का निश्चय क्यों किया!

रोमनों के अध्याय 8:22 के इस अनुच्छेद को पढ़ना जारी रखें: ''हम जानते हैं कि सारा सृजन (ब्रह्मांड) कड़ी मेहनत से अभी तक कराहता रहा है।'' मान लीजिए कि सृष्टि की तुलना उस मां से की गई है जो अपने बच्चे को जन्म देने जा रही है। ईश्वर के बेटों के पुनरुत्थान द्वारा अमरत्व में जन्म लेने की प्रतीक्षा करती आस कठोर परिश्रम से कराहती प्रकृति का चित्र उकेरा गया है (श्लोक 20)। ऐसा लगता है कि जैसे प्रकृति मां और ईश्वर पिता है। बहरहाल, इस अनुच्छेद का सारा जोर यह है कि जब हम (धर्मांतरित मानव) ईश्वर से उत्पन्न हैं तो ईश्वर की शक्ति और गरिमा धारण करते हुए हम वही करने वाले हैं जो ईश्वर ने तब किया था जब यह धरती ''बंजर और वीरान'' पड़ी थी– हिब्रू तोहू और बोहू (प्रकाशना: 1:2)। यीशु जिन्होंने ''धरती को नया चेहरा प्रदान किया'' (साम 104:30), उसका नवीनीकरण कर रहे थे जिसे पाप करने वाले देवदूतों के विद्रोह ने नष्ट कर दिया था।

ये अद्भुत परिच्छेद जिसका अर्थ देते या संकेत करते हैं, वह स्पष्ट रूप से उद्घाटित अर्थ से काफी दूर तक जाता है।

यह परिच्छेद स्पष्ट रूप से उसी का संकेत करता है जिसका संकेत सारे खगोल विज्ञानी और वैज्ञानिक करते हैं– सूर्य आग के गोले हैं, प्रकाश और ऊष्मा देने वाले; लेकिन पृथ्वी को छोड़ कर सारे ग्रह मृत्यु क्षय और निस्सारता की अवस्था में हैं – लेकिन हमेशा के लिए नहीं– रूपांतरित मानवों ईश्वर के बेटों के जन्म लेने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

यीशु का सुसमाचार परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार था।

मैं आपको यहां यह दर्शा रहा हूं कि यीशु के राज्य के सुसमाचार में वस्तुतः यहां उद्घाटित यह सारा ज्ञान शामिल है– हम समूचे ब्रह्मांड पर राज करने वाले हैं जो पिता, ईश्वर और यीशु के साथ परमेश्वर का राज्य बनेंगे। ईश्वर सबसे पहले सृष्ठा है लेकिन वह शासक भी है। और वह शिक्षक है जो अपने बारे में मानव चेतना से परे और उससे बाहर के ज्ञान का उद्घाटन करता है!

इन सभी आगमों को, जिनका मैंने इस अध्याय में उपयोग किया है, एक साथ रख कर आप मानव की अविश्वसनीय क्षमता को समझने लगेंगे। हमारी क्षमता ईश्वर के परिवार में जन्म लेने, संपूर्ण शक्ति प्राप्त करने की है! हमें समूचे ब्रह्मांड पर अधिकार दिया जाने वाला है!

तब हम क्या करेंगे? ये आगम संकेत करते हैं कि हम अरबों–अरबों मृत ग्रहों को जीवन देंगे, जैसे इन धरती को जीवन दिया गया है। हम ईश्वर के निर्देश और आदेश के अनुसार सृजन करेंगे। हम समस्त अनंत के पार तक राज करेंगे! प्रकाशना 21 और 22 दशार्ते हैं कि तब कोई पीड़ा, कोई दुःख, कोई बुराई नहीं होगी क्योंकि हम ईश्वर के नेकी के रास्ते को अपनाना सीख चुके होंगे। यह उपलब्धि का शास्वत जीवन होगा, अति आह्लाद पूर्ण प्रत्याशा के साथ लगातार नई रचनात्मक परियोजनाओं पर दृष्टि रखने और इसके बावजूद और पहले से जो उपलब्धियां प्राप्त हो चुकी होंगी पीछे मुड़ कर प्रसन्नता और हर्ष से उन्हें देखने का जीवन।

हम कभी भी थकेंगे नहीं और कभी क्लांत नहीं होंगे। हमेशा जीवंत– आह्लादमय ऊर्जा, जीवंतता, प्रफुल्लित जीवन और शक्ति और सामर्थ्य से भरे हुए!

धरती ब्रह्मांड का मुख्यालय होगी

अंततः पिता, ईश्वर भी धरती पर आ आजाएगा। समूचे ब्रह्मांड पर उसका सिंहासन धरती पर स्थापित होगा।

1 कोरिंथियाइयों 15:24 पर ध्यान दें, विभिन्न पुनरुत्थानों की बात करने के बाद यह दर्ज किया गया है: ''उसके बाद आता है अंत, जब वह राज्य ईश्वर के हवाले कर देगा, यहां तक कि पिता भी जब वह सारे अधिकार और सत्ता छोड़ देगा।''

प्रकाशन ग्रंथ 21:3 में: ''और मैने स्वर्ग की महान आवाज को कहते सुना, देखो, ईश्वर का आवास इनसानों के साथ है, और वह उनके साथ ही रहेगा, और वे उसकी प्रजा होंगे, और स्वयं ईश्वर उनके साथ होगा और उनका ईश्वर होगा।''

और प्रकाशन ग्रंथ में आगे फिर 22:3 ''और आगे और अभिशाप नहीं होंगे: सिवा ईश्वर के सिंहासन के और मेमना उसमें रहेगा; और उसके सेवक उसकी सेवा करेंगे।''

जब वह ईश्वर और मेमने की बात करता है तो मेमना ईसा मसीह का प्रतिनिधित्व करता है और ईश्वर पिता का। अंततः एकीकरण पूरा हो जाएगा: ईश्वर जो पिता है और बेटा ईसा मसीह हमारे भीतर और उनके साथ एक महान परम ईश्वरीय परिवार के रूप मे जुड़े हम।

शब्दों के व्यक्त करने की क्षमता से परे ईश्वर कितना महान है और उसका उत्कृष्ट उद्देश्य वस्तुतः अब प्रगति पर है। ईश्वर और ईसा मसीह का हमेशा गुणगान, सम्मान और स्तुति हो।

ईश्वर की सात हजार साल की महान प्रधान योजना अंततः पूरी हो जाती है– युगों के रहस्य का अंततः उद्घाटन हो जाता है और पुनः विशाल ब्रह्मांड के सृजन, और शास्वतता को आगे बढ़ाने के साथ हम अंततः प्रारंभ में लौट आते हैं।

प्रारंभ

बाइबिल की विषय सूची

आमुख और भूमिका

जेनेसिस
1 22
2:7 22

साम
111:10 6

इसैया
40:3, 9-10 9

जेरेमिया
1:7 13

एजेकियल
18:4, 20 22

डेनियल
12:9, 10 6

मलाची
3:1 9

जॉन
3:13 23

एक्ट्स
2:34 23
9:1 12

रोमनों
6:23 22

गलातियों
1:11-12, 15-17 29

ऐफेसियाइयों
2:21-22 10

अध्याय 1: ईश्वर कौन और क्या है?

जेनेसिस
1:1 40, 45, 50
1:26 46
2:4 45-46

II राजा
17:23-24 52

जोब
38:7 45

साम
33:9 44

इसैया
1:2-4 32
40:25-26 39
41:21-24 39

मैथ्यू
1:23 47

जॉन
1:1-4 41, 43, 50, *57*
1:14 41
4:24 41, 46
7:37-39 *57*
8:28-29 44
14:9 47

एक्ट्स
1:15 38
2:2-3 56-57
2:18 57
8 51
8:10 52
10:45 57
17:18-19 34-35
17:22-26, 28 34 -35
17:28 36

रोमनों
1:4 57
1:18-22 32-33
1:25 34
1:28 36
8:7 37
8:14, 16 43
8:29 57

I कोरेंथियाइयों
11 53

II कोरेंथियाइयों
3 50

गलातियों
1:6-7 53

ऐफेसियाइयों
3:9 43

कोलोसियाइयों
1:12-13, 15-17
44
1:15 46

हिब्रू
7:3 42

I जॉन
1:3 56
3:2 43
5:7-8 55-56

जूद
4 52
6 46

प्रकाशन ग्रंथ
1:14-16 47
12:9 33,51,55
17:5 51, 55
17:*8* 55

अध्याय 2:
देवदूतों और
अपदूतों
का रहस्य

जेनेसिस
1 62
1:l 71, 89, 94
1:l-2 74, 75, 76,
86
1:2-4 76
19-25 87
1:26 87
2 62
2:2-4 63
2:4 71, 76
6:8-9 73
6:11-13 73
19:26 75

एक्सोडस
25 61
25:10, 18-20 84
25:20 91

II क्रॉनिकल
16:9 68

जोब
1:6 60
38:1-7 62
38:4-7 7 1-72, 89

साम
91:11 68
104:30 75

इसैया
14 73, 78, 80,
82-83
14:1-11 80
14:3-6 78
14:7-8 79
14:12 69, 79-80
14:12-14 81
14:12-15 92
14:13-15 80
45:18 76

इजेकियल
26 81
27 82
28 73, 81
28:2-8 82
28:11-12 83
28:13 83
28:14 91
28:15 77, 84-85,
91
28:16-17 86

डेनियल
8:16 69
9:21 69
10:2-13 69
10:21 69
12:1 69, 81
12:1-2 80

जेचारिया
4:10 68

मैथ्यू
9:29 65
18:10 68

लूकस
1:19 69
1:26 69

जॉन
1:1-5, 60, 94
1:14 94
5:17 60

एक्ट्स
2:15 68

I कोरेंथियाइयों
14:33 76
15:24 95

I1 कोरेंथियाइयों
2:11 95
4:3-4 59

एफेसियाइयों
2:2 59
3:9 94

फिलिप्पियों
2:5 87

कोलोसियाइयों
1:15-16 59
1:16-17 94

I1 थेसालोनियाइयों
2:3-4 82-83

हिब्रू
1 59
1:3-10, 13-14
61-62
2 62
2:7 60

I1 पीटर
211 62

I जॉन
3:4 73
3:22 65

जूद
6-7 74.92
9 69

प्रकाशन ग्रंथ
1:4, 16, 20 68
21, 8, 12, 18
68
3:1,7, 14 68
5:6 68
12:4 73, 77
12:7 69, 80-81
12:7-9 80-81
17 78-79
18:9-19 82
21:12 68

अध्याय 3:
मानव का इतिहास

जेनेसिस
1:l 135
1:l-2 99-100
1:2 101
1:3 101
1:20, 21, 24
102, 104
1:26 103
2 114-115
2:7 102, 104, 108
3:22-24 120, 122

साम
104:30 101

एक्सेसिएस्टीज
9:5 127
9:5-6 125
9:10 126
12:7 127

इसैया
28:9-10 100
59:1-2 128

जोएल
2:28 132

मैथ्यू
4 131
11:25 105

मारकुस
7:7, 9, 13 134

लूकस
10:22 128

जॉन
3:13 126
5:28-29 127
6:44 122, 132-133

ऐक्ट्स
2:29,34 126
13:22 126

रोमनों
5:5 118
5:10 130
6:23 124, 126
8:9, 11, 14 133
8:16 111
11:33 135
13:10 118

I कोरिंथियाइयों
2 112
2:9 111-112

2:10-11 112, 118
2:14 113
3:19 113
15 135
15:22 123
15:22-23 134
15:45-46 11 1

एफेसियाइयों
2:2 117

एफेसियाइयों
2:5 117

कोलोसियाइयों
1:27 117

I तिमथी
2:13-14 117

हिब्रू
9:27 123, 131

I पीटर
4:17 133

प्रकाशन ग्रंथ
12:9 98, 122
13:8 102
20:11-12 134
20:11-13 135

अध्याय 4:
सभ्यता का रहस्य

जेनेसिस
4:21 145-146
6:2 147, 148
6:5 146
6:9 147
8:4 150
10:8-9 150, 152
11:1-2 150
11:4 151, 152
11:6 152
11:8 152
17:1 147

एक्सोडस
20:4-5 153
23:28-29 150

लेविटिकस
22:21 147

विधि विवरण
32:8 149

I क्रॉनिकल
16:29 138

एजरा
1:1 144

साम
104:30 138
127:1 146

इसैया
14:14 151

जेरिमिया
7:18 153

मैथ्यू
7:24-27 146
11:27 144
24:14, 31-41 158
24:21-22 149
24:38 147

जॉन
424 153

रोमनों
1:23 153
5:10 145

I कोरिंथियाइयों
15:22 143

गलातियों
5:21 148

एफेसियों
2:2 143

हिब्रू
9:27 142

II पीटर
25 147, 153

प्रकाशन ग्रंथ
13:8 142
20:11-12 146

अध्याय 5:
इस्राईल का रहस्य

जेनेसिस
12:1-2 161
12:1-3 163-164
17:1-5 164-165
17:6 165
17:7-9 165

22:18 164
24:3 167
48 186
48:14-16 184, 195
48:18-20 185
49:22 186

एक्सोडस
19:8 172
31:12-18 180

लेविटिकस
26 181, 185
26:1-2 176-177
26:3-4 176-177
26:6-8 176-177
26:7-8 176-177
26:9 177
26:14-17 177
26:18 177
26v19 190
22:30 191

नंबर्स
3351-53, 55 172

II राजाओं
16:6 160

एजरा
9:2 173
10:10-11 173

साम
33:10-19 190

इसैया
43:21 163

जेरेमिया
3:20 172
25:31-32 195
30:5-7 195-196
31:31 174

एजेकिएल
22:26 191

डेनियल
2 181-182
7 182
12:1-2 197

एमोस
9:9 186

मिका
5:7-15 188
5:9 189
5:10-11 189-190
5:15 193
मलाची
3:8-10 190

मैथ्यू
24 196
24:14 196
24:21-22 197

मारकुस
13 196

लूकस
21 196

रोमनों
2:43 175
5:5 175
15:8 166

गलातियों
3:8, 16 164
3:29 165

एफेसियों
2:20 174

हिब्रू
8:6,lO 174
11:13-16 162

I पीटर
2:9 165

प्रकाशन ग्रंथ
13 182
17 182

अध्याय 6:
चर्च का रहस्य

लेविटिकस
23 201-202

नंबर्स
28:26 233

विधि विवरण
6:16 218

साम
111:lO 231

इसैया
7:14 210, 224
9:6-7 213, 27.4
28:9-10, 13 252
49:8 253
52:14 212

53:5 212, 224

एजेकिएल
37 239
40 246

जोएल
2:28 253

मलाची
3:1 222
3:1-5 290
4:5-6 290

मैथ्यू
1:21 214
2:13-15 217
4 217-219
4:23 222
13:1-9 254
13:10-17 232, 254
13:18-23 254
16:18 207-208,
213-214
17:ll 290
24:5 250
24:14 251, 289, 291
24:21-22 291
24:29-30 291
25 254
2:50 212

मारकुस
1:l 222
1:4 225
1:14-15 222
3:14, 16 221
7:7-9 271

लूकस

1:31-33 210
19:11-27 253
24:49 233

जॉन
1:42 221
3:5-6 225
3:8 225
4:24 263
6:44 215, 229, 241,
7:37-39 209, 230
8:30-44 227
15:16, 19 222
17:11-17 247
18:36 210
18:37 209-210

ऐक्ट्स
2:2 215-216
2:47 264
4:23 266
6:1 278
7:38 208
8: 281
8:1 218
11:18 238
14:27 290
20:28 248

रोमनों
5:5 214
5:10 240
8: 7 239
8:11 261
8:16 257, 260
8:17 261
8:29 239
11:16 252
11:25, 30-32 235-
236

I कोरिंथियाइयों
1: 249
1:2 248
1:lO 246
2:11 260
31:3 260
3:11 230
10:32 248
11:16 249
11:22 248
12 206
12:1, 4-6, 11-13
12:5-6 266
12:13 277
12:18 246, 264
12:20 244
12:25 244
12:27 230
14:19 276
14:28 276
15:9 248
15:23 239
15:45 209
15:45-50 226
15:49-53 261
16:1 244

I1 कोरिंथियाइयों
1:l 248
2:12 290
3:6 258
4:3-4 198-199, 203
4:4 216
6 :2 253
11:3 279
11:3-4,1 3-15 250
272
11:28 244

गलातियों
1:6 7 279
1:13 248
4:22 258
4:26 261
5:22-23 255

एफेसियों
1:11 252
1:23 230
2:19-21 222, 230,
234,
246
2:20 230
3:9 211
4:11 244
4:11-13 262
4:13 256
4:15-16 246
5:23 208, 222, 230

फिलिप्पियों
2:5 238

I थेसालोनियाइयों
2:14 249

I1 थेसालोनियाइयों
1:4 249

I टिमथी
3:5 248
3:15 248-249

हिब्रू
6:12-14 257
9:27 214
12:23 232

I पीटर
2:24 212

II पीटर
1:4 260
3:18 262

I जॉन
2:4 277
3:4 274

I1 जॉन
10 282

JUDE
3 282

प्रकाशन ग्रंथ
2:9-10 285
2:26-27 236
3:1-6 289
3:7-13 289-290
3:21 236
5:10 233, 237
12 272
129 203, 216, 234,
249, 272
13:272
13:15 284
14:4 253
17 272
17:5 249, 272
20:11-12 273

अध्याय 7:
ईश्वर के राज्य का
रहस्य

जेनेसिस
1:2 361
6:1 342
12:1,4 333
12:8, 30-31 328
26:5 333
39:2-3 343

विधिविवरण
12:8 328
12:30-31 328
28:1-5 319
28:13 338
32:8-9 341

I राजाओं
18:19-21 337
19:36-37 337
19:39 337

II राजाओं
2:3, 5 338
4:38 338

जोब
1:3 343
3:13-14 343
38 344
38:4-6 343
39 344
40 344
41 344
42 344

साम
8:1-6 355-356
90:2 316
103:12 355
104:30 361

लोकोक्तिग्रंथ
14:12 328
16:25 328

इसैया
2:2-4 31 1
2:10-12, 17 324
11: 2-5 3 26
11: 6-9 312
11: 9 345, 346
11: 9-11 345
11: 15 317
141-2 338
19: 23-25 320
27: 6 319
33: 21-22, 24 317
35 315
35:1-2 315
35:3-6 3 17-3 18
35:6-7 315
41:14-20 314-315
49: 8 349
58: 8 318
59: 4, 7-10, 20 331
60:1 331
60:5 321
61:4 343

जेरेमिया
30: 9 338
30: 16-18 338
30: 17 318
31: 4-11 338
31: 12-14 318
31: 18-20 338

लैमेंटेशन
1:2, 19 325

एजेकिएल
14:14, 20 340
16 325
20:43-44 353-354
23:9, 22 325
34:23-24 338
36 319
36:9-11 319
36:33-35 3 19
37 352-353
37:14 353, 354
37:24-25 338

डेनियल
1:17 297
2 302
2:28 297
2:36 299
2:37-39 299-300
2:40 300
2:44 301
7 294, 301
7:22 310
12:13 340

एमोस
4:13 316

मिका
228-35 298
237-39 299-300
41-3 311-312,
346-347

नाहुम
1:15 316

जेफेनिया
3:9 320, 345

हग्गाई
1-2 344
2:6-8 321
2:8 323

जेचारिया
4 344
14:1-4 307
14:4 316, 345
14:4-5 309
14:8 311
14:12 307-308
14:16 329
14:17-19 330

मलाची
3:1-5 348
3:8-10 322
4:5-6 349

मैथ्यू
11:7-11 347
11:ll 347
12:40 305
12:41-42 354
16:27-17:9 337
17:1-8 348
17:9 336-337
17:10-11 348
19:28 338
24:22 305
24:30 305, 309
24:37 342
25:1-10 302
25:14-30 338
25:31 305, 307
25:34 344

मारकुस
1:l 295
1:14-15 295

लूकस
1:17 347

1:31-32 304
6:38 323-324
91-2 295-296
10:9 295
10:12, 14 354
11:31-32 354
12:47-48 354
13:28 309, 336
17:21 294
17:26 342
19:11-27 338
19:12-27 305, 326
1917-19 326
जॉन
8:30-31, 37-38, 40,
45-46 356
1010 323
143 309
18:36-37 303

ऐक्ट्स
1:3 296
1:9-11 305, 309
2:32 305
17:26 342
18:21 327
19:8 296
20:6 327
20:16 328
20:25 296
28:23, 31 296

रोमनों
1:4 358
8:7 328
8:9 357, 358
8:11 358
8:11, 14 309
8:19 360
8:19-23 359
8:20, 22 361
8:29 358-359
11:25-26 345
14:11 324

I कोरिंथियाई

2:9-10 356
5:8 328
15:3-4 305
15:24 363
15:50-54 309
16:8 328

I1 कोरिंथियाई
6:2 349
11:13-15 306-307

गलातियों
1:-9 296
37, 16, 29 334

एफिसियों
2:21 348
5:23 302
6:12 303

I थेसालोनियाइयों
4:14-17 309

हिब्रू
1 355,357,359
1:l-3 357-358
1:3 305
1:4-14 358
1:6 355
2:5 355,357
2:6 355
2:8 356-357
2:10-11 357
8:1 305
8:10 327
10:12 305

I पीटर
4:17 351

I1 पीटर
1:4 324
3:18 350

I11 जॉन
2 323

प्रकाश ग्रंथ
2:26-27 310
3:12 347
3:21 305, 310
11:15 303, 307
11:17 317
11:18 307
125 305
13 301
1618 316
17 301, 302
17:l 302
17:3 302
17:8 301
17:12 301
17:14 307
17:15 302
19 310
19:7 302
19:11-16 303
19:14 307
19:15 305
19:16 305

20:5 352
2011-12 352
21: 362
21:3 363
22 362
22:3 363

पुस्तक की विषयसूची

गर्भपात
मां के गर्भाशय में भावी ईश्वरीय सत्व की हत्या करने के लिए में भ्रूण या गर्भ को नष्ट करना, 110

अब्राहम
से दुहरे वादे किए गए, 163–164
नियति के इनसान 160–163

आदम
शैतान में विश्वास किया, 38
खुद को और अपने परिवार को ईश्वर से अलग कर लिया, 33
अपने स्रष्टा की अवज्ञा की, 117
शैतान को अपदस्त करने का अवसर पाया, 123
ईश्वर के कानून और सरकार को अस्विकार कर दिया, 119–20
के बेटे अलग कर दिए गए और प्रत्येक को उसका उत्तराधिकार दिया गया, 149
पहला सर्जित मानव, 33
अपने लिए वर्जीत वृक्ष का फल लिया, 33
यदि उसने जीवन का वृक्ष लिया होता तो क्या होता, 116.–117, 140–141
स्वेछा से, दुराग्रह से नहीं, पाप किया 117,141

देवदूत एक आदम
ने डेनियल पर प्रकट
किया कि पैगंबर को दिए गए कथन ''अंत समय तक के लिए मुहरबंद हैं'', 6

देवदूत
अमर आत्माएं हैं, 46
अदृश्य ऐजेंट हैं, 62,68–69
महान दायित्व सौंपे गए, 69–71
प्रत्येक अलग से बनाया गया, 60
के लिए ईश्वर का उद्देश्य, 90,91
एक मानव के रूप में ईसू को ''देवदूतों से थोड़ा नीचे बनाया गया था'', 60
हो सकता है धरती पर लाखों साल रहे हों, 46
ईश्वर के दूत, 59
बुरी आत्माओं के साथ उनका रहस्य क्रम में दूसरा है, 3
उत्तकृष्ट, पवित्र चरित्र उत्पन्न कनरे की आवश्यकता थी, 69

एक तिहाई ने ''अपनी पहली अवस्था को बहाल नहीं रखा'', 46
एक तिहाई ने पाप किया और शैतान बन गए, 72–74
के साथ व्यक्तिगत अनुभव, 62–64 64–67
मनुष्य के सृजन से पहले धरती पर रखे गए, 46,73
असीम मानसिक शक्तियों के धारक थे, 70
सृजन से ईश्वर के बेटे, 60
क्यों उत्पन्न किए गए, 60–62

जीव
आत्माएं हैं, 104
मानव आत्मा से वंचित, 105
ईश्वर या आध्यात्मिक ज्ञान की कोई जानकारी नहीं रखते, 107
ईनसान के साथ जीवन की एक ही सांस की भागीदारी करते हैं, 109

आर्म्सट्रांग, हर्बर्ट डब्ल्यू
ने 1926 की गर्मी में बाइबिल का गहन अध्ययन प्रारंभ किया, ix
युवास्था में उनके लिए बाइबिल एक पहेली थी, ix
परिस्थितियों द्वारा ऐसे अभियान पर लाए गए जो ईश्वर ने उनके लिए छिपा रखा था, 13
का कारोबार बिखर जाता है, 17–18
विकास के सिद्धांत पर चुनौती दी जाती है, ix, 18–20
मन को उद्विग्न कर देने वाली चुनौतियों का सामना किया, ix
समझ की कामना viii
यह पता लगाने का दृढ़ निश्चय किया कि क्या ईश्वर के अस्तित्व के पक्के प्रमाण हैं, x
पता लगाते हैं कि बाइबिल सांकेतिक भाषा में लिखी गई किताब है, xi
रविवार के अवकाश दिवस के सवाल पर

लोमा डिल्लों के साथ उनकी शादी दांव पर लग जाती है, ix
युवावस्था में चर्च में गहनतम रहस्यों का स्पष्टीकरण कभी नहीं सुना, viii
स्वयं को जीवित बलिदान के रूप में यीशु को समर्पित कर देते हैं, कि वह जिस तरह चाहें उनका उपयोग करें, 27
18 साल की उम्र तक प्रोटेस्टैंट चर्च

(क्वेकर) में पले–बढ़े, 13–14, 203–205
डारविन, हक्सले, हीकेल इत्यादि के काम का अध्ययन किया, ix
मानते थे कि रविवार के अवकाश दिवस का स्रोत बाइबिल है। ix
के लिए आध्यात्मिक ज्ञान और बोध की वीथियां स्पष्ट हो गईं, xi
जीवन के आखिरी पड़ाव पर यह पुस्तक लिखने के लिए विवश प्रेरित हुए, ix
स्वयं से बाइबिल के महान रहस्यों की खोज कभी न कर पाते, 12

आर्मस्ट्रांग लोमा (डिल्लों)
अपनी शादी के कुछ ही दिनों बाद एक ऐसा स्वप्न देखा वास्तविक दृश्य जान पड़ता था, 15–17
हर्बर्ट डब्ल्यू आर्म्सट्रांग की पत्नी (1917–1967), 15

ईसा मसीह में विश्वास
में निर्विवाद आस्था के बिना कोई भी पवित्र आत्मा को धारण नहीं कर सकता, 5

पवित्र बाइबिल
के अधिकार पर प्रश्न उठाए गए, ix
किसी दूसरी पुस्तक की तरह नहीं पढ़ी जा सकती, 5
असावधानीवश बहुतों ने बिना तर्क के मान लिया है, x
सांकेतिक पुस्तक, x-xi
विभिन्न अनुवाद उपयोगी, 23
ईश्वर के अपने लिखे उद्‌घाटन, 3
अपनी व्याख्या स्वयं करती है, xii
मौलिक रहस्य है जो दूसरे रहस्यों का उद्‌घाटन करती है, 3
बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक न समझे जाने के लिए अभीप्सित, xi
का सकारात्मक प्रमाण मिला, 25
का सकारात्मक प्रमाण अभिलक्षित, x
महत्वपूर्ण रहस्यों के उद्‌घाटन को परिलक्षित रखा जिनसे सारी मावता दो–चार है, x
मुद्रित शब्द, 5
इतना कम क्यों समझी गई, xi
इस तरह लिखी गई है कि मानों चित्र पहेली हो, xi-xii, 5

दुबारा जन्मे
यीशु पहले व्यक्ति थे, 57
सचमुच धर्मांतरित ईसाई पुनरुत्थान के समय होंगे, 57

"दुबारा जन्मे" का सवाल जिसे आधुनिक ब्रह्मविज्ञानियों ने गलत समझा, 224
यीशु ने वस्तुतः क्या कहा था, 224–226

निकोडेमस को गलत क्यों समझा गया, 224–225

रोमन कैथोलिक चर्च
हाल की शताब्दियों के वैज्ञानिक रुझान की प्रतिभाओं ने इसकी शिक्षा को खारिज कर दिया, 2
प्रोटेस्टैंटवाद के साथ पश्चिमी दुनिया की सोच पर हावी, 2

चरित्र
की परिभाषा, 69
समय के साथ एक गुण के द्वारा कि ईश्वर सर्जनात्मक अनुभव है विकिसत किया जाना चाहिए, 69–71
चाहे देवदूत हों या मानव अचानक शक्तियों का सृजन नहीं किया जा सकता, 69

यीशु (ईसा मसीह भी देखें)
मानवता के पाप के धारक हैं 124–125
मानवों को यीशु में आस्था रखनी ही चाहिए, 5
रूप और आकार में ईश्वर का प्रतिरूप हैं, 44
में आस्था के बिना पवित्र आत्मा धारण करना संभव नहीं हैं, 5
पहले फल, 135
दूसरे आदम, 128
सभी राष्ट्रों पर शासन करने के लिए दुबारा आने वाले हैं 9, 303–304

यीशु के पास कौन आ सकते हैं, 263
दूसरा आदम क्यों, 132–134
लाखों द्वारा व्यर्थ पूजित, 134

इसाई (इसाइयों)
बुलाए गए संत, 309–310
सच्चे लोग– स्वयंसेवक नहीं नियुक्त
229–230
“व्यक्तिगत ईसाइयों का क्या हैं”? 270–272
सत्य क्या है, 133–134

चर्च,
“अध्यापकों का एक कॉलेज” 228–229
एक अंग्रेजी शब्द जो यूनानी
शब्द ***एक्क्लेसिया*** से व्यूत्पन्न है, जिसका
अर्थ होता है ‘बुलाए गए’, 199
सुसमाचार क्या है, इसका प्रचार करने के लिए
नियुक्त? 206
कितना संगठित, 241–245
पिछले इतिहास के संदर्भ में, 205–206
की संस्था, छठवां मौलिक रहस्य है, 4
क्या यह कोई इमारत है? 199
ईसा के उत्थान तक स्थापित नहीं थी,
230
प्रचीन विधान के समय का, 208–209
का वास्तविक उद्देश्य *200–202,* 253–256,
2 *6* 5 – 2 *6* 6
धर्मांतरित मानवों की आध्यात्मिक मां, 265

अभी तक भौतिक, 256–258
पहली फसल 232–235
वह मंदिन जिसमें ईसा मसीह
आएंगे, 245–247
का सच्चा नाम, 247–249
किस तरह की संस्था? 202–203
पहले क्यों बुलाया गया? 239–241,
252–253
यीशु ने इसकी स्थापना क्यों की, 207–208,
226–228

ईश्वर का चर्च
यीशु का काम करने के लिए सगंठित
एक आध्यात्मिक संस्थान 268
हर्बर्ट डब्ल्यू आर्म्सट्रांग ईश्वर का
एक सच्चा चर्च तलाशते हैं, 30
में पहली शताब्दी के दौरान एक और
सुसमाचार घुस आया, xii
इसकी शिक्षा और विश्वास, 273–275
ईश्वर का कार्य करने के लिए प्रदान
किए गए आधुनिक तरीके 268–270

के लिए भी प्रारंभिक शताब्दियों में
रहस्यों का उद्घाटन लुप्त, x-xi
के साथ युग, 282–292
का संक्षिप्त इतिहास, 275–292
एक संस्थआ के रूप में चर्च
नाम, 247–249

सभ्यता
प्रलय पूर्व की दुनिया, 147–148
आज चौराहे पर, 156–158
नोवा के समय की बाढ़ के बाद बेबीलोन
में प्रारंभ हुआ, 151–154
का प्रारंभ 145–146
शहरी जीवन पर स्थापित 149–150
चौथा मौलिक रहस्य 4
मानव निर्मित और शैतान प्रेरित, 139
का प्रतीक बेबल की मीनार
151–154

पुरोहित वर्ग (परंपरागत ईसाइयत भी देखें)
उन्हें क्या पढ़ाया गया है और वे किस चीज
में विश्वास करते हैं, यह बताने के लिए
बाइबिल की व्याख्या करता है, xii
प्रत्येक विशिष्ट धर्म ग्रंथ के वे मिथ्या उपदेश
पढ़ते हैं जिन पर पहले से
विश्वास किया गया है, xii
उनमें से सदाशयी लोगों ने भी अपनी
शिक्षा दूसरे लोगों से प्राप्त की थी, xii

धर्मादेश
समझा जाता है कि ईसा मसीह ने अपने
पिता के समादेशों को समाप्त कर दिया है,
कर दिए गए हैं, 134
ईश्वर के समादेशों का पालन करने
से अच्छी समझ आती है, 6
परंपरागत ईसाइयत ने आमतौर पर ईश्वर
के समादेसों को नकार दिया है, 6

धर्मातंरण
केवल ’’ईसा मसीह को प्राप्त करना’’ नहीं
238–239
चर्च के लिए संपूर्ण धर्मांतरण आवश्यक,
237–238

एक दैवी स्रष्टा
ईश्वर की मुख्य विशेषता,
वह मुख्य व्यक्तित्व जो
पिता बना, 43–44
यीशु कैसे थे, 43–44
तार्किक वैज्ञानिक रुझान की प्रतिभाओं

द्वारा आमतौर पर अस्वीकृत, 2
स्वयं को बाइबिल में उद्घाटित करता है, 3
की आवश्यकता की व्याख्या के लिए विकास के सिद्धांत का अविष्कार किया गया था, 2

पैगंबर डेनियल
अधिकांश बातें समझ न सके, जो उन्हें बाइबिल के अंग के रूप में लिखने के लिए दी गई थीं, 6

सर चार्ल्स डारविन
''सर्वोत्तम की उत्तरजीविता'' के सह आविष्कारक, 2
अपने सिद्धांत के प्रति आश्वस्त हुए बिना ही मर गए'', 2
उनका लेखन सतही तैर पर प्रत्यायक जान पड़ता है, 20

डेविड राजा
में मातृपक्ष से हर्बर्ट डब्ल्यू. आर्म्सर्ट्रांग के पूर्वज, 13
स्वर्गारोहण नहीं हुआ है, 23,126
इनसान के बारे में प्रश्नों से त्रस्त, **X**

मृत्यु
पाप का फल, 22

शैतान
लुसिफर का अनुसरण करके विद्रोही बने, 74
की उत्पत्ति, 93–94
वे देवदूत जिन्होंने ईश्वर की सरकार के खिलाफ पाप किया, 74

पृथ्वी
की सतह पर देवदूत अपनी कारीगरी जोड़ने वाले हैं, 77
देवदूतों के पापों के कारण बंजर और वीरान हो गई, 74.75, 88–99, 101
पाप कैसे प्रवृष्ट हुआ, 91
बंजर और बीरान नहीं बनाई गई थी, 76
प्रारंभिक रूप से संपूर्ण सृजन नहीं, 77
प्रलय झेलती है, 92
की सतह, इनसान के लिए पुनर्जीवित, ब्रह्मांड का मुख्यालय बनने वाली है, 84

उच्च शिक्षा
स्मृति प्रशिक्षण पर आधारित, 23
का विसरण मुद्रण के आविष्कार तक अच्छी तरह नहीं हो सका था, 2
जो पढ़ाया गया है, उसकी स्वीकृति पर बल, 23–24
आमतौर पर अदृश्य और आध्यात्मिक को नकारती है, 36
नहीं पढ़ाती कि ईश्वर कौन और क्या है, 3
वस्तुतः विकास के सिद्धांत को सर्वसम्मत स्वीकृति देकर ईश्वर के रहस्य को खत्म करने के प्रयास किए हैं, 1
यूनानी दार्शनिकों के दिनों में, 34–35

पश्चिमी दुनिया में आज, 35
दुनिया की बुराइयों की आध्यात्मिक प्रकृति के बारे में कुछ नहीं जानती, 113
पदार्थवादी, 35–36, 97६
अभिकल्पित और योजनाबद्ध सृजन की संभावना पर विचार नहीं करती, 97
मानवजाति और मानव सभ्यता के रहस्य के बारे में पूरी तरह अनजान बनी हुई है, 97–98
आध्यात्मिक जीवन और समस्याओं के के बारे में कुछ भी नहीं सिखाती, 113

एलिजाह आने वाले हैं (बपतिस्मादाता जॉन, को भी देखें)
पैगंबर मलाची द्वारा भविष्यवाणी, 9 348–349
वह जो ईसामसीह के दूसरे आगमन से पहले मार्ग प्रशस्त करते हैं, 9
बपतिस्मा दाता जॉन का पूर्व सूचनादाता के रूप में उल्लेख करते हैं, 9

गलती (प्रायश्चित भी देखें)
की स्वीकृति ईसा मसीह पर आस्था के बाद आती है, 5
आस्था और दोषानुभूतियों की गलती को अवश्य स्वीकार किया जाना चाहिए, 5

हौवा
शैतान पर विश्वास किया, 38
शैतान के छल का शिकार हुईं जबकि आदम नहीं थे, 117
पहले मानव आदम की पत्नी, 38

बुरी आत्माएं (पिशाच भी देखें)
की अनदेशी दुनिया और कलह प्रिय रुझान

के बीच का संबंध, 58
देवदूतों के साथ, दूसरा रहस्य, 3

विकास (डारविन भी देखें)
बिना किसी सृष्टा के
सृजन की अज्ञेयवादी व्याख्या, 35

के सिद्धांत को चुनौती, **ix**
बौद्धिक अहम्मन्यता से भरे, अज्ञानी
मनों में विकसित, 2
सृष्टा के बिना सृजन की व्याख्या
के प्रयास में विकसित, 2
के तर्कदोष का सकारात्मक प्रमाण,
21, 104

पृथ्वी
पहले देवदूतों का आवास थी, 46

शास्वत जीवन
ईश्वर का एक उपहार 22

मिथ्या सुसमाचार
ईसा की पहली शताब्दी के मध्य में
नकली सुसमाचार के रूप में इसका
उपदेश शुरू हुआ, 53–54
सिमोन मेगस से प्रेरित, 52
एक भी सही नहीं है, 294–295
एक फर्जी ईसाइयत द्वारा दुनिया में
में प्रचारित 278–279

ईश्वर का परिवार
अभी तक सिर्फ दो व्यक्तियों से
निर्मित, 50
पहले पुनरुत्थान पर उन सब से
बनेगा जो ईश्वर के जन्मे बेटे
बनेंगे, 51
उनसे बनेगा जो ईश्वर की आत्मा
से परिपूर्ण और उससे संचालित
होंगे, 51
ईश्वर की सरकार की पुनर्स्थापना के
साथ सभी राष्ट्रों पर राज करेगा, 51

सात वार्षिक त्योहार
सभी ईश्वर के त्योहार मनाएंगे,
329–330
हमेशा–हमेशा के लिए समादेशित, 201–202
ईश्वर की प्रधान योजना को प्रकट
करते हैं, 230–232
प्राचीन इस्राईल पर प्रकट, 201–202,
230–232

जल प्रलय
प्रारंभिक सभ्यता को दुनिया भर में
समाप्त कर दिया, 72
से पहले अंतरविवाह, 147–148

ईश्वर
शब्द के ईसा मसीह के रूप में
उत्पन्न होने के समय से एक दैवी
परिवार, 43,50–51, 57–94
समस्त अनंत से एक राज्य, 43
एक कानून दाता परिवार, 49
उस व्यक्ति का नाम जिसे अब हम
पिता, ईश्वर के रूप में
जानते हैं, 42–43
की प्रकृति, 47–48
से कम किसी व्यक्ति पर कभी पाप न
करने के मामले में विश्वास नहीं किया
जा सकता था, 94
हिब्रू शब्द **एलोहिम** का अनुवाद, 94

ईश्वर, स्रष्टा
एक रहस्य जो किसी भी धर्म की
समझ में नहीं आया, 3
सरकार का लेखक, 48–50
शब्द के मानव रूप में उत्पन्न होने से
पिता बना, 41–43
ईसा मसीह द्वारा सभी चीजों का सृजन
किया, 44
शास्वत रूप से शब्द के साथ अस्तित्वमान था,
42
शास्वत से ईश्वर के राज्य में एक श्रेष्ठ व्यक्ति,
43
रूप और आकार रखता है, 46
उसकी असलियत साध्य, 21
जीवन प्रदान करता है, 40
समूचे ब्रह्मांड पर परमाधिकार में, 49
उच्च शिक्षा के इतिहास में, एक रहस्य 1
के अस्तित्व का अकाट्य प्रमाण मिला, 21
आत्मा है, 41
महान दाता है, 40
का ज्ञान विकृत हो गया, 34
एक त्रिमूर्ति नहीं, 40
पक्षपाती नहीं, 130–131
स्वयं को उत्पन्न करता है, 94–95, 101,
160, 170
केबल बाइबिल में उद्घाटित, 38,
39–40
संबंधी सत्य एक नंबर का रहस्य है, 3
विज्ञान द्वारा अत्याख्यायित, 3
उच्च शिक्षा द्वारा अशिक्षित, 3

प्रागितिहास में शब्द ब्रह्म के साथ था, 41
जान–बूझकर अपनी पुस्तक का कूट लेखन क्यों किया, 6
अधिकतर लोगों के लिए अयथार्थ क्यों, 32, 46–47

सुसमाचार,
डेनियल जानते थे 296–298
झूठों ने "परंपरागत ईसाइयत", के नाम पर छद्मवेश धारण कर लिया xii
आज हमारे लिए 298–301
यीशु ने ईश्वर के राज्य का उपदेश दिया 293
पर विश्वास करना आवश्यक, 295–296
अर्थ को छिपाने के लिए ईसा मसीह द्वारा नीति कथाओं में कहा गया, 295–296

ईश्वर की सरकार
ईश्वर के कानूनों पर आधारित 50
चर्च और राज्य दोनों, 33'6–338
अनंत काल से विद्यमान है, 49
ऊपर से नीचे की ओर आवश्यक है, 49
तभी परिपूर्ण होती है जब सीधे ईसा मसीह द्वारा प्रबंधित होती है, 330–336
कभी भी शासितों द्वारा निर्देशित नहीं होती, 49
अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, 341–344
राष्ट्रीय स्तर पर, 338–341
ईश्वर के सर्वोच्च समादेश के अधीन, 344–346
शिक्षा और धर्म के पर्यवेक्षण के लिए, 49

ईश्वरीय कृपा
पाप की क्षमाशीलता संबंधी एक सिद्धांत, 52
सिमोन मेगस द्वारा ईश्वर की अवज्ञा करने लाइसेंस में परिवर्तित, 52

स्वर्ग (ईश्वर के सिहासन का)
ब्रह्मांड का मुख्यालय, 84–85
यीशु को छोड़कर कोई भी व्यक्ति स्वर्ग नहीं गया है, 23

स्वर्ग
पृथ्वी के साथ–साथ सर्जित, 45, 71
संपूर्ण भौतिक ब्रह्मांड, 45

पवित्र आत्मा,
का बपतिस्मा, 276–278
मानव आत्मा में प्रवेश कर सकती है और उसके जुड़ सकती है, 113
त्रिमूर्ति का कोई तीसरा व्यक्ति नहीं, 44–45
ईश्वर के शब्द के प्रति मानव मन के द्वार खोलती है, 5
"पेंटिकोस्ट" को गलत समझा गया, 276–277
"उड़ेला गया" 56–57
वह शक्ति जो अनुक्रिया देती है और वह करती है
ईसा मसीह जिसका समादेश देते हैं, 44
बाइबिल का सत्य केवल के माध्यक्ष से प्रकट हुआ, 5
गलत ढंग से अनुवादित पवित्र आत्मा, 40

इस्राईल का घर
दस उत्तरी कबीलों का कौमी नाम, 179–180
जुदाह के घर जैसा नहीं, इसलिए यहूदी नहीं 179–180

मानव मन
लगभग सार्वभौम रूप से जिस पर विश्वास किया जाता है उसे बिना आपत्ति किए और बिना प्रमाण के मान लेता है, **ii**
अपने–आप आध्यात्मिक सत्य को नहीं समझ सकता 169, 251–252
कैसे काम करता है, 104–105
ईश्वर की आत्मा के बिना अधूरा, 111
प्रकृति से सत्य के उत्पादन के लिए सज्जित नहीं, 11
प्रायः ईश्वर के विषय से आकुल 37–38, 98
आध्यात्मिक सत्य इससे छिपा हुआ, 376

मानव प्रकृति
यह कैसे उत्पन्न हुई, 117
अचानक तिरोहित नहीं होती, 310–313

मानव आत्मा
अपने बारे में नहीं सोच सकती, 105
देख, सुन, स्वाद, या गंध का अनुभव नहीं कर सकती, 105
मस्तिष्क को बौद्धिक क्षमता प्रदान करती है, 105
अविश्वसनीय मानव क्षमता, 355–358
पवित्र आत्मा के प्रवेश करने और उसके साथ संयुक्त होने के लिए अभिकल्पित, 113
एक आत्मा नहीं है, 105
मानवीय मनुष्य और दैवी ईश्वर के बीच व्यक्तिगत संपर्क को संभव बनाती है, 105
मनुष्य में आत्मा ईश्वर से प्रत्यक्ष संपर्क

को संभव बना देती है, 107
मानव जीवन का वास्तविक मूल्य प्रदान करती है, 108
पवित्र आत्मा के बिना आध्यात्मिक विवेक बुद्धि से वंचित रहती है, 169

मानवता (मानव भी देखें)
शैतान पर विश्वास करता है, 33
मनुष्य कौन, क्या, और क्यों है, इस ओर से अज्ञान, XII
ईश्वर की आत्मा तक पहुंच से कटी हुई सिवा उन
थोड़े लोगों के जिन्हें ईश्वर बुलाता है, 120–121
शांति या सच्चे मूल्यों का रास्ता नहीं जानती, 8
यह आज की पहले नंबर की चिंता है, 7
मूलतः फरिश्तों से थोड़ा नीचे सिरजी गई, 62
निश्चेष्ट रूप से ईश्वर का विरोधी, 37
शैतान के बहकावे के प्रति सुग्राह्य 117
ऐसा प्रतीत होता है कि सबसे महत्वपूर्ण ज्ञान को
नहीं जानना चाहती, 33
ईश्वर से कटा हुआ क्यों, 128–130
धरती पर क्यों रखी गई, 94–95

अमर जीवन
ईश्वर का मुफ्त उपहार, 22, 117
पुनरुत्थान द्वारा या ईसा मसीह के आगमन पर तात्कालिक परिवर्तन द्वारा 262–264
जीवन के प्रतीकात्मक वृक्ष के जरिए आदम को प्रस्तावित, 116

प्राचीन कौम इस्राईल
सशर्त जन्मजात वादे, 176–177, 185–189
एक मानव राजा ने मांग की, 178–179
को त्योहार दिए गए; हमेशा के लिए विहित, 201–202
चौथा मौलिक रहस्य 4
अपने बावजूद अपनी भूमिका निभाने वाली, 174–176
उसका पति उसके लिए मरने आया और एक नई
विवाह प्रसंविदा की पेशकश की, 169
सात पूर्व कथित युगों के लिए दंडित
177–178। 181–182
के लिए अंतरजातीय विवाह वर्जित, 166–168
जातीय, कौमी, धार्मिक रूप से अलग होने के लिए, 173–174
दो कौमों में विभाजित 179–180
ईश्वर से दशमांश चुराया, 190–191
कालांतर में कई कौमें बनीं 164–165, 185–189
यह दर्शाने के लिए कि अपनी एक आत्मा
के साथ मानव मन ईश्वर की पवित्र आत्मा
के बिना आध्यात्मिक विवेक बुद्धि नहीं पा सकता
था, 169
ईश्वर के राज्य का प्रकार, 170–172
दस विलुप्त कबीले क्यों कहे गए, 180–181

ईसा मसीह
हमारे कल्याण के लिए पीटे गए 211–212
कष्टकर और घृणित मौत मरे, 212–214
प्रधान पादरी हैं, 42
लंबे बालो वाले यीशु की अर्द्ध स्त्रैण तस्वीर तार्किक
दिमागों को बौद्धिक रूप से संतोषजनक नहीं लगती, 2
विकराल लड़ाई में शैतान को प्रतिस्थापित करने योग्य साबित करते हैं, 217–221
आध्यात्मिक उद्धारक, 214–215
धरती का शासक और राजा बनने वाले हैं, 209–211
ईस्वर थे, 211
अब्राहम के दिनों में मेल्चिसेडेक थे, 42
साकार शब्द थे, 42, 50
वह पहली बार क्यों आए थे, 216
फरीसियों में विरोध क्यों किया, 223–224

बपतिस्मावादी जॉन (एलिजाह आने वाले हैं भी देखें)
पैगंबर इसैया द्वारा पूर्वकथित, 9–10
मसीहा के पहले आगमन के समय पथ प्रसस्त किया, 9–10

कुलपिता जोसफ
आज उनके वंशजों की शिनाख्त हो चुकी है, 185–189
उनके वंशजों को आकस्मिक विनाश झेलना होगा,
189–190, 195–197
उनके बेटों का नाम "इस्राईल" पड़ा है 183–185
विरासत में मिले जन्म सिद्ध अधिकार, 176

ईश्वर का राज्य
का एक प्रकार प्राचीन इस्राईल 170–171
1,900 से भी अधिक साल पहले अग्रिम घोषणा, 10
में सरकार, 171–172

इसके कानून ईश्वर से उत्पन्न और उसके द्वारा प्रदत्त हैं, 49
यीशु के सुसमाचार का संदेश, 4
सातवां मौलिक रहस्य, 4
राज्य क्या है 300–301

ज्ञान
मनुष्यों को सत्य जानना ही चाहिए, 5
मनुष्यों को असत्य को भूलना ही चाहिए, 5

ईश्वर का कानून
एक सर्व ईश्वर का कानून व्यापक शब्द में समाहित किया जा सकता है, 49
का मृत्यु दंड हमारे बदले में ईसा मसीह द्वारा चुकाया गया, 123 आध्यात्मिक है, 49
का परिपूरक प्रेम है, 49
सिद्धांत रूप में लागू होने के लिए, 50

भौतिक जीवन
रहस्यों में घिरा हुआ।

शब्द ब्रह्म
मानव बने 41
ईश्वर के बेटे बने, 41
एक श्रेष्ठ व्यक्ति हैं, 41
उतने ही ईश्वर है, जितना पिता है, 41
ईश्वर के शब्द है, 41
शास्वतता से ईश्वर के बेटे नहीं थे, 41

लुसिफर (शैतान भी देखें)
एक सर्जित सत्व, 81–84
एक प्रधान देवदूत या चेरभ। धरती के सिंघासन पर आसीन, 73,89–81, 137–138
शैतान बन गया, 74, 78–79, 91
यह शैतान के विद्रोह करने से पहले उसका नाम था, 73
यह मूल हिब्रू नाम का कालांतर का लातीनी रूप है जिसका अर्थ होता है ''प्रकाश लाने वाला'' 73
विद्रोह किया, 138
प्रतीकात्मक रूप से टायर का राजा मनोनीत किया
गया, 81–85
ब्रह्मांड के मुख्यालय पर प्रशिक्षित 84–85
उससे और उसके देवदूतों से पाप किसने कराया 85–87

मनुष्य (मानवता भी देखें)
उसका सृजन अभी तक पूरा नहीं हुआ है 109–110
नश्वर है, 108–109
ईश्वर की आत्मा के उपहार के बावजूद आध्यात्मिक
जीवन से वंचित, 111–113
अस्थायी रूप से भौतिक–रासायनिक जीवन जीता है,
केवल अपने शरीर में प्रवाहित होने वाले रक्त के
ऑक्सीकरण से जीवित रहता है। 116
ईश्वर के रूप–आकार में निर्मित, 46
का रहस्य तीसरे नंबर का है. 3
अपनी समस्याओं के समाधान में अपनी अक्षमता के
कारण रहस्य बन गया, XIII
केवल उच्चतम जीव प्रजाति नहीं,– 96
पशुओं के साथ एक ही प्राणश्वास का सहभागी है, 109
पुरुष, स्त्री के बिना भौतिक रूप से पूरा नहीं होता, 115–116
उलझनकारी सवालों के जवाब तलाशने में अक्षम, xii
के व्यापक विस्तार में ब्रह्मांड वह क्या है? x
पृथ्वी पर क्यों लाया गया, 94–95
का सृजन क्यों, 87–88

मेल्चिसेडेक
लगातार किसी पुरोहित को स्वीकार करता है, 42
ईसा मसीह बना, 42
''ईश्वर के बेटे जैसा'' था,
दिनों के प्रारंभ के बिना था, 42
अब्राहम के समय में बिना पिता या माता के था, 42

सहस्राब्दी (दुनिया कल भी देखें)
के बाद, 351–355

पैगंबर मूसा
उन्होंने बाइबिल की पहली पांच पुस्तकों में जो सच्चाइयां लिखीं उन्हें कभी स्पष्ट नहीं कर सके, 12
सेवा में नियुक्त किए जाने से पहले ईश्वर को नहीं
तलाश रहे थे, 12

रहस्य, का उद्घाटन
हर्बर्ट डब्ल्यु ऑम्सट्रांग की समझ आना कैसे शुरू हुआ, **xi**
ईश्वर के सच्चे चर्च तक के लिए लुप्त x-XI
बाइबिल में लिखित रूप में सुरक्षित, XI

सात मौलिक रहस्य
धरती के प्रत्येक मानव के जीवन से संबंधित, 5
बाइबिल में उद्घाटित, 5
आधुनिक काल तक के लिए
जानबूझ कर छिपाए गए थे, 6

नोआ
एक ईमानदार व्यक्ति और अपनी पीढ़ियों में शुद्ध, 73
सभी मानवों के सार्वभौम विनाश को टाला, 73
अपनी आनुवंशिकता और वंशपरंपरा में शुद्ध, 147
ईश्वर के साथ चले, 73

पास्का– ईस्टर का सवाल
स्मिर्ना के बिशप पॉलीकार्प के समय में शुरू हुआ, 53
स्मिर्ना के पॉलीक्रेटों और रोम के बिशप बिक्टर के समय में फूटा, 53
नीसिया की परिषद में 325 ईस्वी में
कॉन्सटैंटाइन के बादशाह के नेतृत्व में
परंपरागत ईसाइयत के लिए निर्धारित, 54

देवदूत पॉल
यीशु ने उन पर बहुत–सी आध्यात्मिक
सच्चाईयां प्रकट कीं, 12
अपनी इच्छा से ईश्वरीय सच्चाइयां कभी न जान पाते, 12
ईसा मसीह ने व्यक्तिगत रूप से शिक्षा दी थी, 12

देवदूत पीटर
नव विधान के चर्च की नींव बनने के लिए
ईसा मसीह द्वारा चुने गए, 222–223
नाम एक उपाधि है जो नेतृत्व का पदनाम है, 221–222

प्रागितिहास
में ईश्वर, 40–41
में ईश्वर का राज्य, 43
में शब्द ब्रह्म, 41

प्रोटेस्टैंटवाद
रोमन कैथोलिक वाद के साथ पश्चिमी दुनिया की सोच पर हावी है, 2

तार्किक मन
के लिए ईश्वर ने अदृश्य आत्मा से निर्मित ईश्वर,
संतोषजनक नहीं है, 2
के लिए धर्म द्वारा प्रस्तुत ईश्वर का अस्तित्व
अस्वीकार्य होता है, 3
मिथ्याभिमान से भरा हुआ, 2
यीशु की लंबे बालों वाली अर्द्ध स्त्रैण तस्वीर को
असंतोषजनक मानता है, 2
उत्पत्ति और जीवन की आत्म संतोषजनक,
पदार्थवादी व्याख्या खोज निकाला, 2
पदार्थवाद के आधार पर ब्रह्मांड के रहस्यों से
बचने के प्रयास करता है, 2
धर्म की परंपरागत शिक्षा के साथ
ब्रह्मांड के बारे में नए ज्ञान के साथ
सामंजस्य स्थापित करने में अक्षम 2

धर्म
इसमें क्या शामिल है, 9

प्रायश्चित (गलतियां भी देखें)
केबल गलत होने की स्वीकृति के
बाद ही आता है, 5
हर्बर्ट डब्ल्यू आर्म्सट्रांग ने कैसे किया, 26–30
गलत कार्य और गलत आस्था, दोनों शामिल होती है, 5
संपूर्ण प्रायश्चित के बिना कोई भी पवित्र आत्मा नहीं
धारण कर सकता, 5

पुनरुत्थान
प्रत्येक मानव एक न एक पुनरुत्थान में
पुनर्जीवित होगा,
126–128
महान श्वेत सिंहासन का,
146–147
संतों का, 309–310
फैसले के लिए; 127
जीवन और अमरत्व के लिए, 127

रोमन साम्राज्य
मूर्ति पूजकता से पूर्ण क्योंकि उसे पता नहीं था
कि ईश्वर कौन और क्या है, 37
अंतिम पुनर्स्थापना, 301
इसके नेताओं ने सत्य को दबाया, 32–33
दस बार पुनर्स्थापित होगा– जिसमें से सात बार
गैर यहूदी चर्च राज करेंगे, 301–303

ईश्वर का सैबथ
इसे तोड़ना ईश्वर के खिलाफ विद्रोह है, 26
इसका पालन पवित्र है और परंपरागत ईसाइयत
की ओर से धर्म निष्काशन और दंड लाता है, 284–285

मोक्ष

के लिए एक काल क्रम, 215–216
आदम और हौवा के अच्छे–बुरे के ज्ञान
के वृक्ष का प्रतीकात्मक फल चुराने के
बाद से मानवता के लिए वर्जित, 122–123
का अब केवल एक दिन है, 131–132,
134–135
केवल नहीं "ईसा मसीह को स्वीकार करना"
238–239
अब केवल कुछ लोगों के लिए 234–237
मानव प्रजनन द्वारा प्रस्तुत, 258–261
पुनरुर्त्थान के जरिए, 123–125

शैतान

आदम और हौवा से संपर्क करने के लिए
अनुमत, 38
एक अदृश्य आत्मा सत्व जो मानव मन में
विद्रोही
रुझान पैदा करता है, 59
सर्वकालिक प्रधान धूर्त अपहर्ता, 141
मानव मन में अपनी अभिवृत्ति प्रसारित करता
है, 117
का पहला अभिलिखित झूठ, 125–126
परंपरागत ईसाइयत के अनुसार
अपने और ईश्वर के बीच चल रहे
टकराव में जीतता रहा है, xiii
पाप, के जरिए दुनिया को बंधक बनताा है
117–119
हमारे पहले पूवजों से झूठ बोला 38
प्रधान प्रसारक, 143–145
मूलतः एक परम, प्रधान देवदूत या चेरब, 61
अंततः अपदस्थ! 310
बालक, ईसा मसीह को नष्ट करने की
कोशिश करता है, 217

दूसरा आगमन,

ईसा मसीह का 139
से पहले की अंतिम पीढ़ी, 139–140
से पहले एक एलिजाह प्रकट होंगे, 9

सिमोन मेगस

ने अपने पैगन धर्म को "ईसाइयत,"
के नाम पर सार्वभौम धर्म बनाने का प्रयास
किया। 52–53
उन अनुष्ठानों से जिन्हें आज ईस्टर कहा
जाता है,
ईसाई पास्का को प्रतिस्थापित करने के प्रयास
किए। 53
सेमारिया के बेबीलोनियाई रहस्य के धर्म का
नेता, 51
पास्तर कार्यालय के अधिकार खरीदने के
प्रयास किए, 52
ईश्वरीय अनुग्रह के सिद्धांत को ईश्वर की
अवज्ञा
के लाइसेंस में परिवर्तित कर दिया, 52

पाप

और यौन उच्छृंखलता, 192–194
और "नई नैतिकता," 192
आज सार्वजनिक स्वीकृति प्रदान कर दी गई
है,
191–192
समलिंगी, 193–194
ईश्वर के कानून का उल्लंघन; 72, 73,
की मजदूरी मौत लाती है, 22

बेटा

अनंत काल से ईश्वर के राज्य
के श्रेष्ठ व्यक्तियों में से एक, 43
ईसा मसीह, 43
शब्द ब्रह्म बना, 41

ईश्वर के बेटे

सृजन द्वारा देवदूत हैं, 60
धरती के सृजन पर खुशी से चीख पड़े, 71
सही अर्थों में धर्मांतरित ईसाई... के रूप में
जन्में बनेंगे, 51

आत्मा

आदम बने एक जीवित आत्मा 22
मर सकती है, 22, 108–109
प्रत्येक जीव है एक, 22
नश्वर है, 103–104
पदार्थ से बनी भौतिक है,
22
हिब्रू शब्द नेफेश का अनुवाद, 22,102

रविवार का पालन

माना जाता है कि बाइबिल इसका
अधिकार प्रदार करती है, ix
लाओडीसिया की परिषद द्वारा चौथी शताब्दी में
लागू किया गया, 284–285
के सवाल पर हर्बर्ट डब्ल्यू. आर्म्सट्रांग को
चुनौती
दी गई, ix, 18–19

टार्टेरॅस

पाप करने वाले देवदूतों के लिए आत्मसंयम
की शर्त, 72

पूरी बाइबिल के केवल एक परिच्छेद में, उल्लिखित 72

परंपरागत ईसाइयत (पुरोहित वर्ग भी देखें)
एक नकल 249–251 I 279–282
की एक गलती केवल "ईसा मसीह को स्वीकारना,"
238–239
ईश्वर और शैतान के बीच टकराव मानती है, xiii
मोक्ष के एक काल क्रम की ओर से आंखें बंद कर
लेती है, 215–216
शैतान द्वारा छली गई, xiii, 272–273
ईश्वर के रहस्य को नहीं समझती, 3
आमतौर पर ईश्वर के समादेशों को नकार दिया है, 6
एक आधुनिक उदाहरण, 206–207
आमतौर पर कहती है कि ईश्वर के
समादेश कील से सूली पर ठोंक दिए गए थे, 6
लगता है कि सात महान रहस्यों को नहीं समझी है, 5
इसकी आस्था और आचरणों का स्रोत, 26
उपदेश देती है कि ईश्वर ''दुनिया को बचाने के''
क्रोधोन्मत्त प्रयास करता है, XI11
उपदेश देती है कि ''जो भी आएगा आ सकता है''
और अब वह ''बचा लिया गया'' है, XIII
पवित्र बाइबिल को क्यों नहीं समझ सकती 6

अच्छे–बुरे के
ज्ञान का वृक्ष
मानव की आत्म निर्भरता का प्रतीक है,
वर्तमान दुनिया के पाने के रास्ते का प्रतिनिधित्व करता है, 327,328
शैतान के बहकावे में आकर मानव निर्मित ज्ञान और ईश्वर द्वारा उद्घाटित ज्ञान के नकार का प्रतीक, 121

जीवन का वृक्ष
स्वर्ग की बाग में आदम के लिए
मुक्त रूप से उपलब्ध, 116–117
प्रम और दान के रास्ते का प्रतिनिधित्व करता है, 312
अमर जीवन का प्रतीक 116

त्रिमुर्ति (एक सिद्धांत जो यीशू के सुसमाचार को नष्ट कर देता है, 51
बाइबिल में एक भी शब्द नहीं है, 40,54

इसके द्वारा शैतान ने परंपरागत ईसाइयत को छला है, 51
के सिद्धांत को सहारा देने के लिए बाइबिल में मिथ्या लेख जोड़ा गया, 55
मिथ्या उपदेश जो ईश्वर को तीन व्यक्तियों में सीमित कर देता है, 44–45
शैतान द्वारा ईसाइयत में लाया गया, 51–52
नव विधान के किसी प्रारंभिक यूनानी पांडुलिपि द्वारा समर्थित नहीं, 55
दूसरी सताब्दी के उत्तरार्ध में प्रारंभ हुआ 54
महान मिथ्या धर्म का सिद्धांत जिसे ''मिस्टरि, बेबीलोन द ग्रेट'' कहा जाता है, 51

आध्यात्मिक सत्य
सत्यानाश के खतरे से मानवता की रक्षा कर सकता था, यदि उस पर काम किया जाता, 7
बाइबिल के किसी – किसी परिच्छेद में
कभी–कभार इसकी व्याख्या मिलती है, xi
किसी चित्र पहेली की तरह, xi-xii
मानव मन द्वारा उत्पादन के लिए नहीं; 11
बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध तक समझ में न
आने के लिए, xi
बाइबिल में थोड़ा यहां, थोड़ा वहां
उद्घाटित 5
केवल पवित्र आत्मा के माध्यम से
प्रकट 5
देवदूत पॉल पर प्रकट, x
इस्राईल के बादशाह डेविड पर प्रकट, x
इसके बारे में सारी दुनिया छली गई, xii

बीसवीं शताब्दी
का उत्तरार्द्ध आध्यात्मिक सत्य के बोध का समय है, xi
प्रोद्योगिकी विकास और भयावह बुराइयों का विरोधाभास, v11-VIII

बोध
ईश्वर के समादेशों के पालन के फलस्वरूप पैदा होता है, 6

ब्रह्मांड
संभवतः लाखों वर्ष पूर्व बनाया गया, 71
का नया प्रारंभ 363
का मुख्यालय पृथ्वी होगी, 362–363
नवीनीकरण होना है, 362–363
पूर्ण सृजन था, क्योंकि इसका सृजन
एक पूरा हो चुका, संपूर्ण काम था, 71

बुद्धिमता
की परिभाषा, 6

शब्द
कुमारी मरियम से उत्पन्न, 41
प्रागितिहास में आत्मा से निर्मित, 43
पदार्थ के सृजन से पहले देवदूतों का
सृजन किया, 45
आत्मिक दैवत्व के रूप में स्वयं को अपनी
गरिमा से वंचति किया 41
का आशय है प्रवक्ता या दैवी ज्ञान विषयक
विचार, 41
एक श्रेष्ठ व्यक्ति है जिसे रक्त–मांस का मानव
बनाया गया था, 41
शब्द ब्रह्म है, 41
पिता ईश्वर द्वारा मेरी के गर्भ में उत्पन्न किया
गया था, 41
ईश्वर था, 41
ईश्वर का बेटा बनाया गया था, 41
प्रागितिहास में (अभी) ईश्वर का बेटा
नहीं था
प्रागितिहास में ईश्वर के साथ, 41

दुनिया
ईश्वर से विमुख, 113
का आधार, 142–143
इसे छोड़ना मरने जैसा है, 27
पाप की शक्ति से शैतान द्वारा बंधक
बनाई हुई, 117–119, 141–142
इसकी बुराइयां किस तरह विकसित
हुई, 154–156
सब पर दंड आने वाला है, 194–195
अधिकांश मानव जाति के लिए रहस्य बनी
हुई है, 1
ईश्वर द्वारा, 6000 वर्ष की दंडाज्ञा, 120–121

कल की दुनिया
में मुख्यालय का चर्च, 346–348
में शिक्षा 349–351
यह कैसे आएगी, 304–309
यह कैसे होगी, 305, 313–326

प्रस्तावित पाठ्य सामग्री
एच.डब्ल्यू आर्म्सट्रांग की प्रकाशित कृतियों में से

द आटोबायोग्राफी ऑफ हर्बर्ट आर्म्सट्रांग –द अरली ईयर्स
(एच.डब्ल्यू आर्म्सट्रांग की आत्मकथा–प्रारंभिक वर्ष)
डिड गॉड क्रिएट ए डेविल? (क्या ईश्वर शैतान को बनाया था?)
डज गॉड इक्जिस्ट (क्या ईश्वर का अस्तित्व है?)
ह्यूमन नेचर– डिड गॉड क्रिएट इट? (मानव प्रकृति –क्या इसे ईश्वर ने सिरजा है?)
द इनक्रेडिबल ह्यूमन पोटेंशियल (अविश्वसनीय मानव क्षमता)
जस्ट व्हाट डू यू मीन – बार्न अगेन? (आपका आशय क्या है – फिर से जन्मा?)
जस्ट व्हाट डू यू मीन – कंवर्जन? (आपका आशय क्या है– धर्मांतरण?)
जस्ट व्हाट डू यू मीन – किंगडम ऑफ गॉड? (आपका आशय क्या है – ईश्वर का राज्य?)
नेवर बिफोर अंडरस्टुड – व्हाई ह्यूमनिटी कैन नाट साल्व इट्स इविल्स (पहले कभी न समझा गया – मानवता क्यों अपनी समस्याएं नहीं हल कर सकती)
प्रीडेस्टिनेशन – डज द बाइबिल टीच इट? (दैववाद क्या बाइबिल इसकी शिक्षा देती है?
द यूनाइटेड स्टेट्स ऐंड ब्रिटेन इन प्रोफेसी (भविष्य कथन में संयुक्त राज्य और ब्रितानिया)
जस्ट व्हाट डू यू मीन – साल्वेशन? (आपका आशय क्या है–मोक्ष?)
व्हाट इज द रेवार्ड ऑफ द सेव्ड (उद्धारित का पुरस्कार क्या है?)
व्हाट इज टू गोस्पेल? (सच्चा सुसमाचार क्या है?)
व्हाट साइन्स कैन नाट डिस्कवर एबाउट द ह्यूमन माइंड? (मानव मन के बारे में विज्ञान क्या नहीं खोज सका?)
व्हेयर इज द ट्रू चर्च? (सच्चा चर्च कहां है?)
व्हाई वेयर यू बॉर्न? (आप क्यों जन्मे थे)
द बंडरफुल वर्ल्ड टुमारो – ब्हाट इट विल बी लाइक (कल की अद्भुत दुनिया – कैसी होगी)
ए वर्ल्ड हेल्ड कैप्टिव (बंधक बनाई गई एक दुनिया)
वर्ल्ड पीस–हाऊ इट विल कम? (विश्वशांति यह कैसे आएगी?)
योर एवसम फ्यूचर– हाऊ रिलिजन डिसीव्ज यू (आपका विस्मयाकुल भविष्य – धर्म किस तरह आपके साथ छल करते हैं)

ये प्रकाशन सार्वजनिक हित में वर्ल्डवाइट चर्च आफ गॉड (ईश्वर के विश्वव्यापी) चर्च द्वारा निःशुल्क उपलब्ध कराए जाते हैं।

हर्बर्ट डब्ल्यू आर्म्सट्रांग, दुनिया भर की सरकारों, उद्योगों और शिक्षा जगत के नेताओं द्वारा स्वीकृत और सम्मानित हर्बर्ट डब्ल्यू. आर्म्सट्रांग वर्ल्डवाइड चर्च ऑफ गॉड के पास्तर जनरल हैं। उन्होंने 1934 में प्लेनट्रुथ नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया और उसके प्रधान संपादक हैं। श्रीमान आर्म्सट्रांग ने अंबेस्डर कॉलेज की स्थापना की जिसके दो परिसर हैं एक पेसाडेना, कैलिफोर्निया में और दूसरा बिग सैंडी, टेक्सास में। वह अंबेसडर इंटरनेशनल कल्चरल फाउंडेशन के संस्थापक और अध्यक्ष भी हैं जो अपनी सांस्कृतिक, धर्मदाय और मानवीय गतिविधियों के लिए जाना जाता है। हर्बर्ट आर्म्सट्रांग ने ईश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करते हुए 70 से अधिक देशों की यात्राएं की हैं। और वह जापान, चीन, काले और दक्षिणी अफ्रीका, इस्राईल और मिस्र जैसे आलोचनात्मक देशों के राष्ट्राध्यक्षों द्वारा अति सम्मानित हैं। नब्बे की उम्र पार कर चुके श्रीमान आर्म्सट्रांग अब भी इस सुसमाचार के बारे में लिखते, प्रसारण करते और उपदेश देते हैं कि ईश्वर इसी पीढ़ी में मानवजाति के उद्धार के लिए हस्तक्षेप करेगा। वह *मिसिंग डाइमेंशन इन सेक्स* और *द इनक्रेडिबल ह्यूमन पोटेंशियल,* जो उस विस्मयकारी योजना की व्याख्या करती हैं मानव जीवन में ईश्वर जिन पर लगातार काम करता है, *द वंडर फुल वर्ल्ड टुमारो – व्हाट इट विल बी लाइक,*
और *द यूनाइटेड स्टेट्स ऐंड ब्रिटेन इन फ्रोफेसी* के लेखक हैं।